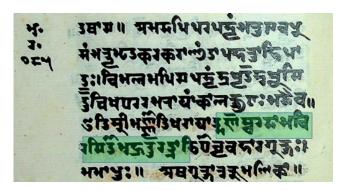
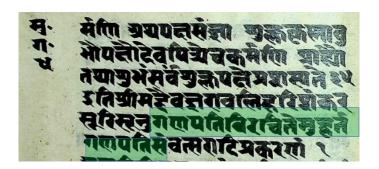
## <u>Manuscript (Part 2) – Muhurta Ratna (Iswara Dasa -Sharada Script) – Muhurta Ganapati (Ganapati- Devanagari)</u>

Page 2 – 272 : Muhurta Ratna by Sri Iswara Dasa (Sharada Script)



Page 273 -584 - Muhurta Ganapati by Sri Ganapati (Devanagari Script)



1 20

प्रमुग्देशकारित्ता । एड्डिस Strate Brane Bar गनगःश्राज्ञभावपाषः अभिकार म्वलभाउयगः श्रुष्ट्रभाष्या अविश यःभविष्ठयद्विष्ठित्रनेभक्ष्यः पुंचदग्रीस्था अलक धन भक्त नाभी प्राप्ती मिरःक्पन्तानुनापम्यातिकानिका वि वकरा प्रताप्रका भूति पर कृति है लि है। विभाग भक्र उर्गे इति धियकर ले दि इति भी। भिरः मीउका मुग्मे भदीशांख्यः मामए नुशामन सुभू स्त्राचित्रम् विभर्भर्यु एक भवपः भूजे

द्यान्-

व्याधारणायु ॥ गजवलंगिव मुद्देगी गरि अशुल निउः। प्रचायल वृत्ये एलावः भीउः अंडिश्व है जिन : ।। त्रार्शितः भीतिः अन्य देव अ अवक हियाः यहः। निक्किनाभाषि ध्राण्याकः अल्वक्षायाः। हेभन्नमुन्नभे अञ्चलनिञ्च सन्देरः॥ विश्वष्ट्रः॥ ग एडिचकें इ.वभन्न मास्यविष्य देशे प णिर्करः। ण उदियञ्च भलना वागः ए इंस्कें इकि विच एउर्॥ अ ॥ भ क्र बुबद्ध कि कि का अध्यक्ति में पर्या तिविद्विष्ट्रभ्। श्रीरहगीरापिलवे अक्रममाञ्चवारे विवासरे जिल्लामा विभियमभू दबर मम्भु चिया र उँग् भववत्वक्रः। क्रम्य्वं लागिलण उक् धुउषाहिमांमज्याकिजदार्ग है।। ने पष्ट्रवण्डिविस्ति भित्र राया भेप दे

विस्तापन्ड भे। ए इतिया विस्तु व ण्ड्रचणक्रकरक्षा अध्याज्ञ । यस्टियाभङ्गल भश्चिविद्यं देशभाविद्यं नविक्र्यण्डम्। हथ्य मण्येष्वरा गीउंगा भिराहे भा भारत है ।। इसी ।। भुगि। अर्ज ७ लवर ये ग्राम्य थे रेम-जर्मा, १५५-५ विमास में ने इ भप्रज्यपद्धिभित्रिक्रिक्टर्र ॥ ज ॥ भभभुवाभुग्राणम् भीभ की हा ३५% रग्रदिकद्व। पार्चगंद्रभललां वर्ष भपपरग्रहरविभेद्रवारे॥ म्॥ ठ वलियि इविञ्चाष्टवश्चरभनगाविष्।पा प्रच्यु इस्पादि चुद्धे विग्दरण स्टब्स् गामह गूपभेवगन जद मुहक्त लिग्रल यार्फि विरामभेषया दुउ मववारभ्वा । द्रिया ॥ द्रम्या मुख्या

不致

इनिविधिचिनिम्रिडभए क्रम चुर म उन्हा कि उन्ही कि उभाव कर्ने उत्तर ।। धन्में ना गणभा अच्छारणनः धले दुउन शिष्ठम किन चडः। इन विक अदिवरिक्वः परे र्रे इंडिय गिरिन **पर्वमन भर्**।।वसिष्ठः॥ वावध्वाउँ अधिक किन मार्ना एकि। थड्यः इस्माभाचनन की विडयन ध वःबद्यञ्च बद्य मनः भन्म ॥ द्राप्त वन्यरिष्धियुव्यवस्थितः क्रिंगेब्:उउ: यह्य प्रशिष्ण । एवं र्भेण ग्भिवपभ्चिडिकलाविणगलनकद्रा वयभ्वतिविष्ठनेद्यानवगार्गवित्र यापिलेश्वलंद्युक्रिनफिन्रयाम् वड्ण वश्यप्रश्चायद्वराकिष्ट्रहर्क रिउभी। उउश्कल है गर्था अच्छा विषे यउ॥ १०॥ भक्त उभ्रवग्रम्काल हुडी

Mohd. Ashraf Peerzada Collection, Thagail 3 11

4·

नवनकर्भकरलभी नकर्षीमः मीपाउः॥ राभष्ट उक् विक प्रश्नितः भचिमितिच कितिः करूरणः थिउति वर्षस् भग्वीर्युक्तयभाग्डः।मङ्ग्रीइविभ इउद्गिर्डोउघेमविज्ञविणिर्निविज्ञवश विश्वपणमगणित्र श्रुप्रधारमण्डा व ष्ट्रा । यसिद्धः ॥ अञ्चर्धा विकास गङ्गाङ्गार्भमार्थे अधकभाष्ट्र सलयाः। माद्रलभाक्षिभगाविभग इयं शकी में वर इक्षिपकु भाष द्विभं पः॥ गैजिक्रगविष्ठियषः इभभिविष्ठं क्रिडानं रुवितापलकित्ययिक्यां। वर्शियां चिल्लिक स्थापन महा इरावंनरंग ॥गद्यभूभेचे उभभाजि ध मवैंग्रन'द्रश्पकृष्ट्यम् ॥

नका भू

विकेश भूग व्यापा मीपाउः ॥ अवस्र क्रिश्वित्र में मूर्वित्र में मान्य है मरी ब्ल्याहर्म अज्ञान मार्भेड्रभड्डभण रेलेशिच् भितित्वति ॥ विभिष्ठः ॥ १५ वशेर्कुं हम । इस्य भेश्वरम्ह भाउर दिउस भेर नरधार धाउनभक्षनं अवस्मिती एकि। भिष्टेडेडेड ॥ इन्सिन्सिने इन्किलप मिवभर्मवनि। प्रमण्ठ व्यापन् भ क्रिलक्रिकार्यम्बर्धिक । अचित्रवं यह कथगुगरिभ में पाइकेस प्रभी भग **लवज्ञनहम्नविधम्मन्थपुक्** भाभिवाचिनप्रभागः धः तिथ भक्षक्षेत्रभागाञ्चणपद्वविक्रं चलि त्त्वराष्ट्रनक्रभिद्धिः श्रुर्थं ॥भ्य र र मार वियम बर्जिय कार मार्थिय है। भज्ञलवनिङ्क्षसभिक्रगीङिक

Mohd. Ashraf Peerzada Collection, Srinagar

がい

र कि उर्वे कि में ब उंस भन भाष के द निय स्भक्षश्राद्धाः निविष्य स्वानिक भागिता । राधामा अविद्या निर्मा अविद्या निर्मा स्थान र दिखामा भारत के पानुके भन्न हैं है। उडर ॥ किष्ठिङ अधिक अधिक मिर्स ला उनिकट्रिलाभिक्षित्र देश लेश वृत्र उर्भोभकर्राला। भ्यत्वे सक्रि रिधिशियरिंग निकद्रिला भगिष्ट कषिउ द्योगक्र दाश्चापला निल्भा ला जनभी ॥ यह मानल के जे डेड इंटर स्थान वग्रकद्भाभगग्या अवद्रज्ञ **ढवें इ**रे ॥ निशिष्त्रमिष्युक्त 'डेकर भिड्ड भ'। यह युक तंउद्रविधाएं विक्नीयंड(॥ स्थि अलाग्रियभथा क्रिक्वकाली भरा लिख

उक्र.भू

्रिडिचिष्ठिर प्रेथापं रिनवकं ठन भि इती इत्र अर्। विषी क्रियं इन्कग उपरित्य गर्हा । बार्य इतिलक्ष्यमग लिन इनिहास अर्थे हैं है है कि इस है है कि इस है मी अस्मा विवश्येष्ट्रां ना गानित हे सूर्य निवद्भविक निथनयिवद्भाषां है पछ। **ब्ब्रं लिले येग भरवस्था है। इस वि** SELECTEMPE TAR विद्याच्या अपने प्रमुख्य वलझुख्या भवि उनरभेड : अष्टारुधकार

भ-

क्रियं कि विचित्रं भारतीय विचित्रं कि विचि नद्भनी सुंशा नगर है। इस्के भूम का वासी क्षिमत्रविष्यमुखः॥ स्थितिः॥स् इए र जित्र अभिया प्राथित है कि उभद्र अर्थ । भग पृष्ठि मु प्रभाग दिशं स व्यक्तिभिद्धाभिद्धभाष्ट्रा ॥ विभिद्धाः॥ हिं हे भवप चुक सूर्या विचग हिं विश्वयान्य का विश्वला का विश्वला के विश्वला नत्क उपन भन्न लग्न भए मनभउः भलमन्भ। यदिनी धुक्ति **म्हण्यस्था** भड्डगालखड्नः भून ल हें इक निकए मवह उध्याप न्त्रशिष्टः श्रीम्हरश्रम्भ लमहक्याम्ड ॥ क्राविद्याः

नकाइ

Mohd. Ashraf Peerzada Collection, Srinagar

इस्ति व्यक्ति विष्ठः॥ विष्ठः॥ यव्यक्त चैनिविद्यं निक्ति प्रेथुः परन भ प्रतार भी इक्र अने एनगे जी कलवा पृष्ट सुकी चुमः भाउड्रभर्ष अवागालभष्टभिक उद्घालभ एउ वेव ४ इन्ना निए उस भिष्ठ देवें दि चिएँ इडेड्सिडिश विषडा। श्रहिने पर भंद्वीविषद्वविष्यामभक्तविष्याभाग्य दलभद्भवनभन्यमः पृष्टः ॥ भक्त किनुभाषा ॥ मानि विधिययं ध्यानि विविविविधियुद्धपरीक्षर्यम् भिड्डिभुभिषमधीधाद्वीभारिकिर्ध मुभएक्ष इंस्कृत्यम् दिएनिक हुए ले प्र क्षुमानः भारत्ये म् इं भिन्द्रियन इंड्रभ ममविदि उउभामि पर्ते प्रनेउड (॥तिः नि अल्ह्य या महारह्भनी र । विद्व **उनुरुम्भेज्ञे भुउक्द भर्ने** 

भंग्र

ए भूपरमवश्वकनं इन विभागनगड्ड भ्रष्टिकिकगामिडिविसाएग्याकिका में इंगर भवें एक क्रिक्त इंग्लिशिक शरीम् विभाव वा रखभव व में वा उस्ति वि लभ ॥ मीपिडः॥ वैभवडंग्रहलाहि भाष् कैयथिमिमभनगडगंधनभ(। भेरेंडइंडिहुल क्षप्रभाष्ट्रयंमष्टक विडर लेविवस्त खेडर्॥ व धिउद्गुरवर्।भागोदभम्।मम्बद्धक्भ म्।मंभगभेव॥ भिनिकमकः भक्षमञ्ज म्बद्धनिरं जल्ल बद्धार्थ । मयुव्दर्भ करंगभीतिकक्षाभ्या गङ्गीरंडरेग्व ह लिभयमं जादनाकारभ्। क्रिमीविद्रशम म्। मम्यक्रंग्याम् वलाभभ ॥ मार्राक दिविद्र्भभग्रम् स्वार् नियमल्य गार्कभ्य वरमद्याभम्। मभः दलभम्। मभः दलङ

नज्र

हा ने व्यापडारक के किया नी भानि व दुभाक्ति। क्रविक्रायिलं अध्युद्धभवं व इतिहास्या गुलगुल एउ भवनेगले स राजियवनमराः। विक्रामिकिक्य गण्युगणीयम् द्विविक्रगुणः ।। वस्ति मडिविद्धं स्थूर प्रीनं मड्रावकं भक्षः। ह उन्द्वारिष्कंदराक्सः एवक्ष गूषिः॥ नायकः॥ यास्य मुद्रकी भुउराभ गालवगडाउक ॥ सीपितः॥ भेन्निष डः अन्द्रिष्ट्र इयञ्चयञ्च एत्र अल्या उग्लभ् ।उज्ञक्ष उप्रधारम्भिक्त याश्याक्षेत्र'द्वालेष्ठित्रभ्या विभिष्ठः॥ एक्षु उपम्परिक चक्र में बक्रिक क्षष्टिक के भगरे भन राभन विश्व स्थान कि म्परिक्षित्रयनभाग्नभद्वीभाः प विद्रविद्रण ग्रह राभ ॥विष्युः॥है

ग्राभिक्ताची स्ट ने उस्यू ह ने मयक उगलभी महामान मान्या माना हिंग इ.उउइहवं भड़ं वं ॥ भड़ा इं किन् भन्छ ॥ ह्य देश निक वेस देश हैं अले हैं है ने गर्डिम अलभी उन्जिक्न निक्र हैं विभ मुचन्नच एगो द्वथए:॥ स्थितः॥ मञ्जाधलभेठवं पविद्याम् विश्वेष भभभक्षिश्वाचानउद्गापविलेक्येडि उम्हणम्किपेशविपष्ट्रग्निट्स् ग्रीयकेणनक्षयञ्चाउँ प्रकेष्ठ उपन्यः॥ व भिष्ठः ॥ अल्रभ्र्षम्पाद्भैनपर्देश भाष्ट्रकर्भाष्ट्रिगीय दिग्रेष्ठ सुरुष्ट प्रमें दि र्डीयक ॥ भग्रभं समाउँ श्रुं इस न भाषकं राजः। अचे भेगा दर्गानं परि र्गविणीयर ॥ राउना मचनकार्या व रुक्षिकें ठवेड(। मीपाउ:॥ भूडीप

主なられる

भवुभग्डाउ: कलाउद्भवभग्द्र । उन्हास्थम उसिविच्याभाइमानिकभ्या भाजाती भाजाती मान न्त्रा सम्बाधिन मभित्रिंभउगवि एउः कराभागित विस्थियां प्राथित स्थान उउनवाशावाग्रांगमस्थिए हविरे व्यक्त्रकड्डी ॥ मडिचणीअलभ्यम् भुग्र भक्वीएगाँडः कलमः भभन् । तरः प्रिनि शिधहरालक नं भाने मह कं मभद्रे भर् नभी ॥ विभिन्नः॥ यङ्गप्रलहितिक गन्ध्र में चुमानिविमणी उणी भन्द्। मानु जगराव अरक है भः में इरी ये प्रवास गन्न ॥ जदम् निश्चम क्रियं मम्भूषर्थं पन उद्या भक्तउभिज्ञाभल्छ॥ अनेमुमिर्भेष पम्मभाज्ञ इभीनकः कड़िक मैं इधी से। अल्ह्रपभु ५३५म्भ भवस पर्वे जे व मुरुमउर्॥ अल'ह्य'म्सिवलयमिश्र

उद्यः विदेशसनकार्येष्ट्र विदेशिय इकिन्गयमिश्चात्रभण्डबल्बाधा गिउर्रिपरीट्स्यः सुरुक्त नव्यक्तिकाजीशाम्बिका मुद्धार्य गरमा राष्ट्र च स्वाप्त स्वाप रग्रेक द्वेषाद्र व्याप्त स्थान ।इस्। विश्वतंनवक्रक इस्माइ म्ये पडुके यञ्चा चा चित्र य उम्हेक वि उग्र मुरुलाप्तल ॥ वीसप्तः ॥ भ्यन् कि भूमर पुअल भूभ विसाप भारत उप्रच। प्रलभूव पंभूष भविक प्राची रंगभद्वातिरभीरहें । विभिन्नार्थ विंमिडनहार् लिल प्रतक लगर्भप्रनम्बर्गित्र विक्रमगन्मः भक्तकः अदङ्कार्यंत्राएं यन्त्रभानाभाना

बिक्रियु इंक्यु उनये प्रद्रेष्ट्र प्रदेश क्षेत्र प्रदेश के वलकी ने दिशकिशल लंक एगिव दाधि याल्ज्य ॥ ठवि भुभफ्रा : भाषा स्र जीवह वोकाः हिल्ल हर्ति है मुहल्ब वीर्णव धनक देश । त्रु विश्वविक्तिलीप्रिक्षेत्रराज्या उवडी पा अन्डिणनिम् भर्मा भरत मिरिश्विक इप्रकल्या मिर्म गलइयंग्रणारोपिद्रनिम्द्रम्मध अं। जिनक सालभाव यो दिशिक नि 'दुलहें इस इसी डिप्डवं हवे मठ लिड ही एं डिकल स्वर्ण हिराली विष्क्रम् मृत्रभवनव भव

यंग्रेम् मन्यु भडीन भेषा महस्त्र स्वितिश्र रप्रपूर्विग्रम्थमनियम्बल्लावण्ये वि में अलग्यक्षय मभन् भी इए वहार रभाग्भाष ग्रम्थ्रवाभिङ्ख्वाभिङ् भारतक्रिकार्गक्रियान नक दङ्गिसुरा भम्भवल्डरणङ्ग नाभी लभ्मेड्ड्बर्डिभड्ड्व्चि वग्रेष। देभागा अधिक ग्रान्डिंगान् भागे ग्रभस्डयगे॥ वर्षणदंभिउंस्ड्रेक्ट क्ष्मपञ्चक। एनिश्च उरादिष्टे अन चश्रिभञ्चये ॥ रज्ञवश्रूभ्वंनानं ए रलेरेवडी इचे पिनिसूचं उक् प्रभुभ पुक्रमिक्सभयः॥ प्रभुतिनीवभक गिर्मपद्भविष्ठे भरुद्रमभिलिविष् भक्षमभंद्रः।नद्गराउभाषभुउधिक गरवित्र के इंगिक्ष वित्र निम्मापथर

主なられ

रूश भक्त यह भक्त । विश्व क मं इस वाना भारत श्रीष्ट्रमा अर्थित वानि इशकः अवनहवस्पद्धं गिक्रभुःम लगलभारतकविज्ञाभावस्ति उप्रक्रिवम्प निविलंब्यवार्यपरिभद्धरकुषलण्ट अशास्त्रिकाणायाय मात्रविभाष्ट्रवि रण्यं वार्ष । उपाभवविलयभिकनक भवं विक्र्यले ए दर्भा। भ्यति प्रस्वम रहिममिभिउबचिभा पुडलाया, भर्ज द लवरण अधं इधल भाषिलं भवरू के ए द्भर्॥ अलविद्भवभगवडीभयाँ किली काभभीगलंडा, वंदल्य प्रवास्थित दिलयुगरपथ्राथ्यस्यम् ॥ स्रिवि च भवं इप्रभेद्रभद्रवयं रिप्ता अमेक रवार्भाविष्यः अस्ति ॥ भर्म भूमयभर कि डिवारिण कि इं के छेंड गईय

विष्ट्रिक्षिण हर्षि। एउ पूर्व स्थान भन्भ मक्नंभंडराकद्शकिरंभनिकिः पुरुष्ति॥ पेष्ठा प्रिनी भवन वं मल मीउव कि कि दे कि उम्बलभिष्करिष्टि विम्नः। वारे प्रक्विस मिश्रद्भिउँ स्थान भणे दिल्यारा द्वारा विभूमपुर्भ ॥ भूक्र गुरु भन्छ ॥ श्रविश्व वणः मरं चनवणः धन्नमम् च अनामाना हलनइहर्गध्यहुः भड्गान्यः। थाषु द्वेत्रग्रेष्न मन्भिनद्वा कल हिंद्राण है हेव हि चित्र देन विश्व के विश् मद्यभनग्रविष्ठग्रनमभुष्ठगण्यन्थन निपिलभ्राभिउवाभावज्ञे प्रधिक उद्दे मिरण्यगिवयं वेरि ॥ भूष्ट्रमा कि डिमि र्भक्ष उनयम द्राग्वडी मभू प्रभाव मणपभिर्भादिउँ स्नेगुरेस्नव । जैर् कीएग्रेज्वेषेभ्गग्रुप्रमुमुहंबीहि

नबुःभः

इनडा क्षापक मिक्क हित दूर्गा स्वर्ध किए । एउनिम्निया। भवाक जाना कुल कि वा गल शवि । जुला भिन्य क्रिकें भेडिलवर्यगः अगिकेष्ठः॥ क्रान्थीक्षम्भि स् च्चित्र श्रुक श्रालिका यव ए। मनएग देवा पबुवयगविमधः॥ गरम्बद्भमभी भग्रेश्वास्त्र स्थानिक प्रभाव देशीय ॥ नज्ञ देशिन में इन्हें के प्र मग्रद्भावी दार्भेश्रीभाउँ पद्यार देश इवाभरे ॥ युक्रायमुक्तायमुक्तमम् निविषा युन्नमः किरणयेष्टः मिनल ग्रमनिकिन ॥ एकप्रधनकाइप्रध्याभि कलग्रेडहरः॥ भज्जुभिनुभेष्ण ॥ भेक्षाभूभाष्ट्रिनीवाउम्बिद्धाः इयम् रः। इयह विद्यन प्रविद्यह द्योप न ॥ अचाञ्चीमहाभाषाभार्यभारकक्र

र्भः

डिक्टें अहरा प्रश्वेष्ठ विन भएउने भवित्यः भिन्ने हे भिन्ने हे भथा एविन मविपिकिष्ठप्रविद्ये अक्त अग्रेम स उद्यम्मिक्डः पर्यः मुहेद्वाया ॥ ग भर्वमश्रुनिभक्तनं ने इस इस । क भूगीमाउद्गम्यादिक कुर्वामा मुगीमा इस हो माडी कूपमनंगार्थम् मुर्थेष्टलभ्या मीक्षेत्रअहर हुविमागलक हु ५ भ(॥ मा विकंपिष्ट्रक करें छाष्ट्र ग्रह्म किया । कराविवादनकर्भश्राश्चिम्बलउषाः नव'त्रेश'मुरिह्म् १६ महिभाउने मुरुष विन ननः विध्यारी भव्ये धा क्रिक्रिभए। न(॥ अल' श्रिप्रयुक्तरियुप्र रेस्ड पूर् भूउ ग्रव भन्त भवाभनेषु। व ग्रंषु कुभि उनयाद्वरणवागवलं उन्धल न उन्हला हमनेषु रुच ॥ प्रथः भन च भमें दे अपी

नकार्॰

अल्लानिनी। धरुग वेस्विभित्र गेरि लीय दल प्रका भ मुंद्विये नत प्रदिष्य उक्षिक्तल्यम। नव जनवभड्डम म ह्यानिकाउणनिव ॥ भट्टा भुलाभागाट मज्याङ्क्याद्वा अलग्रम या श्रम डिअचं महरू है: युरुभंग भण्यग्भण गर्भः कर्मित्रणे हो। स्ट्रा म्यू मक्यू अ उद्देशमनिदिने॥ अग्भिमवामनप मिन्यः इः यित्राष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्र विश्वचलमिल्कल' प्रत्वद्रभिद्विः श्वरं॥ विध्में विद्रिष्ठ एवं गेरे छेल यक ज्याचापलाहै। चन्द्रद्राम्पश्चि मर्भिवक्टश्राभनः भवक्न ॥ अठल यमभ्रवाचे कर्णवा घउडु जै। अय एविष्टकद्रच्याग्याचीतिग्दःकदः॥ णसञ्चलने पनकेम्यवज्ञे इत्रभन्न का करः।

H. 33

त्र त्या प्रमाय के में के देश विद्रमभड । उनलह उड ५००० भक्तरिष्ट्रभारति ॥ अस्तिहरू इवगुरु क कर्य श्रम्भ निया उ'व्यादिभक्ति इस्ट्रिया उग्रह्म रामपुर्भा केन्य । इस्म भ्रवस्थाल नम्स एक यंक्र में सि भी ।। भक्त उमिन्ना भाष्य ।। एक ही द्वायात्रमयत्र प्रवासका एल स मजराजराम् प्रमानका । मुबल बेम'ाप'यूबभू घुभनच्छाने एक्रपन

नकाइ

भावातानामयानं कदं भिडें इं मकवार लग्रा विद्वारी प्राचित्रभागिरे ना विजीविद्यालियाः भष्टणियुक सड्डिच भिड्ड उग्रवडी। एउ चुन्वण विडेंच्यकरें इन्हें यल ये इस्ति वं भी के ध्यान्य कि विनिद्ध अभि ने॥ दिख्यिक्ष अञ्चय दि॥ भगुन्द उत्वाही कारिएक मयन भाषा द्वार बुल्लाधलां मं म्हे उरा विस्वलगुरुका प्रज्ञमहरूमम् । में इस्क्रिम्यल भक्रनगवितिष्यभित्रजीयं इजीयके द उपभाग्या एक निर्मा करते हैं के लिए हैं कि लिए कि लग्ने॥ भावित्रशिष्टान्त्रिनवारण्यान अने विमापां मध्यप्र वालि। लडीध पीपम्परिपल्प प्रश्रित स्थित भाकिरानि॥ अचार्येभगअलाकिय

**दुउषिनीष्ठिउयम्**नश्चर्भवद्गि म्रुचीयभचविष्टभूरम्हः युः वृद्धविभागे भक्त उर्य भागे ॥ अचा खिला प्रति है प्र भगा क्रिपप्रश्रक्षिय हुंच क्षांत्र पनन मेष्ट्राविद्यं पठम्यमय भागले अस्तु नष्ट्य 01310मा०४।३०।क्षन्त्रनगनक्यं गभागि।। एम इविद्यास्मान्त्र गरीवा ापलयगे।विगिष्णगीववनेभेषिल्। विष्ट्रप्रभूउँ॥ स्पितिः॥ विष्ट्राकः भागमभाउद्धेष्ठचीधुकम्बीकरुष्ठां य स्त्रिंभषक्रेड्नभन्द्रप्रभंद्र। नीद्रारंभी क्वित्रणभ्राभाष्ट्रभङ्गिभाष्ट्र। स्वाया अ नाविष्मभनयःकीउय्युवभद्धाः॥हा रिधिभिक्तरः॥ विद्युष्युपः मूर्युच एवंग घरनवः। भरभी विस्त्रीयमि हिमेमवल्वेड(॥ मिरिउग्रम्यभक्क्षे

नकुः

िविश्वािध्य प्रवदित्वभ्रम्भागीयुर गुड्ड अ। विमिनमिन्न ए दिविष्ठि ए वियम्बन्यभगविषिवंगं मधविष्ठभम करणकेरियीक्षारिक होते । मुन्त्रक्षे गुनुस्त्लयवन्यपुराष्ट्रःभार विश्वा विश्वास्थानम् विश्वप्तं म्वागी जुग्धे भू हेष्। भं सी उविष्टिमिन भक्षक्रविष्ठभक्षराविष्ठा त युभंश्रीवृत्यम् वृत्याम् । वीक्रियाम् ग्रम्मारम्भ म्यान्य स्थाप गर्यभेर्म् वथवं मल हेषुगा ५ शक् पिश्लिष्टिष्य हर ग्रहः भूमश्रुव ॥ हथर्ग मुहस्य लि । उर्देश सक्रे हैं। स्ट्रियः भगां अचार्ष्ट प्रमुखं कुंचेग्रहा। व भिष्ठः ॥ दश्रेर्येभृष्ट्रभनचभीमविष्ठ इंग्रमिनिक सुरुष्ति ।

4. 3. द्वग्रहेष्टभ्रजेज्ञणबभ्यतेषु ॥ निण्यो भग्रम् वन सम्बद्धाः वनस्य मु भारत्येग ही भारति वाश्वी हु इंडिह्र भक्तरमिन्भले ॥ इंड्राक्तिक्क रंड् व **भ्र**पल्थम् इभिग्भेद्धः । दिसद्धः विगक्वभनार्द्रश्च गाउँ विनामि इक्ति भूमरेषु विषय के नाय वन विण्यो वश्पिउने गुरोनिग कि इं एक दिया इन न ॥ दिविद्रभः॥ अनंनाक्ष्यमुद्रश्य विश्विभङ्गति पत्रभाष्ट्र मुद्दार्थि । इत्र स्वर्थि । प्रियुष्ण भणिते:॥ उम्भाभेनक क्रिअनविध्यभ् ॥ हीभपराज्य ॥ भी हेभगेष्। अडमयेगेडगिना क्राक्ने इंडम दं नव बारियनं मा। भूक दुमिनु भ लि॥ इंडिप्र्वभयानिलभद्धि

नक्ष इं

ज़िति विषय उने विकवी स्वांगा अने म्ब्रियिष अध्यानध्यभुंदीनिविणे पिलायगाठवक्रक्ला। भ्रज्युकल्या। वस्यक्रमिपफ्केंग्रियम्भक्रमितियम्भ णदने बुरुभी हरू भन्न वृष्टिम भन्नि के चिषचं वीधिह्व भामविद्यं ॥ ह्य प्र मुद्रभगबेलयगमुहम्। युर्ग मन् दिध नुमचार्भवाग्यः भूभक्ति। हज्जा कुडमनिविधिकरुप्ति रहभागि भरि । वि विष्यिषिषिनगुः। द्वर्षे मरे उन्नवम मिर्गीवङ्ग अञ्चिक ग्रिडिदरी स्क्र पर्गेक्ष्ण पर्गिष्ठ् उप्रभाषाकि :॥ उपन्ति भएलग्र अगि पा००। मार्पिइ कि विष्याश्चिम्य विषया स्वाप्त विषय करलाउ वियंगे अन् रागिवा इवा रेडरिल भएनभिम्मरुगाविस्त्री॥ स्टप

विद्राग्रेयुरुगभर्षि भारित्यु। प्राप्त नेभएनभून नयः मुर्हाडे बिक् कर्म्भणनिष्यिच भित्र एन इड्डिइड लग्रा उथक्येगाउषीम् विश्वनिगाभन मुहममुख्याँ॥ भिर्मेग्रम्भले हिन्न यक्रग्रम्थमा होनाप हा उने सन्देशक नश्वलभी ।। मीडामांच परासिश्रमुङ प्रमयविष्य प्रमध्य प्रभक्त दे कि हैं पार्यक्रिया रा उडिम्पिकरु उनका इभक्तलं माउँ कुल ॥ मा अस्य गभक्रलभ्य विभिन्ना ॥ अद्ग्रम् भसंविष्ठयगञ्च उत्पर्धः। एकामा म वयगमञ्चरहाः भचकर्भा यग्रभ भुविमामियाभानं रुविक्रिय। एक भिन पियंगिपभचेयंगाठविति॥ विमर् भेष्ठ उपयमयगां स्वाभिन्धः। यन्त्रभा

चेनम्-

क्ष्याः अवया डिशु इडि पाउनाभाभव अन्वरभविष्ण सम्बर्गा विश्व स्वरा भूबन अवश्राष्ट्राध्याउभक्तिनव भक्तिन गान्त्र विशान्त्र अधिकवर हु: मुह प्रकट्य विव्यन्नीयः॥ इतिस्थिकतुग्रयोग भूकरलंभाष्ट्रभर्ग ॥ ५॥ सहकाल भूकरलभी विभिष्ठः॥ अष्टववंव'ल वकलवणर्थार्थिङेनिङ्गाउङ्गाभिष्ठकंगा बिलिज्ञ विविद्धःकाणनिभर्यमगलय निर्भमेठवित्र ॥ इभूलग्राष्ट्रमज्ञित द्विजीयं मारु भर में रागक भें रहे मा किं शु अभेग्रहमग्मग्रिक्ष प्रमिष श्चिभक्शाउर्धः॥ नारमः॥ ववामिव लिगंडानिमुहानिकरण्यनिधर(।। भूग लिभएभाड्यम्बद्धाराम।उद्याध गेरविभगेरवं विधित्रध्य भन्न ।

भं मं वि

क्रमी अस्ति भरो हर् असे हत्या ॥ मक्म सीमाध्या है। सहस्का हिन्द म ॥ विभिन्नः॥ नजिंद क्रिके विक्रा विङ्गीकरम्गा अचन हा अस्ति भूड इ.चेन मर व्याड ॥ वण्ड व्याचित्र यो हेमने मुण्यामिखंड्। प्रयम्भानिखंड्र फिक्भविष्ट्रमिष्ठिति ॥ नावकः॥ भ गिपपुरालें मेक वहा खेक मनवड़। न हमारभ्राम् इट्डिभ्र भुद्धमानिक्रः॥ म्पितिः॥ भाषकंद मुभिद्वतिभवलं माष्य न अभेव काश्वक ि उ एवं कि विनयः।करिउं ही क्रमें विश्वधायभाष्य म्निन्गमः मगीरिक मुखाः ५८ विगिति जनभाषा ॥ ग्राच्या ॥ हम्बद्धन ग्यन'हु इं हर्म् असु धरी इय भी इर्भन किथान्त्र अलिए उन्हें ॥ सीपाउँ॥ Laga Collection, Srinagar

कान्

क्लिविमिमिमिकः मचकीर मव गुन्तिम भाउक जम मजाभाषा इंड । नियं उपर विहिर संभार या लंक्डिशिविधविद्दश्याल भ्राम्य भृष्ठे उदिस्य स्थापन ने जेर ने पिक गविक्र नभानं विषयभ्॥ एइउगाउँ **अं उन्हाद्य अर्थ अर्थ अर्थ अर्थ अर्थ** भीयन क्रकन के एक प्रवेद वरहल अवन्त्र रागा हर्गा रे म् प्रकल्फ ङा किन्छ इरह गर्भ महस्र हे महर् म्।। भरित्मित्रप्रजान सम्भागा क्षित्र । यात्रिक्य प्रकार्य है भार है अभाषे इर्णेड्र ॥ ४विभक्त रुग्रेक करलं सम्बद्धारे।। यसभ्यः भूग विभिन्नः ॥ दस्तियार्थियः व

क्र उन्हों। नक्ष कुर सुन क्षा विश्व न व म्रेजिकिन सम्प्राप्त अविकासिन निमाभऊ रु गिति संग्राभा अविकृति हु हु पास्यभग्रयस्थित है महिक्त विम्रिडिग्महिडिस्म्मिनिक्के ॥ किन थवः भक्तमविरागीगर्श्वाक्षिक उभानभी नक्ष इनाम भूतिमे भक्त उभी क उक्' अर्भक्रभफ्तः॥ यहस्किष्ठभ्र क्रियमिश्वद्वद्वर्था क्रिक्नलाकि कभाषिलं पारिष्यमं मिविह्य थे। न न्यर्थास्य सम्बद्धाः विकास प्रथम् अस्त अस्त स्वार स इतिहम्। गर्विभ्यः गुस्य प्रकान् ग्रयाध्याध्याध्या इत्राध्याच्या गश्रुनिष्ठराश्चिष्ठराश्चिपरा। अद्धिक ए **चित्रकिंग्लेगक्षश्रक्षेत्रेभित्रं**य्ये

ी नक्षेत्र-

ক্রিরিপারক্রিনীমসুপর্ডি শিক্স। থিছে ছ' क्रियुश्वकिन गडाभा द्वीय गणिव है ए रुसिशविड्डनयंबलनीयोभ्डर्रे॥ य भिज्ञायभ्य । निम्भेविषवर्गार् मन्भन्निकिशाक्यः भागवनुष्यः भा इ:॥िश्च इ. इ. किन् इ. किन इ भवमा अवसंगित्र १६ मुह न भपनवन भभवड्विज्ञकलमचमन्द्रियुन मिडिविका ले एक्तल येम भचया उँ ५५ इडिकें हविडिक्विण यं भे हिणि च्रिक लव ॥ अस्मः भूमेभ ॥ नश्च इंडिउ रक्भविरता अच गिरिंग्ड भडे कि फि रीउविलेक्डिंग्यवलायावम्भाइ ठवंड(। इथ्वंज्ञे डिविडिए प्रभग्रहें ने वग्नम् मुरु प्रमक्षानिभेत्र विभ नयःभच'रुभंभित्र्य

भ• उ 93 मुक्ति परभद्वणिश्रम् इत्रहारा रा लभक्रागाविवलिङ्धारिकि मिच्नि भ्रम्भिक्ष । उच्च चित्र विश्वेग भन्न इ नग्रमुगगनन्कलियंकिष्डः भूगलस् निहित्तेप्रिक्षाप्टः मुरुः॥ गेप्रिक्षिडि विणंबमित्रभनयनगीविवादिकिक भन्निमिग्र भूयाडि भरम् उ धिन्दी स्डिक् र।ग्रिमाथभिउवभव्यक्षेत्राः म्। इं अद्गं अभ्यागाउँ हगवि भूति एगङ्कलयेः॥ एक्रिस्टिभिमिमिनिभूडि क्रलगिभिभ प्रमुमिकि डिभरे भिविल प्रहरी।राष्ट्रिलियेगभग्रधिकीर्या भीलभग्रधिमा एवदं विवाद ॥ इ रंभभाग्रहःभचवर्तं गंगेष्ठातिकभ जैविमेध अविविष्ठ भक्त लम् मु हुः॥ **अधिम्यिक्तरुग्र्वभक्तरुभक्तरुग्यम्य** 

नदःनः

Mohd. Ashraf Peerzada Collection, Srinagar

महागग्न भक्रालभी विभिन्नः॥ क कभाः अद्रुप्तं अभद्गित्रस्थापुत्रभाषु लिख्ने इस्मभ्यति यूग्में उद्या । क **उः धन्द्रज्ञ सम्बद्ध मुल्के मेकेन विमर्ड**, उ पग्दः भाउभंद्राष्ट्रायः भनवपाद्भक ॥ भेजनि ग्रंडक भर सुज निमंपिव स्कर् विक्रया ब्रेकविमहारा हमयम इश भ(॥ मर्वे वेश्वे वेश्वे वेश्वे वेश्वे वेश्वे श् अदर इ.स. १५ इ.स. इ.स. १५ इ. इ.स. माश्रविष्ठिषद्वभूमम्भूठ मुम्भगुउ भर्गित्र अविश्व अवस्था अवस्था मन्द्रीममन्द्रगणाष्ट्रभुसिज्ज्यमग्रम रुभ्। भष्टद्रसम्युल्यारे वेपाउँ वे डिभाउँ ये : ॥ यहं गद्र ध्रमा उधाउद्देशन निभावित्रभू॥ मीपविः॥ एकं मुस्मभ ष्ठ्राम्भावनी अनुभुडी यंगुनः भवंगा च

4. 4.

भद्वणञ्चनवभद्गिष्ट्रणलाड्ड । भञ्चा भिम्रिएम्बरवर्भगकुः भिष्ठः थान विमंपीअलअदिम हुभः भन्नः हुय ने इ रः॥ प्रभग्प्रस्वल ग्रानिधिस् मुङ्ग प्रमुर्वि ॥ अट्चिर्हिन्द्रिन्द्रिन्द्रिन्द्रिन्द्रिन्द्रिन्द्रिन्द्रिन्द्रिन्द्रिन्द्रिन्द्रिन्द्रिन्द्रिन्द्र मिश्रिक्ष इ.स मुक्त भिउन ये म विविद् अउ(।मेर्झिरेह्गअउापलवेश्रद्धवाडी याभाउवमलक्ष्माः भागाः ॥ अन्यः क्नम्द्राष्ट्र प्रमुग्रेष्ट्र प्रभाभी श्रुं के विर्गन भम् विद्व व क्ष्म के व ढर्भर्भानभनाभाषम्। एनभक्ष विश्वः। भट्टः क'लः भिद्विः सुरु भर्डि भभनभवगमाएस। भउत्रगक्तभारी मरिष्ठाभ्वचभन्द्रमधिगः । सर्वि मितःभक्षः भनाभम्। मठलमः श्रुः॥ नगरः ॥ विमापाकि म (उद्वापक क

श्रिकेशन्तेः

मिष्ठालका । उद्देश हक्षण एमि क्रियंगः भूकीरियः ॥ भक्रद्रियम्भण्॥ अंक्रिवर्ण अक्रामपुन कृतिह मालश्वामञ्चाश प्रभूकलेनेथल इ र्वे विश्व विश्व दिश्व के ले स्थित । है भे विनी भवन्य भया ज्यानि वित्ती भी उ नभ्रष्ट्रविव क्रिय इडः धीवक्त येड(॥ भ उर्वण्ड्र अपि इसम्मामिश्डम् ह भाष्ट्रिमीवर्धे इंग्रिमें इंग्रिमें मान्यहारी। म न'ब्रुफ्रियनइक्रिक्टिभाइवाभगः मुर्दः॥ विभिद्यक्तिभउद्भव्यःभचकद्वस्वदः॥ भन्नयगन्न इविडे कवेडेयिक। स येगेन अडिड भिन्नयेगः ५व मिरोह्मभी ही रुधे में के मी कलानलिय ष्यं चिथिनेनि इति कृष्म

4.

वियइ द्वं पमया न, अन्, नसन् जुउभी । गुज उर्ग यभभाष्ठ इरामही भारति विक सन्ति कः।भच व्रवाययग च भञ्जा कि इत्र ३ ३ ५ ५ भ्। म्पिडिः॥विम्ह्या शिविन्थ्य उनकार्वा भुरुवा सुराधः। इनच्च भागम भवकुः संध भूद संघन इति धिर्द्रु ।।। भक्तर्वित्राम्भे ॥ विम्युचिगांक्रिक्क वीदें उरम्याभें उरभाक्तरहै। यापूरे विन्हें अिंदिन विगः भिक्क किन च कुरिनं अस्त्र भी मा उडिभ्रज्य उपग्रम्कवल भ्राड्या विभिन्नः॥ भिरुग्रामिष्विष्कुभ्रम धन्मीिं भाषयम् हयं मेच। भरगक्रकृष्म प्रजीहर गयने सिक्षण यने सिता अरा एएभक्कित्रवंविष्वद्कीविडनिड्भ इं ममभक्त्रीनं यश्च प्रध्ये दिसिष्ठ भ भ ॥ अग्रहेक इत्यायी राधना पुत्र भ क्

उपन्<u>य</u>ः उ

अन्य । विश्वक्वभग्राया द्वारं ने भष्ट । ला श्वाचाः ॥ जधकक्ष । दिसक्षक्ष उत्तर्भ का डिइस विकाश भगः पृष्ट भुनाभिष निष्कु हु ख उक्र सा। निष्कः ॥ निष्कः भरूभ लहाडु अद्वः अद्यं भूकी दिउभी। गर्मे भर् भलक्षेत्रच्च अभचभक्र्भ॥ ग्राचुगा किरहेन्थन दुः भूगि इद्दिवम्पाः। भष्टगर्मेभपॅकिकिन चे क्रिक्**र इ**ये॥भक वक्रक्र एं विमिध्ना नामभित्र याभ्य भद्रभुभनभद्वायं यिक्षिभ्यं ठवंडी उरुषः भ्रष्टकल्यस्य र ३३ मुरादि ॥ अद्ध्रमयभद्वायंयिक्यश्चरं यने वर्ष उन्मयाम्यः भष्टं अचापः अच उर्यामः। भारति स्थानित । त्रित्र स्थानित । भन्ने रुवर्न मी उवसे भेडा शार्थ। उर्हा म्बिलभीभ्यांभिपर्छोहवंडंधाभवम

1.

नागः॥ मच अभनभन् धः इतिकृश्य भीभेडा।उष्टेबा चेक खा इंडिज विकास वाना भिडा ।वसिष्ट्रिम् द्वाराविकानकानः ध म्यालगड्डिकारिय । इस्तिय इस्ति क्रियान क्रिया अपराज्या अपराज् ननेभक्ष्यावधारामम्भट्यादिहभी कृष्ट हेमिन मी विश्वनं सन विभिधं अनु स्वास मध्भक्षमुमुध्रदेधरागामीना भृष्टक ल भक्ताविभिष्ठसिद्धः ॥ मसृग्दण्णिक रे। अयंभभगरभरभरेषं द्वां कुबनुर् वरभूमाना अपिति वे साथक भयान भा निर्माद्धितिष्वतुरुष्टः॥ अन्तर्भन् वनामिय्इउउर्भचिन्डमक्षयं वर्षे वर्ष विमंगभनभिष्डि उद्यक्ष्यायं ठवि उद्गीन मिडभ्। यद्यग्रियन किवरं भुद्भन मनद्भिमनकश्चिर।मर्नेमयर् विव

महरू

किथा डेग डेंग के नाम किस भिक्ष प्रभी मि वेह्निविन्यु अभू उविद्यक्व इ (। भव इड्यूसरिक्ष अन्त्र ने मानिक विश्व में भक्तिकिए। भवनं में : भें सुषक्षिमाएं अङ्गीत्र व्याप्त भारा गिभाद्र निश्च जलिविश्वें :।। उर्वमा अन्तरं पर् जुबुब्लिश क्रिक्सिकः। श्रह्यम्म अपूर्व वज्ञवंभन्भंड्रभाविभव्निच्च ॥ भट्टम रमिभक्रविकियियः प्रसीिकशिष्याः मउ बुधभाउनश्चात्रभद्धमञ्जाकक्रयः॥ या मवभगगदिकिनक'लविषविष्टिंगिल कलभायनकलवर्भमुरे॥ उम्मम्प डिः॥ याविद्वां में ययन प्रिडिः श्रुडिंगे कलनिविकाकाश्चा मुरिहर्वे द्विप्रिपर्राप्त क्नं रहश्में उस्निकि रधूमिसून ॥ डाउ गमिभङ्गभाषज्ञयामनभङ्ग में भ्रष्टाणि।

93 1.

राम ॥ विभावाः॥ विभव्यनग्रिलकात् जिप्टिक्निका थि है हिंचे दिन रिकेट कि मार्भत्रणित्रश्वका । रिवादिणातिभाव रभक्ष्येष्ट्रिक्ट्या के स्वाप्त क रुभयनग्रभीउकलप्रुचिद्धि॥ जुगगु चिभिउमम्दिभक्त्रु उभ्यान्य स्टिन् भे क्रिडिभाउनिकरक्रिभंभस्विच क्रिचिए ग्रिलंभाताभी भिनेश् हे स्वानिधे ह भर्मम् रीभन्न है। भन्न कि हम्म है भिन् भिम्गाक्भीडीक्का॥ सुद्विद्वित्रकुथ विरणगेथ**पम्रभाष्ट्रभचरणकुरण्य**ेषु ल्लाम्स् भ्रमकात्र्यम् इस्स्यान्यस्य नगम। उपम्ये डिलक्र लिथः करें। भरूभलभ्।केलबमजनकि भुभक्र लम्बिश्रिउमिनहर्।। गाववविश्र बिल्याभव'लवंभउउविनिविधः।भ

मंडि जे

इड्लगड्रं साधितं द्वां स्वाहितं द्वां समार स्वाहित स्वाहित स्वाहित स्वाहित स्वाहित स्वाहित स्वाहित स्वाहित स्व अल् ॥ इभमभुनिम्निम्यम् भरु व व क डिला शाम मंबिएरें गम्ये वे इडिरे द्वीन भी भारत के किया महिक्य भाइ कि कि के शक्त कि में नाप गरः अद्याष्ट्रयुक्तमभायकः॥शामा विषयुभेलभाग्याः मायविगलहारा नम्। प्रापश्यभाष्ट्रः अगरेभन्य भिडाय भार्थविप्रज्ञनिधि॥विभिष्ठः॥दिनिष्र इड्सरू वित्तम अचरु विश्वा मजले मीपितः॥भरू हु १३नज र् इलयम् नःभनः। धनुः हेर्गे ह्या वभूषानि मुविभ लंगनभ्॥धम्गढलभक्षंग्रभभिभभि विमारविड(॥नप्रमः॥ याम्/मनम्नार्ड नै:भद्रुनिथाम्। मंकलभ्। नरः भूभेरिउ

भ.

33

नुमेमीरंमिः भाष्ठभाष्ठाः विविधिन निर्भालिं। सिम्बुः। इतिम् विभिन्ने धेनमिवशं स्ना निक् शिक्षः। विभि भाउरमेउ क्रिनिकिक् ध्यान भाजिता । उम्भएभभागि भ्यालक्षा द्वा हिन् न न्त्रवन्त्रपुउद्धभ्।श्रयभवाषिभाग र्धर भडि प्रविद्योगिलः क्षेत्रीव इत् निधिष्ठ वेन हवका रिभिक्तः ॥ उड्डवालका भचेषुगभेषुिभाभकः श्राहुला के ध द्विग्रमुत्रभाभागम् कः अच्छवे पिभाभः पश्च क्वेपश्चित्रभण्यः॥ रविम्प्रशृष्ट्य ॥ विभिष्ठः॥ मैं इंकि अभि प्ययात्रभागिया मये द्वार मरा मयः धः। हरणिभभेषभभगउष्मलि उद्धितयं विनाधि॥ भष्ट्रमामिभ्रम भागिकप्रयालभङ्गतिशक्तिउच्चिम्भाभ

मंडिं. मं

Mohd. Ashraf Peerzada Collection, Srinagar

अग्रिमान निषिञ्च उत्तर वर्ष भारत । अविश्वास्थ्र अप्रमानन श्री प्रभाग ज व किन्निव । यभिन्न मधानु कलेगक प क्षवज्ञान (उज्ज्ञा कविक्न : भरू। विःविधानाः श्राम्य स्वापित्र अञ्चल्ला अञ्चल्तियित अभिक्षा मुभ भविक्ववर्। श्रीकर्भ ५३१। अभम र्शिंगलन् अर्डण सम्माखनामनिर्भल भाजूमन् किप्राचेम ॥विभिन्नभिन्जा ॥। सुब्बिक् च्यारे एय भित्रामे ३ घवायकि भिमु उभाचरिमें ॥क्राधिकिम्भभंक युरक्षभङ्गभञ्च । श्विभभभं क्षकः क यं इयं कि ए भिन्धाः॥ वायभाभाकः चक्लग्रमभश्यवणि त्रिभिभ उचेडर्स्य हेरालिडराउः॥ विमर्भ

り 3・ 3年

भूउम्इ इयाग्यभुद्धीयत्व। इतिहासिया PATALONA, COMO DE LA PORTI भिष्नभेषिडायान्य महाविक्षानाः होति रस्टाउद्याणकवाः। अध्यो वे ज्यान इक्रामिइ विक्वत्वर्णन्य स्मिन भःश्राद्यं जियिकीदिउः। मडिजिद्धः ०३० मगर् चारे पक्रामिक्कि ७० वर्षे ।। न्य नकाय न विभाभः श्राची भा दिवस् जेडड्रे दिरास विभयम भूड (इ भार्थिय क्रयमभभविद्वात्र विभित्र ।। गन्नः॥ यमकमाभमकद्रश्राजीक न निर्देश स्थापक मा इ:५मभेविएरेडिइरिवरननियुद्धः॥ रविमग्रप्टेय इनि विभागविषय।। भिष्ठः॥ भाभपूणनंकिल म्वकरभञ्ज पिलक्रिनकद्भद्र।यहाभवाभन्र अयार्विव फक्रीकिविन मभाउ॥ म्याः

मर्डे.मे.

इभन्द्रललकालभ्या भुविभक्त च्यार्छ विवेह्ण अद्धारा ता वा नुग भूष विश्व निक्दि दुर्भन्द्रलभ्य यस सम्मार उन्भानि॥ वर्णः अद्रुत्तेन अपन्यापः विज्ञक भिन्ना महभाषि। एउँ फिना क उविद्याभिद्रिया एउट्टारमभद्रभाभार प्रस्वित अस्। निः अद्विकभाभेषेति श्लमाष्टः अरुडः भाषः ॥५०॥ उडिभक्त उड्डिश्कु नियक्र लेन्स् भाषा अवर्ग माथ्कालभ्य रामावणगम्भवन रंग्रिथरंग्वलभ्य विद्वावल्यितं प्रतं ग्रीमा भारता भाषा विभिन्नः॥ मधुवना वल यइउर् अदिवि एवल भए उभा वल इय ण्डइ प्रचम्र व्रवत्रणभ्य भ्रम्बाभ्य लें ॥ र पेर्डाले भचत्रिम्न भारतः मार्थ्वि वर्षगभगीदालग्वैः।वीट्घरगगनाउँवि

34 1.

पविधित न स्विथन न इः ज हः भव ॥ ज मगमर्गित्रिक्सः॥ अच्छिक हम न हा मनचर्गाभुषध्रा । जभन् स्वतं इ हुगुल्ड विराभम। दिगेथा इश्व ल स्रवेष्ट शुरगमङ्गा इंग्यू इंग्याइडः विकः भक्तः ममी पुरः ॥ भवनके द्वेय नमनगद्भविष्ठगठनाभी। रगन्न इन्हें ब्र यन्ध्रम् मार्था । स्टूब्स् म'मनुमिनिरहर्मिन्। भववाभवेष इभागविष्युमेरिडेयंभ्या दिश्वक्रिक मम्मेश्रदः पुरुष्टिगुष्टित्र बिरु ब्रुडिश नव विद्वरूगणलगः भुगले भेउ विश्वद्भः हवें मभ हक लश्रि भड़ निम्क रेड्र ली। ने एनएल जी चुज नवा चुग उचित्र पाप मग्रद्भार्थिक्षेममभित्र गर्भ उ:कभएरभु असु :। मिनका उने ये थिस

क्रीय व

हैन विष्ट है विषय विने प्रकर ।॥ प्रमणक इसनियन्थन्यस्भितः प्रकः मि एक नियम् असभ्य सम्बन्धित न्स्ति इत्र इत्र ॥ थफुभनवभाष एन भागः व्यक्त विस्मित्रं विस् इ ब्राइडिजिंड श्रुष्ट गरे वन श्रुलिंड :।। अभागियनं द्वाति विगाउ मुद्रः सुरु भूमन्द्रः।वश्वभामन्याय एद्रभ्रःरि भयम्बर्गेत्रविञ्गः॥वप्रभभितुराप महन्त्रेनिमनिभद्गलेकिन्द्रिर्श्वर ववे विवार रहम्म इन्हें सुरु दिले भ उउभ मीपितः॥ यवमविष्यम् भनगूनक्सभविक्रिक्गमरे।उ वीब उ प्रमेवविक्रिनं भून्द्रिएं भग्न भवा भूके मि उः॥ विष्टउगगनमारिकित्रेण्यकि डिवमडिअग्यः। यवमडित्यमर्मिडेंब्र

भः म

ण्येविक्रियाणग्रहण्या शहरती निम्ना अस्पद्धा सिन्द्र विस्ति हो र्दिणि विजयमा अविभावित्र ने गम्बविप्नभचक्रमित्रिक्यभित्रिः॥ প্রসাদ্রদেশত। বিদ্বীপ্রস্থার নি ব फिविमर्जभिषित्व नुगयर है है णियमंविगालयाः इंडिड्डिश्यस्य इंडिशा विभिन्नः॥नीमगङविभविरिगङ्ग्रह्निष्ठ **इ** उ स म इ गेन्द्र प्राः। इ रागा ४ व भ नु द उ हवित्रदह्मभानेडे॥ सम्रहेश्विडःक्ष दलः मुहिति ३: भहुलः प्ययशाम् इ विलिकनभित्रःभचे इतिष्ठलः।प्रमः जर्पि॥ न'इ.जेंड्रं पीरुविजेंविधभर्भात्र पिग्रा अञ्च इर रडं वाले मानु रहे भटवा किनभ्। अकिट्टकियुद्धः भन्नेलेयव् ग्रियरिपवा भन्नविमिष्ठे हो ग्रेसं प्राथन मि

ग्रमः भू ।

बल भूकः॥ विभिष्ठः॥ ठवराषुगार्भञ्च बर्क विश्व चुगाइस्रागनमगः। क्रष्ट्रः भ विद्यविद्य लेशु गू मिठले विद्यु उर्थे मा। महीयावया प्राप्त एउ इतं उत्तर्भा सप्तार्विक्षा अपना मिर्विक्ष वर्ष दिनवभैमकंखावम्बनाम् भिउंग्रमः।व इ्डियोगभने अचग में दलं हवं इर्॥ हव न किराडे उविहिंसे भट्टगडे मगुर पुरो चुराउँमनिक्रमिनेभम्ब बळलमः म माक्षभाः॥ भग्याभाष्ट्रहिभादाः भू ग्रें मिक्त विं। नपंभक्ति ध्रीपी भि र्जेभारं विष्णुकः॥ असनवग्रिभाषान्थ क्यः॥भ्यत्रमिन्भण्णे॥वर्षम् इस्मिभ भक्त'भव'लंडिभंगिगीभेमभक्तिभनीलेभ कॅ अवि दुरं प्री प्रष्टकं हिं पारिः प्रकृति राभक्षेत्रभष्ट॥ यव मञ्जून अग्रम् व

			-
	च	3	H
	T	4	8
Mohd. Ashraf	Persada	Conctio	n, Skhagar

भ• र•

भानिषप्रः॥ भक्तर्वाष्ट्रन्ति ॥ लिएक प्रवनिष्यम्भनिष्युः विवादिक्षिः भक्षलम् **एउँ लल्लि विगक्षित्रे अ**ने स्वार्के हुन्य हर्ग। मुवर्मनानि॥ सूर्विकेश हर्न स्त्रिन महिमारा स्त्रिन क्षेत्र विश्व स्त्र स्त् मः भगिकश्मिश्यम् मूर्तिक भद्धाः। अत् मीनं भनि हिन मिडाम किल्ल हिरा कुल्ले औ नैप्रनेद्रवन्तिकिसुउ।उध्नियभाउ(॥ विभिन्नः ॥ प्रमुख मिविधमे चुरिपल रण्डाणिकप्रनि: श्रुड्शभश्चियद्भ नभग्रमात्रिकंक्यच्चभातिः॥ उस् यभउनानिचाणापमग मीनाविसभं उच भार। सापिलानं लेकानं चारिसभा स ग्राप्याउभाः॥ भाषिभाश्यान्यम् अ द्येन्द्रन्थिवं।विषव्यक्षभ्युत्रेष्ट्रा भग्निमज्ञेष ॥ भष्टिकिममुर्गगलेवल

गेम-भू

बुद्ध अस्तिक । यस गार्टि भर भी मं स्टिंग चराकः इडा उद्यार यूजम विक्षेत्र वश्कनाराङ्ग ॥ भनिश्चमगुरियाणुर्गिव शिक्राइड्डा, सुद्धप्रयेवभं श्रु स्विक्ष भन्द्रायः इत्। नमीरणलं उद्यक्तं भवान विस्था ने गुस्त वा गुर्त भप्रभूष्यभग विवस् । से भेड़का यक सुथर का नम् चवड्।ग्रू चृविधभन्ते चयः मानिक्र डिसं । मजदिंभन पुर्धे भवल प्रभग भुवार् ॥ असर्भकर्राल मुरुम्हग्र भाषे अक्रिडिवि माराः॥ अद्रुष्टि इति मुअद्विस्त्रभ्यावः। मस्र्राष्ट्रगिति नेनेप्रादेशकारिः। मक्षिषिची रगुराहर भामियल कू कृ विविक्ति वेभः भेगष्टायर्भः मिराग्रमेषे पूर्ण्या मिकिविष्ठउलम्॥ यमग्दार्णणं मनानिग्

4.

अउगामिलक्षिष्ठभाषवर्गे विश्व भवयुग्रन्त भडा भूम । जुर जुक् कर्जन श्रुणमवम्बिमनितिविद्यान्य ॥ शहन पाइभिउउम्हलं म्रकद्गश्चर् बल गुडू वस्त्राम्प्रापय्जेवधर्मार्थः यम हो का अध्यात भाग अध्यात विश्व भभअरिक' स्वयं में माना पिरा में अवल भी अगजवयंकरवीर भर्द उभू कि ही भा यवमित्रमन्भ्॥ मन्मनीनक्नण्ड केंश्रभ्याग्रह्यमच अस्भी। इंभी मम्बेडियम्बर्ग्यहोस्याही हियम नखा मक्रामर्गनी द्वाराभःभीउत इभिभीउभभ्रग्भ। भष्ट्रग्गालवलं म क्षान् भीउविभरगुर्वेः भूमीवर्गभी।मि इक्ष्म इक्ष्म प्रमाण्यम् वर्ष्याप्रभ वलभ्भाग्य मुन्द्रिश्च भगत्य मुज्ञ वम् वि

श्रम न

इन्ने हु चनुत्रन्य ॥ भर्ष मुडेलं विभलन् नीले डिला झुल इंभिफ भी मले फे भी अक विलेजिति वस्ति वन महारामनं गविन ब्रुखा गर्ने इने कि उद्देश में में में के लेक धूनिम्भव्यलंगगार्धमभाउनंड' थ्र'ग न भर्ग विष्ट्र इंशिंड ले मंडे ले भक्षेल मधिभम्भग्राश्चा मञ्ज्ञक्रः भरित्रभक् उन्मी विडमन भिक्तं भनीयः॥ मण्॥ इडिन्ड अर्डे रेडे राजा त्रिका एस सम्भागा०।। मुब्ब अक्रु उपित्त न भूक रलभ (॥ रणकी कुल्भे भक्षे विषयुक्तभाग्र भाग्य पुरु म्मक्षाम्बार्भि । मेर्ने | मेर्ने । मेर त्तम् हिः धिवयुन्न ॥विभिष्ठः॥ गा सिर्म् भर्गाएउपनिष्ठक भूमीभ उथक्रमस्वलकम्भड'ग्वलंभर्गः॥ भा भ्रम्हिन्यावनिम्द् (उन्नेहिरीयग्वर्गप्रो

3/0

सिगमिकपक्षलारामधन्द्रभाषा अध ल उठवा मुख्य प्रमुख अल्ल भारत है। विन मुक्क वा मुर्दे से हु। की की कि है। विकास महम्मभक्रभद्धरहण्यहण्या वर्ष रमभाभरयद्यविमविनाभक्षभी भा नभेपपुविमह्नर प्रमुख्भवागाः विमेषरानि। इसम्बर्णि धर्वत्र वत्रने नि॥ भारति पालि विधय अने बहुनि भचम्डज्ञा । कुर्यसम् क्रिज्यम् निग क्रेंडियक जिमाहिसक भी अ च'उर्यभाननभग्ररूनगग्रह उप्रम्निनभ देशिल ॥ भरी भ्रम इपिइम्बंग भ्र भउरुं महाधीवतानाभा अमिरुद्रभाष्ठि शिमिश्वनिविल्यानं भ्वमितिष् नि॥ अलिइनैइनिलवामण निरुट ग्रुं । भ्राचित्र । भ्राम्य मिर्व

०० इ.स.

भुद्धवङ निभवंग्न श्रुष्ट्रभूभग गङ्गि॥ भारतिसामा मूवल हर प्रमुक्त नारहर धिनिक्रिमनि।क्रुगः अनिक्रिष्ट्रेष गर्व वृत्र कु उपीक्ष श्र श राज्य निरिष्ठ्र व अग्राक्ता इंग्रह्म विषेत्र प्रमाण्या विष् विविवेद्ध वेद्भ देनैः भूमभनयाति॥ इस्म नजननः अज्ञासङ्गिप्रकारिंग कर्रो क्रमण दिना भीता भनिमा अहि ब्लि व ब्रूनं दानिः भारतिक पडि। भवपुना भक्रविकिभित्रष्ट्रहरूभङ्गयः॥वेनभिकिवि नमः शक्तिपद्विलभेगरः भी एकप्रमुद् युगभक्त अञ्च छन्छि। भीरिउमाहिष क्रिंग्या दुंमंविनिति मंड्। ममह्भीरि उपीन के मध्यभुवश्या भी विडिल्डिनक इग्छ्रमिविनिक्रिमर्॥ मध्यम् इक्रम व कर ।॥ नीलक क्ष्मण विद्यापिमम्

サルエ

श्रुरंगित्रिभाः सर्वेष्ट्रग्रा लात्रंगर म्बस् 25एयः ठलभाकिमाई।। व्याभाः भूवा भेथग्रादिनाचे जनम सन्द्रियग्रास्ट की ि:। भगवा भिज्**श** प्राचित्र गाय सुवित्र भसु प्रधिपगक भिनी हिः॥ उष्टा अन्यिषितः॥ गमीगमी श्रममं वश्रः भेजः किश्चिर्ति िः भूभिउद्यः ॥ ५विश्वज्ञु इ इ इ ग्रामध्याण्यक्रमभी ॥ ००॥ महल ग्रम्करलभा विभिन्नः॥कल्द्रम्बन्द्रण क्रिंग्स्य प्रभयुउभ्। अतिभद्धविवय्भ म्मिम्ब्रुव्यक्ति। द्विः मभू छलंशचं लया पीनं व पै: भज्डभी भज्रा पे एम् यं उ रुक्षयुण्डमउद्यः॥गमिश्रक्षर्भन्गभ करके।। उरमण्डभण्यस्य उर्गिष्ठय भीनभमनिउद्भराभीलगर कृतिवनि 

०३ अयर-

वक्तलक्ष्य समस्य करा ।उत्तर वास्प्रधर लाश्चार् जिन्द्रावर्ते भक्र अघा अस्य रुषः अग्याञ्चभच । द्रियथ्रषः उत्रिभं रूक्चिलिकः जलीवस्वलयभग्नः। भ जैननभार्भमध्यकः करिश्वार्थिक क्शक्रिउडः॥ सक्करः ध्युरुप्राभिष्ठः ध्जश्रु इंग्डु भंद्रभनीम् :॥विभष्टः॥ डि घिरक्रगणवारे दिगुली भूगले महभू विगञ्जी जिलाः थापुराले विष्यु विभाग्ने क भ्र । इड भ्रज्ज रेवनवं श्रुडेन ग्रंवना पिक भ्यान्यकिरिगुलविद्यम्पविद्यम्पवि उभ्राउभाउन्यन्व द्यान्यवीद्वित्तक यड्र । यद्यानिच लड्ड या डिमी थः अन्तर्भ य'उम्।। नग्रवीद्वाय'म्बिडे छ'म १भम भट्टलभ्रामचगुलं भीउँ किनैः अलि उत्तह्य ॥ इंडर्गुल्णिक प्रयम्भात्व वक्ष

10 10

भाग्रा महल्या किल एन वर्ग वाउन है। क्रिनफड्डुजः । यरभाक्षा वर्षे प्रः भार । उद्घेल कव अर्थ भारति अः विशेष त्र हक न न भग्र देश हैं। भन्न कि ज्ञान यन रंग अद्किन चरण रंधल हैं इब इ विअप्रां अरमित्र का क्रिकि निगलक्रान्य। श्रायन्त्रमुङ्ग्र भक्तमगंचयंगे लव ह्यू धाउं डर्। यो ब्रा भिग्रज्ञ भुगरं एनलं । जारण सङ्ग्रह धने ह षाया उत्रुपः श्राप्तकनदीनं हा संग र र म कि विर र भे। नव पिकन नि उभक्क महत्व मुक्रिक्षिय प्रमुक्त स्थान भी। वश्चनु राम्या विश्वित्र मार् भेड्भार् । मार ापन्द्रितिउँ एकं विना है एकिके करें। मञ्जूष उध्रस्य भएसु यनि उठव स्थाः। मन्त्र व मञ्ज्यादिक के विद्वालः ॥ भरधुमिन

०वे अयर्ग-

भिड्डिइइउंगराम्सुरः। भन्दं मंस्री न्याहिन चेवविमद्गरं ॥ उद्वालभाषाना विज्ञासी विशेषानुष्टः प्रापर भरू उड्डाप सीधलिहिश असे एग गिभड नः पण्ना लथुमिन्नम्बन्ध्व मुद्दु हु इ अनभवय ने म । ॥ हिग्रुडेन्द्र भूकाना द्वाभाषा प्राप्त स्था भा मय्ग्रीक्षाः श्रुवः। यहर्षे श्रुवे हुज्व लाविर्धेष्ठभग्रमयं बीच्च लेक वर्षाय क्रिउनक्रिननाचार्वकराची उक्रमानु १५३ डिक्स श्रम्भ विहि द्विष्ठ का ना अन्य प्रम यक्त मुझ्में हे हर दे निमि उभाभर इड्ड उनिव्हलंले । विभिद्धः॥ मासिर विश्वरं वा भवा द्वा मयः इभार (क्र कद्गलिभक्त्राः सुरुग्द्राः सुरु द्वितः॥ नग्रमः॥ग्रायकिष्वहात्र्वात्रम्थ एगः मुरुः। मुरुग्त्रभूष्यद्वार होस्

#9 4·

भगमयः॥ अद्षेभमनि गन्न के उदा कार क् शापमगः स्वयुन्। अत्स्ययु स्वयु भेग एः भचक द्रभुष्ति भेष्टिति अवः । भेष्टे ग्रॅभंगमीनं भूत्र नह वह की खेश के ध्राभारं प्रिमरालं मवीक् ला इर्।। इन्हे मीपितः॥ ग्राभनावलेकाक्ष्यास्थित वर्उंग्यून इश्रिक्षिन भेश्रक वश्यभन्द डि॥ अनेनमग्रिध्वर्वे धनवर्डे हेवध म्पूर्विगाउ ॥ विम्नुः ॥ चनुनिकविशम मुरापमारुवः मुरुमः। भागमस्त्रश्च म र अभा मूर्र स्वयुक्तः॥ वरदः॥ ग्र्क गम्क्रीलनवं मञ्चमम् मार्ममार्थं मारावनः भूर उर्देश यक्त स्थिति देश ॥ उर्देश जगम् समुद्र समुद्र जगगीव भी। यभग्रवः। हमानवामकानाभग्राभक्र उलाक्तिमः धाष्ट्रभनवमः भज्युष्टः॥

ल्यपुर

07.9

अगा सं यु अस हा गा मुक्ता था अवश्रम मु नवभन्गभ्। विषम् ष्ममहु प्रजु मिलिइमे नकःकन्द्रः॥ अएव परगः प्रनाकि भीनविकारं मके जिन्हें ने अमिए इ विंगित्र वित्य दिया वित्र पार्ध में जीय भाजभाग की ने दिकेल भे प्रस्त्र मा भिष् क्षाण्याम्यक्षकहुन्ने निर्माण्याम् वगदभंदिङखंग्रिधनिरुपण्डाये॥ अद् ध्रामिल्लानिर्डेडभागंग्री उध्रहरभाग ग्रॅं अभभे द्वां । उउभाक्त दिउये हर्णे डिगा य उस्मित्रं अप्रचेत्र मचेत्रि म् । रुक्ष भक्तयंशमिक्यंम् संस्कृद्रअभ्॥ एक्रभ विगरः पिएर मिभविगर अस। मधुन मः छल्म इविधरीई । उवस्यार ॥विभिन्नेः॥ रुपफिठलभभन्न'ग्रेंचुनिलनः अस्य मीध्याञ्चारारान्यम् किञ्चलव द्रारा

#3 4.

पन्नेशिक्तिनः श्रू हृहण इत्या विलाहा ममिडं वलस्य दः अवकः द प्रवितः ॥ स् .... भविहलभुक्र विद्वत्रीयंगङ्गि अगार्मनरभूगेस्था युद्धिकारः मुहद लानिविन सथित पंभानिय सुनि इरंथ विवचयित्र ॥ भक्षु क्रिकिः भह्नकं विन्तं य भसंववेत्र एक लेम । इद्विः। इद्वेदिक च अितीन मेव क्षिप प्रयंवि न भाक प्रक्षि औ गणिकं प्रेंचियीनक' लेख्न इ'विलय मनवं मक्ष्या वलावलाप मितिले भ्रम्थ यिमदलम्भवम्मिक्षः॥ नयमः॥ ममिवलभा सेक्लुं भ्या किंउरग्रह वल करुः। वलग्रजेश्विभक्तियलविने ठव्छि निषिलापगाः॥ ग्रेकियः मुठगः भच ग्रांश्रहकलभूमः। समुठम्म मनुहम वलविज्ञकिनिपिभा ॥विभिन्नः॥अभि

०९

गुज्ञ भी कि जैवा न ए एपिवनि नी कि उच्च उची तलवाक्षकवर्षिद्रज्ञ मञ्जीपनाभारः॥ भड़मं बहु **धड़ा के या इया भड़ा गा किल्**। क्रमभेकार्यक्षा मा क्रिक्र मध्य मन्।। ल गुनिश्वरावर्गवर्गिक्ट्रवर्गाः। मर् वक्षवंभी के कर्ति विकेव स्था भाषी व्यं भ्रां भ्रिष्ट्रन द्वाचार्त्वितरापलः। लग्रेषद्वाविगम् सम्माविलग्राः॥ बिभिष्ठः॥ लग्राद्भष्ट्रभुभेग्रेमिनिभाग् चैक्रिशक्सभउनुहोमात् भिउक्षष्ट्रवह बनगरेभट्टग्रेमस्थने। इनस्र्रेमेट्पर्येभ डिनिपिल**र**ण्णेड्यंग ठवडि॥दृष्ट इत्वात्रिद्धपः भउउभविउष्धभ्द्रभेभञ्ज लिया गीव अन्य म्रमी उं सुदि पन दुवि भंभितः। यंग्रेयं मकएन भ्रमे हने निपन भूमः॥ लग्रेश्वराष्ट्रम् भित्रवं मग्रेगेड

かい

अधिभिर्मुकपिएनवं मगंवी ३।३ इसिंद्र उनवं मक्गं यद्भव प्रजीव देशीन प्रवेडिल मंन्रज्ञेष्म ॥ न्यापिष्य इंक्ड्रेन्य व भगरिभवा। मुह्रवाश्वाबाद्भव पुरुष्ट दे च लयंययुः॥ लग्नमभीभाषम्भेष्वि पथकें मुश्जिंचित्र वनी किलेक भवी क भ्राम्किपिष्ट्रियमयिपगडिभुक्नेलक्ष्मि यहम्निक्मंयं भभस्य । धार्यविलय िपिडिभ्रिषषुल किंत्रः अन्तरल पिक **म्रान्यें इस्भावित्याने प्रतिभागीन** यहरूनभक्तरहः । वर्ते उभक्षमुरुषि रभंयुरंव'लग्रेगडेनापगरिलनिरीक्तिरंबर् उर्जे में भिनमयं विनिजिति अञ्च अञ्चा भस्मित्रभद्धभिवभूउप्पर्ध ॥कीर्दिक लग्रेणीवः मुद्भेवं यक्रिवं च्राप्तां के भाव न'मभ'ख'रिध'धानीवद्गित भट्डे॥ धरभ

ल्यप्

जुगड्डक्ष्मिवंब हाः भिडिपिव । इक्रम क्षित्र स्वाः भच्छे धविन मह इ(॥ मुठ ग्रुकः श्रेञ्ज्यभञ्जलयं पष्ट्रकिष्ठ इक्षाउद्य हिंदालयं भू भगी ब्रें सभी डेंब्र ।। भुउ क्षेत्रिकः अध्यव्यक्षम्मामिष्। क भण्यस्ययाम् द्वायम् समाः॥मन् चुर्च मगयइ ठव सु उनिमी कि इ:। नम् म क्षेभद्रायग्रीमध्य लभ्डाप्तनः॥ भचान भागि। इतः भूतरमं सुभानी नर्रे पराः भू नभग्र उरायाभन्। मक्व जनिभन्भ गलिक्ज्रभूपज्ञ उवस्त्रत्वयभूष्णभः॥ एउक्य चिद्रिने अ: ममीय इच्वे हि कि श म्बर्नेभद्रं खेगर्खेगर्मे **भगविभग्न**ा॥ अवन्तुःममीयइलग्र'रुकुभगयमि। भक्षयाः भविद्वाचे गुरुच चिक्वित्र गः॥ लन्दि अवस्थद सुर्वे चन्त्रभाग

2000年

サ・シャ

लभगार्थेगेथंयम'ठवडिस इत्नीम नवस्था र्भिण्णममं प्रतिवलक क्रम्बह्या व पद्रायम् मुद्रे निगुलं ल स्वाक्षित्र है। वह गुण्धवारः॥ ५ भन्यनाष्ट्राच्यनिष्ठः॥ नग्रभचगुलंगउम्भलक्न इ धिउल् इ रणेडुभग्नलभिवडुर्गगत्त्र उडि धेड भी । नि दिनिस् भउसँगरु उपाद्वी स्टब्रिश नगर्गन्। युरग्रितिष्ना नुल्लेक प्रमितियम्य के एन । मध्यक्रिंगण इिडिर्विगेणीयुलेनमेड(। धार्म्याह्निमेथ लं जार्भभञ्जवयम् ॥ यमविवाप्रभूक रलविभिन्नः॥ लग्रंमभी भग्रद्भवत्र एया गुणः भगज्ञनमयित्रि (उंउड्डा लग्रेभद्रे भविक्रभिउंबसुम् जयद्भु दवयायद्भ भ्रामयश्रामिवद्वाभिष्ठभूर्वश्याणः परिश् उभम् जरेवा लग्नेभक्षेषिक्रा

**अग्र** 

विउव कुष्ट्रिक्रिंग् वत्र्रान्य विव ॥ नार्म द इ बिन्ड विउंबम्ब अभिध्य प्रकम् एड । इ**ज्याण: अलभएक यहका** एकि व्यक्ति विवासिक वि भग्नु अबां ब्रेलंड आपए श्रग दें सुर डुः लग्नेभर्फे भविडि धिउंयद्वर क धाराध्व अनुगीला । यनिक्वेलाना हर्षेष्ठ्रगणनिग्रं अवम् अस्तान्य भदाक्षेत्रविडिचिउंबिडीरिएनं यहर थड्कें भाः ॥ वनेर्भं में मृवमम् एउप लक्षम् । उभिवासम्बद्धाः लग्नेभपि धविडिधं यज्ञ " य म'नि मुलि इं मभच भ्रा महासुभड्ड हावाः॥ हर्माणः॥ भीभनुराम्स्यानिधनीिउधार् भूवसरी मिकविवाद्य मभुक्षेव कल विद्या भिज्ञुभाचरेषे ॥ लग्रभ्राग्र्यां विवा

おかま

उश्रह गा शुलाः अदः भीभा इस्तावि । सर्वा म्द्रम्याउदिक्वा स्व द्वाः अन्य अन्त्र वृद्धः शःदनारम्।।वसिष्ठः॥ लग्नद्वार्विष उपपिष्ठिच्च सक्तः भेषु नडीउँ हिडीयः। गएभुवंसधगमीधुसधार्चाः अधिक ल्पीयः इपल्य ॥ उडी सुबद्धभित्रे गिरे भक्तरुग्र्नेलग्रभक्तरलं द्वांसभ्रा ०९॥ स मभक्षाप्कलभ्या विभिष्ठः॥ भागार्थ त्रःहियाः श्रुप्रभचाः भावनभाभउः। P प्रभागम् प्रमुच प्रभुव गावि मुद्र सं ।।। ः ठवमद्भिः श्रमणिभाभा क्रिकिप वंग मध्यक्रें । स्रिग्रध्यं संभूग स्चिग र्धः भगेभुष्ठाः। नवमि (५५नः कदः किषि मह्यम्यवा॥ ग्याभागुन्द्र॥ श्रीलभ चित्रियाग्रहिक|उनिमाउः जलभी अप्रम् अभिमुद्धामगराणनाकिकंथनः ॥विवा

भंभी अ

फ्क्ट्रें के **अग्राहिभू कि भू**विमान बुद्धा अर्रानिक दोलिए वश्चेत्रे भट्टे वि दीने अस्मक विश्व हुई।। उद्याय। या मिधी इनविचित्रन न्यं का दुर्ग वता लगा कि का भी वित्र नीविभिष्ठचे विजेति कि जा सुभग्न नध उभनी चिहिः ॥ वशिष्ठः ॥ मुरीउकदः ए पिलानिङ निकट लिसे अध्यन गिकिन क्रिकेन के व्यास्त्र के विश्व जुडिनेश्वापन्दे॥ मापन्ध्र या शिवज्ञ क लेडिविभ्करलिन्द्रिभिउभ्॥ यवाकीर श्मिन्ननभ्ग भूषभग्रवश्रवत्रविश्वरु यात्राद्र निर्मिष्ठ भर्ग नायकः ॥ यग्रेक चनेड ः स्थितः श्रिकाम्होपरम्य स्थान द्वियार्थियः भचवल प्रयंविषिः॥ ख्वर्प रभूमीय ॥ श्वरभी ह ग्राविद्या माना धन मन्।नि,मीरः।नमभुध्वडीयुवडीयेक्ट

すいすり

निम्ह्येथ्यं ड्यार्के इज्जनिक्न हुडीब र्यापवभागउँ इतः॥ उँडञ्च । इत्रिक्ति विज्ञ भारम्। अव्यक्ति। इश्राह्म वास्त्र संत्र भक्तनारम्भएनयम् इंड्डिंक स्वायुक्त स्वायुक्त केला उत्रमान भक्त निम्न भिन्ति। क्र नि ल प्रियामें इवभ्रम् व एः महाविद्वः रुष्टि से स्वत्र भरमा अध्याम संबु ब ब डी भगभी भ्रवाश्व च भा श्रिण हि । यं नि उ मगहभाष कर्प पर्यापचिति ज्ञा मानु है भक्किनाम् गरी मुख्या गरी एनं कुर मुक्षेत्रम्क भागीविक्रव भ्रम्पेमर्ग् ॥ भेश्वत्रक्रभलभणियाः लिभन्ने किनम् मु किनेमधिर्:।राष्ट्र उध्दे उकिनेरान्डेव ए िएं ठेउने उसरमें :॥ इष्ट्रध्ने यह लगुक्रचितुमिर्किरीह्यित्र मभष्टभा भड़ किनेया उभमका भाषा भड़िक ना कुक

भूताः ।

सर्वेशवद्या न्यसः ॥ अग्रम्भगम क्लिये चे गुरुवी बिडि। मुगिरुक्य गाउ हावन्यः का भयि द्यां भा भरा जीभन धनु इसि श्रुष्टला नि प रह भाषा गर् म्बस् ह्रियनप्रभीग्रवीदिष्ठ॥ स्य गम्पिवश्रेकद्भाचवर् भवर्षिः।विरी चिन सिमेखेगानिष्ठनाः मरमञ्चरण श्रष्टा पानक लगहभू सकलिय प्रवि इन्दः॥ शुण्यत्त्र प्रविधभं सर से रागि वैद्यस्ट ग्रवनी किउवान देः भभर्त् ध्रणभाषिएः प्रधीमिभेषे त्रिलिंचि भिम्: ॥ गुगंमलय रतगुक्रेमुद्दिम कर हा गुडवी कि डवा नहें अकर है मभभूतभभभे भूमभभविभि उत्रम् भ ॥ मर्क यह कि डिगाः अवनव ५५५५ एमेविल यभू रायगञ्चा इपटक्व サ· お・ ま・

जैनिमुयामभी मर्येगा विद्वानी से शिल नभ्राम्यम्भवनभ्रा विभिन्नः। जिल्ल र्भवनेप्सिह्विधयेगार् हुडीबें सर्वेश भिभीउउने।उधाकिरलेश्री बर्वे ब्र वारिद्वक्रिएकचगुराभवन्तं भाद्रभ्र विजितिषे मुद्देन पनण श्रिमुद्भ मिल्लि प्रिच्छिंग्भरे॥ मैनकः॥ ब्रज्जगर्हे हुडी योऽभागभेभवनं ठवंऽ । गर्हे हु जुड़ी यमञ्जूष्ठिमभिवाठवंड(॥ स्युक्तुः॥ **क्विडीयव क्डीयव भाभागंभव नं हवेडी**। इज्जिहिंद्शीभन्त्रभद्राधवा॥व भिष्ठः॥ मर्ने लग्ने डिभे पर्क् ग्रवीकि उभग्र डाभीभनुश्रिभियद्वाक्षित्र पंभ वनश्यः । यमभीभनः ॥ विभिन्नः ॥त उभवनभरीन भामिग है भूसत्रविदि उभ धम। जिम्मिच चु प्रमेवः । जिन्मिम

03 04. 4.56.1.

निवीद्भ भगवीद्यु जैवज्य गुड्य भू नविशामनेक्षा । ए स्वेमक्षाम् रूल ग्बर् इसद्राभदीभ्यान्। बार्मी जीवियानुभविभिनेष्यं लयनवं मक्षा केंद्रिकें न्याद्रेयनय से प्रदासिक लार विगडेश्वथायः। धरुधुलग्रन्यु विवक्तिउग्रे भीभन्नदं यहरंभरेता ह्यम्भवं भ उठविलयुक्किथियापेष्ठनठ मुग्ला भी भाविनीन सका श्वष्टका विगर्द खबाविनधूम्।। यनस्य। अचभकः स कः भूजः वस्त्रसु इदिकं विनः अचरक मवडक्थिनाथराष्ट्रकमञ्जन॥भाभभा ममभागंग्राज्यां मात्रित्य सिविष रुत्येश्चा देभेरानः भद्भाननं मवा हा नहेभ्ध्यक्विदुइक्भी॥गनः॥किनि लंभू समिभाभिउ श्रम भाषि पेष्ट्र गः। विजी

かかの

यभभिगारम है भः थि इन्द्र की वन व इर्ग न र देश है शे विश्व के स्वाप्त के स्वाप्त के स क्षु भिनंदवंश भिम । इत्र ह विषश प्याप्तममभागः श्रिम श्रुव्यक्षित्रः। भी चेप्रभक्तः भष्तुउध्मक्षेत्रोधिकः सिन्द्रा क्षुनिव्यभनक्ष्यं भप्रभक्षमुग्र वाः। इत नम्भूमभाभग्रा इस्र भेठवे छवड ।।।उड्ड गगहभेषु स्भागमेनवमममी। अखी इम्मेभाभिभागमंत्रे अर्थे भारः ॥ यश्चना भाषिपितिज्ञेनीमवाश्वाराधिवा उसिम् भिक्षयंया उभ्भवंवा रुविधु उ॥ मुख्य स्रुपए॥ अञ्चलायनः॥ गहराणीन्। इंजनप्रधान के भाग महिल्ला के भाग महिल वितक्द्यम् विषिः॥ विभिन्नः॥ भः श धुनमगर्थ अद'विश्व वितिवां भी म्वलग्वरिक्ष भ्रष्ट्र ग्वभूमश्रु ॥

445.

अङ्गा अञ्चाभार्ण ॥ र्रीद रं विद्वा अच धर्वि विकास मिन्या भरे मा कः अच्छगन्जनिष्धः अरंकग्यज्ञ हभड्डे । अवरुउकर्गा नपरः॥ असिक्ष मुन्द्र अध्यक्ष मिश्व स्थापिक क्ष्यकरुष्ट्रिध्रिश्यग्न अचक भए। द्यारा भू मभक्तिवस भन्ने समग्रेव भच्या दिष्टु उपन ज चीउ अउकं ४३ रण मि॥ उर्भवं ४ डिग्र्इंडफ्बेन्वककायंड(। ककविद्वे । इसद्भित्तं प्राप्तु प्रत्यां मारेड (॥ भक्त रिमार्ड भन्छे॥ विजेष्ठिभेषविश्वष्टि विश्विभंडमच णि अर्भ अर्थ विकिथ्य मुश्र भागित उमिमें।॥ एक दिमें इन्द्रिति बिक्निव ए मह्याम्बल्याम् ज्ञानिस्त्रीरंभित्रम य क्रिकुरं वर्ण री अष्ट अरुं विणव्।। लेक मार शुरुडीयिक ने एवं। सम्बर्धि

भुः

वमेगईभिच्चिक्प्रकानभ्राह्यक्षि यं। गीरी भद्रयमश्चरः किनु है गीति वर्ष या उष्यभभाध्यं माः धित्तक का अन्य भाग नवअग्रेथनर्।। भक्ररुक्तिनुस्ले।। वि म्रम्बर्कग्वा उपयम् अजी अनं भी भार हरवी ए जिए में प्रभाग में इस मुडिश **भाउकभिम्**धन्द्रभू रामिवियम्बर्वि विक्रिडिष्ट्रांभी महानांभेक रत्ना नारकः॥ अउक नुराभक इति च यं श्रज्ञ लि कि इभी। नभ्यचं दिशमश्रमः भूगमञ्जूर शा मधरक्र ॥ मक्रमञ्जू मन् एक्डिय उपम्म । धेरे मेक्ने विमवा द्वा विमवल उःदेशन्य। क्रिवभद्वष्ट्राप्तरः॥ भन्तिन र स्ट्रियाभक्र के भी गरीह धीरिय द्वा ग्नन'क्रमग्र् सुभुमरगर्भवद्गावान भक्रतलभिति॥ सम्मक् ले ति स्त्राम्

4年。

क्रिमक्रलिथणाउट्टि:क्रानाडिइभलेविक, यानभूगोह्ण्यभिउँउइ'दं में इर'वले। इस' नका इं जीनं विमारः॥विभिष्ठः॥ मेर् प्र विजिध्याप्रविविति अचाएकिने प्रक दभी पुरु गुरु लंकिन न य व न उ कु उक् अञ्चलम्भण्यभ्य नगमः ॥ लग्रहरण नमेक्स द्वान कि भेगुउ। ७ मु जै भन्न देन यम्बिश्चिष्ठवायम्॥म्बुरग्रन्तिपर क्रिव्म क्रिमिन्ने: धिड । न भमेक्षी उनं ज द् इन अकी डिउं ठ वेडर्॥ श्लाक्रिमन्। य नः॥ इक्ष्युग्रुक्ण्डिभानं वत्तविद्यमिक क्यी पनकरभउड्र हनवभन्नः ममीपुरु मुम्बयं प्रमेलग्रं पा मुस्तिलंड गः भ ह प्रमिथ्य अपना भक्र यह विष्य च'क्रःम्प्रुड्कॅभष्ट'क्रभष्टभःभूद्रश मधर्कं मगर्ध् मवलये ज्ञानक इलि॥ म

かいか

भारता प्रदेशिभाभनाभाविक्तिक विकास रनः। उपच्चेष्ठाभमभवन्यस्व श्रीविज्ञाः। येगीमः भूप्रगैकद्वाः स्वानुख्य अवा इएरीडिनाभनिइभाई क्रियनी विला शास षण ॥ भिमेंग्रेजिलक कें (३०० अन्यय अचक भी। नका इसहवन भिष्ठां व सूर्विय उस । अम्पन्न लक्ष्ये वा । मद्भे न ब्रह्म स्यावराज्यात्रियस्या गुप्रमाथा ज्ञान भभ्मभुब्द्यमुक्षः॥ यवनिष्युभन्तभ्॥ म्पराज्ञ ॥ हिच्छू राल ॥ इप्रमेषि गराम् मिमितिष्मां ग्राप्त अर्गात्र अर्थ भिकर हो उष्टें भे अंविष्ठे :॥ उउ भू इ यक उद्यम्भि अद्यम् चनभे। मे अज भाभिक उद्यमिम सुर्थम सन्भा व्व क्रम्भागाभ ॥भिरूपम्थनचभाध मभर्भेभूतक्रलियि। प्रयुग्वश्वर्य

मंक्षुः प्

रशक्राहर्गन्यमभूभम। जुद्दां विध् अंक्षेत्रवागुरेशुर्द्धिक विषेत्र डिन्डिंड लाभागिक वनमें श्रेय के लेकि इत इस्या लग्नुरुग्रगुरुग्रमुरुग्रि युज्ञक्यु चढ चढनवा मकभगु उमा उ जुङ्ग मवभननगा द्र सन्द्रान द्रानि सू ध अदमिनियानिरीहायम् ॥ उम्अद्दर्भ त्रः॥ निकिश्रद्धभार्भे में इस्तिम म्राग्र डान्यनकभ्यमं हर्जाना गुरिव करा। स्वमर्यारभर्ः॥ सर्विर्भन कुउद्योग्मालवभ्रव। गोर्नाण्युमम क्रमर्रिक्ट भिद्देशमा यह महाण्य ७लभ्।। भ<u>्यत्र</u>क्षित्रभण्णे ॥ महेद्रुहेर्स् इमभढ्कः श्रुवंविन हिम्न एं द्वितीये। प्रतिहत्रीयकति। नी मोडक्र श्वभावरं वा ला भित्रग्रामा भष्ठामिभग्नप्रकृतिमा भ• ग• प9

इक्यम्णक्रविष्ठमाः। यश्चिम् भित्रिए: श्रःश्रम् अविकानिकान्त्रिकान्त्र मवणलप्रकाथकर्वित निकाल ॥ सम्बार्थ र्रेणलंभिक्षान्य स्थानिस मर्किम्थवगविविजिति विभ्या रवित्यास्या स्थान्य स्थान्य स्थान्य स्थान उष्टिः॥उद्वाद्भिलारं ज्वरुद्धः सम्बन्ध प्रिप्त अवस्था । निरुष्ट भरते के के के कि कि ग्टेर्भिक्षिमः॥ मज्जकुपणिकिक्रिक वभार्यभ्रम् । स्वास्त्र विष् मुनंभरां केला विद्वादिक र वित्र मिन्यू भूले कर् मभगभंजभभयकिभिडेकिवाभड्॥ यष्ट्रमुप्तिमनभी॥भ्यतुमिन्भण्णे॥ **पश्चिवराद्रभित्रश्चात्रक्रिवस्य अस्ति** िं द्वीत्र गाउि पाष्ट्र भभाभिताल भ<sup>्</sup>। वर्ष अहिकिकिए अञ्चल पूर्वे मुस् भुद्र भेड

03 मझेन

ल पहें न भरों में यह ॥ उभिन्द लें शु भरों दे। इविश्व भूमभूभभुकं लागी मा श्रुलंगेर्थ या गाँ द्वीत नार्चे ग्लाव प्रस्त दिः भू कि बुर्ग वहाँ व भूमन भूग विभिष्ठः॥ श्रया जुनभ्राम्भ्रमभ्रम्भभ्रमभा त्रवीत्र इतिः व्यास्ति॥भिक्षकड्काः हिन्द् नग्रज्ञममीभाष्ट्रभीभभभभ्। ट्राइडिय बः सर्भः भूमन् स्ववंभगः॥ स्टम् बितिभूमरेष्ठिष्वारेष्ठ इत्रिशा विश नभामुरुग्द्र लंक वनिवल ग्रें इरंम क अचमलिम् अलम्बग्रं भूषवाबिल ग्रनवं मक्वथ्यवग् । इश्वानने प्रनेकः वित्रित्रज्ञेद्रचित्रनिम्हम्धिप्रज्ञे॥ निद्वरणपग्रम् इधिउद्गित्तेन मिक हु इवि वित्रमानानान्जीव्यवव्यम्भगस्

मः

ि चिक्ता नए दिए क्षित्रभा सुरुद्ध विद्युभड उ विवापभी भन्न या इकि पुनिक्ष निवा प्रकारित परिण्यक्रिक्लग्रेष्ठाविपरिश्विष्ठावा। नध्यपिद्धभूगडेिक भं में ग्रेना नड़िक्ष छ हमभाउपार्थ अञ्चीलयगाउँ अहिकीलया मिक्कः भाइतद्वरम् मक्षिव्वर किउ:। वर्षे प्रतीगुरेक्गीमी दे यह गवा कि उ।वाउरेगीमनोगरिकेडिमात्रविवित्ति इशा मद्भिभुकुकं गलका गुष्राभनीय भी ढलं अचे ज्ञान । सम्बद्ध के प्रशासनिक कि ने॥एक्डिम्मिक्किक्किक्किम्। भउमेभाभवाज्ञद्भममभभाभवाषनः॥ यम्जलएअव ॥ ह्वप्रश्नभाषाभ ॥ विश्वः॥ अस्मूमभप्रविश्वम्बाव्यक्ष लिइ ममधेन मिका भयुमाकः अबर्धना नगर्नेनम्इचिडिषीवलनीया मीपि

.अ.स. इ.स.

इसम्भा नेएक्स्ड इसम्बद्धिर्ए जीक्ष्म अर्थे हैं उस अंक्रेल भविद्ध गुग् अन्वश्रु इमिइहः। मेर्नेः श्रुप्यि इलक्ष कगडः भधिमा हिगारि ब्रमुक्तियां हा भिष्या मुक्ट हर ब मुरः॥ जीविएनमें हैने भरा राम्प्री स्थानिप खषाविष्वउः मुरुण उद्वयनः॥ भवलं गग्गभर्धागगंविभ्वष्ट्यः। सर्ध म्यभीअमीभएभाष्ट्राज्ञनाद्विक ॥ म वक्रिलभी यतः ॥ हरीयक्रिमिमें विदे राम्बंडवं विमचः। धकुषेभभुवं धििषु सः प्रेमें घवां भने॥ इव द्रारे एक्रान्त्र त्उ॥भन्नवाञ्च ममभभि द्विडीयमम् भिवा म।उज्याप्रभक्तां नकता द्वा में।। एक स्यान्यान्यम्भनम्म

भंग

म्हीरंविव फ्रिम्मक्खवणः।विव फ्वक् नमएक्रभभयार्थिन इंड्रिक्निधिसड भ्रा भ्रज्य म भण्डे ॥ भामिश विश्व खं हा भविव पं मेल भवम। श्रिश्व इकि इन्न न जिचीर चूरेर संगार संग्रहा कि कि िक अंगविं<u>ट इस्टिइस्</u> इस्कारें वर्ग इ,वानिएभचा लिक्रिनानिक्रमवद्गावर्षा विभिन्नः॥ मिथ्यनगुरोगुर् अञ्चलन मुठिकिन। नथचित्रिडिसिम् रविषयुडि भर्म॥ मसुराग्वलिपेड्य धूम सुनि युरे। उठलग्रे उठलग्रे में ग्रेगेला इस। नएक अगमीर मीन धर्मन षा गमाईकेलके मुद्दे : मुह्मूर्या रिग पोः॥ इवप्रमुखे॥ एन इय दिकेल रभक्त द्वाराज्य विश्व वि हिंतित्रिक्तिका का अप्तान का निक्रिया

०३ मस्ति-

भाजभीमविक्ष मधेक माउस । इसिक मी ह जीया मामेलका मुक्त वर्र । भिड्ड एमिश्व विश्व ज्ञाले शक्त के विश्व के श्री के अपने के शिव क थक्तिवागःमधानम्हनः॥विभिष्ठः॥५ अङ्ग्रम्भनचर्गेममम' इविद्वरिश्य श्चित्रीष्ठा कि द्वारा में स्वार्थित स्वार्य स्वार्थित स्वार्थित स्वार्थित स्वार्थित स्वार्थित स्वार्थित स्वार्थित स्वार्थित स्वार्थित स्वार्य स्वार्य स्वार्य स्वार्थित स्वार्य स्वार्य स्वार्थित स्वार्य स्वार्य स्वार्य स्वार्य स्वार्य स यमञ्चमकवाननाया उद्देव। भानं मिस्तं बङ्गनश्चग्रहेज्विणनः। तह्यम्यिकं क्रिपच्चाइचेश्रामग्री। नारमः॥पट् वज्ञनमिलाजभूमनम् भन्यन्। महम्मा सन्बार्भमुठइडक्रिल ॥ ग्राभार् है। यम्मभूरेमयाङ्गभू विष्विति मि चार्रिपक्र।भूग्मीभाषःभिश्वभाषिभिष्ठ्र ज्रद्याः क्रीयभन् इएपुः ॥विभिष्ठः॥भि व अनंउष्टांमालअनः प्रज्ञश्वादनभी अजवार्नायसम्नज्ञत्म्रिकिनीपितः॥

A.

भर्मित्रेभागाहिलीयक्रिवाकवड्ण विष्ट्रउगुम्ब्रुवस्भागीम् सुवद्भाः गरमाड: जभारधनज्ञहाक्वासाय निभागमणः जदामग्रज्ञ चनकायग्र भक्ता अमुभार्ण ॥ भक्ता वहाल कराल प्रमुभभिक्तिमिरः।भाउत्तहनश्रञ्जा लंभफुवद्धिकेषुरुभ्। विभिष्ठः॥ गरि क्षंभाउतिमिम् मुरुकर,नक्षा चंड्र । गण्य हिष्केष्ट्रचं श्रुद्वे म् बुउ च्चिम अफ्र च यहभारती । क्रीलेश भारति भारति श्रमध्य गिरिडें द्विदिपक्षितिउक्किश्वास्य स्थित र्थिक विविद्यान इन्केट् भेडेडर्। भक् यंडे भनी द्वांडिय इंड इंड इंग्रेय निर्देश में निर्देश में श्याहरिम भुरुवामित्र अपनयनं मावि उद्रः उर्रजी ॥ उवस्क्रमानिस्हैि।॥ लिगानिः॥ महिलउम्म म्विभिन्नान्थ

०३ मझ्रे.तॅ.

कवंडिक्चभनां भक्षक्रावः, थकु क्ष जिल्ला भारत कि मका वारि किम थ क्रिल्रा अज्ञान के मिपिने हे। यह कल एसंबी अध्योगंद्धां।। अञ्चानंभा वश्याक्तं लयषं इ्रम्भ्। एवभनः म भवा डि वीरणगाह भभक्त वर्भ । इस्ति भडें: द्वियः अद्येष्ठियं प्रभुभभूकः॥ म्राम्भ भरा अधिक स्था अपनि । इक्विंगः भ्राचुनगच्चभ। दयः म्री इवेट्ट्युरगम् अफिमश्रु ॥ नामः॥भू यु उगिलवाय है गितिली वा मल्या की म्पिडिः॥ भट्टाडिक पद्मभ्यभ्रिमें द्रेत्र र्श्वक्यम् । इत्राम्ना । जीमवरं माउन ननिधनभू लिडीडिभ्कएः भूवं मः॥ ह नद्राधंद्वाथयिउम्भभुभारु न्द्रभन्तिभा

भः

म्प्रेंचिउरविउद्यार्थेणनः भारति भारति । भारति उवस्य अगुमः सुद्धानिक समिति श्राफ ननभूर्विधनयः स्विक्ट प्रचन भीग्रेब भागित्कायाभागम्ब्रिट्यानि उथयाञ्चविमधः। महीवहिभक्ष्रहेंवा रलग्रिभयः॥हवप्रभूडिश्चार्यानी॥ उड्डाह्य भवाभी सुरुगन सुवित्र भूग्य " च्चेनीय'र्ग्युक्त्रमापंचित्रक्रितिवण्य ... भीभंजेज्ञंनभड्डापक्रमलव ने प्राप्त भ्यां लेक मुक्तः भभक्षिति भाउदाल्या गुरवष्ट्रक्रद्रभ्।विभिष्ठः यार्प विश्व एक भिरोम कुर्त हो गारिष् भव्यम् क्रिंन ऊट' क्रेलम् रून मिय हिलाधीनवर्भनमार्कि॥नगरमः॥ सर्वे र्कानां उच्चीक्रुवम्पवा पञ्चणक्री उमेवयाननेनवभेषि॥ ५इएच भुग्ला

मुक्कार .

कि इः भ्रेटिक में देवा ॥ क्रिडिभड़ कि नैंद्वेरग महिथ्याल अभ्रष्ट्उभाग भगवंत्रां देशक जिडवास्तु उद्याने। सडविजिषा इः कर्म ज्ञ ज्ञ विधिनिक भनेनि मिमन विण उद्दे वि रहाउपविष्ठभूल॥ युन् हु॥ राष्ट्रभूवम भुजनभद्भवं मविवक्तयं इश्विव दे प कुणदेशस्माद्रभाव भाव अवस्था विश्व डेबळ्ळभीभनुराग्य ज्ञन्।भट्टः जीग्युज चीउनन्दर्भ भर्गिविन भर्ग मञ्जूमिंगल भक्षेत्रज्ञ इक्षेभेषः मुहभी सर्वा रिकर्ष्टभार्ड्याविवत्त्वर् ॥ गराक द्विग्रज्ञानं न एकं रूपरणी विनं भी माम रिभनापमुद्रिन्गेनिक्तं त्विणितुः ७५ (॥ नारकः ॥ र पविभ्रास्त्रयायस्त्रभग्लन इभक्तला एइ दिल्लिक वार द्विषिष्ठी रभिद्यम्भ ॥भद्गीहरंभक्तभपद्भमिकि

मु भी

क्षेंविण्यं कि उभक्त हे जा नल हु है से दे ज नजियं उर्जे वानिविक्वं विचियम्।। मीपि :।। ये प्रये प्रमंभित्र हैं । पद्यः। मश्रुउषुवनायम् विल प्पनभ् । क'लिव पाने। ममुक्र हुँ ल उही वियोजद्दुनः महा मित्रम्यद्वय च श्रमीम भूम श्रम । यम् जा रश्चीकर लभ्राभुक्रमुभिन्न भल्जि।भक्रमिन्न ग्भाः भ्रम्णभाक्तकारिष्ठामवार् विनिलानु हिंदीमउद्याभि स्हा स्रोनेभ उनिमित्रिभिग्दःभउंकिन्॥॥उ विषक्त उन्देश प्रकाल इयम भी। ०३॥ महसमयमुद्धिः॥ भक्तरमित्र भण्णा वाधाराभउद्गक्क भरवनार्थ **भाउम्रहारमञ्जूनवप्रयमनभद्रम** 

03 मक्ष्यू मक्ष्य

गिमिभाषुक।ग्रामग्रामण्यापुष क्रियक्ष्रव्यक्ष्रवेशनिम्नप्रभाषि पत्रमि सुभेश्वरः भागभेषामी मी का भिक्तिवि ब्यन्त्र द्वाभावचं क्वरीज्ञालं भंदां भा श्चिभीग्रे रिभिन्म मिर्गि मिर्गि गर्भे। मा । इस्थानमा वा उम्बल या पंपरी के ह लै बाइ इं अपि मुह्यं हो भि उसे उने पिभ भउष्य ॥ गुचाफिर्रगुरीनर्वर्र्जीमारग उद्यान ब्रुमिनिस् इमर लिस इंभग्य वि। धिक्षेम द्रमवद्वभनीन भूषिकभभ किक्डिज्ञभिनियमञ्जिभवभिन्निभा विवास बुउमी इरिभा प्रमुग भामिक भी क्षेरविष्ट्रभुविष्ट्रभूगभेराभेपविक्तयं उप म्भुवलंभिपन इक्षणीविवलंकिय उराम'डिम'रे। गुच'कि ट्रिविञ्च धर्मापेप 

भः भः

गिभंदलविवर्ष ने प्रविश्व में के के के के कि वड(। हा गीरमी या श्रुष्ठ एं स स्थिन इस्स उपनिभिष्य ॥ विश्व द्वा मा मा के का विश्व विश्व भष्टने पुनः भिन्न गिरारे। भष्टिन पुनः भ्उष्टाभीनगउरवी।भरगद्भ भिज्याचि भएममकाग्रापाभड्यगेभ्टइमः श्रुक भटें। पद्भवद्भाः॥भरगद्भाष्ट्रभंभक्षुणी वयगें। मनिश्चयभ्। गोउभीयाध्रुष्ण । इस भट्टेरिएनभूमः ॥भिन्भिनं मक्र्णीव कित्रगिष्ठगुल्य।कैलभ्ड्रययग्रम भ्देषिणनभूमः॥ हवस्यभूमी प्राम्बीपद्रः र प्रविशंभउम्गिष् पूर्ण होत्रगारिष्मा भिक श्रंभका श्रंमग्रन्य द्वाचारा ॥ उद्वा ग्याभावानः ॥ याद्रं मनं विवादं मुरि विवाविधिमहभस्यवम्भूमभङ्खान नदुभगवग्रहवनाग्रभविष्ट्रविणनभ्।भा

भू ०६

ज्ञीवर्वेश्वर्यभागम्बन्क'णंगेलंज्ञच उँग्रेग्ट् श्रिंकि भित्र भित्र हैं गुरुकि नक रबेर के गमिश्रवाञ्चा थ्रामिन्भार्णे॥ रवाप चिगण्डकी पश्चिममां भक्षिम गाहिलनी यरंक्तः।वक्तन्यंक्रुलभागायभगिक भिज्ञेंबलनीयः ग्रहेषु ॥ हवक्यभूमिष क्याभर्॥ नीयगमिगाउँ श्रीवः भूमभःभ चक्रभानीमं मकगउअक्टियभारं में धुनीयरा । स्वापुराला भिष्ठितरा भिकर्षेच्यमीस्क्रान्द्रनिर्भागान्य गल। वाधी क्राथड संगा किनि धिर्द्व भिंद् गर्गि भकरके थिउइदेन प्रिक्षः क'लल भारता । वर्षिया मार्गिववत्त विष्ठमन्त्रीभार्म् इतिमान्यभाष्ठ विमिडवाभगेड ॥ उद्याम ॥ मडीमान

भः प्र

गउएगिववलायेड्ड इन इस्रिविव दिव दि प्कट्पम्माविमडिवाभक्ति। उडेवी वष्ट्रायकर्विषय ॥ भूजिबिहुने क्रि विक्तिस्मीविडम्डिम्गाराड विमारत लेप्णने लग्ने मधरामाः भूष्का द्वीषि क्याभ्य दिक्ल्य एवा एनला हरा वि वस्रिमार्गानः भूयाति। यहाँ इहा भूप यु रं विलये दि र यथ लियू दल विभिद्धः ॥ व्यद्धार्या भिक्षा था भी ॥ यम्भून्यमयुर्गिवःक्ट्रांडिक ल भवपि।गुलवर्द्वाभनद्वीउद्यधिर लिग्राक्टः॥ महीमात्रगाउरिगीव प गमिनिष्ठिम् इतः। लाउमंब इति हार्थे ग दिउःभचकर्भ ॥ ध्याभाष्ट्र उरम्ब गुमदाविग्रज्न व्याभा उद्वक्तालियः श्रामिष्ट्रप्रकावाकुगः॥ भूप्रज्ञामिनाभ

भुग्न-

गैरुनु अन्द्र वहारिया गर्ने अचरा में गुम्बेडिबिस् उः।उम्बिल्यु गुरुषि निकिउं मुक्यां वाभानिप्रगाम् ॥ हव द्रायुक्षिक्यं॥ मित्रमागाउँ स्पितं प रःक्रइएभीन्ग।ल<del>ुभं</del>वद्गरेष्ठ्रवःभ चिक्रद्रिलिक्षरयेड् ॥ उड्रव ॥ मर्सेरस्य चेज्रिष्ट्य प्रश्रमार्गिग्र । नरद्व नर्ने पःश्विद्धन्द्र कराव ज्ञुनः॥ यमे दिमार भावशास्त्रभन्नीकंगिडामिकभीनभंभः नथार्ट्से यहि पि अचा मिकि उपपाल ग्दलविभष्ठः॥ अधिभाभाद्मवागीमि कवनम्बनगाउः। नउर्कालनियः श्रिक रफ्रहगबाकुगः॥ गुन्द्रीर्गर्गिर्गरिन्द्रीन मार्गाउँगुनः।गुच'िर्द्रःभविष्ठ्यःभ चकर्भगद्भिः॥ एकगमगर्भभद्गी विश्वांयमभनः। इउठइ विवक्तिम

がから

ठकरापिलंड्रणंड(॥विभिद्धः॥भिनिन्ता म्भाभमाभीकृषयुम् अहा । जीजवार् नक्रम्गयंगोरंवरीविन्।।भुड्रायुरं भले। उपभ्रवमीउभयाष कर्ने वे क्रिय वंकिंपलाष्ट्रभप्रभाभागभागिक भिजीजय'र्दिणिःभर्भानिधन्ति भुः॥ वागुभराला। गयायांभचक लेखिपर कष्टियाणः। मणिभागए क्रिक्सी क्रिग्यम् स्याः॥ न्द्रम् व्यायाम् क्र भिंद्रमु ियादभाष्ट्रिं। विभिष्टुः॥ विभूत इहिंधीकमयाव अवत्रभङ्गलभ्। ५इ वैवाभमवश्रमिवभना हभज्ञलभ्य सु मुम्किश्वादिराभक लेनक र्याम्य मकेउष्व। विवापग्रील ब्रुउत्वर्ण ह भारतिष्ठः मक्दमेव॥ यम्पुर्भित वर्री पाभागिती कि हो। भाजभाजि इस मिर्च

भू ०६

अर्ड्ड क्रिडिन मुडे। नुद्वाभिड मेथ्टर भन्द शक्क गमिगाः। कं दि ए भिर्दे है धःभन्नकद्भविगदिउः॥ मीपितिः॥ नी मिन्द्रिक्षागुराचिषाभक्रमष्ट्रिष्ट्रायाष्ट्र उन्यक्षक्रक्षक्षाः॥ज्ञचीउन'भुगउनी मगर्यितन प्रण प्रमर्भ मिषिल ह थिभङ्गालानि॥विभिष्ठः॥ महाशुद्रिविए णीवभी उमर्जियाः भर्म। उधाभारि ष्ट्रामान्य विक्रियं वस्त्र वस्त्र व । वस्त्र व त्त्वयुक्तभाभाजिकिन्द्यभाष्टि कें चयर क्षेत्र ग्रमण किनभप्रकर्भ ॥ भविषािविष्याष्ट्रमम्। भएउयगः भी भारत महाराष्ट्रिय प्रकाम जिन् नम्भाःभचर्वच्यः पलभद्रलप्। चथभंद्र'भिविज्ञंभयक्षक्षेत्रिण इ भः। एउधं भरले द्वारा दिकिन महन प्रा भः

विभाष्ट्रः ॥ भू गृज्ञांक भित्रवंशिष्ठः श्राह्य ह्रेममंकिमिडर्श्हराथङ्कार्वाक्ष नगरवार्थः भवास्य भरद्दयः विश्वास्य य इस भिन्नि ने किन चंग्र लें स्थान भद्रम्यं या ये ने ज भक्तियभं मिस्विभिष्ट उक्ति अप्रयुक्त भवा। भक्त रुक्त भाग ॥ गुरुह्युक्रमान्ड्रभुग्नंकिष्ठिक्षित्र। इ द्रभाव क्रिया है उस से प्रमुद्र विचेशा दि विस्भः॥ हुगः थाड्विकिवभानकं गर् ग्रम्मा गलवा मुः परिष्ट्रपुष्ट अष्ट दवसंभुगः॥ हवस्यभूमी धिक्यभि वन्ने साम्भान्य संभाग्ने साम्भाग्ने सामभाग्ने साम न(एगिवेगर जवंगविवादि मिष्व स्त्येड(॥भितिरः॥ वज्वेमिडः। क्ला बनः ह्वां चकि । या प्राप्तः अ अरिकः अ ल्दं ममहम्भर्गपि ॥ गतः॥ अत्र

सिर्गः ०६

कः श्राक्तार व्याने विद्यासम्बन्धित गञ्ज(। वज्ज चऊन प्रम्भ भन्न गर्य में चे प्रम संवृद्धिनद्वं साउष्ट्राधित्व वृत्ता सीच र्भीविव दश्चिम् भएगभाषिष्। अस कर्यभगणीनेनभ्यक्षिमें हनः॥वीभ नुः॥ गुम्ह जवया अम् चर रिम्। भूव अश्नेवश्रहारण्डीनं मिश्रह्वं चकं उधा उतिभक्त रुवे देव समस्य स्वित्र स्वर सम्बार ॥ र ॥ र ॥ मृष्ठेकविसिडिभद्यं मिनिरुभलेशभव इस्। विभव्नः ॥ भेरित्रसंविविद्र काला। पण्डा सम्भीवभाष्ट्रभञ्चभभग् नःकर्रिकं मर्से भेग मर्गिति द्वारी विद्वारी भवतः अर्णपुभक्षे हुग्रधक्षमधः॥ गक्ष उपास्तिविकवारम् चिषाएन पुरस्त ग्रमगी। मक्नामाधिः जभ्रात्र मिभ्रप व्रडीभाउएविण्डेड्रः ॥ लग्ना अरुडाग्रह

4:53

लहरूरः प्रयह्मित्र स्थान्द्रवाचा एड उठेर्रभद्रमण्डस्थाः अचेषुस्मेषुअस्वि वृतः॥ मकविमसद्गिष्ठा बुद्धानि। किरः।करामित्रवशीकित्रुणन्कि रिएितः॥ ममुल्यस्य भुद्रव॥ उभग्रहल विनन्ध्रेगेष्विनन्त्र गेर्डे हरे मधन्त्र ग्रहण उगिम्नुभग यभभमगु भिष्ठयं विलग्न य इनिम्रहानिमराणिगाल। इम्युल्यानि भप्रम्कल्यनाभाषे व व नभाभिष्ठे ॥ भ्र इक्षीद्रामद्रम्ण पविष्ट्या अकृत क्रमें पंशभम् इमपः भविवेसक्षभूजी क् वेवलुभवेद्रुरुष्ठैः॥ ह्यावार्द्वणारङ्ग्या उदाना प्रतिशु उभदा मना हुः। एउत्स म भः इशम् अवेधं क्रमञ्च अधि यउ ७ भ थक ॥ ७ भग् ५ है ज नव क्रिके चक निश्व

तः भूः विः भूः

त्रिव्यक्ति विकास क्रिक्त विकास कि विकास कि उँठेड्याञ्चभवद्भवणभक्तभ्। यभाभक ग्रिक क्षेत्रके धावितत्तनीयाः पान भष्ट क्ता शहर भवाकि क्रमें वक्षेष श्रष्टा भ इ भागाणीय स्था । नाना किएन अवि वाग्या निवास्य वाग्या विष्या है वाग्य ह बङ्गङ्गापमध्वकः मध्यम् मध्नः तििष हुः॥ उद्यास्त्राष्ट्राचाविम् वृः॥वाग्नर किउ शिथा के एवं सर्गिष्ठ ३:। ३३ व्यक् भक्ताः इभङ्गण्युगिरः।।उर्वमा इब्रम्मलवेंद्र अट्राम्म। प्रथा उद्भाष्ट्रिय स्थान भागान सक्त ॥ प्रमिन्द्रला । मुद्देशियाः प्राविषः। **ब्रिश्डें मध्युमियुक्तिं भिरिवेमकः**॥ परिवर्ममङ् पनिविधर्मधेणन्द्राः। स ट्रिंह गर्जि अक्रिक्त ए भेष्ठः परिविषः॥

A: 23

मवंगन्न क्रमंश्वमाद्रमापं भाषिक उरशाथ पुरेषेष्भगुरुष्टिन्दु स्वागित्व दिव पवाना री भूति व्यापा के लावा या । दिनी यएकति मुद्रंभी अंचुराह्न भन्भी। नविष वर्गन्षड्याल्या विद्वारम् उपार् पुरुषेषे वस्तरीय मुभक्तला उष्टी मर्रिधनिरुपण्ण ष्टायि धिभद्र में धान प्रव भिष्ठाचा इनिष्णभिष्ठिउवंगक्ष नेदि विग्भरा भद्रभग्उइ ये इम्रह भिन्दि दिउ गृहमभी। भग्राकः कृषी अदभक्ष विवि धनारिकाः।ग्राम्लेकवर्डक्रिंभेनःक्षलः उत्यंभकः ॥ पापविम् णिच्रिं कं ाण च्चारिकभभिद्धार्थं। वार्यभेराकला गमिष्टल स्भा सुभार्ण सर्गेष्ट्रभः भिउति असर्भियारिक्याः। भक्तास्यारि रिड मेर्ड के लचे प्रस्था एक विम

भद्धः है। भिः भूः

Mohd. Ashraf Peerzada Collection, Srinagar

सन्देश्या श्रुउत्कार्णिक प्राथिक प्राथि न वभीकित्रगुल्जनेकिरिकिशाउभाक इच्छचच्क्रमंभित्रं भवसुरुभे। विवास विणवानारी भवलं बुउठ बुंने। ग्भनामः ध्विष्ठां भीभनेगहरामनभ्॥ नव त्रह र्णने कडुः कं धीउ हुलन मनभ। करु दे मेगणद्भारतिम्पित्रम्मनभ्। लहुउभ भद्राप्टश्यम् द्विक्राला म्हभद प्रधन्नज्ञण्यवं ग्रे॥विभिष्ठः॥ इभम भिविवाग्रूचेगाउष्ट्रचभंग्रुके। उद्दार्भं भितिभूके प्रदूषक्र मंठवभ्र ॥तिविनक्ष द्वाराष्ट्रं अकदे जे हवेत्रित उम्डित्र भि रित्र अर्कर्रनक रचे इं। बिस्य प्रमा धिअभिल्लायं निरम् कर्षा हरा हु हि कंवाधिविषशंगुज्ञमगुवर्॥ ममभङ् निर्म्भः॥वभिष्ठः॥विष्वर्रेयन्रिभित्रर 4. 4. यंद्रियक्षित्रमीतिभाषेषुम। अच्छिपिप रडिंधभङ्गभाज'िक'शुष लिधकसङ्ख् र्। ग्रम्। स्वनिविष्वे अचे परंश प्र दिन्द्रणेड्। महभद्भान प्रचाः धराः ध **६मन फिक्: ॥ वसिम्नः ॥ यम या न भूव** मः शाउम उम् मिभ्यू भः। उभिन्न थिउम र्ष्ट्रापु: धेरमधेरमें ॥ विवाप्तभूका ल। किन्मकं भर्र दृष्ट्रभयने विभवज्ञिय। भक्तिवम्यनं १३३ हेभस्त स्रिया कि नमेक इ'वष्टक विभवे विव'द' के ॥ मध भज्ञप्रमः॥ अपिरक्षिभक्ष्यः भ रज्ञ इस्थ्यमं। भग्राष्ट्रभद्रमें भेद लंदलविधेशः॥ मरिक्रविण्जरा नभानं भी धनन्यः भूरुक्री हा ग्रंगरुल भिउनभित्रमम् मभाभा क्षा भागा है। भागा स्थाप क्यान सम्पाप्रीव प्रान्तिक मिस्र हे हु।

भक्षाः जिल्पुः ०न

Mohd. Ashraf Peerzada Collection, Srinagar

ইমাইয়শস্থ্ৰী কৰি দুৱাৰ বি भाः बुद्धः ॥ नग्रद्धः ॥ अद्युत्राः अञ्च ग्वां भिर्के द्वार्गे यिक । भाषम् य उम्रमुः करिश्वलंडयः॥ मध्यम्ल ग्रचिक्व दुर्गिक्षः॥ भण्य द्वभष्टगाः धाधार्वित्र अभितु । धाधग्र नाभ युक्तः अर्देवाथ सुरुः ममी॥ प्रमृद्दिक लक्वन कवने निर्णव भिश्राणिभित्रग गिथिउमीचिउंचः रुभि दुमें धरानिर नभट्ट इस्मिर्इभक्राभाषभन्कवि विण्डे । क्राग्रभस्गडलग्रम् घवकग्रद्भाभी उस्रभमन्ति भ एंगभनं में सिनिकरायाः ॥ लग्रहरू भ्रायाभाष्ठः भक्रारीश्रमण्य भगर्डः।उच्चमीभूग्यिकवर्मानेन कर्री मिडि थिउ' भदि जि: ॥ भक्र उम्मे

अं भः

भण्णालयं किविक्गी क्रिने इस भड़क भमकाउमकारिए से भारती मिएयरे॥ मुहग्द्रगुरं लयं क्राव्य राधिकरुरी।। पापयः कर्ने सक्रिः स इतीमगान्ययः। यमन्युगयिचं थि कर्रीनेवरंभरं ॥नप्रः॥कर्री रूथ नर्यालयं उर्गिवलयं रामिषिष् ग्रेर्कंगुलःभचःभभविउभ्। मुख उनवंभम्भः॥वभिष्ठः॥लग्राहिभ चापलर'मयञ्च छ जि उ'व' घर्ड': सर्द्धः।नयमकः सर्वण ह्या म्भाष्ट्रहर्गः मुरुद्धन्या हु॥ दिश्चनव ने उभभित्रभं संस्कृष्ट्रारं सेन्सरिविल रमेवा वभस्र भः।व विरोधप्राध्यभा

भुद्धः भुः

गड्डिइगन्नेवः भावनपद्मग्राष्ट्रभ्याभ क्रायक्षण्यानीमग्मिगरम् मंग्रहगुडेंबवामर्पस्याम् न् जिल्लेनभेनयः॥ न्याभाष्ट्रान हवः॥यः प्रथम् त्राउदिस्थः प क्रिस्टिग्रलनगर्य अर्ग्यान्य भाग कि श्रिमान लः मुद्द संपाल ग भवश्रा वृह्वतः वहलग्रन्द्रम् भिउड्डि। अभिड्णः मुठः भूजवत्तः म इडवनभन्।। धनुनं धनुवनं व मा चन स्ट वर्ष (रिवन वर्ण प्रम्ह गृह कवनाउन्हरण्ड(॥ लग्रमधं मुभक्र भागमाभागाएकिकन प्रतिशंस्त्र यगर्गवःकरुगैमध्यस्यि॥ अध हुगुभक्षम्भः। विभिन्नः॥विलग्राम हुगुधद्वर्भिः करित्र मंविविण नुष् भः

भाराशिक्ष इस्त्र हुन स्वाप्त के इस्त्र भारत गिभिर्गपर्ग्नमधान ॥ उद्वानी ग्र गमिगडे अइस इताइगडियवा हुगु च क्षियम् भनाभुडर्नभस्यः॥ स्र जिल्लाम्यः।विभिष्ठः॥लग्रेड्र प्रभव्ये मयह विष्णा नुग्य न्या विष्ण लग्र'मभकुउ'इलध्यद्भभक्ष्यभ्। मभुगनीमगरिभमर्को र्गडेभिवीज एप्रभेद्व मधनकि कि मधिवि हुउ॥ अवगाराज्य हिम्ब हिम्ब हिम्म ल'नराएचे भिष्ठे: भहि उ'मी इवंडबा गक्षत्रेभ्यस्य स्थान्य स्थान विभिष्ठः॥ लग्रांच्यांले पारिकंचभउ इलीरपट्रिधियां परिच्चा भीनां राज्ये है भंचगुणित्रपत्रित्ति हैय वाभचगुण त्र रथ्॥ राग्यः॥ भारत्ये पश्चिष्यं उध

भक्षकः विक्

मम्माद्भव्यः। उद्ग्युह् श्रुष्ट्रभाम्भाद्भ गान्द्र नुभौद्धारः ॥ उद्यायन भिष्ठः॥ नि विभवधिष्ठानंभनेयाभागाक्षभितिः श इए विरूधनाष्ट्रिनक्षनाभाग्नेयाभाग्नेभज गद्भारतार्वे क्षा प्रवास्त्रकार्ये निष् वक्तवरा चन्नयस्त्रभ् ॥ उसन्यम् ॥ । उ ग्रमिति इवंगन्द्रभित्रयंभन्दर्भ णनवयनविवाकअभागिक प्राविभावाभिष्यः॥ नज्ञहर्भेजनवंभर्भेगफुनर्भेजभऊ उर्देश्वर्गाविक्ष्युभाविलय्येष्ट्रिम कालकाउनिक्रि॥ उड्व॥ गण्यम् भाषिलभक्तें विसिग्मक्षयः।दिवियत्त्रम् गर्णः पर्वभद्विभिवं पिलभ्। सम णक्तिकिय्धः॥विभिष्ठः॥ अनुगिराष परिभव्विष्ठपण्डभच्वां भाषा वास्त्र वास भद्रभनीष्व। मित्रुनगणिरु भन्नगमभूरुष

30

भक्रिश्चलमिश्रविष्ठा हेचु गराविश क्षेत्र सार्थित स्वाप्त स्व स्वाप्त स् मद्राउदस्एणभेर्भवेश्वर्क्षक्षिति वे मिधाकानलाएः॥ अञ्चलक्रिक्स् **उदग्णायामववरा ५५ भूभा उद्या**या यंविण शवः भिद्यम्बा ज्याष्ट्रभू वि प्पयंच्या देवः भिन्नु उ। यरः भारिति क्षइर्ड भनेवाणया भरवंडिभनका इर् भेठवडि।उँडे चुराण या यक्ति भ्रम्ब च भे उंउद डिट्गूष वर नीउश्च जगउक षिउमिन् मिनका अस्त विने ये गर्थ है। इ इिमरिअंडिकि रिष्मु फिडेम इं लिए भि डिभिन्न्भी उघवभ्रजुग्रम्भणे। व क विस्था कि लिया एउपाउपाउपा करण्डिं इंडरं राष्ट्रीहरुमं चक्रशास्त्र उश्राम्बन्नां एधिविक्ययेगे॥नगम

भक्षरः विक्

धि॥ लिपिडच्च गरमक डिट्सा चुड्ये म माउड्गणजाविक्मह्क षिउ अजि उट्टे भ डर् ॥ इंड्रक्राणगाउँ : अट्यस्भिम् वः। एकं नलं में प्रिपं उम्र हि एं इति उनिवें॥ उभां ऋवें गण यः भूलनका र्र भक्वः भूखेगानकवार ॥ य । इदिविद् भार्डः भारित्राई स्तिविश्र के मा गुभ ।।विभिष्ठः ॥ विद्यारम् ध्रभभ द्वि इक्षेविलग्रभङ्गगुणनम्भान्। पुरु गूर्ने जीनिया त्रिया विक्रमें केंग्रल भंक्तियं यद्या अधिकारिकः ॥ मक्तिल भभाधिम्र उद्यापनियान इष्टमगुज्जविधमगुज्जमगुवर्गामगु भभाष्ट्रिथक्रनभभमान्व एनळ्यः॥ कित्वके भाग प्रक्रित्रभगविष्ठिया दः भयम्॥ भग्रेन भग्रे विनिष्ठि उ

भं गं

श्रामायमंदिनवं सक्ना ग्रेंदिशशक नन्त इणि इनवामकनाधिन इरामि भ्या मेरे इस्मिन इस इस स्थान कभ। इडीयगं क्रिडीयकंग्रीड्र जन्म अस्ति भार्ष। हिन्दिचण्ड्य इत्रम् अ म्गड्भम्भठवास्मानवस्य सः भम्रह्म इव। एक तल भग्रभाउन इंश्लिइ केर्द्रस्य अस्याः। नष्टित्रस्य द्वाल वलंडुपरंविमंद्रभ्॥ न्यव्यक्षेत्रभाश विभिन्नः॥ याभाज्यभध्यस्य मुक्रालि कञ्चहनवार हुव स्थान यह संस षम्भ्यं कुउभच'ज्ञं ७न्।निध्रवृत्वय ष'मगीरभाषिलम्भइयभ्रह्मान्ड ਣਾੜੇ ਅਮੁਬਾਰ ਪਿਕਾਣਾ ਮਾਰ । ਦਾ धवक् ॥नामः॥निक्रियवारम्भ

वि.स.

ब्रिअट्बागिक पुत्रभाड्। मिश्मच गर्ले पडे भुव हुः भवभन्न ला विभिन्नः॥ निपनं भूः द्वार हिनः भड्ड यभ भक्षके। जिनकेभ चन्यः श्रम् इवंडन में परः ॥दिविद् भागनचार्गोकिडीय'किकिव'इ'ए:भ च्यांच्याः। हैभक्तवर न्यामनी स्थान वभवे॥स्थितिः॥भन्कित्रभ्य उच्य क्रीग्रह मुद्रा इंडिक्क क्षेत्र क्षेत् क्रियाभिनी प्रज्ञादिङ: क्राथमें ठन भा किवानि डीयः जलिके कर रेगरी थ क्रिच्च:भूष्वभःभगवागर्युअःभक्षमम विर गम्बं किवलं कित्रवंग ॥ भगंउव भिष्ठवाहाँ के उराई निक्षकाः॥ भूक रुग्रे भल्ले॥ अिकःकलं मन् कि किनं मेकिननि के डिरवंजिनक'एरेसे। भभन्नचंद्र'यभ दंभ्डीभेन इक पद्मा म्यल इत एम ॥ ग्र

भः

अच्याचाराष्ट्रियिलंडभद्र हैं में हुन्भरभूति। उ। जलिकः कप्रकार्यन वेले । इभाग स्कः॥ यग्रहाभग्नी उभक्ष विभाग एकभ्। जिलक्ष्यणिट्य स्वेष् हभागाउँ ॥ भार्कम्ति लक्ष्मकुद्धकु जिलके स्भारी। भूफराचे परिष्टं होने द्वा मकरमनाभ्यत्र प्रमण्डे ॥ वित्र श्रेड ग्डालं । या वस्य किना मलभ्य या व्या इक्से थिन' इस्मे पविद्यागर इस गण्डाप्यभभाडापुषस्ड (कम्हिन्ति कें र धुभ चया भ शुभ च उः॥ स्वति द्या किष् विभण्यः॥ डिखीधनांगा क्रिगिरीमवारि पिगरुम् किन्तिवकविश्ववंभवः। भनी हभक्कविषमाविष्यः इस्पर्विषण्यं िक्रमाउध्यभ्।विमम्राउद्यम्मा ज्ञमेल गण मुख्निवष्य भूला अ

भक्षद्धे. विस्तृ

द्धिवारेषु हव दुन दुने में दिश्वार परि क्या उन्नाम । न्यान कर र जिस्परः॥ ग्यं हा गिन् हों भ गुन्थः ग्यव मं इस् इस् मः भारताः हत्य हिष्णा हल्ला हा भारत यभाः भूगाण्याचापनं विमित्रविम्यः॥ उर्यु अक श्रुभनवः धरु क व म श्रिने हो भक्करण्यमामाः।नाग्रज्ञेक्षप्रयित्वि क्रभुक्तिभावयक्रभुभाषद्वक्रभाष्। अ हाः भवशातिभना निकारा श्राप्ट मुड श्रापनम्बन्धा एका इत्र भागान विधभाने ड'िडभ्राधिष्ठिम्निहडल वे भू एं उद्विधभानकभ्।। उद्वा मंद्रित धमारी में प्रित्त क्रियु कि नाशल ग्रे विन मुर्द्रा चुः के मुंब ने मा भ भ भ भ षाञ्चभलयग्राचे प्रभाविभष्टः॥लय 

कमरभुवडडःमभुनक्षवड्र ॥इकम नः लग्नें हे विदिश्णकाल्यभाष्ट्र अस्य विद्यालिक मूमभूनरडिभिष्ट् चैरामिडिधिदलागैड इविदिशनग्रहः॥भगभाः अहसुक्रिश नग्रम्महभग्रभ्। उल्लायन्त्व हु इ इम्मं मुउमी मुगन ।। एए मुग सुक्ष न वणमन्यमयम्बर्भ।उस्तर्भयम् नेयफिलायगाउँमुक्भ(॥विभिन्नः॥ रणन् माधुभरामीमिभिष्टिभिर्ययां उद्याग्य ग्यम्भद्गित्रम्भन्यविष्ठः॥न्यक् लकिमिषः॥ सकलकि भ्रिक्वःभ स्थःकोडिभट्डे उक्क दक्षुः। इ ७ य ष्ट्रभचगुणभूमज्ञ भवत्वज्ञानिभव किम्गुभ्। हवक्राभूमी भिक्षाया भू॥ म्। अस्मित्र इति सन् भागिभाजि उ। मकल्ला भ्रिल्नीयाम् अञ्चल

तिः ॥ सीपितिः॥ भेभिक्मिष्यु । भेन याशिकालए। इउंपर्फिकें मेवने कर्द भुवाभगान ॥विमेधरेधश्रमकिमंब यन्भर्॥ त्रकेलरुकवर्षे विद्यीपार व्यः। ५ इड्ड पविचे में मूम भक्र भलयय क्रिक्सियंविवहवर्डे उनम्भियवक्तरः॥ ग्डाउरे॥ योधभभ्रितंव हो भाष्यम्बरि नइयभाष्ट्र लिकिनमके । के इंग्रेपि क्ष इयभ् ॥ य द्वा क ल वह । उच्च दे च नविद्धाः यावत्रयानभगविनग्धाः उभद्गी॥विभिद्धः॥ मकलवाष्ट्रिएं में चे गुम्बर्कभवन्त्री। इति उत्तर्भणी के रक्भग्रलयम्॥ नम्जभ्रज्यस्था बिश्वः॥कर्रोडिनिःश्वेजभ्यः उपि भारभञ्जित्रभास्त्रज्ञस्था हुउग्छग्डेनलयम् हुउभिवाद्गकर्॥

भ र

नामः॥ रश्चामिष्वपष्यभक्तराञ्चनित् रः।विवादिष्यं व व्यविश्वात्या के बुरुः।। भऊरुविमारभुभऊरुथ्करलम्बृहः॥ वभक्तिभाधमं क्षाः॥विभिष्ठः॥ माभू इमनीरमद्रिभागः भवे एउँ दिवयं वरंग।दिःभभवागनिवरंभम्युई्रिकि गद्भक्र जनभभभूभी। भद्रभाउँ वैचाउँ हा उपरांगभभः भक्षा उभ्यं किन इसे हुट्ट उ म्रथन परिकार । एउवं : भंडवंयवं॥ दिभावनं मन्त्राह रिणड अञ्चीन ज्ञभा चित्रविका ।३। दिभवारा अञ्चयहैन उविनिहाः पाउँ हाडी पाउ एवे पाउँ हुः॥ उद्याभामकवः भूका गुरुषाभुद्रा भिज्ञभन्ते॥ भार्ष्य स्पेग्रेभ गोरितिक भ्रेकर्भनिक्जलीय पश्चिति। उर्देशे

भड़ में-

ज्यान स्थान स्थान ख्वापिषद्व निभन्न । इत्र मुजीय चनु कसरामिद्या उ शःभहवः,भय्षां भज्रामिन्भले॥ ने इन्या महास्मा स्वाप्त का निवास के स्वाप्त न्यड्र एड्रिंगेश्रेडिकिनिदिउभ्॥ विवास अथप इन्तिविक्य संद्र्या भारत यद्यायायञ्च द्वाद्व द्वाद्य स्थापन भा उच्च इंडिइडिल्यंगिल ड क्रिक किन्द्रेण उक्षप्रानयन भर्ग अद्मद्रावर्थ यग्नेन जाए अभन्त ज्ञान भए। उद्यो भावन अस्थ्रमा भक्षण्या उड्डेड्डिशिक्षार्था सर्देश लि उन्ने मण्डानि। भनिज्ञीन रूभप्रधारम् । भान् ५ । महालग्रां अस्था ५३

म्रा १९

मारा। शिष्केल माइब्रल भक्त एकी इव स्मः। प्रताः धार्षाधाः सन् । शत्रे कं शत्र भीपिला । भऊ उस र भाग्छ । सी ग्रें सिविए। न वस्य स्थिति इः पड्ट च इंड व व व व व म्रानकभप्रभयिकिनिएश्रभी क्रिउंदा गुउ भ। भः इत्र या प्रवंतर्यं मधाउत्र सार्थे यु उ मधीलया अंगनवं मभ्यभग्रह्मभी वित्रमञ्जू हम् ॥ उने उच पेलव पेलवेश थ **डिति वेव** । अर्थ सभय अथ डिद्रनेमें इनेभिष्ठवं कुरुभद्गनं खाः ॥इन लवंगंमभ्रेश्विष्ट्रभ्य उपनीम मुहंब ग्रामवार्भक्षरभगं मन मभित्रम् व्यरभन्ननायाः॥ नारमः॥ उद्यम्बाम निराध्याप्रचाश्चरश्चर भग्रवी मुष मक्र्यभार् भूगज्ञ श्रुश्वाभाग्य मभूप विकरा ॥ नया असिहा दि उ शुभद्र कथे

भक्रकः

क्रोडि॰ इंबाक्ट्यम्। र्। हेउसं न्यय ण्यम्बर्भे अवज्ञवनाः वभद्रम्यूर्थे । उ ठूकवानुनु**त्रिः॥ अखग्रतमञ्ज्ञानिष्ठः॥** वस्थर धारा । इस्त्र प्रच मुहरू राज (भार) न्त्रमुक् भन्नार् उग्राम् अन्त्रम् ।। एउ उचिग्भविध्यभ्।।उष्गाभचग्भभु गर्ड कर्ने, प्रायः हर्ष्ट्रायाः कुउभप्रगर्भिष्ठि॥ उद्याग्य अनुराधवारां प्रमण्यित्वम् द्भाष्ट्रभाष्ट्रम् दलज्ञामङ्भद्वधार्म् ज्ञान्यम् इति विभिष्ठः॥ ग्रुज्युदिकिने अचे भ्युज्युज्य यउष्टाभञ्ज्यं दिक्रिनेन संनिः में पेन प्रभ अगाउँदेव। ग्रान्स्इनिमें प्रष्टेभव्येचे ठवेहिमा उठयर्थिम भः श्रुद्ध मानव नडर्डा पद्याचरणार्जन इयश्चरित म हग्दल्पगंडभा पदा विषद्भवित

41.73

क्रितीयग्रें प्रमामक किराम क्रुडिंग कि हा उरिक्रिनेम मु एड्डिं भिविणः भूद्र अपि भाउन्हर्ष्ट्रभाष्ट्र कर क्षेत्रहा सबस्य इिविण्डरम्लकाल्डलङ्ग्डर्थ लिएडे॥ विभिन्नः॥ गुफ्ह्रएःकडवञ्च उर्राम्ब्रभाष्ट्रकः।निज्ञाडधीववेमल्किथ रक्रणन्त्ररः॥लेदिउरज्वेषुष्त्रक्रवे परिभामवः। मवभान् भर्तश्रु अनुविद्धाः क्रयमभी॥ उर्द्र इति जेय मुश्रवंब व एप्रभभी। उद्भक्तिमिक्ठिभाउद्दुडः धनिकी रिउ:॥हेभः श्रुस्र जनमञ्जू जिल्हा भष्टभाः। भेपल ७ लगः क्रियं वहां क्रवां उम रुडः॥ हीभमानुभिभयानिभाद्रवेद्वन्ति क्षएः। मिल्योभर्गेक्शिकन्युद्धिक भरः॥ गणभगुन्द्र॥ फ्रिब्सइय्भष्टभन पानीबभडाउ।उद्देउम्धमभनं कवाउडम्बी

भड़के

नभक्तः॥ यवपापविद्वाणिष्ठितकार्के मः॥विभिद्यः॥ अग्राम्निक प्रिकार् नुं विज्ञ कंम्य इ.च भरा भन्ना नक्द भउउं दृष्ट किंदु इ इ विड विद्वार्थ। नामः॥ भङ्गलपृष्ट क्रिके हे भगविद्यु इंचरा। में भार्यवा में ए . ब्विभिद्यः॥ उपभ्रवह्मर्गिर्मे भ्रेषेशु इह भंडवः। भाषा विद्वस्यः भाषां अरु देवे भक्तवः॥ मडिप्रेश्वर्वेभप्रवन्तरगञ्ज भी। भच्य नेवशीय त्रिशण नेक रिकेरि हिः॥ उड्वा गत्र हणि द्वापलभत्र रंथ इ रेइन्द्र उविक्र चित्रं यहा। सम्पर्करा क्रम् उक्त नी मुरुष्क देष मुरु प्रदेश । भक्र मु रभार्छ। राहभन्ने दिहिहें में : मुद्राधि द्वियगभर। मधुद्धिः मनिहरान मधुन् ह जरानिकाविष्यः॥ भाष्यमान्यम्म्

かかり

निग्दने**ठवें विविष्ठ**कः॥सञ्चः मुहिभा र्वः भ्रमन् क्राइउउद् ॥ स्थाउँ ॥ कु त्रांगाः भक्ति दक्ति उन्न है इंग्लिक लय गर्मर्। मग्रीमुद्रं मकुकलि शिवन हु इमेर्ड्डःभिक्तिवा यतुःथास्वय द्रवास्य धिन्ने विन्ने श्राप्त के विन्ने विन भेजें इकि: भिक्षित स्वाहित स्व ग्ले\उच्च । । मञ्जू उस्मि ज्ञेकरीप भित्रे उन्ह यंविद्वं उन एकं ग्रॅना के च्रिड्ड प्रेम्ड प म्ब्रिंडिनंभिर्मु झुर्न्धिनिपारः॥ स्ट्र भमित्रापरमाउत्रः भंभू मृद्धि। द्विराय अहरीय मुविपगीर भंडे हाए।। भर्भभुवि निपपृरोणिक' भिद्गु च भवत् । कि भश्नापयमिकित्यान्य भभित्र उम्बराप ग भनेनविद्या विभिन्नः॥ भग्नावन मुकः उठग्रेविइइइणिलमाभुभंउति। इत्रवि

भड़क्र.

इभन्न हर्गहरं महरूप्यकतं र पर्वाः ॥ भक्तनुबुद्ध भल्ले॥ प्रकिम् त्रिपिष्ट्रिकिनेंग ज्ञालनगुद्रममनि।उसुमूहेक्ट्रिक् ज्याद्विकंशचल्या मी विकंशक्षायथः वजीभप्रमलकितः पंपरप्रेरषवि विबन्दि। उन्नद्भव मुन्द्रभव उन्नम्म मन्द्र इडीपूर्वांडे॥ इडिविवादिश्मिभ्रमलाका वणवियाग्नियः॥मेष्यं पर्यं ययं ॥। अथवार्कः मभयात्रिक्तेषाञ्च बडमाराणः न्यानिज्यदेशपंत्रपः करितिः उद्रवा नयंभद्रमिवि प्रिवंश्वरेश्वर भूर विणिभभर्गः।गञ्जर्गादीरंभरधंमय **इम्ह्यान्यव्यान्यम्याः । नाम्यः ।** पिट्रष्ट्रभद्गं क्रिक्य मुलक्कि प्रयोग च्छिकः अल्प्रेयः भक्तिभन्न लभ्रमः॥ उतिभक्त गुरु है वक्ष रे सूर्य भाषा में भक्ष में भंग गूप

सनिर्भा भूका ले शक्क हा भी ११ ०० ॥ मधब्रवा अकाला विभिन्ने ।। मुडि भाडीनं पमभाउभक्तिएण्डल इभहत्त्व इलयः।उभाष्ट्रिक्नंडमवाधुक्नंबे ल्रिय मिन्द्र उणनम्भवद्वराज्य विग्रहान्य नि गरूभके ममें गूरी व व व इ मिविस भी गाउँ उ: भारति वह वह साधु विस्ति मः। ४ थनी उँच इः स्थि दु इ इ धने ख नभ्। यद्भगन्तभग्रहाउधिकसंद्रां द्वांवि माराम(उविमान्त्रिप्रमीनं रूमेलक्ट्रभ उड्डिमाविदीपिउड्डि: 2: ॥ उद्याग भङ्गद्र॥अअभवाध्नभवद्भनवभद्भनभाग मा एक सम्द्र सम्बद्ध पनया दिए। यः॥ इक्रवन्नभभग्य प्रवेशानु यम्। पम्रद्धांभयभागविराभववियमं

बुंक

त्रामिशाइडि। विह्नः॥ यमुडिएनकभ्रम विच्वि भ्रथ्भपुमा मुम्मचक भ्रभुव विद्या । इस्म इवित्व विषय भीष उग्रद्धाः भागमापमागुनमुद्गारा र एक विश्वचिल श्वम्थ्रमापम्म न इन्डेश बरफः॥ रणीवभिजितिभूणचा इक्ष्यं श्रुखमं भर्ः। सुस् विभः मिप भारत्मन्त्रुवः भक्तवहरू वर्गभ्यायसिष्ट्रः॥ माष्मगुन स्रूणभी क्रवान मवास्क नैविधनयनंक'दंवलं म मुजलिए। नी मह्यामकभेभिउभिमापमुग्वाक शिउँ स्थ्राः व्रडीम स्टीन्जल भ्राजः मार्थपरेगीवी भ्रज्ञलं विभक्ता महुरामी उद्भन्न किल्ला स्ट्रांस के स्ट मुक्राःसराम् । रिह्ना करान्या भारतास् मुभारग्रा मुद्रमापस संदुरायला श्र

かかりつ

अभे उद्मव अगमिन विभन्न गा। उपन यनमञ्जाभिक्षेत्रम्थः॥ माण्डीस्वत्रम गुरुजनअचकभी।उउँभूषंग्रहवलंशाष्ट भगार्मिष्वः॥ मधंद्रयां ने अष्टिगुद्रव लभाष्टिम्इः॥ग्रञ्जा । थिडः अद्व लम् अमापावल मधिच ए । भचेषागुर मर्कितन्युंच्डाम्य ॥विभिष्टः॥४जे भिवद्वे "वनीग्रम् सुरु प्रमुख्य वर्ष क्रामनज्ञवद्वीउनलभूक्रेभिनवेडखरेक् वलंवलीयः॥ ग्राचुर्गा बुरम्मिद्राप तिञ्जूराचिपीच्चनाइन्डर् मुठेडिक'ल उद्भूष्ट्यक्ष द्विगण्य चनार्यः॥ भऊ इ म रभन्छे ॥वर्ते उमेश्वर्षे च्रेवाश्वरामी उल्लेव गुरः। मनिष्युप्तगेपीष्टः मुह्भवीमम र्हे॥ भेग्नीवर्हेवियं क्मभ्रियुंचा वि मिधे अभिमान वक्र इंडे विणिक्र कर्म

334.

लक्ष्या नगरः॥ मासीप्रवभनेष्व इभा अधिकान्यनाभए भाष्ट्रभोणारलंडधाउद्याभी धाकियाक्ष्म॥ ग्राजुरं॥ भगज्ञभगड्अ द्रभष्टभंभीनमध्यः। ५३भंगयभजे के नियुनीवन्नविणि:भूउः।विमर्धेलमुरुःभू अञ्चे द्वेशीनगर्गवेशाग्रमभूकवना ह्य क्रिमुन्निहराउद्गेपनयनंकदं महिभी नगड्यक्षे ॥ विन्दुन्वभन्ननहार्भक्षा लग्रि। मनप्रयेपनीउम्रभनः भेक्ष्यभद डि॥ एउडि मनव अडिट्र मधुपार्भ।। गा क्रियाग्रस्थ अक्षिम्भासे विवास क्रिकेन मह्या भागनिविभून तक मुर्रिध भू छूवि मचः अविदः अविद्याभी भाषा द्वारा भाषा विभूएनद्गभविलयस्मिभूष्ट्रविम भूषिउ चूर्रेन। यन हुग है हु बर साव हु मिरी

4.

नकें जिति हिंदि है ।। यह निर्मा हिंदि है मिभले भंभियु दु अधिग हुडि। भून हुओ द्रविभः भनः संभूष भद्रि॥ भनवभनि भगअब्फल्यनिविश्यस्थिक्तनिक्षा नगमः॥ मुक्तभक्तिशियाम्बर्शियाथ फुभीउष: उच्चम्मीग्रमभी भुभी बुउव उने । मुप्त इक म्मी भष्टी मु म् हिन् भ भरभः। एकं मड्डी भट्ट हा द्वापत थिभरभः॥ स्थान्ध्रश्चिवः धर्भ्य गरिनिकिडाः॥विभिन्नः॥ याग्रेव्यमाप भिराहरीयाभाष्यसभारतिष्ठं ज्ञान्य क्ष्युं हुनीय पन्य भूम अभू जां हर हुन् गर्भ नीयुवदः॥ यहभाष्यभाष्यभार्ये प्रश् गलग्रमधन्ध्र द्वा द्वा द्वा वा प्रमा अमर्भि धक्यानं वागः मुपः मनीन यं । वारी भए फली भूजा विवरी निविष्ठ व

युव-युव-

उग मापापि पि विश्व मापापि पर लंगि क्षायाणिभित्र लग्नेमिद्रयंम् त्र हेर्डे। न्डम्बिइबिइभः॥ भिक्निवत्रभक्षाम एगविष्ठ इत्राण्यु छ। विनाम अहि ध्या प्रदेश वर्षिवणीयडे॥ भइमडड गनिचणः॥ विति इ वित्र हुः॥ यहः ॥ भाषय्दाणाः बाश्चान्य हम्म्यान्य भारत्म भारत्म भारत्य भारत्य श्रुङ्गिवर्षिविधिद्रित्। मुर्रेद्वर्णनम्भितः थाथग्रवयुत्रविमाभचमायापिर्धरे न व्यगिष्ठिमुक्थः॥ यवनकाङ्ग्लाविभ भुः॥ दश्रद्यम् वलद्यमण्ड्यद्रु वस्त्रहेष्ठ। यो भूष्ण्यमामि विक्रम्यम् चिएनं पलभी किक्र ॥ भऊ उउर भ न्छे॥ नम् दि अल्लन्ति अचका दिक्षप्र वाफिरीएकरभिड्भगां उठपाणीय म **णलभदरीमवभ्रगभजदच्रतभ** 

4.

भागानुभाक्षान्यकः॥ स्वकृत्वभ कद्रभद्धउद्गे प्रिमिभभी। भानभेशाकृति महिरामासुरुभष्ड ॥ भूड्णकृड नु उर्चमवज्ञभ्याविभ्याः॥लग्रायक्षिध ग्दरमययग्रुत्रन्थणग्दरम्य । ग्रह्मउपिभ्रुलेम् मिष्ट्रगणिह्य हो धिनिरीक्तिउचा ॥ नने एने ने एन मुह्न ल यंनविष्नद्वंत्रम् अवसं मः।नविष्यम् विष्ठ मक्मेलग्रिध्मध्नमगदिनाषः॥ जली रकंमं परिहरू से धनवं मक सि क्रिवि णिथ्मभ्रः॥इनिक्रिः क्रान्वमण् ग्रद्धां मा मिश्यानवश्वानग्रदः॥ श्र मुभं भी भी उं मुन् विनेयिक लग्ना गः। उ क्रीडिमिस्निः संभउउकायरिशालभ्या भक्र उम्भन्छ॥ केविड्म भूनी अलः कक्षांभुःममीयुक्शाविभिष्टुः॥भूग्ल

व्युक्त

युग्दियकिलयभञ्जवलक्षपक्कि थिठव िः श्रः मुजिकद्वदीनः॥ भऊतु सर्भण्ये, <u> इव इवं एकः भाषी पर दश्च मया विडः।</u> अल्डिक मिष्ठ में म्यविष्य गुग्रः॥ धार्थमकगुरुगर्भार्थ डिपिया अन्य यथियी उम्र भने : में भूर भ द्रि॥विषष्ठः॥ अद्भकगडमम्भन थाउकतम्बद्धाः । यष्ट्रभमेवीशुं मर्भेन विनि: भ्रः। प्लभ्रमः॥ स्वल्यक्रिक्ड मभं अउधिक मीउनी विद्युवान नवा क्रिंग्राड्य हैंगवाड़ी। ग्रविद्य इ मः वस्या भारति भारति । रवीलया किक्स अवस 3411

भ र

生**全工化工具之间**3种态度 रित्रभागीसंस्तित्वण स्वास्ति वर्ष लयकिर्देश्यम्बर्धिक विद्या नएननीयान माधवा प्रमास्य वर्गा क रिलय कि वस्त्र भरे पश्चिम् भूकि है। भ भगं चित्रनिविश्वरिविश्वनिश्मनभी । द्वार मक्रेरविंहेभः भक्त्रक्षायात्र इत्रावित्व नेवलवा अनेभिग र उनभे मयः।। जुड व वनलयार्पपाःक स् स्माक्षराभक्त विविधः रंगेप्रविद्धानं वरः॥ पष्टुभभू नगः मेथ्यन पथरू जिसिक्ताः। उर्पप भचभग्रभट्टल राम्बर्भ इकास करा

रुवं

लग्लीवें ४नः अद्रेषव हुये। दिरीय लाज हैया दिएन भे भन यन ॥ मके भिकेद्राः भेशःभकनं में चभक्तव्यं ।विन भयति। धार् जिन्दित भिरंशवा ॥ सक्या । अस्य अंभेलें जे भच्चित्र के हमे। उसमें भानवंश अर्थिक जिभित्रियम्। येपभाषए र बाचुर्यभवित्रग्रनग्रंमक्भेडवार्यः क च्युरभाविभनीकाँडिठलयम्भः क नकर्भाधा वृष्टिनयगड्गीवः अई द अववापपः।काँडिव्डिनं अनंग्राविष्टि वि मायस्भा अञ्चारम्य स्थानम् अञ्च यभंद्रकभ्। रविम सुद्भाएं कि महर्रिय वलाविष्ठाः॥ नीयिष्ठिष्ठाः सर्गापिष्ठाः म्परिक्षा अधिक ग्रेस् युष्ठलभूमध्या भागकिष्टि प्रियम् मुः॥ प्रमेश्वन मुःभउउं विकल स्टिपिश

A. 1. 2.

इंग्रायम्भः द्वारामा । भरामा अने देव कि अप स्थान कि स्थान क अन्दिन्तभभद्यम् । हिन्तन्ति । यीक्रिउरकविम ए शक्र दें चविवस्ति दें। यरः पष्ट्र भूलया उ विवित्ति है । यह । यह । मुन्य बुवल उनिह भे पुना । विश्व :॥ ग वंडइ,भगंबी क्राय दुड गंव ला विड । भड़ाल प्रिवगेरिक्षक्षे हुनेय भूभा या इंशाभव य मिष्ठभारं द्वा ज्ञीयन यन भए अष्टर्फ भष्टभंत्रज्ञभयरःक्रिडियदिडभ्रियान्यकः॥ रिए'विरुष्टियभेडर् क्रेक्क्रिक्री विकर्भ विजीवभागमंक'रं हुजीविम । उप इक्म भक्राभुग्द्र॥ मुर्गिर्भे चुनी भङ्गभभप गगल " हडीय द्विडीय हें द्वेभ भे हुड म्राग्विष्टं वक्रिवज्ञभमन् रविविधीभी

बुरुक.

**इन्याम्बर्धस्याध्या** कर पर क बाज्य वेन ने ने अपने स्थाउस । भक्त वर् हवा वभन एयं व्रकं उषं ॥ स्वर्भाभ भीविष्ट्र इचिम्ब्र काउइमी। भार पर दि क्रिजीबाजगलगुद्धारिकः॥इयम मुक्तिमार्ग्य सम्बद्धां कर्मा स्व **॥। इस्थान भवाउ गमा**वः उपिय भम ब्रं अपनयन चुणः। नानष्टां यन

10 To

निराउँगनग्रा मध्क प्रभवाभय्य भन्न उरिष्ण स्वर्थ श्रे क्षेत्र इस में पपमिष्य गर्दिक मंभेव । गथ्द म् भ्रायूपण्डावनिस्र वल्या अभाउष ग्रं मकलभूपाउँ इहनक दे बुँ अभू ला कि। किया दिक्रिन में के क ग्रह थे कुछिन निमाणाकम् किन्युक्तं वरूभाइकिन्य यभ्।। उल्कं यंदि किने भूजे छन्न थाड़िकिन निम। ख्वदाभूगी धिकं या भी। शक्रा र पारिष्ट कर दिल गुरु ग्रा भ्यान प फुगरें प्रिंगरं ब्र उत्त विश्व सा ब्र उदिभचभञ्च यंचारिक्विक्रगत्ति । उ किनश्चार्यं इंडडविवस्त वंड(॥ग् उत्रा। उद्गवस्ति राष्ट्रभामा वर्ष रलभे।यमिवह्रमनष्ट्यं इनेवभक्रा म्रिति । इम्भक्ते ॥ इमि अउस पर्क

चुं ।

गलिनि चिडभ(॥ सिम्रु:॥ नेभिडिकभन क्रवंद ब्रेंस भूति पदिन भी भाषाना वस्त्र क्रिलेच हुन इप्रिश भ्राप्त हिन् कड्ड विचान विकास में दिल निकाल जिला अप सन्तार प्रेम विक्र ॥ अक्टू चाउर भका चरभक्ष विषेशभं श्वाद्यभुभन् भत्र (॥ युगामिभन्न मुक्त म् भिषय इच्डवइभक्रलंधिमभ्। के॥ य वश्याच्युनभ् । विभिन्नः॥ मणीट बर मुरम्भ भ्रम्भ भ्रम् रंग्नाष्ट्रभी। अद्भावत्रनकत्रभञ्जा क्रियेनेडः धालिनि धीक्तरां श्रुक

भः रव

भिध्यनेनिद्गलयः अवक्रके हुए ये म बवलक्त पर्वाभन्न स्टारिक्त अव भाग भवरामिकाएं।पिलसिस्सिस्भि।। नारकः ॥ भित्रेष्ठराक्षित्रीक्ष्येन्द्रप्रितिभ इविणरुप। रमुक्रेस् ऋष्ट्र मुद्रागत ग्रंमकेष्रिय ॥ भिक्तीविभेक्वव्यव्य भग्नकमानकप्रभिम्म मेलबङ्गार्थ। य गिवलंग इर भ इर इस्रीनिव सः क ग्रीक्नांश्कि ॥ र ॥ र ॥ र ॥ द्राविष्ठ र र वे स्मान र ने स्मान स् समभी ॥ ०१ ॥ ॥ यम्मुगिकातज्ञन्भ ॥ NAN

नकाम

वा विके वह नभी। नगरः ॥ कृतिक बत्वब्राच्याण्या काग्राहर। विवाद क्रियाण विषया अध्याप्त प्रमुखा ॥ ग्रीवस् इडि भिष्ट असु उपराना विडा भिक्तिवह इतिविध्वज्ञण्यस्तिउवाभरे॥ सुद्वस्ति लिलाच चा चा चा चिवितारे। लग्रिकेल कर्षुः सुरुष्णारेगः भरेशक्रीकरत नंकद्भन्नियः भित्रम् । इतिभक्तः उड्डिविक वर्त्तनभ्या मम्भूकाला। न्द्रविव प्रकालभ्॥ विभिष्ठः॥क्षेत्र ज्ञित म्मभभेन परिशिष्ठः भीषित्रिः भगुलव इयग द्वान्य । उद्घेष लयवम उगुलवाजलिय भेग सावि एथल प्रभ उः भ्वाम्॥ वग्रम् प्रियविलम् लभाष्ट्रक्षवयनभ्॥ इफ्रम्बर्ध वाद्वः भूग्रुपर् ४५५ अवा श्वरः। गानु च गह्म

40

53

व्यामाम्या प्रभावका उत्ता स्था ए स्टिया अवभनः श्रयक्वय्वीर (भ्रम् अञ्च । अचार्राक्षणस्या गहानुबन्ध्या स्त्र विष्ठमुप्रभाःभागः गाः वृत्तवाभागा उँ उरे रे रे भविम हिष्यः। यह स्थिति भिम्कारीनाइभेमयः॥ विभिन्नः॥ भ ए। इर्फियं संभक्तः के लेखके बिवक द्विवापः। गाञ्चाएञ्चा भागका भञ्च प्रमामवाभवकालविष्यः॥ अवधाल राजि।। इ केविवान अक्यमीय वे महत लहुर।यह्मधारिक केंब्र विश्वास्थ गे ज्यभे। मारभाया गर्भिक्जि देवी कर किनाभक्षः पावच उद्गः धरु उत्तर द्रापा अभा मृति ए स्निम् हुचः भ भवा कियः। राज्य राज्य राज्य समामान हक्ष्रलं इर्ग भर् उद्घ ममन्द्रकहुः व

विव भू

न पूरा हो डे। भाभिभाभि रण असः थिउ थिविडिमिलिडभ्रा यशं विवादि इट ब्रुक्ति असमिति इः। समेर्ड इरिए इ येवेकलेवाधलीपिः॥ एउ रूपनंज् क्रलथवन एक द्रिया कि परं स्कूल परिप इन्नर्ड ॥ उद्या राम्प्य उपवाक इति इल्ल्यूल्लेमचा माडिप्रीम्ह मयाक होने नक्रविश्वीवाउँ॥ अनक्रविग्रणभ्॥ उद्यक्त व्यक्तीन भाउ भुग्दि पनि विद् गानुचामिववार्षप् ॥ वलकारित रणवयञ्च अग्र विद्भिकिन भलपा। भष्न इक्क्स्थरणभार्यभार्यभार्य दिनमा विडम्र॥ युरु युरिव मनक हकार भगव चिष्यत्रहरू भिष्यु उर्। रविष्ठिवम ह ठेवगणेविधमक्रमन्ध्राद्रः मदुरग्वलंशर

40

फील पीयना भाएं ग्रम् वल वर्ष वर्थ है। वंत्रलभा नगमः॥ विवादिक्तान्वर्षे फ्ट्रेन्स् अद्याः। मह्लयः इडःक्ट्रम् व लभूम्यभूयः॥ गमः भङ्गान्ति प्रमान्त्र के स्वति स भनेयिकिनिरणगोदगशुक्षगङ्गिसभुः। म्बक्टर्डा अध्या । अधिक विकास मिन्न स्थान उक्तिनिर्मेभिषित्रुवर्मे सुभक्वनगडः श रिम्बुधर्मि॥ भज्र उम्राभल ॥ मुर् त्रंगे पिविव पडे इर मुर्ग में भूने भूपिय इयात्र । वप्रविमाञ्च भउ विनिज्ञभः भ क्षिभउम्राक्तिकेष्ठः मुकः ॥ वश्वरं श्रापित्रलि द्रियोग प्रमामं ब्रू राष्ट्र सुनि स विद्रभाषाभभेद्रां उद्विवा प्रद्रश्रीमा है धवा अउविनित्तम् पर्वः ॥ ख्वाप्रभूम पिक्यभ ॥ अभेडेर्ड्:अर्ड्ड्:अर

विवाध

Mohd. Ashraf Peerzada Collection, Srinagar

देश विषय भारा विवाद ने वज्ञ चीउ ने करें न्कार्ध्य ॥ विभिन्नः॥ भप्रदििकः म हुं। इन्निभक्त अभन्य मध्य मध्य स्थए व्यवनिर्देशि॥ यद्यारिउविभिन्नेन्ध इसथ्द्रंबलंक्स ॥ वनिम्नगलभंद मुवनविज्यव्यास्य मिरमणीमविव ह्यां दुः। वर्णा एक उन्हालि सविरानिंग इथकी भवा विनिभण मुग्ले ममञ्जू । विडिक्षेभष्ट एक मभूक रेल भारि देवि याद्र महा विभारवात्र इसि पितं उ क्रिमाथ्येवर्ष्ण्यः ॥वलव्येष्ठा गर्वितिसुग्द्रभेड्कभ्।गलभेड्रीठक एमन'कीम इंगुला किनः॥ भट्टम् ॥ वनिङ्विड्यंनवभवन्यसम्भगद्वन युक्रम् मद्धि॥ उष्णमविभाष्ट्रा॥ भएरा

30

रण्नेग्य्रिभिद्वनाः ज्ञानी धन्नगालश्री **%क्षाविमं ५**णनं विन्द्रविक्रवेद्या एवनःभाउउपर क्रम् ॥ इड्वा सहउद्या स्नेन्द्र जन्महं भावकत्त्व इत् इनेवां उचेरूनगमिक्र एकि अचन इर्।। स्टेस् र, पिच्चनगभिष्ठितगभ्रहभे। इंड्यन्य मधिष्टम भट्टीय पन श्रमभा अवस्थ उद्ये व। गमिक्रएउक्णीमभेड्ड भीविक्र मा लयिनगिकः। प्रविधावमें इभमेडाः पालिपीयनविणिपरिमित्राः॥ मडेशाएः महराणः॥ मधवलः॥ दिएगधा लिक्इएभ्डेर्पविमिद्धिए:।वरश बल्डिं विक्व वयु इस्टेडिंग् ।। यह व म्भा दिस् भगेर्नारामिवमः भच उष्यं एलस्युड्याः।भचिपिभेष्र्य वमेविन'लिल्लियंनगण्यवदार्भे हुउए।

विव भू

वान का करित कि विकास कि विकास करित कि विकास कि विकास करित कि विकास करित कि विकास करित कि विकास करित कि विकास कि विकास करित कि विकास करित कि विकास कि विकास करित कि विकास कि विकास करित कि विकास कि विकास कि विकास करित कि विकास कि वि विकास कि व इकि । गलबत्रविः मचरीपुरि अहरकारण योनिश्वनाइभक्रल म् प्रद्या मुद्धार्भेड्डा ॥ वयंपः ॥ मङ्क्रिकेरि भवश्चिमकार्गिभेडुन्नि इकि ॥ स्वाल म द्वीदिविद्यभः॥ गुपाद्यं वर ए॰ पुर्नि लीभान्न भेड्रा डरा उथा असा असा असा मुः भगः। इति अग्राः प्र म्बाइविवेर्ग्रह्म्। म्रुप्राधः अ जिलगालवेर्छभामव प्रभाभ दुरु भन्भन्द्रज्ञभवरभक्तः॥ ठक एडर पड्य निः भिलग्रे विश ववधक्रममः नः भ्रणन्त्र भूभाउँ कि विषय वार्था। मकिए पड भेडरवर्षी पंसरा है उमरहार भवा वका एवं वस के स्था स्वा पक

भः ह

रांउयं हा मध्यकी ॥ इटाडिक्टि भिकि गिष्ठ इस् भड़ भारताल वा विश्व के पचक्ष हरा माण क्षेत्र अन्य के कि नभी। भागएन ही प्रचंति विविद्या न मीपलक हुकं या अभन धर स्थान गरमइस्लभाध्वविष्ठविद्धः॥ अ षवनिशविक्राभी॥ श्रीपिक्र उँ नेवक वग्धरं इंग्वेचेंगभषिजीये। भाभाट भेउइनि अविडां मुंधु इडी येन वक वि वाद ॥ महवनाः ॥ मक मएउ पयम वन'ः।पगमभास्वरभिष्ठचन'भ(।भद्र प्रथमवीनं निर्गाथक्रभवेरिन्छभञ्जी॥ यवगड्वताः॥ विभिन्नः॥ श्रःभप्रगड् हम। अयुवनगर् मि १३ भट्ट असि भाग निरुनि।भरीमिवासियुभन् जिरिशे लथ्भेष्ठः थलनः इप्रमायदेकगंद

विच' भू

Mohd. Ashraf Peerzada Collection, Srinagar

かかかり

मिक्रमभाष्रिं द्वारा ।। इन्हें विद्व अविविधित्रं ग्राह्म । स्विधित्रं ।। न यण्जरहाउम्प्रस्य विवास्त्रस्थे ध्रम्भ प्रभाष्ट्रकेविण्यः।नेबाश्रुगडवाडेकानवम र्णविक्र इनापल उर्धे उन्लक्ष्य ॥ इ मंग्रहारियम हिए विले कुली थ्राज्य व रुभुल् ॥ विदिर्देश्वभी रभुष्य श्रेभवा नन्भष्टिनगमनिअग्यः॥ स्वष्टिन् रीपर्येः परभाविव रिष्ट्र प्रभाभाविति ककलिपिनिधिन्न एवर प्राचित्र ।। नेप्रकः॥ नएन्स्भाग्याद्वेत्रएन्द्रिवसन्मान हगरभउध्यक्ति। वाकरग्राः ॥ उ षमगतः॥ स्यापः कहक्याप्रस्त भउर्भचम।विवासनेवक उद्योगि भेजिए।। नराम त्रिपने उच्चे रेग उस्य य

विवास-

Mohd. Ashraf Peerzada Collection, Srinagar

भागा विकाल वृत्तेन मिक्ट हुगलप हिंचु । ने इं निम इं हमया किला भी ने वा ह नाइ कि उर्वे कर मिर्ड ।। उन्ने फ इ: **अ अवराष्ट्रभाभागेरा प्र**पत्र क्राज्याधिवादिमिन्यापाद्याग् क्रेचुउँ ॥ क्रुचुंभाभिउ**द्याभा निर्देश**वील युन्न उभरे । हान्य अवस्ति व स्वयु उ स्परि वक्तवर् ॥ मीपित्रम्॥ सांसभावि शास्त्र होते संभिवसाम् क्रिया स्थापिक राज्य स अदिगहन्दि। भारतारे चर्मा भारत भंडभनि धि इथक "五五五十五 MO WELLO

भः

विवाप्

न अक्ले अख भार लक्र भार एउँ विवर्ते। किन्न इंवलया उरामभभ भ द्याभ इस्लिभ्यनेकिथिद्विंभाभे। इक मन॥ यूर् ह्वकु । उपडीत् भ्रवद्गेष्टभाभञ्ज मुः भ्रकी बिड : ॥ दक्षाया क्रिल क्रिल क्रा के इंग्क भाभकः। महिष्मच प्रमेष् भेगं ब्रुडिवां क्येशा रणद्वभाभिविधरीउभक्कवाभरे किननिमेचि पहुँच। एक के मलवि पद्व धिबंभङ्गलेषुभकलेषुक्रश्येऽ(॥ ग्रवि बन्दिउ घयः॥ विभिन्नः॥ मुक्के विशेषां कित्रमवन्द्रिभक्तम्मध्वगतः भुरः थः उभद्वशिक्षत्रगलमन्त्रभाग्राध डिविविव्ह ॥ वागः अस्यः मुरुष्म गण्यदाद्वियागेमलभएभे हे। हार्छः भ मञ्जीभाउध्वयः कंभाइ उद्येगिरी द्भि ॥ मीपि ॥ अलभेड्भगाउँ दिली

काँ: प्रमुक्त र अधि इग शिंड श नि छ ए दि ग मर्गाम्।मंभालभीकन्विपिविपीयंडे॥ भारकविमम्बर्भभा अवितिश्राहिः क मितिवारियमें बहुद्धाः । वेश में ल इ' म उद्यं म भा द । पं ज़ार वे इ स ये ग मर्भ।गृतिम्रिक्षिक्रवध्यक्षित्रवाणाष्ट वर्षेमम्बर्भाः॥ एष्यभेन्द्रभाष्ट्र भद्रमिभक्राण्यस्य बहेडि विश्व श्राह्म इलि एउ॥ मध्यमधिर्गमञ्जूष् ॥ मुहब्म, र इपिकिय्मु प्रिष्ये एरिः। इनविमन् ाण्झेव कमधेगाः भूकी दिउः ॥ । मारे। रारे। ००।०५।०३।०९।९ ।। यभिन्द्रिक्षरविष्ठि प्रक्रिय्ज्ञममीउष्ठ। इचेट्रगेहरु मर्जः मिधःश्राष्ट्रिकिडेकम्॥ गुरोलग्राणिपमुद् भवीद लयक पुरो। ममयेगा विन प्रतिय षायो उत्तरमयः ॥ यहर्भिद्भाग में

विवाद-

द्वसंखनिता इंस्भिइल ग्रह इअर। मुद्द यजे उद्धि द्विपापयुक्तं मवल्येर्गा पाभाइ धुना वा मार्गिय कि व है पेन प्रकेष व थ इ निधिविवक्तयम् निचौर्भेभेपत्र हुउ॥ भ्डिर्यु अरुभन्ते॥ मिलग्रनवं मक् क्लियमिष्णः भागभेषकं मक्। ययभ चग्लंब दहरे निष्ति ग्रथमत्तरभगः। भपुभगाः भक्लगः भपुष्टिग्रः भभु भानिञ्च। इ.भट्टः भट्नालं यभाति। भिमक्रचित्र ॥ युर्मस्मर्भित्रि इंद्यितना विडः। एन में हें युपरं मने ६उन्यूभंमयः॥ अञ्च धवाश्रहवन्द्र मंस्यान स्थाल विदिरगादम्बन येगे। रुभिड्कि कि परिभक्ति उक्त परिम किस्मा उठिक्रमः भाषम्बम्मः॥म वरालधाइकभ् ॥ भङ्ग्रे मुरुभर्छ ॥ 4.

यारःभर्भे असक् असम्बद्धः अदिश्वे थाकुण युज्ञ अक्युल मुन गानि सक्षेत्रज्ञ । ापरोःमधक। भक्तश्रुः इसम्बुद्धः दुगन लड्डा पालगाराऽह्या गणः स्वयं ग्रिष्ट् गाभिश्विहरू ग्रेड्डिम्ब्रा विकाश्यान रमः॥ गरविष्युरेल्यं निर्हाडेनवह र्भार्।वश्विषाधरुर्द्वगारीम् रभड्ण याने मेंगे बुडे ने गेरो दिन ये यि पष्ठकर्भ । रुपगष्टं रुपमें वर्षे हर्णे क इंकरएर ॥ उडिठ'लभफुकभ्। भव वण्भा अविवारहभंग्री अवस्थिन गार्कान्डबङ्गलंडिमस्याविपा उम्भूरुक्तराष्ट्रिराम्म किलवरुषेरा उज्ञः॥ एउद्देशसंभक्तिच्च मद्द्रागतला विडे। भारती सुद्धिवस्था महिम्म तिउँ॥ मकल्याधिनीक्यम्प्रानिवि

विवान्

बिलाउँ। अला प्रभेगण विज्ञल प्रेड हु द प्र भाउष्ण लग्नायाम्यः भन्य प्रहित्र उप इ : बुद्धः। एभि इ मु जिस्यु जै ज दर्शाल गुरुभक्ष ॥ विभिन्नः॥ भचरुभित्रभेक्ष विकणीतभरलभी विश्वदे भूमची यशुष्तु ड्रवभर्जे हविष्मप्रण किथिहै भः म मञ्जः।लग्रं मुन्वतःपरिलयन विनिश्चिम्हविवतः। अर्हिक्षिभा य॰भ्यम्नवभगउद्गर्भम्भः॥उ वार्वित्भः ॥ राष्ट्रलग्रह्यभग्रस्य वुद्रस्त्रभः। ग्रुप्तः भष्टभव उत्तरा अभि ॥ भऽत्र भारत्य ॥ लग्न म मापनारियमिभिज्ञभव इनापर पुर इंग्:अपग्रं विभाः अराम्यः। महास् य:मुम्। लाहे भचापगाः मुरामिल्या भू व्यागाः भुः पता वर्ष

30 1. A.

अस्टिन मुनिमः ॥ विस्त्राः॥ यः भिरुषेगीविनिक दिस्धिन विशेष **पग्रलउपाउनि**। लग्नस्थि अपन भूगानी दरविष्ट्रशिवसर्ण्ड्रण सेवर्ष वलग्रउद्यंगनमानगरः॥ रणम्यू "नुरम्ले वे चुविव फारी है कि वे क्व प्। इंडिं दिरचः भिविमिन्नी खं पुरवेष ग रुठलानियभार्गा भर्द्रहरूचे व्यवंत्त ग्रथकरलम् मुह्मिश्यमग्र लेख ढलानि॥वशिष्ठुः॥ स्ट्रेंड धुवक्रवि णणनेष्ठ द्वरानिः अर्चनं द्वाणिः मञ्जा मयभाषे हर्द्रदिश्चिगग्रः। स्योदिति विद्रम्बद्धिरम्गभद्दं स्निभीलभ उमयम्गिलग्रहच कि भेजि। नमः भ भः इक्रविण्यमे वज्ञ्च द्विः भूरु दिः मधु ग्रेड्डबिउनियम्ब्रिसपङ्गण ॥

विवाप् ।

विक्रविण परंहिंगह के सम्मार्थ म भाइः मैकेन्द्रविषणन्द्र हवे श्रुक्वाडिभागा भननि । वि: भूत्र पेर्' लिनि उनचे लग्रह च कि भेड़े।। । इकिः भ्रगुलनि रिव द्वार विचे पर्ते उनया दिव है उने हैं ग चिह्वविषयलील'र भेक ॥ लक्तीप्राप्रिय क्रियां विश्वास्ति हैं।

भः भः

रं ठवितिणनं भचनभा द्यारा अर्थ । प्रविष्ण : भच्ने दूध कि हैं। श्रे मनभिउष'लय्यक'वाकिभेक्ष ॥ अब्रह्महरू म्मनगी चल्ल ठहें विमलिहा विः अवीक्ष उरवभाषगर्भाष भूदा है:। इड भारत हैं उरिक्व विवस्त्र गः श्रह ने बिध्व मि वितिवालग्रहावाकि भेरे ॥ **लभलग्रकले अहरं भभ नी या लाकिया** नुः।भेनह उद्गालभाषा केले भवी जब उइभिष्ठेम्। यचमयवः श्राभउश् वाद्यवर्थप्रम्यः लाजल्या इसलयन्यमण्य ॥ धरुसल एभम्भे उड्ड इंग्रेपय दिरभाष्ट्रल र्। पल्युरभूरमिक्तल्ध्र अल्पल धाष्ट्राहरभूय दुभर्॥ भक्रमभ धर्यय बर्ड उमल क्यं भष्ट भरंग विद्वभ्। भग

विवायः

Mohd. Ashraf Peerzada Collection, Srinagar

इस्कु मुलमीद्वे थए मन्द्र या नवस्त ग्रञ्ज ॥ उर्यणलभिक्त नहाइभन्न।। उष्णया गुचक्राः पद्मितंत्रभन्नः ध किःथलंडे अपिकापभितः॥ ४ विभा सीभानपूर्वभी। विवाहितप्रवास्त्रभावत्वभून भूभाव्यक्ष । उडलग्रनवं मवलंभागन भी ॥ उद्याम ॥ सम्बद्धामिकतृत्रभी सने मध्य छ गिउभ । ५५ चल भने कंदर्भ भिम् द्विनंभक्॥ नवंभविमारशभ विमेध्यक्रालितियाँ ।। भक्ता इंभन्छ ॥ भएतियं यस निष्ठम गेंड लिकेश्वरभी सुर्मीन वणः भूत्र वि रुनंकसंग्रन॥ भरीमुन्द्रसंगिषु क्ट्रचित्रमालिनी। उम्बेभचवर्तानं लग्रां विलक्षिक्ष कर्म भर्म में भक्षि इस्प्रेजिएक्रिकियगाक्रविद्वार्ग

30.

य'वड'वल्लग्रमुक'वजभ्या मु रिकमल भिद्यभक्त मुख्य हुन अवस्था थिन चित्र है। केला जला निवडे वेड पन विभ्रमल इविभेगितिय अविव धम्मभगरणगरणीवराजी अउ नग्रनवा जरण्ड्रमें अतिगा धनमध्वमिक्रप्रः ॥ अ थ्रमभुउ'पड्डा द्वरा : समी। वि ध्याउउगे प्रलिक मुरुभर ॥विभिन्न अट' য় उग्रह चन भकि रिग व्यायभेष गंप्रलिकभ्रभकंविवादिए प्रनाधिविः प्रसम्बद्धाः । लग्निव कनवढलावण प्रशास्य धितामरा

विव न

अलिक्यगलग्रहेचलग्रमकाल्य त्रवर्गकेविवर्देषवे इंद राइ(॥ अड्डियुक्त भारत ॥ मिइ ग्राम्होक्षरहरूक क्षेत्रवारा क्षित्र प्रमुख्ल उलव किक् अस्पनक भन्दनभन्द पाकिक विवन्द्र कर इन्डिभ में विवन्द्र है यत्रं इतल दिश्वारः।नवीर्धः उनवलक भार पउल **州王叶五丁:11** भद्र लयगया

भः

न'न' मरार । अचेशश्रेभकी विचेशिशां के बावाद्य। प्रया अविवासिक विकास क्र विस्तृयनि इम्बर्श स्थाकि : ज्ञास रिश्वािक र प्रश्लिक विश्व कि कि व्यान नि पिनः भवत्कशिक्षणस्याप्स्वाः।भ ग्रहाकिन अप ग्रिकिल के कच्च विश्वि उद्गाना विश्व हेक वर्त निर्माण विश्वस्त्राणे ॥ इविश्वज्ञ विर्व भक्रामा ।। एक निवं मार्।। मुस्मा इज्लिस् भरणभेडळेयल ग्र है : करम्प्रिकि । अवत्वभम्भ भक्तिक अभे भित्रः॥ ववण्यक चिरुश्वविद्याच्छ। रुभिङ्गमीकर् यालग्रमुरुभगति । माउतिसंभुज्ञां उविधिम चनकरण ॥ उत्तम । जिन र्। महवप्रवंभः।। विभिन्नः

बर्वे द

षञ्ज्ञां विकास मितिवा विवाद भारत् वज्रवंगः। भार्षः संग्रहितं विना। श्विविणवभक्तमगिधिक्याः॥नग्रहः॥ अरहे ज्ञाप्ति वभद्र च्वा भू द्वा भू द्वा भी उद्यक्षित्र म्यान्यं वेव दिकी प्रकार भक्रबु<u>क</u>्तुभन्छे॥\उज्ञुन्द्रेशभग्नेग्रेश उन्धार नुरुष दिथापुरवर्ग प्व प्रभूत मः। उत्रह राग्निमान भागा भागा पुर हर्गनिवसिधि महन्द्र ॥ अञ्चल ध्रमुक्रानिवसम्बद्धारा दिक्टकं उद्भावनीक्रयनिएउनेस्य प्रभाउस्थक रिच्या अस्य प्रश्निम भित्र में इस्थिड लचित्रभू जी भित्र में निक्तिन क्यें डे भाभके बरुवर् ॥ यथुरुउग्रोमुद्र सिद्यु व बादभारी। यी पञ्चवतल नेवक राज्य ना दविमार्॥ मधानिगगभनभी॥ भएकम

अ. अ.

व्वदंगरीम् भावास्ति विवास में उल्हें ॥ वप्रवंसः भूष्य महाविष्ठ भूमः भार्त्रभकिभिवद्गा अध्यस्य इत् वृत्त्व व ग्राम्पार्जिवणवादवित्र ॥ गुन्दिक्षः **उत्केवलप्टवबाउवः। द्विगमभन**भित्र विपविषद्धिपार्यम् ॥ इतुग्रम्यम् इत् किन भड़ी न अहा उस न वे अहे कीए ध्यार एगाचकिन भद्धिमन भुउर। किन्द्रभू **डिलेभगीचणभिडीनानाएगिकिडीब** नीउग्यलमालिनीनवव अति इसे देवे देवे हैं के हैं। गलविवकः॥ अधापष्ट्रभनच्याउगभग में इचित्र अउचे रिक्ष स्वलिति रागभ विणे अलंगि मुख्या अक्षरानिश्व व्रवद्देशनगर्वे जिल्हा हिन्द्र राज्य व भीनग्रां भक्रं लुग्नान्य र्वे विश्व

197.

इष्टिबिस्माहिन्निनवेखः। वल्लेक्किस्म विविधक्र इनबेस्ट में क्र इंटवरियगिर न्नीइग्रहा बेमांपभठगा अञ्जयनि नीभाजिस अस् विड जल्हा स्पित्रवल्ला भिवक्निमिष्टि भिक्त भिवासिक ग्रिन चरावियिष्ण भेजेंगिनीन हमें अ ने के ब अड थि म सुभाषिलं अ अडिभाभा उरें।। व्यवस्थलः।।भिक्यविभीनेम श्रिउभग्र उन्हर्भ। यह मुनग्र निर्भ बिक्क द्वील्थ्वल खेड्र ॥ यह खंड्र द्विगग भनयार निर्वण वेष्ठ हु ड विह्य पर्भ मीप ॥ भ्रष्टा कि इभभी र न्या कि विवस्त्री यु उर ए बिनी रे दिए: मिल फुने धि अक्रमें भारति अधिवारी के वामाद भित्र इस्थानिवस्त्रज्ञ गुरिक्ष अर्क डाभा **घभीन हेन बव अयनं भर गेंडे मिल कें॥ उ** 

भः गः

पमयक्षनगरांव हुगक् सुभगाउ। इल्येच्ठर इग्रह थाउँ भारत वर्षा उम्बरणग्यलः ॥ नीस्यंस्यान्द्रा किष्ठियुक्त वरणि चिनी सम्बद्ध विवे वागवामलपिद्धं प्रमान् । जिल एलिगाउँ विषक्ष अर्थे प्रविद्य र्णव्छभ्द्रिश्य केनेनववष्टभद्ध विमः यहः ॥ भ्याप्तामित्रभेन्छे ॥ पूर्व तिप्रफन्म् इव अअलभयानिल,व प्रस्तमः भत्र द्विति त्राग्क व ए पाः ॥ व णवार अर्कश्रीम सर्वे निधि सु अर्थे नमयम्भूभगला भ। यं उत्तेष वार्थभि चण्याद्वाराचाः। अद्वर्ष्ण्याद्वाचि भय, उसं पेन भयप्रिपश्चित्र प्रचार ग्राप्त वर्त्रभारे अचे ज्वां है। ॥ मह्योधिक रिभुगुर्वर्षे भलिभूमानवंग्रेगभन

434.

Mohd. Ashraf Peerzada Collection, Srinagar

विवयर्तिम अववित्र ॥ स्ट्रिमग्र भभवशृह्येपार अकाल मिलापिर शि इवर्ष्ट्र है।। एकग्रंभभगवाधिम देशीय चित्र है। विवादिशी अधार्य उद्भेनम्बरिष भिर्यगार्वेजम्ज्य भविः भन्दविवायिश्यम् निः पर्वरवि विववः भन्भाववाष्ट्र सुन्यग लविति विम्द्रागिव सुर्भेणया र हब्रिभक्लं सेविडिश्राभिभम्॥ भा भूबम्बरमानं विद्वमग्रवहरू। नवव इंगमनंबध्रिस्तिम्यल्ण ४। ४। ३५ <u> ज्ञुग्रुवे अध्वमित्रिगगभनभक्रम</u> विमर्भा ॥ १०॥ मध्य धर्मार्क्रगभः॥ विवासकं विउठ जिल्यमे यवा जाला ध्वभाष्ठिगभः मञ्जू ज्ञुपाधविवत्ति उ॥ यम्ब्रह्मः ॥ जुड्गिव्यद्धराधाः

4·

निक्लवाहर्य ॥ स्डिकिंग मिथा इंश् नः थरग्रेगभः। थिरुमेकि जिंडे वे व भद्रप्रदिकीिष्ठिः ॥यार्वेक्रिक्त क्रमस्मिति ल्या प्राविवास् भभयायार् उनिक उनभ ।। गफ्र अले क्रिक प्रभाभेग्रताकि भिक्तिः। बार्ड्येक किल्वा प्रतिवास्त्र भाषाय स्वाप्त । अवाप्त एनभ् ॥ भक्रत्रम्भः ॥ अग्राणनं माक्लविचेयंकि मिह्ने अम्याप्रकल, मझ्युरमहरुकाड़िकायां भेष्टेब्राक्रथ्य पिनु उर्भा मस्ने एन गिभ्ये उथ्वे डिडि मिथभन पुर्भे में से शुरुग डे मरुग भारि उर्थे ण्यकरुठवर् ॥ उप्रभावभष्टविधयम किल्लयनिपक्रव्यभ ॥ यहस्र ॥ भड्डार्म राभाजे॥ श्रम्याजिइविम् उरगिमिनम्।भ 下於在们更句空

Mohd. Ashraf Peerzada Collection, Srinagar

क्रणमनी क्रुक्रियो ननी प्रमा अप्र उनिविष् उनम्बद्धान्त ॥ नकंद्वनर्कं अधनुभनवं मल्यूनिर्गडनेगविममी ए जर्गि दिनेना क्रमुह्माद्रिकव्यामध्ये भि्लाक भक्षा अ उद्मिण्य कुष्टिय उदिल्य ॥ मध्यमिण नः अविभिष्ठ भिश्चर हैं। भपूरोह्नावी वाश्चा द्वारा विश्व विश् किंचिकः ॥ अञ्ज अप्रभागि॥ मिश्रावनिश् द्विधारियकः अट्रमुद्रेः भ्राम् एलं:। नमाणिकेननमम् इभागनिम्म रनिमिश्रम् अः॥ विभिष्ठः॥ विलयग समस्माणिनाधभारुगद्गण्यार्गान्य उत्तिष्ठः गचित्रवर्ः भ्वामचरतेर्पापरीत्रान किमकडम्रः॥ एकविमत्रप्रमभृष्ट एव। उस नाहिष्युच धमु इनिर्णभान **कुथा**। नथ्यप्रस्थिक मनित्रयं नग्रिष् 4· 3·

अलिइकेलश्चरा दिस्रीभेड्रग्रेक शिक्ष संस् उम्मभंभुः। ग्रह विलग्नेभाउउँ ग्रह क मित्रलं विभनं मकी दिश्री अनीम व रिग्दगेश्रमं माश्रम उच्या भागाउँचा पंभिम्यमंक्ठयंद्वःकीदिं क्रिमित्रिक्षेत्र मभश्चग्णः ॥ विज्ञभभखं वृष्ठिलेवा वहाँ पवर्रेष किने प्रमेव। वलिकिने एकिने मीमधिञ्चन गिन्ठ इिष्ठ छन्। ॥ मिड्म इका प्रधादिन विष्ठिप प्रधान मारवडीभगमिरीच्चित्रीप्रमङ्ग्रहुं कुं भभिक धेक उ भेडें ॥ मी दें के व के धेक के किया के वा अए दलय'म्बलयगैभि। बुरुय्दे दुक्रिनिगैदि उव परे शिर्ध इउउँ मार्ड भर्म भज्जु रुभर्छ ॥ लग्नमर्रेभ्यवित्रं मनीद म्बिमिक्तिरिपारिषेकः। स्विभिषवायग उन्नपण्यः अष्टः धन्धाः क्वति उन्न ॥भ

म्प्रिक ॰

थाग्यः अच्चगर्मनिः मुगंगीविलय थराइ हुत दुः। यम हुडः भन्नम ।इज् भंजिः भइन्तिउचीद्युउस्थापः॥ लग्रह्या व्यागाउः समाद्वः क्षित्रीष्ट्रं कि निडमें व ली एंड । क्यू दिके लाई प्रनाय भेष्ट्री भू षघूलार्डभगडेड्रथायः॥ भड्डा द्वलम व्यवित्र नमम् लग्द्र मुठ के ि चकः॥ लग्रक्राल ॥ । उद्भवगडे अल्डेंग्रेगिवव हिं क्षेत्रम्म मभगडा यहिं व के र धडीन भक्तकंदा लिभिडिक वर्गे ॥ यष्ट्रिक चक्थाराणभन्नीलयिक् न्यिकि वद्गः। धर्म ज्ञरणः कद्गगउस्र सहस्था उविद्भाग्धलङ्गं॥ मन्निस्तारि गरविनद्वीपश्रेत्रभग्छविकव्यास्त्र यश्रविमित्रियडिकि चेकः भेपिद्वा उर्धे भिगरामः श्राज्य ॥ जेश्वरहरूभालपूर्व 30 4.

इस्ट्रियां श्री मार्ग निवास के विकास के वित्र के विकास के मअनैविनक्रीग्रहानिक्रिः क्रिडिक्ने ब्रह्म धः॥ मुठमज्ञननिभिद्रः भूद्वाधिय च्चेत्रभाष्ठिति चार्किक स्थापिति चार्किक स भ्। अग्रिजिविणनेन जदामुङ्बि मन भी प्रांग लिक चाक उद्योक का इस ठीभाउं॥ यम्हिम्कविणिचिभिध्नमं विजयाभी भूगार्गभिकितशास्त्राभ वन । उक्र ववर । भन्द लेग । उरम्ड क् कै:भभलक्ष उभी उर्वस्थनभध्य चयेकुभनेकाभी गङ्गार्थियभूभेभूलं भ्र लजर्षेमकः भए ॥ कियिकिक् भिजः उष्टम्मा भारति । मार्थिया अलदभग्रभक्षीराधल्लावः। १८डिकार गमार्ममगणमन्त्रारमनभराउद्दल्प मकंपमं पुरारे एक जुडु अभी। राया भ

हार्लंड

ह्यथ्युम्ब्रह्म इस्मिन्द्रभ्या इत्रह्म किभन्निल सराः भिष्यमक्षरः। महिर्म नुषिविधिक उक्वयर ॥ नीरारान ग्रक्रुड्सह्याक्रित्रीः अनः। भागम ब्यायन्त्र अस्य यञ्च भग निस्त्र । प्रश णनिमधद्वमविश्वनत्रितः चयर्।॥ मुक्तभाव्यं धरण्यः प्रद्वापश्चनप्राधः। थङ्गसिवभिन्तजीयाद्वित्रभनगउथ्यम विश्वकाराण्यम् अन्यस्य अन्यस्य क्यं इट्यापिराफ्ना भाभिक्षं प्रवेडिम्भू माभागिकियानु भंगम् विषयाया अफिर श्रुविधियुद्ध अश्रीष्ट्रा कि मित्र द्वार ये। किसीम श्रुकि शिकुतु भंभक्ष विश् यायमाभाभूष्टाभाउभनुलगरान्सम्

H. 1.

गच्छर। राध्यम् स्टिब् भान् न्तर 12 (त्रेश्राणकरे**मामान्येया** का कि क्ष भभविउभ । भूगे विडम्न रुग किया द्वीवि ग्रिथ्ड ३:। ४ ह भ्रुग्भि भि हिस् सुद्धान एँ उरं मउभाग विज्ञ द्वे दिन भग्डे वर्ड उत्तभाविषः।उग्नभाषित्रभाषेत्र ण्यान्या । प्रवेशः ज्ञान इस्ट्रा गरवार्याम्। हम्भनलहालं इ वीध्याल ॥ प्रभू मरारगउँउ भू क्वींवे छ। ब्राग्यमवा हम्भनमक्र हुं भारत्य भभक्तिउभ्।भ्यं इन्द्रभाने श्राम्ह्रभा प्रिक्ति वार्षा प्रस्तिता मार्डिया प्रथम्। इंग्रा इतिभक्त । भवा कप्रकालभी॥ ९०॥ महायार् ५क रलभी वराजभाषि उचाभी।। वक् मङ्गभणित्र र गुल्ये पत्रं विष्ठु र गर्म

यर्थः

भगवे अवि ठ इस्य भर महा अविभव व विकिष्ठे प्रकार सम्याप्रकारिक गुलः अविष्ठः॥ गुलिव्यक्षेवगुल्य विविधार् चिठ्ठा गूफल ग्रयंग ४ ( हर्म भ इध्यालिया विश्वास्त्र म्य विसिड्ध ॥विभिष्ठः॥ मुद्रुउएउक नाभियाँ अवक्रविभित्रमजन्छः। मुहत्रकृतः चुहत्र ध्राप्ट मुहत्र प्रमुद घ हवित ॥ स्थितिः॥ भनगभक्रद्राम ध्य ३: श्रम्य अञ्च व अस्ति । यहमगद्य सिराग्य एस सम्म भिरायभ्वे ।। नम्मकल व्यभ्यव क्रवहला निः भित्रण विच्व । उपा लभ्रिधरुउक्थललं भिन्त्रीगुलव लिं जुरे ॥ उष्णयं स्वि बुरे ॥ यष रुक्नमञ्जल यस अनगाउँ हें वर्ग उस अन 9.0 1.

पक्'रलविन क्वेन भिक्कि । उन्हरू कुठ ये: पाभराभाष प्रनादलियि वि नीडिविर्द्धः ॥ वर्षाः ।। अ लवभण्डभभद्रहरूरे ... न्या वर्षां इन्ति भी । श्रामित्र भी व म्डडम्वंभवनाम् भूयाडि ः स्रिडिंश् वर्णिक्षाभुः॥ भूष्य॥ विकिडक्रि ग्सीअनिहरलग्राण्या अग्रिय भीक्षेत्रम्भंग्रिय (इतिकव्मुअ(॥ उग्चितिःभिक्तिः भ्रान्त्वभावल्थ ग्राम।विनिक्षित्र धर्मे अपूर्विकार भूम'उद्य'। एगमलयामिभी के द्वानि रुषः भवङ्गः। ५ रुगभन भट् ३ ५ य लक्षयम् ॥ ।। एन्यन्तराम् ॥ य र्जनगढर्भिर्मर्वः भूनदः। मु रभाषग्रविगामुरुमुरुनि क्रिमे प्रमाण

य'र्भ्

श्याद्विविण ॥ विभिन्नः ॥ पाविष यविक्वयं जैगहरं इंभभाषा इं।एं।नि विनिधववार्भभाग्यभारविदिविषः॥ के विद्रादिविभाग्ने प्रिविभाग्ने प्रिविभाग्ने क विज्ञ भग्द्राभभगक्तयं प्रयं द्यावि लयिति अधिगेषु॥ अधवल्पा द्वि मध्युद्वेग ब्लिभिद्विच्छगुलैगगर नं हत् दुर्दा । वेशलय कि डी मानं भीगां मजनहमभी भज्यमित्र संनिभ इड्डिक नब वा । उउ मज अका राज अस्ट इकविष्ट्रम्॥ यद्युवश्रामभायार्थ इभवधायगलग्रमवभाए। भाइ क्तिणाधां इरिपिविमधः॥ गर्देष गवलनेवदला भिभुषाग्रमने वही ल अचक्यंगल ग्रेन दलभिद्धिः 

0.3 4. लग्रास्थिकविष्युः मुख्या । उषामाग्रमानहार् वला विवास गुर्तिः गुरुष्टलम् ॥ उ विवय् श्रुप्तिन निभि र्फिभक्र उठल अविक भक्त मुक्त भूमा यगलकां क्रियहिंडिकिक्रीने र्नवष्टकभिष्ठि॥ विभिन्नः॥ विविष् निनिभिर्गनिवजनिमजनानिम। एउँचाभ विक्य (५ सनः स्वित्तय भूम ॥ उद्या एकलयमम्भू विक्राभङ्ग्या गु मरिभिमगीमिथ् भूमतुर्गित्र तल्यम। अ नक्रलं पक्रचीउयारं गारं भचिषान्। उहलं प्रथ्वेगेन भनगया क्रा पं प्रशास माणिपंत्रलीम् इष्ट्रंड्ड्ड्रंक्ल्य्याम् निर बाउरियु रुम याई क्रमां पिथिक में भूति॥ प्रजाउपमण्डे ॥ भारत्वसमाविधक अवगभराधुवत्रभेष्ठ्ये। द्वनदलाउ

यामू

लैविलग्रिविकालिक अधिक गाँउ ।। यह मुद्धानिभभाकि विमारः॥ विभिन्नः॥ सुर्वा श्रिष्ठ उड्डमसूम प्रभाग है। उस शुक्रवाद्व्यभावाद्रवयंग्रामः ॥ श्लीवः सुर्व मा द्वां भाता भए अगयिक । उड्व निवसन्यवसहम्यं ठवेड ॥ भूतिस इ.भूगिरावे भूगिरिक्षे भंगाउँ नुषः। वले नमुद् उचिभिन्दरमें है निवर्ड ॥ य'र' यं यथवं श्चरःभभ्यापमिला क्रियः। क्रियः। णनम्बण्याः॥ भन्तु अन् भन्छ।। भूति मुद्राकि के से ये अ उने गभनि र न्अभागद्वविग्वयार्यंन हम्मिन वर्षेत्र ॥ उद्व ॥ अल्पि भिन्दाः भूति मुद् यन्वियभङ्गभित्तिभूपि । उन्भूषि ब्राज्यभूति स्र भभ्य द्वारा वार्षा वा भग्र ॥ मवंविष्धा कि रिणि । अया या द्विष

4.

¥.

0.3

यिध्यम् कलवरी। भूडीस्एं क्रियंड न्यस्त्र प्रमिक्षिक्षा प्तः॥ संभाषे मद्भाषे वह भारत भारति है न यकि। याचमश्रीभडेडिक्संश्राबिडिक्से भेड(॥ मीपिडिः॥ । अस्विडिकि मिव्हि यां उध्रयभ्यां विम्य उम्हण स्था कियु गर्डे पे । दिविण भिष्ठि । अर्थे स्थे भेभाप इंभिनि कि मया विद्या इंभ्य उ'र(॥ विभिन्नः॥ भन्न'महिमेरे मुह्य यश्मीउवेडराभी। अपृष्टिकेडेडिक नुर्रीमी किल्ले किम भर्ग निम्मो निम्म प्रभेव'विद्विवेष'पर्गार्गितः। व'डिन्रहेष् मः बरः श्रेष्ठ अस्त स्वार्थः ॥ इद्वार्थ विमेश्रगादग्रभविवादिमेशविभ्रवी अ उत्रहें कि भेरे विक्रिया था। भी श्लीक के इतिया व सुर्वे विश्विष्ठि।

क्रम्

उ व इ है इव क हूं भेभाषेगभने वि उ भेषा क्रम्यविभिष्य हरा द्रीतिक विमार ग्रहार्गाच्या प्रशासका स्वाप्त । इत्राप्त स्वाप्त । इत्राप्त स्वाप्त । इत्राप्त स्वाप्त । इत्राप्त स्वाप्त स्वाप्त । इत्राप्त स्वाप्त स्वापत स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स ज्ञान अही सुध्य भन क्रिया है। उभी द भागमधारी भूति सुरू शुभागमा। उद्देशम भन्गज्ञ या निज्ञ द्राम्भा । तह मानि ध्यान्यक्षाक्ष्याम् वार्षाः उत्तर्भ भ्वयमाकग्भक्षा'रिड ।डीड्यार्'वि चित्रं भे भूषियुद्धनविद्यु ॥ भक्तर्य देश ल्ला । उपभूविमीउभग्रापर विग्वेमविव किथला एमप्रेम्भा भगभा एमप्रियो रीक्वयंद्रविणिः भर्भा भम्भभः॥ नवः यनवमनयार्यं मुठ मुठ भ्राविभेष्ठः॥ याउँ पूर्वि द्विपक्षित्र के के वित्र यह गर्ये थे विश्व कित्रंयनगर्गिकितिमिक्रस्ट्रमान्यः॥ मश्राः॥ यसम्बद्धाः विक्यनगण्डसः

3· 3·

उम्यनभभ्रतिनी मिमभ करेगाँ या बाजी व मकित्रयनगैउम्ह्मल्यहम्बह् क्रिमेक्विसयायार्थार्। भर्मभञ्जासनी मं।उगर्यायाः अधिभागितिक द्वाला सन् दिनः। एउगचलभेनित्रिकिमेथिकिभक् किल्मेरि ॥ समयाश्विमपः॥ लाइन यलः॥ यादाणभित्रग्रम् क्राइविद्व भए मन्स्र रहे । सन्भागा द्वार होने क नीरमध्यमिक्गैडिमीय मध्य इंब लभडेंच्रनिष्ध्रुडेंद्वः॥ महभागीवल याद्रं ॥ उद्भव्यविमारः भक्तवयक्ष्रेभण्या नध्वन्यविमाणि उः समीम् ध्रुउंभभन बर्उयम्।राज्ञग्धिकिउम्भूमभूउय ध्वतमुढ्यः भमन्तः ॥ महरिषयः, विभिन्ना धन्नान्त्रीन्यमीपृतिज्ञ

यः १५

वनवर्वन्यमा मग्नितिहाः कुरुः॥ वलक्ष अक्ष स्था मिनिक निक्त विक्त वि विकास अस्य हल्ड भविच भी भाग राधः॥ न्वभाद्रनीन तथाः प्रवेमनवभी। वि एउ नव भक्तिन भूतिम इर्गणनव भीयन्वभाक्तनभा भउउन्सभीदिउध यद्याः भूलद्विप्रयाष्ट्रः॥ भर्षि नभग्नेनितिस्या नववारः ॥वसि धुः॥ अवैद्यक्षेत्रयम् ममी मुल्नं वर्गम वनाः बुरुद्धः भूयाला प्रसिद्ध अनम निवारणं वर्ग मेवतान प्रतः भ्याला न्यवारिक लाने॥ नभक्किक १ ण्यारी। सिडाइयर्डे द्रगामवार्गभन्भूमश्रे विवादमिष्ट्रंग किएगी विड'म'। भञ्च 'कि गी मश्रकिनेन भ'

यः यः

यम्ब्रक्तस्र स्थानग्रम् । इतिहात्न उम्हिलन्द्र हें इरम्भगभन्दि इस्टिल पिक्याभी भाउ गाहित्स्य रे अव क्षेत्रविद्रिण्भा मध्वनस्माधाः व्यक्तम्सम्॥ भर्मनाः रुधाः निधिश्वास्त्रास्त्राम् गाविषु यो स्टार्क वयोप्रान्दाः ज्याः। नैरहभड्डा मनेविमिम्भनं सरुभी क्षित्रं विक्रित्रं एलवर्ष् प्रकार मुद्दा वर्ष भाग मुद्दा महामा महामा महामा महामा महामा महामा महाम महामा महाम महामा महाम महामा महाम महामा महाम महामा महाम महामा महाम महामा महाम महाम महाम महाम महामा महाम महा मेद'नं उपर्र्ष्ट्रभेमेनभेन्य'लच्ड (॥ विभिन्नः॥ वलभूम्श्रापएश्रवाग्वनः म हभूमः। ५३३ग्रू ज्वागिक्षियाश्याभञ्च भूम्भ्य म्यन्तर्भात्राविभिष्ठ्र ॥ भेष्ठ इयाम्डकरङ्गभर्विष्ठित्रवशक्षय हिनयानि। मुझ्नियार्भ नवेवरानिश क्रियिष्ट्रिकिभभभ्रज्ञराः॥ डिश्र्डरावं र

यर्भ.

लाविकास्थान्य इ.स.मेवस्था भ टण्डेनिय हिने**नान समित्रियेविय द्रा**फि भवानुद्वान ॥ नगरः॥ व श्रुट्युगः .... रिव विवासका या श्रीक प्राधिन स्लान विस्टिइसियिया। प्रमुक्त उक्तिप्रक वहन्य श्रीकेशेश्वर हि छि । रगनन' ध क्रिमेथिउ'अक है केल' इस्में अभर है। अचायिक व्यविक्रिकिष्ठ इ.अभग भग। भग्रभगुद्ध्य लेखिय गुर्गिष्ट निर्दित्व।। नल्यः धार्थाविभे मन्द्रश्रीयवायुक्तिगा चिडः॥ स्थितिः॥ यथर्चन्यः । द्राप क्षंप्रमिक्षियं वभामप्रमेला पृष्टिप चेमेर्भध्यितीयमहर्द्धः अधिकर्धाः किमा । भूवराने मु हि यक पुरु पाउँ विल उराणभिभाविभी व्यक्तियों कुलभभक्षयं कु इक्सिक्सियाविस

\*\*

भएरिन म्यून धरवा भव स्ता भारत रेड्डगड्राप। उग्धिय भट्ड इभाग वन्यतिमात्रमाः भचत्रवक्षाः प्र वििक् :कलपुराष्ट्रमुक्षं ॥ भारता अक्ष ले। प्रचार्क द्वारा सम्हार हो अवार एउर्। मध्यक्रित्र ए इन्डिक्ट इन्डिक्ट भार्भ ॥ अचाविनेधः भभवः छुठः धा इं अलिक लझ विन पर मंभ। निधीष कल मुविने उरमें या निर्धिम मुधि मविराभर्।। गुलविरिडमचर्कितिष्र किया गमने मुरुनि मिग्रहगत्। दानम् शिवागुलवलिउ। ठिडिविकविरिरिप युप्रहेडः भूतिलेभगेगुलभिष्ठयः भूष्ट या उलगम्ह गुर्निः॥ भार्ति ५५ ई प्रिवसेलग्रवं प्रेथं अधि । भाषां र् ठित

गरम्

इंबर्ड इंग्डिडि भूम हरें।। उड़ेवा वार ल्बेड अङ्गिड अधिउ हथने नवः थे उरा बार्डिय महुरंगहयस्म भक्तालि इक्षिक्ष क्षानीके भाउचे एडी। यया हर्ड नाभश्रापवाद्याः प्रिवेचगः। एकंत लद्रिक्त्यार्थं स्वाहित्र उडि भिउँ पिर्स्स य'र्थ रहा मभर्म । वन मिकारिए का पविधन भी प्रभवक्री वर्ष इ। दुर्याषां इंकल क्रिए विधियमा ॥ य भिज्ञानमुज्ज लग्रह्म भूक्त लग्न क्रमवयमध्मउभाउदिउखहराज ॥ धंउत्त्रग्रम् स्वाधिष (रहस्रध्रम्यस्नग्रहस्याः विनदाइलयान भनुराल महक्रम गरु ने दिवि एउ चे या इ यो नि एने भूम भी उर्व। यम्डनिनिभिङ्गि उर्डे

भं ग

000

मज्ञानिम।याश्कालन्य के इस्वित्र यानयम्॥ मुद्रम्विभहा भड वियारः॥ रजित्र हुँ उद्योधे भन्न प्रमानु ३३। ३ में वक एक प्रवेशक विश्व हः भूरी पकः ॥ ग्रह् क्रिनि एक कि ग्रीवधक्तभूयम्म। इयम्मवर्ग्यन भउभक्तः भकीरिउः॥ रविश्वासम् वाचीउर्भमञ्जूरायाराया। राविभक्त भिउं अद्भार भारति । या विनं विरायभुद्भुविनं मध्यस्यायः। श्री वपजागयेः अद्यस्यः भन्निभक्तिम ड्या उरिधरिए हिंदी भड़ भड़ा अवः अयिः। मद्भुष्ठभाष्यदेशयः अलक्ष भियाविनामें॥ इड्वेइड्वढ्लगुड्ड विविधि वर्षे याद्यभिभि च इ किन्नीयेथ्यङ्गः॥ पर्भेदिर्भेभटे

गर्भ.

कियाल शाउड्मभरभावशा अल्डिडिसिए इस्पे कुर में भी धूरी कि श याच्या विकाः जना जनग ल<sup>्</sup> कुंचेल्या में में मार्ग भारा किंच हानिज्ञ विषयिदगाः अर्लिक नवः भ हिंड इलभक्षकविए यं यि प् बडियू वर्भ॥ समयिति निविगः भ रक्व ॥ अउन्जनकथवां किष्ठ भूषिप इक्टिडः। विगिनीभे भाषे दृष्ट हुउव गर्भेगा चर्ममाउषि: धेरुमेश्रान मुख्यभाच्छिमिनी ॥ युर्दे प्रयग्राज बीउउँचाभाग्यक्रिकाः। इभरीउन लहवें इसल्यिग्नि॥ मधि चिमित्री॥ उद्गन्तर्स्भिष्ट लि। भारी<u>ज्</u>यपुरालेन्य भलंज्भाउँ॥ मचभवाधग्रहिमार् 4.

इभित्रभाम । स्काध्य अन्य अन्य अन्य अन्य अन्य वाभगभाषे॥ अखबार्विका इशा इस मस्यिने र देखभडेक निलंक के अर्दे कि प्रमवारे प्रवत्त्वे द्वारा वीक्ष्ण ना भाउमम्:॥ भरण्याक्रवीयद्वाविद्वावि पिरिश्वर मुं मूल र दुर्गिधाउम् । क पद्मारयाद्रविरेणभयाद्रिविभिद्वविवा स्फिक्नैविष्ण :॥ इतिश्वेष्ठवाड ॥ भक्तद्रमिद्राभान्छ ॥ स्पद्राराक्षम इ.भर्॥ स्वर्मस्प्रम्गवयणन्य जीमम् क्षमञ्चाक्रक्षीमुक्ल'किविधरुष , बने कु च बिरु निवक्तं सु बें प्रिकारिक वि विविद्रहर्गे एनिमेब्रेसरेनिस्ट्रेस्ट्रिस विञ्चा निषठाविणि स्नानि भन्न किरा दि। एउग्रेग्ध्यविद्यास्त्रीविद्याविद्या क्रियः मध्याक्षणा एइ भेड्रा आः मह

बार्त.

7	13	ने	ö	Ą	A	4	0 <u>11</u> -	विम्नी भू हुउछः
2	36	B	P	4	H	4	*चंडी	मड्म: मड्माः
2	9	35	iA	H	78	76	TON	James .
3	-	उच	Ishkai	उँड	7A	TAN	N-S	7

CC-O. In Public Domain. Digitized by eGangotri Trust विधि विक्वल ए स्वाः मश्रुवा श्रुष्ट भवा इंडेड्ड ॥ १३ ख्रुत्वार युरिशिक्। रागक् इत्ये ३ उड्डिन इये इवियि उप्रमिष्ठिमः। पी। भ है जनति । उरविभागमध्य । अप्राप्त । इस्लिक्टिक्किनिन्जी। यम्हल्य इंबल वबहुँ इस्टिकि। उत्रग बेमिधि इग अक्स्त्रेन्नेनम्भूउदिचिद्धाः उष्ट्रभटवंड(॥ विभिन्नः॥ मिथाकिभीनभद उपिन्निभामि भूका जिल्ल भी समुक एक भिष्ट फत्त भनेक' द्वास्त्रभी॥उद्वा अचाकिकि हामधा डि:इशिक्तियुगमयः।कियुगमयः भचेडिरिए।उत्तयर्गः॥उत्रताञ्चरम् ञ्चडमीमाञ्चडषाविणः। भूउक्रलिमि अस्त प्रशासन मुरुः॥ सारामाना य गडिं जियं भिर्म्वीकि उ। यो उतिमुक्त यार् द्विः श्रुष्टं वर्ति श्रुष्टं ॥ मीस्क्रियंत गुगर,

000) 4.

भियायविभित्यमा। भिर्मक दलक्षियंत्र इमवाविएयभूमा म्यिडिशान्त्राभ गुभीनलग्रमकवाकदा सिहि थानिव तिशुउर।नेष्ठः जिन्दे स्क्रमेम भिर्वेब ल ग्रम्भूम्म मनियान भिद्वभ्। भक्त बु अ भन्छ ॥ मध्य मिकक इ एउन्छ भन् इल गिभनग्रभ स्डि:गभनभूवम स्विम् क्षे नयहरूभभम्बिउरिक्ता सुरक्ष्मा भये दः मर्न्याः भर्मेश्रीपज्ञव्यक्विध उक्ति भिम्रहभयदिस्भ(याश्चनभेद्याभ्र वल्यविश्वरुडिवमापाभिषउश्वर्ष्यु भ्रष्ट्रहर्यग्यहिक्षभभग्ना स्वामीमीम ग्रीस्एमदिविधिश्रु गिरु उन्नवज्ञ प्रभीितं स्वश्च भीवाद्यं नायगडः भवलनीयिन्कलिधि ॥ विभिन्नः ॥ मु हग्रानयगाउँउप्रतिवाधिनयगै। पन्ण

यारुभ्.

इश्लंबाइइववाविरायभूका॥ श्रीय विकास सम्बद्धार मिनडरणम् विलंबेड इ.डी उक्र रास्कार है। इस्ति वा अराह विज्ञिन्य अविति उपनीभी॥ य स्वान जुरु युद्ध स्वित्र यसुर मिरिष विभिन्न इक्ष । यञ्च मर्क्वर स्रुरेणनेल यगः भगभन सुरुवदः ॥ एनन भभय लयां वणविषा महा द्वां निरणि भठवन द्वां मङ्ग्लिय याँ । भाउ ि म उ उ सी य त्र य गःभाक्रिवानंग भनभवविधवा ठिक्तिं उन्निव ॥ भऊरु अरु भ छ ॥ राम्से स्य र्रे विचक अभे अयथ महर्रा मुग्रेनि श्रेशभमान्द्रनी भूध्यष्टागम् इत्राह्य उहिउपउथ्यक्तः ॥ विभिष्ठः॥ दिकेल विदिशमीन फ्रिट्य श्रमुहग्रहानिष्ठ लाउथ्भायाद्रभिष्ट्रां वाम्भवाग्रयायाद्र

2. 4. न्यथ्वेर्ष्यु इप्रच्छायाः।निध्न गभनेउधरगर उधिपदवडि ॥ के इती कृलगैः सम्भिष्ठवाविगरः धरः। वल ग्रीडमर्नियार्शिष्ठलभूमें।। व नडभं मगलग्रह्मच थिभूणक । विश्व कभन्भाया। इर्राउ भर्धवयम्॥ अ गमिग्रवणलग्रिभिडवाभ्यविद्धान् वर्फ्ययेंगेय । इतिस्कृतिक्रः॥ ल क्रम्भ तु प्रतिभित्र लक्ष इयं वली। क् शिर्मिषा ज्ञान किया हो ने तहा भी विश्व म्डस्मयश्रुण क्रिउंत्रहरेष अथन क्षियम्तिति॥ स्थितिः॥ स्थार्थम् उग् क्रिअपिएम्। भूगीमिश्रिअविम गर्वितगरंभूवाउर। दुक्तां लव् मिक्सीप भठलविलग्रमाउँ ज्ञाभानिक विविधि प्रमान् :॥ विलग्भिड्यल्यालम्

यर्भ.

इंट्वेड्डेड्डइड्डाइमार्स्कान्स्डास्ट्रा उष्ट मा लग्ने विभिन्न हुग हुन मिथर सि उन्यन्बङ्गवः स्वर्थयः श्रांधराण्य गः भूभाइसङ्ख्वनावम् ।। भूकरु र्भण्णा लग्नाभारं द्वाराभारं मिनः पिस् इ.वडम् इ.वडम् इ.वडमान्यामान गरः चरः थटः न मर्थापभयः र्भे अन्य माना स्थापन स्थापन रहे हुन सम्मारम् १क विद्या गर्ने लग गुट्रियमः करस्य हरू सः द भूयां लालग्रिश्चरविच्च मुः भूष्ट्रा भारता महाभारता हन'भर्जः॥ स्थितिः॥ अर्डिः के स नव'द्रन'निभन्नः मङ्गदेनमु र्ये अर्थि प्रतिवास

9. 4.

ममउविमित्र'ः॥ यश्चर्यं विभागती याञ्चलप्रक्रमानिकारक्षा अञ्चल अ तिक्राप्रिवलिंदि चंवात्र द्वापारिका उ: अट्हेभे। मेथः १ स्च विक्र विहें म्स्य अभद्भारति मृत्य अविभिन्न ।। अस्य अविभिन्न ।।। भित्रिक्षिष्य विषय विषय । भद्रजिमेश्रापमगः भद्राचा चिना भवा न्। लग्रपश्चम्पतिगरः महभगः भक्रा भट्टलयिक्ष सम्बद्धित स्थापन मण्डिमण्यलयाद्या विभिन्नः॥ उज्ज भाणगनीयां द्यात्र्याद्वी भुद्र शब्रा वियरभः अञ्चलये उपयिनः भरम **डिविवाभागका इयोग चक्राल च्रायप्र** रकेष्ठप्रमाम्डोग वलिप्रगायेगल ग्रेन्डायार्गाष्ट्रमेविगायप्य। विभिन्न चगलग्रं अध्यक्षभाभागः॥ मू

यर्भ.

थिंड ॥ यहा फिया मभ्य उविषेतिष याँ भा विभिन्नि ध्रम्भ्य । उष्टा विक्यं यथु लानियागः दलभूयमुनिरियाभंठ वर्षा भार्यगयाराया भागवगणः॥भी भ्रह्मा वः अह्गुडनये प्रक्रम मित्रए हैं। क्र नहार समिति एः भाभाग्रहकता है: बीद भेडे मध्यक्र त्रा भारतिक ने अ इडि. डि. इरणेडिड इन्द्रः अपम्कता विलग्नि॥ सब्बेग : ॥ सीपारिः ॥ एकनिपार किंगिन्न स्वीनं योगः भेताः कस्परिक्रण ष इहिंग भेगा विवासिक के निवासिक क वर्षेगिष्ठिंगः ॥ वेगेनवैक्धविभुगं ब्र्राचिकाभनउगभनभगभनमज्ञदः,का भयभीभविनमभषाधियगिर्धगिर्ध गगभनेनराच्यातिश्रीभ्र ॥ भकः मुद्रग भनभभयन्तयभं अविश्वाद्विश्वाद्विभाष्ट्रिती भूत

9. 4.

भद्रणगलं हगमंद्व भुद्राभभूभि विभून विठवंग्रमल रंगकी दिस्वी नियंगारमियवाध्यम् ॥ विश्ववा श्रमगलप्रगर्भेष्ट्रमुद्धवाद्यवाद्यान्त्र व भर्उन भर्ये में ये विशायां विला कु शुरू ।।। यग्रत्यावः भष्ठगर्वे नेम् सगस्रितं व अअश्विमनग्रापलभे दीवनिक्रिक ॥िद् धमुल हर्गेषुष विभन्न क्रारं प्रवी अल मस्भद्याः अलभ्यत्रः भद्धः ॥ धन्नु ध्राप्रसिक्ष क्ष्रतिष्ठे (३। लग्नेग रेविए। पश्चमरी भव्चे घवा वर्षे। धम्भ खंगः मर्भकावायकारीभस्यलाभक्रलेक मिभाषकम्गिष्या प्राप्ति । ज्ञान्य गञ्जाव त्रंडड'रक'भरभापः॥ हीमञ्चरमित्र लयभेष्टलयदिक्लगा भूषायें गरिव नक्षणाःभङ्गगङ्गने॥ भगवा अदराव

यर्भु =

भिलयगं इन्माने । क्रम्य विभित्र क्रम येगियय । इन्डिम ३॥ इन्डिमियप पवासिभद्यीचिडी लाठग्राभयग्यम् हिंगिड्डिस इड्डिस नाग्रहः॥ न्नेहिंगिड्डिस हक्द्रिति चूज्यकुलगडः। चथः मुप्रगी ज्येष्ट्रिक्ट चीवाद्वरम्थः ॥ दिश्वनरमि लय्यु कि गीम वं हविस्तु उ। गरें गर्रि इतिभाषेयञ्चितिकातिः॥ अवञ्चयात्र गउमस्लय्घवंगुरी। लयुगमस्यग यमङ्भद्धविन मत्र (॥ लग्ने भेष्ट्र म महैलाहरीप्परिष्म। गउश्र ग्वेरिम्थः पालेम श्रीवनिभुज्यायम दिन्द्र अस्मित मस्ममुहभं किउ। राउथम् इपरली कर अनिपिलाउर । क्रिग्रिमलेयगैएवि मुद्रविश्ववान्य। मन्द्रभन्देगरुद भ्रवग्रं य व त्रन्भ ॥ एक भिन्ने व छ इ व

म•

असग्लयग्राग्री।ग्राम्पिस्डिडिश पंहातीयधी यधा। भी भूल ग्रागड्य कुला ह त्र हरी मने। यह अन प्राध्य सहस क्रमनिश्चम्। मनुभूक सम्भंद्र वर्ष प्राप्ता भभनेन भयेग्य स्ट्राइस्ट्रिय गणवः॥ यधामगडमाउमाउमा गगुरी।क भणन्य खंखाः क भम् खंखिनं रला उरिश्व इंडल र श्रिम् गलय गेंबु है। रलगरुविधन्नियापयञ्जन्तिक्या । यर्कं मगराने ज्ञांच भूतल मुहान ठवेराभवेगेयं ठवड्गिविन सर्ड ॥ भूज उपरभण्ण॥ श्रेष्ट्रीयग्नीवज्ञर्कर्क रििश्विदिच'किषिउँकलग्रे। राष्ट्राः भूण मभग्येतिमञ् भगष्टि क्रिक्ट अयम् ए नश्र गुरोविलग्रहगुरोविभें भुम् मदिगाउँ। विस्थान भाषा विश्वास

वार्यः

भानवानी इस्विव रक्षान्य मुद्रः ॥ सिंदिकडिनिभिष्यराभ्याक् इसि प्रश्लेम निजयिक विविधानियान ग्रांडर् निक्य रवलंबा पवानिया । उन्निस् विवास अवस्था लक्ष्यन्तनः ॥ लग्निउत्रेजिनियुम्। जिल्हा अपेक की। कि**लाल के जिल्हा गोहरा** अचं यमः भूकः ॥ भूपितिः ॥ भूय । उर्चे वि लयगगुरिक्डिश्रिइविणि। भिड्युगभम भूगीहिंद्यक्डिट्छाभ्यान्। कर्षिक्त प्रविजिमेश्राम्बिक्तलिशीरार्षिप्र धाःशयभूयां लभभेपेडिरागाः प्रिपका लक्षीरिक्षभविकवा। विशिव्यः॥ मरगि प्रभेश्वपितिपित्ते प्रग्रेष्म। त्राप्रग्रम यगयभूरिभक्तजला उकः॥ यराउक्त किरिपलयगैर पीहर्यानि विश्वेण उभाउँ मं भूके पारिय गिंड मार्डिवि इसि

30€ 1. A.

विभाभूरणलभूवांकः॥ भक्रदुख्या रिभिक्षवेश्यक्षवेश्विष्टिलगुर्वे हरारा । परिपी मुर्गन्य विभि द्वा विलयभागा मिर्मेर्गाउमिरक विकल नविष्टः पर्धेयमं भुउठले विश्वनिविष्डे थकिए। भरुमन भूकवन मुद्दः इल् ठलम्बाह्मनरंमविषिश्रमं**श**्रा वचक मुंबय्धला सिनायकः। उपरेधा निधनि:मद्भेषाद्रकालप्रयेशवर्गावर्गा वेत्रयःकारकंडानभंभः अरणकालग्राणि पर्यः मुहिषि।करोडिलम् भगाः भया ५ ह यंविन मंग्रठह्मक्यभ्॥ भाभविलंग्र धगाँउनगण्डे छ ४ सः क्री वक्र इन संस्कृत उभाद्य इ'किक भविभि इं विवाभ उ:का करनयान्। गामभगव्यममञ्जूष्ट्र धमयभेभिउग्युषःकिम्रिअ्। भचेउँउन

बर्दर्भ.

एं:कुरः भेष्टः भभा क्रित्रः॥येषश्रक जनकुः अउथव में पग्राभियमन। यम् ह्यालदा कुः भठवडि । स्था असु ॥ हिमारी धार भी उन्हें भुः नेभभः अस्की र त्रिः सुद्धी स्वितिष्ट स्वामित्रः क्रिक ष्टिञ्जा नग्रेष्ठारणम्भयदः मर्नग गःभमें भूषि। ऊनडम्पविधाउँ क्रांपि मुहभूयोक्षित्रभ्या येथेयाहर्मयंवारित लही जा जिड़ अस भूमी । जिन्हेग्र भलश्यणणनाज्ञार्थक है।। निय उगडिक्व डिवल पूर्या बलकू भष्ट उ विक्रिअ(।विक्रिक्षिज्ञ नार्वे नम्राहित्य हमः श्रुष्टिक्षः॥ विभिन्नः॥ भप्रभेष क्रियुद्र: श्रवेणने कृषिनक्रनः। इन्त भाषगष्टिर्चे गर्वा क्षेत्र वा अधिक किनामकः॥ महिंहे के इंगायक के इंगक विरक्षिण भ

2. 3.

ह्येग:भभाष्टंडेय (इस्ट्रेड्स्यक्रेश करमें हुए गिना अध्यक्ष ने सने सुद्धा वि प्रकारचेरीयं हद भविवमं न संड् भक्र उम्हाल लग्न कि विवस ममारुपिंग विना ममुवलन खाँड हैं। व्यापेलक्षीवका इथले कि भूकियें उयम्भमाद्धः॥ ममनिभिड्याङ्गि भएभाद्र॥स्पितिः॥ उद्यन्तभङ्गलेङ्गव कर्याण्ड्रमयभाक्तामभाज्य । जनमाज्य । जन य'रं कचीउरिएलीविषः भन्धः॥ भक्रतु प्रकारित प्रमानित के प्रमानित नयाभुणः। उरभञ्जलभिष्टक्षेत्रधम्बल्ल अभङ्गलभ्। स्थितिः॥ भग्राभनीवस लगत्तिर्धनेकिंगलेष्ठभवेत्ररेस् अभागम् कु उम्मन्प्रिया निक्ष उर्णम्मरा ग्राचरा स्क्कनजल

सर्दर.

ब्रात्विकाश्वाधकः। विभावति इति विक्रिति निध्य नित्रमा अञ्चल इ Pages u Kunistansung श्रीयन भी वापनं वाभन अक् उन्नाम भी वस्तेवड्रा अङ्गुरी नुभिन्। इड्राय विख्यां के जुला गुरु करा थड़ा भाभानि। विनिवर्डे अन्यः भी हिराभवभाष्ट्र ग स्व अवन्य अवाध्य स्व स्व । दिरा इ बलवडीरं धाई देवीर भवणा उम्दर्भ विम्यानिश्वप्रक्रियनेहराड्यावीसप्रः॥ सर्वि । अवनगरि भूर । उसे विगम् । न भेष्वभवाञ्ची उत्रम्भाविनिवरु ॥ सु ट्यिककेट भाउ प्रस्तु भागाभेत इ'। धर्मिउ गम्रज्ञहभने व धन्मि वक्ल न॥ स्वयं द्र्यापतिलक्षन समुद्राराकि क्तान्त्रज्ञभङ्गार्यस्तिरभाजगुल

1.

उसयोग्रसक्त कानिया है के, इसके मंत्रिक्स । सुधिष्ठिः॥ स्ट्राक्षेत्र वने भर्भयोद्धः भ्रकृष्ट्री इस्माः मन्त्र प्रभिता स्त्री दक्षिणक वा विवस यहिम्मस्भाविभिष्यः॥ भारतिहर् गंत्रेमभड्डात्रेष्णराधिभभी। अञ्चित्रित्रे र्भाष्ठक्रयार्शिवभवाभवाश्या **छिडिए मिन्। मेव्यूपन प्रशास्त्रहा** मलउ छ लेमक् भरी भि, पविश्व मणि, भ वक्थयः, डिल्वातितीरः, कपुन्भञ्जाद्य अप्रविद्यारि ॥ उत्ति प्रक्रिक्ष निमक्भष्ठमथ्यक्षप्रभूति॥भूषिपञ् कृषिपञ्चार्अनिभिक्तिरास्वित। य ववरमें दर्मन ॥ भक्तिक भाष्यभंभार काष्ट्रकमभयमणि। जीने अनिपन् नु रविवर्गिरमृत्र्गेड्या उद्यामा उञ्चलम

यहन्.

इनश्रम्भाद्यक्रियां अति। वार्षे मुलक्ष द्य द्वा द्वा अर्ग क्षा अर्ग कि विकास कि वि विकास कि वि विकास कि व वर्षेत् एवर्षेडिल निष्ण गुमवर्षमणि अस् हुगुबारेखवानिधामा धारु द्वांसनचारग् कुन्तिनक्षिडिक्ष्। यम्बार्शियाविभ श्रा अल्बं भं मुविलाचे एउ दुला कियों थ्या अर्ग भी म उद्गां भए वेप्या प्रथा भर्ग । या कि स्विति लीम मम भे भम पिश्विक्षशिव्यञ्जनभागमभाक क मली जलभाकियं मावि इंडरी ए मलेनी वाकियनभ्। तभरात्रं मश्जात्रं त्रववात्रं भ इहिरानभ्॥ भिर्वेष्ठभम् छत्र अस्टि यषात्रभर्गः इद्वां भर्षा ग्राम् स्थारं व लभवाभ्यार्थ। यह ज्ञाः लज्ञाह्यां वास् श्वास्त्र माज्या माज्या माज्या भावता भावता भावता भावता माज्या भावता माज्या माज्या भावता माज्या भावता भ

2007

वित्रमुक् मिष्रक्रभाविः॥ अवक्रिक्षेत्र वित्र यभित्र ॥ विभावता अनिक उन कुल गाँउ एनम्गम्यामुग्राज्या इति क्दः भ्रष्ट्रपविद्वेदिश्वभाः ॥ वा अवा म्किलविधिनाभावागुः भूवरुषः अभिष्ठ मभर् उगस्त यदिगीमाभर्॥ कवानि र त्री प्रविध्य मन् असक भी नहीं है म् भीउभनात्र एक प्रतानिः भूने शास्त्र इ किक्ने वक्षणलनिभि उपयाप्र निर्मेण भाषा। क्रिंभास्वरभभरेग्राप्त्रमं क्रिंगीनु या। नगजभारिचयुक्क जिप्त कल दिक्त के। अलिउवाभरामीना भ्रष्टक्षनेममे बुने। यथा मुक्किए मीनं गृह्ये या इस्ति मुक्ता। यथाद्वे॥ अञ्चल्यपुर्गल॥ निज्ञ मुद्रिक इगमिवश्रादननं ठवें डर्। मभूत्रक्रि वभूग्णं भउनवामुह्हवर्ष। क्र्राःक्र्रभूना

ब्रह्मर्.

मुक्षः इत्याम् मिवगदि इः। वः गुम्नक इम्डेड अविषिगुः भभितुः॥ भूषिलं भगुष्य नीय विश्वविक वतिषु ए।। मनी भुवडः अनुः अश्वात्राप्रध्यात्राष्ट्रियः। गञ्जिष मिक्स अन्धा क्रिकादि उभए क्रयां भि विञ्चला सुक्रिंड उद्गाउध्या महिमद्री यन द्वाचिषां कराष्ट्रमार्गारः॥ भविकिष्ठा इने इगिष्ठा उभवलप्रम्भ । मुरु नयज्ञ नचज्रे वी भीन भिकः रुउभ् क यनगरी थसुनं क्रिवसभन्य एल भस्किभ िबमित्रे॥ अङ्गा<u>त्र</u> मुन्ने भन्छे॥ प्रश्मण्य' दनारदेविवाक्रमयनः भनाविष्टा भवीगा विध्वाउभ्यम्भेरम्भ्य भाषा मानुमक्ता नि।स्पिडिः॥ जिलि इस्हलम् स्री स्वरू देश पक्र ज्वल गुरुव भाषित को वहें लो भण्मावित्रविद्याग्रहाणिडं,हज्ज

· CC-O. In Public Domain. Digitized by eGangotri Trust इ: भाउउरणि लभ्यं इत्रुव उद्यानिका 4. विभजकमकामा है बयह ने द्वार है। 003 उस्रवव्याग्येदार भिद्धिविनिहिन र्गाविभयुः॥ विमृत्सभर्मस्कृति ए अकाकीउनभ्। चुरुभानकनने भूडिक उम् उन्नर्भ भर्ग मीपाउः॥ एक्विश ज्याली क्रिकारें वानर मुयाने माम् इतिकाली मार्कि भिनेष्ठः। येषुभिद्धमिकिण सेउमभुष्ः हैं भूजिः भन्नः भिरिष्ठ मुयाला एकक दिममिधकरगाएं की उने मुह भर्म ह उभद्रः। नेम् उनमविलेकन मेधा भन्न धगिक उभक्षक भीनः भूष भक्रतुष्ठ उ भक्ति॥ पर्डियान पत्नायन शकल प्रः भ क्षःगुउगज्ञलज्ञस्विध्वितत्वः ज मजन किका किक एड्सः॥ एए कु भिषः। परिष्युमिष्यु उत्प्रति भ

एः। अगुभानिमाम्बर्ध प्रचीवतः इत्याप्त्रके । स्थापन्त ॥ ग्रामन्त्रभ श्वित्र वस्ति भामक् अव एक द्व थक्तुं ने शाहिली श्रीउष्टा श्रा उपव इ उभागिलिधिष्ट के क्रीनियानिका वि क्र हिंग निर्देश निभाउभार् केशवण।। उईहें अकर्ष अधुगंभय में वमा मव भगीने मंद्र द्रिया प्राचित्र क्षेत्र में रिक्षित्र सम्बद्ध सम्बद्ध सम्बद्ध भ(।भ्रामनवादनानामवशुक्त) ३३ व ग्राविभिद्धः॥ अनुरुनिनिभिद्रनिष्ट उभजनिमायाद्यक्रलस्थ उभानिए नखायन्यम ॥वस्त्रभमुहन्मभच जीनमवीकालभा भूगालभगगययं श्रुकवर्डम् ॥ स्पितिः॥ सृष् मजने भूजाजा भूला जा भारती है। यण्डा

भ• मि• नमेरिकीचिदिगणभूगीवहारा । प्रमह्मयार्थ ॥ सम्भागक्त ॥ अव्याद्या म्प्रिंगि भेडे भ्रष्मभुभ सञ्ज्या विना सन्त महरंभं भुया द्वित्रं भुम्बन भवा अस्त **डिडीयोऽउउसोम्रेज्डीपंश्विम्ह**ि यमध्मजनार्थाक्ष भक्ष विश्व मम्नि भवश्रीभभ्रात्यानि उद्यान्या है ब्रिडः अभनभः म् ध्रः अलक्ष ग्राउधाः ग्रालरुनिग्रथम् लिभंभभद्गञ्चर ज व। गाव भुरङ्गभग्रङ्गित मुख्क भमु भुगः। दिममः अहमिविभ्रशालिउमुक्तरमनः गलिक मभद्र हाग उचा मार्च मगभ्य भ(॥ रक्तर ५ उष्टा अभूभ चर अभिया न थ। प्रधरिभिम एइ हा वस भिन्न ज्व अया चवचभानयान् मरुम्भाव इचि मगापनुष्मत्रं भउन्देशमस्म भाग्राभव

ब्राह्म र

या र ए लि क्षिनिभवं लि मव मुक्ति इवित इस्र थ्यां क्रियय मुंब दलानि विविष निया अधिकंवर भागमा वर्गके शुरु भर्महञ्जाविह्य भन्न स्टालियालि म ।। नर्सवरुष्ट्यग्राठिमिधवाधुर करल धुसिन् ।। नहार मुख्य भाए स ष्ट्राम्य व्या मुक्त ने अने प्रवर्ष उभाजिकेड छ। सङ्गिभिक्ष अधार कृतिया ञ्चवड्याञ्चरः। वामिर्ण्डमाम्ब्रार्थ बञ्चभनेष्राः। गञ्चापकुण्यक्षयमम इ अहा श्वरः। मृष्णः मशुः मुरः श्रियः गर्गगित्रिक्षंत्रिष्ठाः। यत्रलेभाउतिमुध मद्रम्भुम् वस्। स्थु हु जिए स्थाप म्थाप्रनभः थियभ् ॥ ५ड्रिप्रण्येवण ष्ट्रीनग्धित धरिभित्तभने क्रिग्य च म् भूमियुगंभेविउभीयवमनेभुक्तिरानेष

9. 3. ह्य। उर्विष्ठः॥ बीण्यम् निर्मिन धानक्षात्रमाश्रीवनका विवास भष्टर्भारः अल्डाबिका विवास गिथ्यके।उस नंभिक्कः अ नगाई भारती मित्रांभभाषयाति सुरुष्धांभरष्ठी धकः **उटभग्नलभेभामः भिक्तजग्राला ह** इरः॥ मीपिडः॥ ह्रीभरमङ्गभद्वा नमस्वीणवेम्यनिद्यप्रभग्ननशिष् भाराभर्तिउ मयुवितः भाकिः भवद्यं हो उथ्रवस्य एक ि भाग सम्भः ॥ गुज्जा वर्गा भचा लिहा श्रुष्टि विकिश निक भूति र वेग ग्वारिगवलभ्भचा लिमुक्ता इडिमें निकर्भकभाकिक इस्वत्मभ्॥ना रमः॥ याद्रभिद्यिकवस्त्रिमवर्रेभन विल्डि। भूवम्ब्रिम्नयुडः मवः श्रिष्ठ भूकः॥ उद्यामा माधवक् कर द्वारण सुरग

वर्र.र्

वद्धिवंद्या भर्षे भागा मार्थित विराध में भूसकिल्ज्ड्रण सुचितिः॥ कुमुक् ठतनगरि क्रिन्निध्यानिष्कव्यः क्रिंडकी अक् श्रीभुजध्येद्विष्ठुः शिवावाभागः।पन्यिषा भड़ें मुद्धः ॥ भक्रतुमिनुभेन्छ॥ विक्रारः धियक् हाभः सीक्ष्ठवानग्रमपः। श्रीम ग्रमः कि हा स्वास्थान स्वास्थान स्वास्थान भूमजिलगडाः मुस्यार्यं स्राधिताः प्रसम्बद्धानुतिष्ठिण्डिक्षाप्रथनः॥ स्थितिज्ञ ॥ भरगा विद्रष्ट्र भ्रगाउः भ्रमिल भक्षी हुड:क' क्षिडक'दिभ क्य भगा त्रा डः धार्भेराभञ्चयान भावनिक मज्ञनं भ्रयान वर्गा भूज्यस्म मण्डा हर्रा ख्रिम प्र कें सनिपनः भीभंग्राक वाभागः काली जिक्क एभे भ्रम स्था कि स्क्रों भर सिस्र र । कर र्रणमिणिक्रमधनजलाक्रभायाण्डम्। म

90 90 याराः उप्तान्त मा भक्ष विवास स्वा मः॥ नजलस्यगस्यकिल्ज्वसम्बद्धि लक्षामवनभ्। सुक्रम् स्थान विवि म्बर्भन्यत्रभ्रम्थः॥ मधन्त्र म्वाभरीकिवभाचेश्रा अरुप्रें । गवस्वन पक्षाः मरभङ्गे अभयस्य लः॥ अलग्नेषश्चिविष्ठां अभिष्ठा लश्चिकमववापे। लंडभपंशुस्था हवायकान्तनक्षेत्रविराग्यायस्त्रः॥विभ पुः॥ बार्यंमजनयश्यमि भूग्वेमिकं हव उए मक्यः।पंठवे उध्गर्रे ठविति श्चर्य र्।। अचे भ्रविमिकं इहा प्रमाश्यानिक ह वेडर्। भाषनभिक्रुउकदेविपरीउभेउद्येष्ट्री भक्र उम्हें भाषि॥ न्य इंग्डिय भूच मभभ 153वन म्याल्य ए म्यान्य म्याप्य स्याप्य स्याप्य स्याप्य स्य स्याप्य स्याप्य स्याप्य स्याप्य स्याप्य स्याप्य स्याप्य स् मजनगर्र द्रष्ट व व र । खब्द सम्मजनित

वद्भं

गडम विभिद्ध इंप्रण श्रयभेत है या इध रिधिवारभगरमञ्ज्ञभवकंत्र्रार्गर्।। बस उक्षा करिक मधा भारत अविश्वांभा चिधिवंभः मज्ञनः भ्रमधः। श्राहिज्ञ ला यं धारे अल्ड अरिङ सं भन्ने भिम्न हुः मजनः भ्रम्भः॥विभिष्ठः॥यान्द्रक्वं भनभः भूजिहः अञ्चाना इविम् यभूवा मः। भङ्ग लिशि अवलेशन मुद्रियानि रिविरा यावदानि॥ अवध्यानि॥ विभिष्ठः॥ गाउद्यामा हिभाषे भूस में भूसान भारतः सुरुद्धनरा जा भी कमा मार्थ प्रमार्थ स यं इद्वर्षक्षणभववागार्भ न रें। स्पितिः॥ गान्ज्यानः भी भ्रः भीभाज्यं हुगुः मरक्रिभक्तरद्वार्णेविभिद्विनगरपुदिः॥ वसत्रमकर्ममित्रीमिरिननिर्भेष मभक्षतमः। यः भ्रातः अधिनधकुराई

033 1. 4.

हमूलयार्थाउः भूबङ्ग अङ्गुष्ठ देश न्। भ्रमुभक्तिभन्यः भ्रवद्वति अञ् याशभागवमुहस्निक्रिनानिधान्। इंदि वधिम्रामिकि विनयक ने भूकिनक प्रक्रित्म मुयभ द्वा अधि । विश्व भावि दे विश्वमगर्दे भित्र धर्म । भन्न इ चित्र भनं भनहरू लचरा चर्।। उसिम्द्र कर् यभ्रयानभूचर्गनभित्ति उद्या महिवाडी उद्रवडिन भने मकद श्रुप्रभगने मड मृयुभानभ् ॥ विभिष्ठः॥ सज्जनिष्ठिष्ठ लाउँ यानमप्टाभन' हुं प्रमिधिविरिण्गी भूमुलयउम्प्रजुग भज्राम्य भल्लाभू अने ब्रुफ्त कारीने यहा अर्भ में यू ए भी भन्नानानम्बर्मभ्वभूवापन् विभिद्रः॥ मुङ्डभडुम्ग्राभरं लिवि व्रधलेष्ट्रीधगरूभुगोल। खर्रालक गर्

यहन्।

भवाञ्चम अ अष्टाभना र्ड भनभञ्जिष्ट्रभ्रिष क्षुरिक्र ग्राज्य लाजा जे प्यक्र र र जिल्ला मुहिन्तु प्लिनि विभित्रभागव उपित्रभर्दे भूका लाख इन्त्र मध्य प्राच्य प्राचित्र लिय ष्ट्रान्त्र निर्देश भरा निरोधा लियाए किं नि। भूय लय द्वा मक गण्यक गए हि ध्यान इस भी कि उसा सम्प्रिन अन नि॥ ग्रंभिधेउन मी दिए भग गरिष्ट्रन म वाधीउरिश्वन्याधिभन्रम भक्षि उभ अन्यार् मुहं ॥ राम्यान्यग्तु॥नाग रहिश्रमं बहु अवत्र परिभ्रष्ट है। भूके र धनिकद्वत्रयाग्रीर्यं जवः ॥नाग रहभम् इ। ए भनश्व स्वाधिर भी यो विद्वं भूभया मूरू ५ डिभ्रें वा मगीउभ १॥ र्भयुनगरअभूनगरईविषीखँ । इभा त्रगरभीभन् दूरनगर प्रवरः। सनगर्

2. 4. विगर्नभाष्युण्य निभविष्यः एिभर्'ः॥कमिमनुः भगेष्वे विष्कृत म्बंभाग्य अनगरम् राष्ट्रिया निवा था। अक्टिकिन स्मिष्ड भूयाल किंडी य क्यग्नभार्मेव।भारं उष्टेश्यम् निक्र रीययविध्ययने परंतर्थम्॥ भक्तर् उभागि॥ भूतमात्रिनमं उभा दृत्यमं निन मितिष्वी नक्तर्वाउषावार नवज्रदे द्वारा न॥ नपराक्र॥ भज्ञ न्य निमभचा लिथींध जद्रम् जिलभ्यभभूत्रान्यभान क्राष्ट्रानिविएनरा॥ भरमुप्रवर्धिय ण्डंमिप्रिम् इस्मिश्यमिल अज्ञी उभू ऋउं मुवनभ्यति।। भूक्र विम् भण्ण भदी भेडेरक किने भरा कुरे यह कवडा गभ नभवमकी हवारमुलंभूडिमुक्योगिनी विमप्यत्रवक्राधिभित्र इः॥ यष्ट्रक

बारंग्न-

कितिवर्ग आदी भड़े विन भव में भुः । इदि वियादः अधियः भूवमक'लेनया दिक्शुद्र ॥ न्येगिक्षः। सम्मानभा कृतिक विचन कि गवि क्षंत्रिभंडें वक्तनंभ्रं। येष्ट्रभगि । गास वारिकाज्ञ दलभूभिद्विनियं भूमिष्ट्रा। व भिष्वः॥ विवाराः जियाकी उपहल्लेकि किला धीविश्वमिविनाविभू म्जमभू भूके भाग्। रुलभाषगाउभञ्जर्भुक्तली उष्टभानभ्तुउभ उननज्यी इड्डिंगन पर्राज्या भाष्यक्रमा जगरेश्विष्टभनी परिग्रव गुन्दि एक। क द्विवाद्धां मजला प्रतास प्राप्त किला भी (उक्रमंक्रिया ।। भाषा अभ्या भाषा ।। क्रीगादीक्षितियाम् स्वन्भर्ग मञ्जूष्य चवक्रवभवंभेश्रथलयभुगंविम्मु॥ एउभाने भूगे भिड्ड उद्देशनी निर्गिष्ठ ३। श्वाप्रचम्जनः श्रामिष्ठा म्या

2€ 4.

मिरिश्वभाधनिए असि कि कि कि कि कि श्राप्तिकार् लिम क्रिने मिलिक् विश्व विश्व भारतम्भाष्ट्रं भूषु गुरुविवित्ति उ। नवव तिनिभिर्गिनग्निभिर्ग्यसंभयभ्य भ्रा भ्रम्मञ्चकरउठलाभ ॥ सू इककरुउम वथम सुम्मक श्राप्त । १ विष्य मिस् धितुरगोविपीय्रेश ना हेह्म अधा भाष हर्गनग्रभभगगभः।निस्धभरलपु अ उक्किथलद्यालभ्या ९५०॥ ५विभ्यत्रुव इ बार्भकान्य विमार्॥ ९९॥ महावासु भूकरलभी निराल्ध उनग्भराद्याना भभंभड्या का इभागि धरी की उग्र वला भक्षवः॥ भेषरापाभभेभिम् वालक म भनिष्ठला। निर्धिन भन्धा स्वच उँ उँ इ नभूषः॥ ज्ञमन्णभराक्षमयुक्ति भूषि भूज्भार्। ४ मुभ्य नवडीमें ५ स्

यर्थः

विवश्मी उला ॥ भाषभा वरी ग्राहिटी प के बल्ला है डिम्पा प्या वा उपा भागा ने भा विक्रात्में वृज्या कि रुविडः मुक्तः॥ म इशुनि विस्किता भी धर्मे भनि विद्याले। विमंधीउम्। इनं तच्चवळ च्राप्तभी P3 च उसे विश्व ध डिस्रेग्स उहिमः, P क ब्रह्मियभ ब्रिल ब्रह्मकी दिशः॥ भवगञ्जिकदञ्जवकथाचेत्रकणिकः शचिषा भववत्र नं कर्क डिविगदिउ॥ शर्विषं मश्रु ग्रां स्थितं नयरायर भूवकिष्ठिकरः अचे पनम्बारुभवः॥ मिक्राम्य स्वरूप्त निम्न पश्चिम् भ्रम् उवयुक्तकः भ्रमिलएलानिष् विगाति उसभग्रज्ञक एउस निभिन्नि की अच्छग्रयम् अवरुष्ठभच्छिएक्श निकरिर्मि उपामि एन भागम् अन्य

उःभार्यम्भःभूभाम्यथ्यकृत्रे॥भानेत्र्वाः णग्ये उद्गान । गङ्गा से उद्गान । उ:भक्षकरी ज्येड ॥ एन्नयुक्ते वाहिक पक्ष ग्रेडभरमार्। उष्व असि उसे इक् उपरिभाग्येड(। मणिकैंग्रामिभागेडिश्रमें भारत्यक्षयः। कुभी उपरामायाविव लियमिम् मुड ॥ भारत्वा स्वापावा डाम् ग्राम । जनगण्डर्। तम्र संपितिकनीया म्क्रमिर्भेडेंहयभ्य मुंडे । विभन्ते यात्रि पीउँ श्रम्भ वरः कि भमेवि इभवि इर्फुबल्डभन वियः॥ एवं धरीकुत क्रणच प्रयञ्जाभ निन उ'भ । डिलाई व' भचे इड्डिंच वा विभक्तल शास्त्र वा भ चण्ट्रानियाप्रियानिशभाउः।दिराद्रेल भूरितिवर्धा उभड्डमें किमेड्री अप्टर्भ पकुराईलभपुराईकनीयभीभे।कम

वभुभू,

किकी एसक् अंभिष्य विभाग विश्व अवर्षे विशाधानिक उप्ति है। अर्प उलक्लिशिश्चनिभिगुः इचिभिष्ठभंदि उ कुः निर्देश निश्व भवम् इषः प्रदर्भ। उत्तर्भ ॥ भूजे ज्ञानि विश्व अने व न स्थाप न्वराद्ध्यस्भायमुष्ट्रिः॥ न्ययः॥ गीवाल अचगीवालभिन्नि श्रिष्टभाविः, मुल्लभन किन्दे निद्रालन मगदिषा नीममञ्जाउँ एगिब सुद्भार हो विषय । वि क्रिडेशकनेम मुक्र डिनि: भ्रुट्डेगाउभी। स मुद्भविव लेखनीमा क्रुः शिउ विव वासुनिहिभाः भिज्य प्रसारापिः शाउपा अग्रेवासम्भित्वा भूभामभूगभू उतिउक्मवज्रद् त्रभ्भभक्रम्मा स

4:

वमभाः॥वसिष्ठः॥भग्भडभञ्चडधिभा ण्वडभिद्धिषा उत्तमगाष्ट्रिल भुद् पिर्विवत्तनभ्य उद्याज्य मा भिष्टि म्नुलवं मापभाषम् वलक दिक्शा भाषाः स्राप्तिर्मलपर्रिय्य प्रमुक्तः ॥ नाव मविभिष्ठा हो भारत मी द्वा सिन्धा निक ल्पेन्द्राच अपूर्व भए भक्षेत्र मृद्ध डि:॥ अभग्ठग्र्यग्रिंगलभाष्य हार्षेष भर्भे प्रथम प्रजन भरिक उन ने ध्यार नेन वानं विग्रमुरामाद्भाउनिधिमुभ्। इसमु लंकिमाभाविभ्यलेन भक्तविभाग न्छे।किञ्चित्रं भगड्राव्यं भणियाभगड्यां प्र मुम्किक्ट एक म् भिन्न गरे एए मुर्गिक त्तिनिधग्रिषक। भाष्यनरू पाएमुक निग्रिइंगेंदेउचेलेनभक्कृष्टां मड्म ण्नष्ट्रियनउड्स प्रिम्भम् क्वेड । सम

यस र

मिर्ध च्या हु भेज भी॥ उच्च मे मे मे ज्या हु गंजा :॥ भीने एन् बिभिष्द मिश्रिउभभग्रा महो रक्षत्र न ज्ञाची विवाद गण्यक समा। दि विद्वभः॥ गार्ज्य गर्भन ज्ञची उपविद्वाह श्रिडेरवें। डेअमुस्ह्रग्रं प्रशंत भेंड्रगड्या एनिश्चरितिन्न इत्रेप्रवेमश्च करिंद्विडे:॥ भक्तवित्रवाभन्ति॥ हैभाद्व विज्ञाभ निमान है विभाष्ट्रक हिंद्र इक्षेः मुहत्त्रदेशक्षुयार्गाः गातेः॥ यर्भीरमञ्जूभाभविः सुरुच्चिर्भक्र रेभष्टभभे। उठ्ये विस्तृतिम् भिष्ठिय इ दः। ययभग ५ १ कि की परीय मह अर्फिणगलविष्ये॥ उउन्ना उभिन् गीविष्ठे वा इंतर्रा क्रिकी एनं इड्डा भनिन नभगेत्र इचवा धिमिनाउने॥ मञ्ज

भाननअर्लालायम् उभागाना ममञ्ज्ञमञ्चा अधिमा विश्व ।। इ स्याग्यर्वाउभ्यम् स्याप्ति । कदोविउउउउउचाउँ अचापगाँ ।। अयंत्रष्टभभञ्जनरापश्चम् चिल्डुक्ष क्रिलंडरिक प्रमुक्त पर अचिक । इप्रमुवभर्मिव गरमञ्चलका भष्टितितरं : अर्मु (रम्मेलिपिन दिः। म पुरम्लभ जैल भूक रेकल ख इवि। म) उरस् विग्म भाग न मुलं में ड गरापे॥ सम्रह गाया वस्त स्था मे यर प्रका वा अक्त द्वार एउं हा विमा भागमः जयभी ॥ समग्रान्धनकर्ष नयनभ् ॥ भूजरुमिर्गुभल्जे॥विभिष्रुभ उ॥ मकनिउम्रह्म ५५ कि छिष्ट ०५९ कु धनिउद्वायदाउँद्रनगाः। गुज्राधन्यु ११

व्सर्



धियुङ्चिठजीङ्गपश्चिति: ३०० ज्ञास भिडिनिधिन्दुः॥ स्ट्रायनक्षर्ठवं व हैं दिन हैं निर्धित हैं निर्धित हैं निर्धित हैं या अर्गे जभद्रिय गाया हम् स्वाः भि क्ष इस व्यवित्र ॥ नागमः ॥ व्यवित्र विभिन्नः ज्ञानी गर्वे विष्याग्राहः। जान्ना इन्द्राड्डिया क्या इस मानि । **५३भिनं भन्छ। एक म्मयवं ५ मुयं** वर्दु दिसद्यक्षेश्य वर्षे वर्षे वर्षे इंडड इनेबिक नुविड्। भिष्ठनवाञ्च इगरणीयनगरगातिनगः १९१०।।।। ,3।3।१।३।ग्रिलंड्स् मेलाविर्धाण उनगानगाद्व अद्नगार् डिष्ट्रापर्वन 信者 11 31719109131 97104197109・11 अयवारं मकेन् द्रभाभको । विदुर्भ उग्रम् धगादमह्रगाद हर १६३५म्भ

न्दर-o. In Public Domain. Digitized by eGangetri Trust न्नय एण्णिक भ्राविधमावः वृत्ये वभभाषाः मक्षः।। श्रह्ववित्रवा ष्ट्रमः भर्मचिकिह्य भूरिका निवस्कार ण्यांमःक्रुविधुक्रभिद्धिकः॥ वैन भिक्षि पर्से प्रवस्ति यु स्वादिशी। परिष्युक्रगेर्स अचंड इंड्रुंग मिडः ॥ वि परुमविभर्ग गप्रितिः भूतिक्रलक्षिति एन'एड्राक्थभच मंनिएन भूमं ॥नैः ये विश्व ममेन ने विकेल इन थह डा भर्ष प्रकृतिपर्भ क्षेत्र के किया में किया मे कुष्णिकंभचेमभ्दिविकार्येग्। उ भारत्यं परीक्षेत्र क्रम्भेडि धिकः भम्।।व भिष्ठः॥ सकरारिष्वत्र प्रिकृष्ट्रिय षा इ, भर्गा जुना हा अंदा सुनद्वा प्रा एमामकः॥कियुनाणभियंविनिः अव

वसरं

नामुन्यविश्वः।विभवन्यविश्वः मुरुष्कः॥ व्याध्याभः॥ अइम्युमिलं श्वाधन अस्ति सन्यम् विष्यु अस्ति स् जिल्लिक के बार्चिया ममा संभित्र पर अध्य मध्येष्ट्रभाग्य भागा प्राप्त विक्राप्त द्वभाद्किश्विलभ्॥अर्विअद्विअदिवर्भिति इंडिय द्रहर प्रतिमंत्रीहा क्रीक किथा भमअस्या मक्सीिउ परंजदः युक्र रिषि उद्गाभस्तवधकं ब्रुक्त अने मनिएन भूकभ इ दिसस्साः यसामाः भूका श्रमीपगः मडेष्या दियां लेकियेग हय भूम भी। कि विकिन्निक्र उर्गणः भिराः भूचा भूनः भरा। ब्रेकिर गिभमामामाः भिरान्छ यद्भंग्रितः॥ भराजभन्नयन्त्रयान्यस्य वि भकील भन्न जुण में नक र ये उर्ग में द्वी म मिश्रानग्रनभा ग्रेष्टां भवनालय भी वाष्ट्रां वा

मयनंवम् ने च हां मा भूभिक्रियभी । वा क श्रीकर्ण नगानेवायद्यं भस्भिक्रियम्। प्रक्रीद्धं द्वारक भक्तमा हो स्व भक्ति रभ्रशा भद्यभ कुछ ॥ न य्यामनन्तरं नवायसं भक्ता वड्ण मध विनिचिकल्य इस्विभाग निर्धाणविज्ञा मुञ्चेराजनेभटेयभा गुरिंगचरभे। या श्र गक्तवरहेभी बहुगभक्ति र भे। गक्तभाष्ट्र पर्येष्ट्रविष्ट्र'ठवनभीविडभी॥ उद्यमिन विद्वष्टरियनं भित्रारं उउः। क्षेत्रं परिना भक्त न व युक्विंग् एथिः। क्विंग् मानक् द्रष्टिमिकि इभागनंडडः॥भारत्रमयद्ग्रेष्टभचवशुभ भन्न भएभमनेका यद्भें इशम्बानि धेनम्॥ गरु चवात्र स्चवागरु ने भिक्र रें गुरुभ्। पञ्चालयं त्र्राच्यापराच्यां च धीपवा । उपूर्णभित्रं के द्रारुववाव। में प्रणा भाषा अभिक्ष सम्येव प्रचिव प्र

ब.स.म्

क्रम्स् ॥ म्यायवयहः मभुः पीठिभ पः वृद्धभूकः। भ**मकभन्दि।** सं त्रिववाञ्चरा। मभउकर्वभू क्या क्यायणिया । उत्तरभक्षत्र तर्भिक उगविगुरुप्रमः। यसेन्यणिउट्ट इ णःभव्द्रभ्रिण्डः॥ सवद्वरभ्रधनभ्रा राष्ट्रकें के सुप्रमध्य देश में कवे अवर्गिकि कि विश्व में भी अपिकि लभ्राम्यवाशुम्रविध्यामीयंग्राद णियः। शिष्रिष्मभागप्निष्न कश्रामेषु गर्भाग्राचित्रापवाश्वप्रमध्यम् भग्नेमुरुभ्। यहिम्युक्तान् । य मक्रवयप्रभ्भविडिभाष्गिर्द्धानि र्भेनिविक्र्ये। युर्भाषां भारः कदं भूर्थे। र्णनपूरभ्यविश्वक्रण्येष्ठं वार्

2000 20 क्ट्यर्फ भी।उभा द्वा द्वा वा भी कि वि स्रम्भर्पि। भूमिकिक हैला देव कष्टामित्रभार्। मुः। प्रमेक् । नुः। अध्यरम्प्रमुन्। श्रीराज्यभुद्रवर् निः भ्रष्ट्यपुर्वादन्ति। निग्रन्त् ज्ञान की विः भूज्वा भिचना गभः। मुः। प्राची भीः मङ्गण मंद्राष्ट्रां किमिङ्ग भारत्। भारत् मिन्यभाष्ण॥ अद्रुष्ट्रगरुः महिलक्षीः केल अउन एः। व भेरीनंगराः अञ्च माणभुक्वन्स् दिशक्तृं राभक्त हैं भेर्कः भाष्ट्रमवस्रकः। स्थाप्तस्भि में चुरंवि पेंद्यं भिष्यं गर्ने। चुर्नि । सुर इस्मध्यविष्ठा पुढलविमान्तिय भ्राविभुः॥ विभुगित्रुगाँद्विगाँद्विग रंडिसभेयगाभ्। गुरु भक्तिगुरु फ्रःमभःकद्वनिभभः । । नश्चिम

बसेर.

Mohd. Ashraf Peerzada Collection, Srinagar

उंगितीय के के द्रिण्य समावितिः भज्ञ व्हिंदिया मिन्न अधिवा भारता करा कि इ थरेकिशहलः थल मनकिरान्यि णनिष्डु लिएलक मिर्देशनिमार्था स भक्षतिल केव गव का भक्ति रश्चमा अगा र्दश्चिम्बाधिष्ठश्चाग्राभिकाभी। विश्रेष्ट्र लगा सिला भुगिलिनि श्रिट्व बाभामभा अव वा सम अक्ष पय इ (॥ उद्योग निस्लभिक्षान्य ले अध्वमिदिविणिपमव अअरु थ्का है विणिव सुभूभा ताः॥ मध विश्वयाग्नाम् स्थापनाम् । भिर् मडिस'अडीलअः ५ हः ४नचपः। उति। नीरवडीअलम्बल्डाउल्लुनी॥गनिष्ठ मउराधान्वराम् अस्ति उरा नित्रा नित्रील गमीस्म भूजरण उच्चम। वं भुअणन्भ उपनकार्पकरियः।भभ्भितिनरिलक्षीभ

विभूत्रपरमाः॥ यद्यक्षिम् इत्रिश्चार्थण विभिष्ठः॥ भूणनेभमने बीक्षिम इ उद्देवि र्भर(भन्क)लग्रबाधवाशुँउदैववि इभेडिं। मेडि: मानामिष्ठे वेश्री थर है **अभ्य भर्ग । रक्त महानित्र 'श्राप कि र ज्**र नवेलवर्भ।नीपक्षां मुक्त करण्यम् लान भुउरुवर्भ। मुद्राइण विरुष्ट् इ रम्द्रिजीयकभ्। मञ्जूषिक हुजीयं संलि क्षवाभराम्बर्भ। विष्ठिभादः मञ्जः श्रुचेषंभचमं सुरः। ए हार् अत्र उंभ्याची धरिकं महाभी गाजभष्टत अभार्गार्टीभाषविद्यमेर्।वाञ्चाभाम लेगिरि अर्थे मध्याल र्यभ । जीवी अ सि<u>चिम</u> इ. ४५ पेड् एन प्रमाण भाषा कवल्यिवनगर्रेट्यु भद्रिमाभ्।भ नप्रविज्ञाप्रविज्ञाभवत्ति उप्रगाष्ट्रक

4.27.

Mohd. Ashraf Peerzada Collection, Srinagar

रवारलय चुक्रिंग प्रभवति इ। नन किंद्रिश्वास्य सिम्बार्गिक स्वार् गंक प्रगुरुष्ट्रज्ञन असक भरा मुठवार भक्तक धविवस्ति । भक्त प कि देखिश्मीच मने अवशादक लक्र भार्य सहः भ ए यगः परः स नयं देशियद्गेल अपर्य स्ट्राभुद्रभ भ । महेराइज्ञमजने विभिन्ने यह ल स नैः॥ धन्न समुज्ञ सुभ्रद्रल अद्विष्ठ एगली उ गित्र अधिक अधिक अधिक स्थानित स्थ भेग इत्या अयम भारत कर दिवा प्र थलेल(॥ सर्वापाउगपनन मिला किंद्रापन भक्तरः॥ अट्ययं चान्यवत्तकं लेवर भगित्रिरंभित्रंयर्।भिप्रित्रंत्व भक्तियम् ग्रह्णडभावक रांभीजिकिति वीस्त्र क्षेत्र मुहण्डा

विमिध्यम्पिरे।। भण्भाषेड विक्रजी उ णंडमिन अववञ्चभाषेञ्च भङ्गश्रि द्यापद्मक्प एक इं उठः भ्वन स्थ मिं चूरे मु।। यस अडी गा प्रवास देश प्र अक्टिममाग्रभ्रम्थवनभूग्गमभित्रे रामिर्षिम्वलप्यामिकपरिंदि विविज्ञितिष्ये। अर्गर्म रमन्स्र ग्राह्म सि नं वर्ग नक्क लिया भिरु समानि अडिक गोप्तविषिः क्रिभक्षरः की रुउ॥ गनः॥ भन्धिपवनिभूजिधचभज्ञीसुरुक्तिनाश्च डिक्भभवक लभ्या म्यू मय र भावकामि(उ॥ उदिन्देशव पोष्ट्रपश्चा वन्नवंगिभनचभीमन्रमणनिष्ठ इउराश्या। भर्द्यस्यमानिराभाक गग्व मन्भ्य मुघवभिष्रभाष्ट्रगप्द र भविषयझ मा उद्योजगाउयानी मुविध्

बस्र र

WSである。 CC-O. In Public Domain. Digitized by eGangotri Trest できている。 Description of the CC-O. In Public Domain. Digitized by eGangotri Trest できている。 CC-O. In Public Domain. Digitized by eGangotri Trest できない。 CC-O. In Public Domain. Digitized by eGangotri Trest を を CC-O. In Pub भूक गाम भी । समार भन्न सम्भूष प्राप्त । भी। सिर्वेत्राज्याति सम्बेश्वेत अ। अणिनअसिउच्चेष्रग्रेडम् रुउप्रिनं॥ अधिनकार्गे अद्यक्ति विभिन्ने व उभिद्रियं उसिरिय स्टिया स्टिश नि उचचा अभि इहिस् निलेष्य। यहुउँमनि भगुजेम्ह्र इच्छा मन्त्रभः॥ धावनगाउन्न कःश्रेष्ठेवः इनगैयूक्ः। धारक्रभगरंगिक क्रोडिश्राण्यम् न न ॥ नीम मुद्र्गाउए विस बाह्य वार्ये निद्धिउंभक्ष्म सुक्रितिः श्वरंगरभ्याप(इज्जागरीम् इर्वेवय किनग्रगाः उद्यत्तवस्तं गर्भस्य भैपर्म बक्भा महक्द्र दिक्ल के सहुती मं म वे तिउ। भयना ह पूर्व गैंद भच्च भुक्त विलाह

स्भी। यद्कं समाभी श्राव ए यद्वावा र वि त्रधमरूनीमगं में में इक्त के के विण्ड कभ्राभ्य अधिका भारती वास्त्र विश्व द मने सुरेषुलग्रारिए भि इशापिकाषा शिविः मउश्रम्भगरंभिग्रद्वाराष्ट्रज्ञम् अवस्य इ॥ उरइयेर्येश थिरा दिनिद्रालल युरा। ठक्क'लिंधरंगेंद्र प्रदर्भेद्र एन प्रमार्थ। न मवाभुम् इविमा गः॥ तथम इधि एक र्युमामाभिरानिया यभर्म मुक् निश्च मान्यारे चरित्र । यह अस्ति सनिध वाशुमक् विमारलीयभ् ॥यम्॥ अद्भ उभरधारम्भाषीवग्राणगालडाकाकिः भाभअलि अभिवेषमां । उविद्य त्र त्रिक दवासकाता । नवग्रभा पनवम्म् थि इभः॥ ५इरअचक्ले इ अरंभिले इ सर्घभभ। सथः भूक्रक्रिलन्व अस्।

बस्तर,

वैश्वनाश्चरः॥ नारक्षेत्रणा स्वान्यद् अम्स्मिश्चिउभए जाउँ अद्मिल्य संभू क राकिश भारत हुए।। गज्ञ सु। मिला विद्येश कन्निष्ठ अन्द्रभंग्रियकत्वन्। प्रयंभानभंः भिक्तिः चिउंग्रभपुरिश्चना सुभिधंगडमा भडें दलानि विविष्नि मा की रोमने अ लजान्द्र मार्क मार्थ दिया कर वि विविबद्धले अज्ञ इस्प्रेपि कि इंगिप स्त्रम् विश्व के त्र के के त्र विश्व विष्य विश्व विष्य विश्व विश्य कथ्यसलमिला गुभं प्रकल्खेर(। रंभ नभामितः सर्भामितः निव्यन्ति। **अन्नेवविणन्नेन अक्ष**ड्या विरेत्रे लाभी यवमाला हरा ।। नभानिम ॥विभ वैः॥म्कट्विरिमाः तत्त्रवर्भन्नाः म'क्रयः। मालाः श्रुप्तमहमादिश नवमालयः। मिलियु हे ये रे रे रे

2. 4.

इकंप्रमधित एः। धीष्ठिः भिक्ष उत्तर्भाष्ट्र उमालाः भकी विषयः॥ उभ्याधिक दूष्यिक दूष्य भ्भारे विविण:भर्डाः। इधाममा भुक्त नं भू अर्गे इविषीय है। गर्गे गेंग लाभाः अर्थः भाषा अवस्था स्थान भवलभ्रविविचिः॥श्रम्भिकंलभ्र अन्ना लिया गुरुभाष्ट्रिश्म । गण्या हा बाद लिक्ष्य ठव्य ग्रम प्रिणेशा न्या अ र ल्यापमिलक्राप्य च्या क्रिलक्र अचारिष्ठश्रालक्षेत्रपारक्षा अचारिष्ठभा प्रवण्डलयंभक्रापांक उभनेरभभी भ वज्ञेष्ठमं विभक्ते पन में ज्ञायभएं अ इति भने में विवाग ये धेर मेग प्रभी उड्डिम निर्मिष्ण भवभव कि। एउगार्थः भ्रवाभभम्। महलगः॥ भक्तर्वामर्गभन्छ ॥ हेन्गर्भ हृत्यंगिर

वस्यः

निव्वाक्रिमभाक्ष्यगुक्किषिण्द्रः।उर्विग्रेल विद्वार कर विद्वार के प्रतिकार के प्रतिकार उडडाडाडाजामम्मर्गभाग्याउपभ कुड्ड अङ्गितिष्ठ प्रदेशनगार्यः॥ भिष्य इति इत्लाग्नः॥ प्रवाप्ता । इड्रभाक्ती एमंद्रा गाउना भवर ाणः अधिराभामः अच्छ इराभी। भा 'र्भम्थ उद्गवडुवनम् । भारति । डिपाहिंभच अथ इस्भरं॥ ए जा एभर निविद्याप्रः थान्यास्त्र भिक्षाप्त इभक्रीभनं कि इसिक्स भूग म भटकंपनमा देलाई भिक्रणने कल मविभुग्रहण विपरं उडिभिष्ट्रभाषित रेखे गृह मक्स लयम जन भित्रअ(।भने उद्यप्तं गर्ने नाभाउ

भाषभ्।उप्रवाधवारुक्क लश्ह्य उद्गाद भ्राष्ट्रियुद्रगैकेन'भठवेडु,चक्रभद्रलभूक भ(। धामुभन्न अभीन अभीन नाय क्रय भ। मीप्रमेनच म'गाड्ड भइबिड् अवचनभी। उम्मुरविदीनंउ हुक रक्ष्यमं क्रिय भी अ करम्यमञ्जनभावताक्र भडेहवभी। अच इंश्विदीनं उद्वे भूभूयम् भेळ्ळक भेश्यो धन्यप्रगत्भववाउभ्राम्बम्। इतिल इंग्डीनंडइ दिमापाभे ऋकभ्षभचव्रु भूमग्रेगपंभचरइभूमम्॥ उट्टक्माना हरानि जिमाला हर भयु उ। यभ्यमिभ येउने द्विमानाक्मानाक्मानाभागः भर्द्यम र्णम्थिकभचक्राक्राधिम्भिड्रखः मालाञ्चाधमनाभनाभाः। हिर्मुगमः। प्रक यमभवयं मेरिकी उम्भाभूकी श्रेष मानाभाविपद्गमुप्रिक्ति। मर्हेड

क्स दः

यक्ष सञ्चक्ष क्षा कि कि मा अचकि लायां उने जिसालाभार मं प्रिका अधिरा विज्ञाल विषय क्या भेरे।।या श्रेप बिभवाविकियानाभङ्गलभूमः। भूभा इवास्था ज्या उद्यास सम्बद्ध विश्व वि इक्तिवियानाथनः असकलक्त्राः ॥ जियानाश्च एभर्च भिष्ठिष्ठिपद्ध कि इ भिक्तः। एवं पंत्रमभद्मनिष्वतुर्थन इलड्रा व्यक्तिमानिया। यन्त्रभंद्र केंड्रेड्रेडिडीयरिवचनभ्रार्डियम्स भंद्रंडियन्यः मी भूमभ्यउभ्याम्। माउत <u> पण्डमंभक्तभीभिक्षण्यविनंभनभ्यध्</u> भभ्राष्ट्रभगन्तना हायुः मृभ्रिक्सकी । नेव के ममभन् शपन्भपमक रुयभूमभ्॥ **डफ्रमंभक्त्वारणन्यपूर्म्भ** मुःग्यूरमञ्जूबरसम्।उद्गमभ्।या

अं भं

म्मधनमवाद्याराग्यात्राचित्रभाषान्य भागाय जाभग्रा उद्घाविभूली क उभामना अप्तिरिपद्य स्था । इसी के इ व्यापार के जिल्ला के जिल्ल रभित्र मधुमधुक्तय इविश्विः श्री र किंडी माना इववाम इक फेउ भचम उल्सिक् वा भार चित्रपरिष्णभववा इन्द्रि गगकचाल्य मञ्जू इपाइपुर **डाउप्रचउरधाम्मभ्रम्। इम**लाः पन्न र उच्च गुड विमे सेल्ल ॥ न व म । ॥ म्राउभिन्नमा । इहर भारतका सुगुग्रम्

वास्त्रं

दिसंयहरू चिण्णभ्या धार्मिभद्यं सभक्ति उ नच्चेर्डिं विष्ठमभ्। भगत्वश्रानिमय वभूग्ड्रेयवभूकं॥ उउउउ्ग्रेमम् इत्यक्कियाः मत्रथानाकिनिपिलिहे गक्रिड्य पुरस्। भ्रामु रभित्र मेवभ भिक्रिं अकी विज्ञा गए अपग्र ने पि इसलसीयू इन्जभी क्रिक्सिम किउ व च भन्यक्य कुवि। उर्भ भववभू निवचन्वे म्याभाषा मा। अः मालाभष्ट हैंग जिंद र च भाष गा ५ भी। गा ५ ग नि । विष्टिं भचभे पर्मभर्ग ॥ उद्ग्रित या थव क्रेमक्तक्रमस्थाल्डभः मस्वागात वस्नवंभवभेपसंभ्याधार्द्धिकम्पद नुःसन्नेश्वच्यकल्प्यज्ञान्यभाष्र ग्भाष्ट्रनद्वा अकविमः॥ मवभारतम विभिष्ठमंदिरां मुच्चाः॥गाद्रभिगा

4·

दरीरभयभा अपूकल्य विश्व में में में में में में भिष्रिपयर इभक्तर्श्यका कि के कि ग्वएनभ्वप्कन्त्यड् भाक्त्रभाव वे रें के ग्रेड्स्ट्रिस्ए इक्ष्रिश भागाण्यु भेनाष्ट्रगणगचनिभंद्राक्रभश्मधाभ विणनंगभूगंलभभूगुमुडे॥ अम्डिहाग विभ्यंभें इंग्ये इम्प्रुड। भाष्ट्रनिभिड्ये धा मक्क्ष्मने उरवित्र आ वेकेन की निभाची लिभान् निस्ट्रा हुभारिए पार्च ले अचे बे लनवेद्वेद्वेद्वर्षिष्। अविविक्रार् एनंगिएरं भचकु कुरुभे। विमं कि रहे के भानेगालभूवं यद्यि मिडभी भाभा ना निमभी निविभूग्रीनंखखन्त्भाउषा अवगण्य प्र नियक्षः॥ विभिन्नः॥ अत्रागमेकितिलक मभीवक्रलभक्षकः। इंदिभी भिष्यली द् वाभिमुभक्रण्याभगः॥ वनुकथगभनस्स

बत्सेर्द.

विलगादम चिक्:।भित्तिक भएनी एउनि विक्रिला पुला दूशा शाण्डे गायं प्रत्य तराः भ इलक्ष्या स्ट १० ४५ अ० अव अवस्था निश्च अभू शिविदीउक् शत्रमापियां इसिनित्र इः रिरीयारिशकहरिया । १९ में इक्षिक लीक उक कुण शक्य गिर्धि मेगू भाना मक गुरुको हिनिक इंशाका क्रिक्ट निर्माण नमल्यानिकियः॥ अवाककर्यकारी ग्राम्बर्धे । इस्वर्धित स्वर्धित । गाहिष्य वर्षाः। सगर्था । सम् दिरिक्कनी भ्रमा भ्रमेप्र र न भूउँ र पमक्ठयभूमः॥ न्या क्रिभविम गः॥वभिष्ठः॥ मञ्चदंभइपनिश्वभीनाम नियनं हर्वेडर्भियमु इहयेभी ए अधिः भ्यादिष्ठभाड्या क्रियंदाउभएभाउप नद्रनिशुवाश्वनः।उभाद्मध्यिमद्रमञ्

033 4.

पंत्रदार्डिंग न्या भक्त द्वार ने भारत लयगेनं विणिए लाभ खब कि दु व्यव कुरि मेविलिभडः।भीन'कुभिष्ठं कुष्टगाञ्चड भि हापाउँभाषाद्व विकिञ्चार कवा देश किला उरीमुगरभविशिष्ठिभऊरुवर्वे वास्तु विश्व लंड्येविमभ्॥१९॥ महाग्रह्युवस्थ्रक रलं ॥ विभिन्नः॥ सम्प्रविभन्न सम् मिध्यन्गिव भिउवला द्वा भिड मध्या न हवाभागवाधुन्नने कुउति महाद्वा स अचम क्षः प्रविमेयार् बभानमभ अचनं ऋ ।। इड्रक्षयश्चीय हवा कि स्टब्रु वंभवेमभिविषः भूमिष्टः॥ नवभ्वेमे भूवम्पक्ष प्रक्रिमे भूजये भूजय वस्त्रकार्भ ॥ धरा किसनु मिस्नि अ उत्वध्वमः मुहमः भरेवा अभेवित्र्य

र्देश्वर.

अधिक विज्युत्रभी रिम्सू पानभित्रवेम।। द्विभित्रभागीणः॥ मांस् सुभाएं थं निष्णा विभिष्ठः॥ भाष्यज्ञनाकः भूषभभूव चनर्या मान्या है। या मान्या मा निजनण्यू लार्डबमापभागे पमुभरल हिः॥ इंद्रेषभग्भेष्णं प्रतं नः प्रमंः महुर्वध्यक्ष्मान्यम्।। भाषाद्रान् वैमापश्चिम्भिष्मं ठनः। भ्रवमिभ्रष्टभ हायन वः के निक्से भूषेः॥ पर्भष्टभ श्वयचरण्यभ्यमञ्जयः॥ ५५१ यभुष हमवक्निनियभारावार्। मुरुः भ्व मेमवराष्ट्र यथा सभानसः। सकाव रिविष्वित्रिभवति उप्रमाविभिष्ठः॥ क्रिवाध्वमः मुहकः भर्धर्पेर् हिंदे ह निमिर्ध्यार्डेश्चलनभर्ष्य गिर्विन्धद्विष्मुगर्भ्॥विज्ञभभं

030) 4.

मगुविधिमिनमङ्ग्रभवधकुनविल्यान्ध भ। क्राय्निणिव्यविव विश्व वंश्विव सनीयं दिविणभ्वमं ॥ मिर्दुरगणहमस्य भिर् वश्रद्धां मुग्ठप्रचन्भ्। सुबु न्या भप्रभिक्षिक्षः अधिक अस्ति। नगम्भुवग्रलभिष्मु हुभारत ॥ इस्या वश्रष्टित्रु सवम्भवस्य भित्रे सुन्ति । सिक्वें यिवागरीभूवमभर्माभूमः॥विश्विष्ठः मम्लद्भिउवाभरेषु स्किरंभाषभ र्यजलारम्भा अद्भन्निव भिष्य मंकितु ग्रीगुरुयभद्रविष्ट्रिं॥ मञ्जू पूर्वि मजें मभित्रं विक्रिनानिय अभवविक्रिक्त है वकुभिभाउच'भरवञ्च मीउरिम् किच्यम याद्विमभ्या मुद्धानिलार्धितिमभ्रिव भू एकं भ्विध्ने वभित्रं यड्र मुद्र इप उद्दर्भ अधाउँ में से पीर के प्रभाव के प्रभाव के प्रभाव के प्रमा के प्रभाव के

नंदार.

उक्रभागचिषयार्॥ मीगाउस्॥ मुठः भूव मन्द्राहर्षा है। इस स्वार्थित स्वार्य स्वार्थित स्वार्थित स्वार्थित स्वार्थित स्वार्थित स्वार्थित स्वार्य स्वार्य स् इं। उग्राम् अस्म लः ज्ञानिमाण भविनामभोडे ॥ सर्यानका र्ग्याना अधि प्रावसंय विषय द्वारा वास्तर ॥ यिक्यांभिक्षां अति गाउँ गाउँ । अर्थे । वयनभवः। भूष्ट्रभष्टः भाष्ट्रवयम् क्ति हे त त्र में में में भी कर्ति के ता ती में में वन इस्यं किलिविमंड । एपवाया भाउर ह रं अल्ड यं अचे इंचिमेंड ।। प्राप्त इंस अमु निममरग्रान्यण प्रकानम् । यू भ अंग्रें पुरुष्णियुक्त न्या वर्ष द्वार विम्म ॥ वलायुक्तैः मुरुष्यमेर्ग्युवले शिवस्यग्राप्टा यद्यामात्रि गुडिस त्रवस म्भूचमनकद्भाष नन्छन्छ। पनमाभूल विक्रह्मभस्तिम् ।कदः भव

4. 3. मनगरमला महित्र विश्वभग्र वे ॥ अप्रशासिति उपिष्ठ सभाग भूग करारभजलीर शक्त ग्रामयः महत्त्वः इ

र्वेड्ड.

हुमविमञ्ज्ञ अ(॥ भूवमनय त्रिप्ते यः क्रीवर्ष दः क्रिग्रयिध्या । भ्रवेमक्र गभविद्वद्वद्वद्वद्वः वहामगञ्जर्। यश्कील यह स्वरस्थं प्रः पापिता उः पा पगुड्वरश्राड्याक्षुः भियंद्र निभवर्रे अदिवद्वडः मिष्ट निरीकि उम्र रामकग्रह ब्रुः भारता वडी रचार्या प्राः कर्मा उपविधा र्। भ्विष्टगरं पान्यपं क्रोंडिव दें हि बलःभाषरः॥४ अभिन्द्रिधिन प्रविदलं हुबगडग्रा मित्र ज्ञ रहे पार्ची मि अधुमें हेन भी ॥केंग्रील की ध्या जीने क्रिय अनिक । यह राज्य में अनि इस अने । क्रिकें क्रांग्रन॥निज्ञभात्रवर्गभाभाय्वर्गनवव उ(॥ मधकलमंक वर्ष पुरम् भूवम।ग् अंतर्गे॥ इचर पद्मकेशिपुः भूतम् कलम

すっての

इरंडएम्डिनडिन्च्रे अप्रदेश उभापभ्। स्वभट् विस्वा ज्ञान्त्र स्ट्राह्म स्टाइ क्रिश्च । अउद्भार्थ अचामाहिभाषेगे देवि व इभिरुवेह्यः॥ एप्रगंक्र जिल्ले शिष्ट ग्रहाचिम्राभाष्यं वेश्वावाधि अ इतह नम विमर्ग । तह सह प्रहार व भंडें इंविभ्रच्छरग्रः अल अश्वर्ष द्वयं देशकः स्वीतः भूकिः भ्याना उचार्ट्रे चिसञ्च॥ नारमः॥ मन्ने बिराध ग्रेविविप्रश्नलक्षनः। तस्क्रवंभः वि भ्राकुरां मार्डिविमेड(॥ राष्ट्रयार् नि थ उचाय इं इउप्रवेगना विण्य अच्छे वभवासुप्रकालिद्विष्टम्भ्।। तद्यवा अध्ययः ध्वमत्रवमित्रभग्रेताः ज्ञान विण्झ्रमान्युउभ्रचभक्ष एन ।। म्रक्थ

after .

एभन् ब्रुवभद्ध उठिक्ति हैरून भे। गर्दिन अ विकें केंब वि थर भक्तं दि उउ (॥ अस्व से हुग्राम्भवः भूवमन्वम् ठनः।गर्छभ इं इचे युगाभनंगभनं मुठभी। निर्धान उथर्गिलिभुग्सन्थिणनक। व प्रश्वम भारतीय भेरतीय मुद्देश विभिन्नः ॥ गरण्डमाला क्रिप्मित्रवेषपुरे परुना थअबनिशक्ष सुरुष्ट्र जिनिशिक्ष उपभू विसर्मेहनभग्ननित्र ॥ इतिभक्तरुग्द्रग्र क्ष्रिम्भूकालमा प्रचिमार्॥ अम्॥ म बद्भवभागिया विभिन्नः॥ मधभागियांक वयाभिभ्यक्तिवश्विष्ठे मुख्य पर्यापार्थ मिश्रयने इत्यारी मसुद्रेभक्त सभाने परि ग्राक्षणभ्यान्यमः॥ विगिर्देश्वित्र मेषुभथा क्रिष्मपकुषा विकितं यश्चित भारतिन्द्रभाषितिः॥ विभिन्नः॥ वलक्ष

0±3 3.

पदाः मुहग्रः भभभुः भग्व उद्गादि निव त्याम् इडिस्गं धरिह इत इपहाधिन भःगलभन्नयम् ।।विज्ञवस्त्रकिनेष निद्वयग्पेवरमिकवित्तरप्रकिनेभद प्रचिवित्तिउममम्द्रुउग्रेग्न स्थ्युउग्रा म्बर्धरित्रिम् भूमर्गमुभु धने कहाला वाभाष्ट्र। क्रुद्रिने मध्वलंभक्रवार्भ पिभग्भनलं विमार्भ(॥ ५ अड्वेशिक प्रित्यमणे भ्रुष्ठया कि इभरे स्टिन्। डि भ्राण्ड्ममाञ्च हम्भन्भा भरभाषा भनित्र । कीर्ति भूमें हा भक्रेस भानित्य भू मंद्यानुकां मार्ज्या लड्डीकां भिष्ठां वि निवारिष्मेश्वापनभागनि ॥ पञ्ची अञ्चित्रवर्गित्र अचा चक्र गांच क भऊरु। मुरुग्देची किउभे भिउवान रण नेने एन मुझूल ये॥ भाष्ट्रिक्रिणीव मना

**到大了** 

प्रभद्दभाष्ट ग्र्यः भी अन्तां मगुक्ता । लग्न भूत्र के व्यागिन ग्रामक में कथ कित्वण शिवन्ताः। लग्रभरभा ब्राज्य अन्तर । अपन्य विकास विष्यां लग्नथ्वपुराः ममी॥नग्राः॥ अल्डानिनिधवाम् इपेष्ट्रापिन यः। इत्र प्रः कर्माः पं पः स्ट्राधः अन्तिरिक्षः॥ ग्राज्या। कम्रिक्लिक वश्रीष्ठारुष्य मस्करिभमानेष विष्युं यगेषु। भाविष्ट में उतियां भूषि भाभग्रवःकाः भाषां जवज्ञभारम गर गायकः॥ ५३ मनि प्रीन्। उठिशाभेश मिल्पनल हाल नभूरिष्ट्राभमेरिपः॥गूजीन रभिक्र विविद्य व्यक्तिक

0±3 1. A. गित्रगरी प्रविद्वक्रिंग किया । उरण गिमुनीवभद्वेत्रवर्णीवर्डं प्रशिद्धं विद्धः भूगिया भन्भा भयम् रहि शिक्षेत्र मान बिविड'िपभुक्तबंद्रेड्डिग्सम्बाःक्रिन रविहेन्सिक्नेन महस्रा गलपविच्छा के विकास के भद्रिभाश्चरकिकां मणे है। स्वास भगाउन अवाभवे लेक भाना निगमिड भ विमानंभु परिभित्रेष्। भुद्वय रवभिणिष्प्रकदः भ्रिष्ट्रापल उड्डेष भर्म्यान्त्रीकि थाँ द्वारं उष्ट भरउपक्रितिक्त्रम् १०५५॥ भिर्देश्य किनक्रिभिष्निभद्रमिनगण्य श्रु यव उपएडिविएड।इट्टेडिअडिब्वनप निवमनीयः कुन् मुर्गिकागाँ निर्मिष ना सुर्वाः॥ महभूभङ्गर्द्वायन्त्रीप

ह्वर् र्

द्रः ॥ सन्देभष्टगाउपानपानुक च्यु रहे भून गभड़े द्र रेप्टर निर्म लिकः अधिरः। इत् विश्वजिक बुरवियानश्चिर्यम्युवनरः महारहगाः विविद्या अवस्थित विकास अइविणिः मिवर्षिअण्यएन । लिइम अक्विअग्वेलिय म्य यथ्यवमा दिग्रलः पिल्क स्थ उच्च दिक्ती ह्वि कि तिः॥ र्जालक मार्टिड है दिन्द्रभम हिर्दे **विकिथनमञ्जनेपरिभाग्यभगन्ड'॥** लिङ्गणः भी०येः कट्राणनानवक इ भाउर्॥ उडी मुरस्भभभक्ति उभक्त रुख भ्रित्रपुक्रालं॥ ९५॥ यम्भाच हैभमी शहर द्वीर वनी माइ मान इभाग विज्ञालय्य अपि विभएय हो हिर्दिका क्रिस्टिंड किला

4.

SE

लममलञ्च प्रमेला कुला नि। पिलाई मीरिंगभ मुभरात्मकिलकिश्रात्व गृहिल गैर्रेस्पर्भित्र मार्भित्र मार्थित विश्व एपद्गीरवीरः ॥ भेक्तिइं विषश्चिति इनिम्माङ्गावीरेकड्डः मीलड्डार्ड एए मदीपाउचाः के ज्ञान भू खडे। स ग्रुपंभभराष्ट्रनिपिउउः भीके नि अक्रियः के भिटः परिपत्तिन सम्बद्ध नभनापिद्धाः॥ किमिन्नस्थान श्चगापभाषाउ भेगिउः के भिकेंगिई राद्वराचरालियालिया भिजारकिथि नीउ विवच्नभ्। पद्मपद्म। उक्रिया धमभमयं भूषि उद्यान के न गचार् भक्रुमाधीयनगबः भग्य म्॥ यमभुजगर्मिवलन्भ्॥ लक्षुगीरियष्टक्ष्टक्रम् विरुग्लः।

वंमवन्त्रप् इवस्थ्यू

2. 2. उष्टा ॥ समम्प्रियरथ्युभन्न विश् मंभर्गा अवाका का प्रतिकार का स्थान उः।विभन्नभिग भक्त ५ ५ ५ ५ ५ ५ उतिभगराभनायंभनकिएः अडेवि॥ उ िम् भिर्देशियायार् ए मुख्यभाव रिपर्ने भक्त र र हिए हुव कर र गुज्ज है। भभाभुः॥ समग्रात्रत्रस्भिकः॥ श्रीनभक्षार ज्ञिकः। भंच रूरभ्कर लभा विविध् व वार्य अ नहा वर्ष के वगर् प काल्य वे भक्त भ उधःभूमभा अंभ्रतिः १ उपग्र भू उ भक्किय । अद्भम्मे भगगा । म गिभभितर्भागम्। स्वयंभभित्। यदभग्धना अमिर नाभानि ७ गाम रम् ०० महरारास् ०० लयम् ०३ मक्षाप्र। पंसवनं। सीभन्कद्र। ए

नेश्वः प् गेश्वः प्

उक्र । धाषुक्ये अरु। अरी आने। नाभ कालक्ष्मिन्यां अद्ग्रम्भमम् नभी क्र नुसारमा रामप्रो क्रमा कुष्ठिः। कुथ्यवसन्भी। भन्नभूगमनभी क्रविणः। यसक्त्र। भीभंधाः। त वक्द्र। ०३।भाषमुद्विप्रकालं। ०३। भद्धः इसर्।०४। द्युवत्रभू।००। भ भत्तरेत्। का का क्रिक्त स्था विवासप्राय-। द्विरगमप्रावप्रव मः।९०। गष्टि विस्वर्। १९। याद्रे र काला १९ । वा शुरा १ मा भूव मर्। १५ द्रवश्रिष्ट्राथ्रा थङ्का खडन श्रापन भर्गप पु अर्बिणिः।३०। ज्ञल्विः। ९७॥ ग्रंविप्रक्ति गविष्टेत्र विकथा हम्भू रुर। स्भिन् इंग्रंड मुक्रालि ॥ उम्ब्रज्जुग्र्मुक्भ ॥



142/2

Mohd. Ashraf Peerzada Collection, Srinagar

**建筑器和原料的企业和企业** 

月かり

मंवय •

ता थय दिरोशकति इथ विशेष गरीसा ५) राजरा ब

: ४७ त्यः दः

भवर्.

刊可其

भवपू

मा भ

मेला अयग्द्रसङ्गा शुह भोपतीरविचे च कि में शि तणाश्रमवश्रक्तापलेश्रक उतिश्रीमहेवज्ञग्वालिहार्य । त्रिस्रजगणपतिविराचितेकृ गणपतिस्वतस्यादेशकर्या प्रपतिचित्रकरणा मितिष्चिहिती पाचततीयातरनतर चत मीष्ट्रीसममी वाष्ट्रमीततः १ तब माचकारशाच्द्रारशाततः णरशीततो जे याततः माजाचत २ पीलिमा गुक्त प लेमास्रता तीचीपा हरेनारगधामानाः इ रवा वायवाविश्वहरिः सर्शिवेटवः अ

अविद

सातियशियाः पितरः संप्रक ताः थ नेदाभराज्यारका येल लाः ष्रायाय एक हो हो हो है । त्यां का लाहित UMIL

मुग्

रूणवयवयादिवयस्या जन कतयतहारकायान्ट गनकांचत ए जतवथाद यात्रातात्र भिवेच र शाहिक क्रिएणाम् लिलास्य ति ११ अथसा मान्यतः पुत्राष्ट्रभतिष्यः हिता वमचिवतःतीयासप्तमात्या ग्रमकादशाक्षामत्री प्रस्त्र ति शे पोलिमाति खया राताः कार्यभावता भ्रता यथात्राक्तियथान्य चत्रदेशाशकापति । प्राप्तायभवना या प्रयतितः १५ पत यः चत्रणी ध रसर् वसं प कार

仍陷工

ज्ञादयो २२ शक्त १५ संभिताः तिथ्यः पद्धरप्रदेशस्य उपाः सर्वेष्ठनमेस १५ एतास्वस्त यं गतिरिक्षारसिका ६ ए भारपर अहेगाः स्परादिमा नाइनाः अहा वास्त्रप्राभनाः १६ अण्याकातिण्याः मेवा रीनाचत्रणाहिचतसः प्रातिप मालाः तिश्यमा इति सपपच मीयविकातिताः ए सिहवन्या त्लालाना व द्यायाप्रतिपन्त वाः तिथयःक्रमात् दशम्य तन्नत्वस्थानयाचेकादशीम खाः १६ चतुस्रायनुग्दीताम ते वाद्यामाण्यमा पापयुक्ता

MINISTER AND SECTION

स्पाप्रायीतिथिःसान्ड गावस यथप्रतेकतिथिकत्येववाहात् वयात्राद्यतिश्वात्तात्त्रके के योज्ञोत्यतिक्रकत्यक्रिमेते योज्ञोत्यदिक्रक्षत्यक्रमेते प्रतिथो २ राज्यकाथ्येववाहा

कैमगलवास्त्रभवण बनवर्थः

मतिष्ठावदितीयागितियोस्त्तर्रा।

PORT SINGER OF SINGE

ATTENDED TO THE PROPERTY OF THE PERSON OF T

The state of the s

रिकिंद्रः

A CONTRACTOR

म्ग

Blak.

WZ

मु

**ः नरमा**काति का वयादश्यार मारेट फ भेगारितेकल THE HOLE

विश्विय्

चितिया ग्रेपिटियामीत्राका ने गजेकाप

刊·

विराधिकावियहा हरस्वार IT HER MUUNTA THE STATE OF शायहरसात सकः जन विकारिताः । प्राचाड एउट्टान्ट्राल सज्जा दानाक मादत स्वासनः या । २ एत्यासाव्यः गःश्रमस्ताः एयाताभाषात स्थ 尼亞河西亚洲 मः लग्नाग्राग्रागुरुः

द्यप्रम्

可可

क्षान .

刊小

रवीप्रधानियायाततस्य स्वतिया पहात् रह मीत्रति। धातत्वा प्रध्वासित इत्यात्रस्थत्वा वितव उधानदाचन २४ ॥ इतिसङ्ग गापतावारमकरणातृताय इ नतत्रप्रकरणम् अधिनाभस्णा वहातिकारोहिसीस्थाः ब्राह्मधुन वसम्बाताश्चासचात्रया १ इ ए। लातिकातसारत्र एकालाला े इसचित्रतियासातीविणाहा य अनुगथाततारा छाततास् गयत स्वामा जात्र गामा जात जित्यवणस्ततः इ यतिष्ठाश खएवाणद्रपदाततः इत्रा

नक्यू.

Mohd. Ashraf Peerzada Collection, Srirfagar

म्ग

SPECIFICATION OF THE PERSON OF वं रवतीश्रवलश्रव रमनगथात्य च सर्वातीश्रभ स्तरप्रा DE SUPERIOR SE हेर्ने साधारिय गजका या विवासी ग

नकार

चिनेचरेत साहसदारुगाशः टनेतथा २१ प्रो

野り

हिनेयात्राभ्यावास्त्रव्यविद्यां वाहनेक्षिविद्याग्रं प्रतिक्षेत्रिविद्याग्रं प्रतिक्षेत्रेयाधिकात्सवः विवाहव शांतिकेयाधिकात्सवः विवाहव निवान्यत्रामस्त्रपुद्यभच्चन्त्र मवायाधिन्यकार्यत्रयासस्या दिश्षिणम्

उक्षेत्र.

एन विया विवादं मजदा हम् विभा द्रभाभी अप वर्त्त्रमानिलंकर हुउलक्रम अचल्लिलक्यंध ंगिर्करालिशणवंड( ३० विवास नुउन्न मुक्ति दिहिहह उग्रह न्निनी हे श्रम्भाद गर्भ स्वामन ९१ यादाविद्यविवादाकिविद्यभंत्र उक्षेचणभा गिद्रा भेर्या भूग विष एड्युकिपिलभ् १३ मानिकंपे धिकं मिलं व अञ्च भ श्रुगिक भ ब्रु उठ है शिक्ट से क्रिक्स के क्रिक्स म ९७ भाभक्षिणनमभन्न भुग्निम्लभ नीस्रेपेमभक्तभंग भुक्षाविष्याद्य ३ वास्मञ्

भ ग म म दलं इधं मिलं सिर्भुद्विक भी व षक देविमाण ये जिहे से पण्येन नभी ३० पालिग्दं तुरं या दें गरु मुभाष्ट्रधलक्ष मां भिनं महं जुट ध्ही १६ भिक्तमीय की चग्र हम णंदर र र प्रश्ने स्वर्धि मिल्पेपविगिमिई श्रिष्ट श्रास्त्राभ भीरिङ ३३ अलह्डवनाराभाःभ क्रुभःभित्विग्दाः वापीक्रिपा मक्झविण्यः तथ्यिभिम अक वाधीक्रियांक्रक्षंविग्रवन्त मालभ क्रिकेटर्भमुरं अच भा रहिस्सार्ग्य ३५ अपनमन्द्रन ब'अनिवेम अभूवेमनभी वीएऊ

नक्द.

पंविक्षम् अशिष्ट मार्ड रे द्वा अनगरंग पि विकंशिले क्यम भारतिपन्यमिर्मान केंस्वलयां जा ग्रेन्नग्रंथय नव्यगृह्यारुष्ट्वीश्वाक्रिक्राल गर्द्भ विक्रभ भुगित्र कि उर्डभ ७३ गरुस्य धरोकारो ध्यजिक्लभूर्भ व अभूत्रभूष में के इंडिडिड्सार १३ त चंकपूर्यक्रिलं भन्भं क्रुक्न रुधिभ विद्वांभिक्षेषुण्या नयद्गिकंगुरुभ रः गेर्द वलयं इभविव देश्यव नुगर

भगभ

एल अनिकं कंद्र वह शिक्तिभ भ्यार म० विवास इउव मुझे वरभापनगपनभ वाभुक्या हथ क्षाप्रारम्थ्य हवर् स्थ अब **४५५मंभ भगेविङ्गगृ**दीन मर्गगतलिएम भूष्रीभूष्ठित कट्रालिभक्त में के कर ग्रह्म इड उद्गाभग्लीःभष्ट्यवाभिद्या धरे मधुम्यू पिभिन्न विभवकद् लिभ्रम् के मान्य के कि विमिष्टेल उड्डिंग प्रविभिर्गित एउँ र निली में उरा र्यभी उर्याभ गाजग्भाहिषकृष्ट अरिद्धा म्



भ्या ब्रिज्न र ए गरेवडी भ्यन में इक भी उड्गीउंगिउंजिट'कुभागाञ्चभ भाभ हे पद्य प्रित्र हिण्डिय लभिक्यिए हुउभी उउउपिधा ह्वनंगभनेमिलकांडिः मण्डाप् ब्धलभन्नभगिक्कंमनलभष्ट्रा उड्डेंग्नेविंग्ने वेश्व के उपि भाषन भ इ म्वल्किइवंश्वरीभनच भगलंग्यभं उभिद्वोरिणगरग भक्रहज्ञागभाष्ट्रकथ मण हर लीमभभा अचा क्रिभग्भक हुउ भ विधमभू ग्रिभाउ कि उउँ हिंद विरामनभी भा विमाणकार्व भुक्ति भिर्मुभोणाने अध्वाभ न

भः

लेशन किक्ट्रमिन् उड्रमिन् ि ४० मध्य छन्। उद्यापन्य र्भिउइडिंग अल्य स्थाभाभाभ चाविमाण्डानी दुवभी सण्ध मणार देशीयक इंडिडागा भड़ वाधीकुभड़ मंकि विषयुभुद् विणीयंड निणिक्यें भू डी ग्रू अव मंगिलिंडडघ' ५७ भनचभ्रतर ए एएप्राप्त धर्यभगः विमिन्न वंडिट्यक्रडिभ उप दिया भर गए द्वायय उंग्लेस क्या माभार क्मे मिविक'फलयर्' केर्हेड दक्षणिक ४५ ५३ग हिलीमन भद्यम्बल्डबभ् प्रश्चिष

नवार.

ाला हे के स्थार प्रकार के मान रथाहिम्कुष्ठाभाउद्वयपुचव इ हल भा समाधिष्टा किरोगा क भक्त गभगभाष्ठ्रगणिष्ठवर्षि माःमाः नर्षितालकुत्रस्वरव स्विमक्रुवः भड च्यान्विरभरेभा हिमउन इहाल रहाः अतिनीप्रणाप ने (उरामक्षयम् स्भा ५७ मध नश्राण अक्रमाल अविद्यमार कराहरलीहराभित्रहः विदेक्ष इगकार्रिलीमक्एकिः जे भगभाषाक्ष अखार् भिल्म

भुः भुः

विक भनवभग्रदकारी भूष्रवालभ भत्रिः २० मह्रद्धि उद्यास्त्रिया भ भारतिभग्भारतः अद्धिम्बनः कग उमेर्वे उरद्याल स्वित अन्त विद्यश्चिर्भिक्भितिष्ठ भवाल भम्।मीभाडिचिमापंडिंग्णक्रिः ०३ पर्णक्राचगराष्ट्रजा "रलभिक्षः भिष्यमुनिर्धलभव भारत । उन्तिवर् वर उउरागरा मन्द्रिक लेमा कि शिक्ष उभी स वन्श्रीयक्रियम्बर्धिः े भ मंडे हें वर्ग का या गरे अचे ह म् भारत् । उरम्मयन क्रम्भक्रलाक

नक्ष्यं.

	A CONTRACTOR OF THE PARTY OF TH	1	CC-O. In Pub	lic Domain. Digitized by eGangotri Trust
	0 2	H	31.84 2	
	( Dec	13	€7.H	उरवरी ४० मधनकार्
	THE PERSON NAMED IN	5	3 ka. kg	Section 100 to 1
	Sa	on	इंटिंग	<b>उच्चनम्</b> ड्स्तिनं इड्डिं
	3 R	ଭ	A EV	नकार्मा : अचाथार्ट
	ঠা	00	w.cu D	
	IEV	67	मु स स	चुयंथलानगणम् ।
	OF	H	FE	गःकाः हिन्नुभनवथ
	D	H	रिक करें	- Think Richard
	50	0	自至·2	व्यथं उपा महिलगाः भ
	包	0	2 Kg	म रा इसिलन्डिक
1	re	5	18 1	
	भृदि	(C)	a bu	ल्लियं वेडीम्बल इये भ
	ग्रि	an	DD.H	
	7	7	मि हि	भष्टम्रिइनवैंडनिभएम
	1/2	7	B . H	A- 222 - A
	5	3	म भ	मिल्हान्द्रिक वेड मिन्न
	.30	H	いるない。	A RELEASE
	M	0	23.W	म अर उर र
	8	0	PR·W	
	See	7	THE BR	000 9 9 39
	16	P	12 to 10	H 21 1121 46
	10	0	四年,6	THE HOLE
	17	9	नाय जाम	ले य
	F.m	286	K. 014 is	
	DESIGNATION	The state of the s	Mohd As	chraf Peerzada Collection Sringgar

Mohd. Ashraf Peerzada Collection, Srinagar

4.113

डेउयं भागी विमाणक कि इच अच DIE प्रमुख्य । **व्यथनभग्रा**थ म भए गउँ ने H H

Ashraf Peerzada Collection, Srinagar

नक्यू:

विजीनंबानापर्यनंबहारिण्डभ 33 लहा: मिर्गडनारु में भारत हो थ लानिम अधवा अश्रुष्ठम्बर्छ। ष्ट्रा ०५ दिनंभष्ट वर्षे भूकिः उक्र यह उष्ण हैक विमिष्ठ भेग्र १९ ह ल्ज १३ लहाः भट्टिक हरा मिधान्दिः % एवत भप्राप्त्रत दीनंग्रभश्चयवार्भागाः १म भ एड पविमर्थेय छुवेग्राविमन ल नवभक्तक एनिम्र हे उग्भ क्षित्र वेष्ट्रणे हुए: याधिय अस्त्र ने भेड़ प्र के हमके सुर्ग प्र भेड़

भंग 9

दर्श हर्वेर् प्रगुल बाद्य इल्ड ले बुध नंगाउभ ११ नहासार् १० भन्निक भक्ष महक्षक्रनइमभएककुभ निमनभ गलयर्फिली अवसभ वर्भनः भनः गड सहद्भन रः श्रष्टइडेभक्तकन मुवल भष्टनेइ। नवलकः भलेमनभी १७ महिभ्रष्टंगंडवसुभन्न ने इंडि मित्राल पश्चिमभएनेइ श्रम्म मीयुं भूने पन उ॰ सबिद्धार इभ्रज्ञः मिर्वाकिभिद्धित्र वश्रं विश्व वेरभः विविधिर्म् मद्यी गर्डी ही मेंद्रभारगः भक्त

नकार.

डुमाडमध्तादिय पाड्र समझ्भाजी भक्त उपनिम्भुगण्य स्वान्य द्येः उ मथ्र इन्निवित्रक्षेत्र अभन नि किनभानश्चित्र द्वीमें गाउँ रिभफ्त र कः ३३ नवार्यषाचिभिद्यदंत्रर इडिकिडभ( किनभटेडिलिइस्किम भज्ञ व्यवस्थि अवंजद् क्ष ठंक र या क्षिक्रभनंविन अस् अस्र स्थार दृष्ट्रभक्तरः सद्भाष्ट्रनभन्नरम् किविधिगक्सी उप भिद्यां जिल्ल गिक्रम्भर्डेडवाहिक्जिर् डे थिइ ब्राजिष्ट्रगीचार्रग्राःभारिग्राधिन न र्भरिमन्यिक्ष एक मुक्त अवः अव

				-						sas.	(No. 1)			
4.	0	9	3	州	4	6	5	31	9		000	909	rol	03
	वड दि	* S.	(H	थडाः	401	मञ्ज	Selection of the select	बैद्ध	विधि				न बर	TO ST
नहाउ	M 3	न्म	भ	भ	Ù	A K	38	T	यार	(F)		河河	-	Se Se
नकार्ष	व म	श्रम् भागु	380	में	T			THE PERSON NAMED IN	D.F.	The state of the s	मः ।	वे अ	SE EST	विष्य
नक्षश्	(H) 3	76	3	1	A	5	त्	F	96	8	B	a C	in	12
ग्रहाभा	0		.9	12	33		T T	र्	4	3	The same	म	वार	70
,	मद	Land In	व्ह	2	भिर्ह मधि		लेड		- ·	विश्व ज		ES ES	93	
	36		KLE		भ	7	कि	3	and a	100 A	197 W		नका	-
	0.1	=	99	1	40		3	1000	3	E	1		ajre	r

घीग्य

- 100

भिश्चिट्रगीयाँचरीयादियाः मिवः ९ भिट्टिः भएः गुरु ग्रेतिक में मु वविचाडिः चैगानं ह्रियमें अनाभ श्रम्भाकतभा अ यहविष्ठ्यानं इहंमः वैष्ठिष्ट्रशिभागांष्ट्रभफ्ले बल्य हैं बद्दिक्ष मुवपरि क्रम्यभिम् मधीयांच्या मुलद्धं भाउं भिराकं नव गफ्रि गक्षः भन्न देवभन्ने पक्रभ्र प विष्यानं मध्यानं मध्य एउलंक उभी एकविन मुख्यानं धारमार्छ रणिति व डिम्सिन्व छ खेग्र काल अयकालप्रकाल कालाने

भग्

मगएनिवववान्नवक्र नवभ उति लं गाव'लिएविच्चिरङनिभन्न ० ग रंगित विद्युष्टिनि भाः मुक्कांकि उः इ भार ववामकाल अच्छिंब निकंशा म्ल ९ परित्रध्नमाउद्योधिनयम जितिहवैंड मच्चिम एक मनगा अचाथ रविरुगर्यः अ अज्ञाभूतिभद्रः अच नार्डि सुध्रभेष्ठक्ष एउधंक्राल ने कि माउ के जिरमे इक्श म त्रव काल्यां भाभितः उद्देव क्रांउष्टांभ इम्रद्भाष्ट्रग्भात्रकः कल्कागाभ मडःकरण्यमधी सुरः वचेपि विक क्रां लिविभ्क्रां लिवालव केलव

कार्य

भीशहरू देवेडिल महामान्य व रडि संज्ञानिकंविस्न मुहंडर्कि द्भाग मज्जनविध्यं भंजभणनं पिष्ट्र क्यार्डि गर्द्धा विश्वः कर्धा रहकंद या ध्राप्त उ भिक्या मन्नेन पाकिश भ्रभग्रलमार्डि ७ यह ठन्यं विमधः लसराभे देव व्हिट परिशाधिय कर यप्रशंभी लिभायां महम् अचमल भाज ० र्जियायाम् मश्रामन्त्री क्षांक्ल भुभूमम्बर्धकर अच्छल्पा ०० महर्ष्यभद विश्याउँ लग पद्भान्भाष्यक क्द्रपहरयस्य पद्भन्तक्र ध विधिमञ्जाष्यित्वभर् ०९ करन एडिल्क्ष्यमंब्रह्महिक्तिः ग्रा

भ ग

यार्गहलेविच्चित्रभागभाद्व ॥ ०३ वर्दं वष्ट्वेविच्च द्रापभाद्यभिष्ट्या ॥ यार्ग्याप्त्रप्राप्य मस्त्रुंभिनिशिष्ट्य विपित्रम्थिभिजेशिष्टे ०म भूभषापि प्राप्त्रभिभिजेशिष्टे ०म भूभषापि प्राप्ति प्रचारिक अचारिक अस्तर्भि विच्च भाषेविक्षनीयासुरुष स्रुग्रेक ॥ ०भ

स्थान्त्रकर ३ १ ००० म्हाभू हि ३ ०००५ प्राच्छा ३ ३ ० ० विषिड: भूष ५ ९ १ म ० ∓० ३ म्हाभू स्मि:०० ५ मु ३ ने

भा	व	हे ह	(t.	नही	दिक	Ağ	यष्ट्रियारी:
का	ट	3: 3		Y	<b>事</b> 院	0.	desire assess assess

\$1.2.

IN THE

अक्ष अधिश्वेष्टिक का सम्राः भक्तम श्विष्ठा विश्विष्ठ स्वार्थ विश्व कराभावा में हराभे ७३ मध्य प्राप्त भ ग्रज्ञाभगगृह्यभ्द्रक'दाद्विनिनड' क्रेट भागमिक श्राविष्टिल स्निनीरिपर्य ०७ भिष्ठग्रीवामिबाइ रहें भन्नपुर्द में यम नभाकालपुर्चिमनियुक्तमिवाह या १० भद्रगृतिकगला भूषप्रमं भूर यानक कर्भी इतभाषा उविद्याल भभाज्ञला ३० महरुम्याम्भापवामः विष: अचा चर्गरे किने हरू भग उर हम् प्रभिन उर्श्वास्त्र वस्ति भारति १९ मधियानिग गर्उ उर्भहें क्यातिन कर्षान्य प्रसम्बद्धान १३ अभीन उधक के भिन्न मह इविशिज इसक्या भारति है से निया निया कि

भग

अम विषरि इिषण इग्छ विश्व विश्व विश्व विश्व भा उधेवम्बाउरमभ्रम् इत्रः बुहर् ९५ मघरप्विधयकश्चित्र इविस्थः उत्तरिक विक्र क्ष्या क्रिया क्रिय क्रिया क्रिय क् भाषिताभिताशैक श्रिकेष्ठ प्रमाण्यः ९० भाष्ट्रष्टं एभिक्ट्यमुहाः भन्न भ वम प्राम्भ्यविष्ठना अर्गन्य क्षा ११ मन्भागम्बेहर्मभूमा हर्महर्म डिम्भिम्बद्धकालभूकालभ महाय म्यानम्कालं भगम्ह इयंहरी म धारीनाभनक्भार मिन्नुक म्वरीयाव म्मिडगिनवाद्यकः ० मधनद्यार्णाप्र हकंगमिहणः यमिनाहरू। क्रमार्थिकार् भमःमिर्देशिकातार विडयेरेनिलाउषा ३ दभ्रहण्या अचा च उम्बु चडम म्हल भग्र इंग्यन चर्चन

D-20-21

गमिभिष्नगिष्ठणः ३ उद्गिर्धाना भूष्टि न्निधक उपक्रिक भण्य च उरे दिः भि ज्युचा गाउवभी म ज्युमिन के अचा चेक ज्ञाचित्र उर्ग कल्प भ्रांति हमित्र माप्य म उल्लंडडब्रेजिल ५ उम्ब्रेज्य उग्ण्या हबाबिक कर अन्य देश मान्य भा गद्धिःकविष्ठणनः व उप्रगद्धित्वंकलं एनियुप्रधरमा भक्राएं पिश्रुप फलमनडडाउळा १ अचापाकरवक्रभूस इ बुबुम्भा उठंड स्वरीयेव भीनामिः धुकी दिंड : उ माधिक प्रमानिभाग नका बुल्केकालवला अप्तिनी उपर्वेश ललेलकाष्ट्रिय किन्धिमध्यम विद्यविवस्य अके कि भारती इनिरामभूष्ठभ ० सन्निम् एति ह र्नेभीभभभभभभभाक्त्यभ भेटिएइ ५५

**村・** 可・ の干 दारभदररियथिकार ०० भेजिः भ्रवाले ५४:पॅपेरिडिकिडिक नररेडेडछ'अडीडि ७उँउविमःपिक ०९ यञ्चरणनिन्ने हें भ्र नेथियगुरुः उद्याच्येकिष्ठभले अच्छा रही उण्डातः ०३ हहण्या उगथा दिए स्वित उचिरिएड विपयापाँपेम्य स्थानिय गाँउ निधिक' ०० गेभभिभुम् उंग अहं गेमंड मिश्र 'उर' मध्यान्य स्था सम्मान्य री ०५ महमसुस् मुस्कलभी भूकास्म मिभगहमद्वामि अउँदलभ महिलाका उभिद्विगीयनेभाष ठवेडर के हुडीयेथनन कः श्राम्यान्य । याज्यस्य स्थान धर्में हुंगानेभेड़ान् का भन्नभिद्धप्रमान मध्मेगालप्रवाभी नवभग्नेकव्हिवंग्रमभक द्भारतः ०उ एक एमजलार मुद्दारम्बि विएथरः •७ मवन्त्रभज्ञिवमे धः वि

A-21-9-7

डीयः थाइभन्न द्वानम् भीष्ट्वस्वः चल पन्न विमर्घण उत्रभ्द उप रचः ३० मन् शेव वं र एक्तिनाउ उपपर्ण नडा भाउका ने वर्लिपेउञ्चल इनम्बिधः ३० मृताप किए उरगयं वलंग्रहभमं घडः कीलवा भूषिउक उगास अ द्रितीय गर्भ १९ मध वश्वभक्षमस्वलं सरंपक्षभुम्यस भन्नामन स्थानक भी अक्रा अक्रम मन् नुरुः भक्कितिभद्धार १३ मधराग्वल गासक दिन हथा व उपग्रह्म या व हुउ गा मभग्डिपद्रभं भपाभिद्यवणः म्भ डर १म भिश्रांत्रभित्रभञ्जमनाभाउत्वर् लामुडाः मिम्राडाभपवाधिर्ध मुरमभाः १५ एक् एस एस अरुव नेश्वाध्याः भवीति । भवाव प्रकृष टम्बुरंगलंश्ट्रमः राग्यल्थुल्य

भग्

इवरेपफ़िर्भिक्षः ३० किशीव क्रवरह म तरकि भट्डीयकान रडीय एचड भचाका देश्वष्टकेश्टरः ११ महाइडिंग भयःने रहरीयरगयं **भक्तुश्रं**लबलंडच 93 द भाभनुउचेडांभाम्ह सुकंदिलन्भ अवग मुन्द्रा भ्वाभेषविनमञ्ज्ञभवल्याया थक ९७ रि: श्रीनंडवं भ्रभुः कु मण्वरः गिंडण किथ्यश्रिगवश्र द्वाप्त में इंवि प्रेंभ्राउः ३ उप्भानंभ्राकेक्ष्रमन मीभितं भरा भी ३० में भारितः भूवाभाष्ट्री नभाउद्यक्तभूमः ३३ मवेरभं मूल्ल प्रदर्भ मधामीभूवाभाष्ट्रामाया व पहिविधः भराष्ट्रभिष्नियेवं इभागुर मामिष ३३ मम्बर्दिमम्ग्रावन भवर्मस्वलं उन्नम्बर्मवः अदेन

नर न्

थ लाह चान भी भारति प्राप्त पाउ विकास भी न चिन्नी ३८ वेण्ड्यं हमन : पुत्रमी क्षंप यनेष्ठाः यस्भःभचकदप्रस्पराग्रहः नुषेः अप यष्यम् वली नामविष्यः पु हज्ज मुस्या भार प्रभाग ग्रामः भाष भष्टगाउँ वीलिनीयगः मञ्चलकः उ० अपु हिभिम्ब इस्रियनण लेकि इयु इः भर्ते स्था उर्जनश्चाणिभित्रं मकेषावा आ नषाव व्यक्ति विचारका मनु उपा भीने भने र उन्हलस्रिधिमध्याराउभकाष्ट्रन भगानि क्नक्येग्करलण्डास्वम अ महाराध्य उम्मु उग्यां में व्यवस्था न दे दे भरपे पर्द कर्मच्यक्रभारे ३७ और्मभक्त्वस उग्राथ्कालं सम्मुरम्हरूकालं उर् विविग्ने मुख्याः नर्म् हरीचे वर्म भ इतिज्ञजल्या गुरिपलंगिलंक्ट्रेसि

भंगं

## मुर्येगम्बद्धः ॰ नम्बद्धाः वानम् एवा विज्ञषकिकः अल्ड अस्किवनिष्विभिष्ठः मिभामुकः ॥ नष्टनकार्वनिभ्वाम्बद्धाः

अब नहस	व्यापः	8	Ö	8	1	राग	9	R	वागः:
00000101 00000001 00000001	डिखवः भिन्न्यग	80		300	をなっか?	たな40%	10 pa 20 20 20 20 20 20 20 20 20 20 20 20 20	90	अस्य व्याप

मभाउभित्र्वेगः॥ महैप्प्रेभ्रामुद्रग्रिष्ष मिनीज्ञ मनगणन्यमुद्रावरीर दिलीम न ३ मण्डः भित्रबंगः शुक्र चक'र'ज भि क्रियः यषाभद्रभेपनि स्थभञ्जभूषा त्र्य भ म नवज्ञक्षकभावगश्चाधिहरूव चेंग मु भड़िभ मु ए मिठकर इभ एकः ५ ५इ ५ उर ५ इंग ५व मे । जर दिना । हरणम्डस्य उन प्रयान मनिरिक्त नीभ व यघर धराष्ट्रकराविद्याः अद्रुप्तमभूष

न्हन.य

हिट्बिंमेड्बिंग्ने नवभगम्न नका इंग्वियगः मुकः भूकः १ सन्क मिभ्रान् वं भक्व भद्राह्म भवनद्रक्रियाः प्रस्कल कर्ष व अश्र के विश्वरूपितः स्थानिक स्यानिक स्थानिक स्यानिक स्थानिक स्थानिक स्थानिक स्थानिक स्थानिक स्थानिक स्थानिक स्य च्चिम्बर्वे बर्भा । उ सुर्भि इंस्मेल्व भानभं : धम्मलश्रुके उद्गुउभट्टकं पर एः भिनिचेवचर्थ ७ भुनंगगराष्ट्रम भण्डीग्वभञ्चाः श्रिगः भ्वन्भानञ्चनभ उन्नदलमभी ०० रावपित्रिरीएकाई हिराष्ट्रक्रभंडवेः ठवीत्रभमेवगंत्रप्र विमित्रभक्षकः ०० सगम्बर्धमञ्ज धाउ : अरावाभा पश्चापंतरणयां यनवी रउसेवम ०९ नसर्उधियाम। प्रश्चेवर नभ इभाम्राम्बरनिक्राण्डेरविदि यगम्बाउद्दरभ्यहकाण्यभिष्ठ्यः म वनदगानारहाभारिकः संजाभन्नावर かかの

ले भारी पाइ त्रभक्तिभभी के ले भे भल ये द द्रमाउर्भम् लभ्रयः ०० एक प्रभूगद्रभ्य मरिरे भू भए हिला ई एक स्वाप्त के एक के लर्डाराष्ट्राष्ट्राभानं वा अधवाउनका इन्हें भित्रियगः अलभक्षम्बन्नस्हिभय३३६ न्भार क्रिक र एक रेडिय मन वर्ष ०३ अच' उद्देशने शाहिः भिद्विया भर्त्र ह उ: पषिधिवरिक् पश्चिमः कुममक विणिधविषिभभभुः वशीवण कमवुद्भने पर्गरविक्रामनः **७** इसम्बन्धि नर् हैमेभफु इंग्या गुरेधक हो भी पुर मग्राप्तवभीमने ९ माउनकविणिषद्यी त्रिगयां इप्रभागारे नव गुर्हे विमाए म भप्रभीत्रणभग्रयः ३० मनिधन्नहुणभ अधुभीराविच्छन्व ज्ञामनियान्यः त्कमेर्यामग्वी ३३ भूतिभक्तग्वाभु

Mohd. Ashraf Peerzada Collection, Srinagar

2. 149	0			-0, 111	a ubii	4	iairi. Dig	Jilizeu by	Coangoin	iiust
		3	E)	B	9	ली	3	P	वाराः	
	0	3	36	107	5	7	28L	स्	खनकः	भवरुष
	9	5	99	R	思	3	न्त्रहि	36,	हामान्य	गांविड:
az:	9	ह	वेंद्र	30	4	15	मू	32	الله	
do	E	3	3	38	a	त्रव	Ū	3	अस्त पष्टः	क्याप्ती
	4	26	श्र	5	9	282	P	4	क्रिकः	A
2	3	3	भ	10	F	न	त्रह	8	TA:	इ.उवा
	1	थे	अल	3	3	8	38	ন	श्रुता:	
	3	83,	35	वि	30	ব	1	3	श्वर	33.5%
	9	स्	S	न्म	रम	7	7	30	बर्भ	हरा स
	00	10	वि	THE STATE OF	ম	36	8	3	असेश्व	G. 3
	00	76	SP.	LC LC	别	3	क	À	क्रम	है: भर
		25	10	BE	è	3	F	183	43	1
4	09	1942	6		100	13	38	श्च	भानभ	33 78
	03	5	79	34°	33.3	च	3	भ	कामाः	्रिधिन
7	OF	900	EV 3	N H	36	1	9	3K	न्नलापट	13101
के कर इस्स्रह	04	E	31/3		1	X	. 13	130	प्रस्त	45°E 75°E
25.3	00	वि	34	H	4	34	N. State Control of the Control of t	5	₩ Z :	
			7	76	8	4	H	ग्रि	काड	3,35
2000	27 Sept. (Sept.	E	A STATE OF THE PARTY OF THE PAR	100	ह	海	76	श	(WE	
	9	7	मु	335	3	श	30		THE RESERVE THE PERSON NAMED IN	THE REAL PROPERTY.
मु	9.	AK	U	7	Silbert III	Pa	540	-		THE SECTION .
00	90	34	H	4	od	1-0-	-	1	700	
FAL	33	य	30		3	भ			-	CONTROL OF THE PARTY OF THE PAR
या	93	H	38	न	¥	E	श	भ	ार्ग	POLY SERVICE S
मः	32	Ď	7	7	83	범	. वि	, अम	न भाउग	। गिरदा
उदा	37	H	9	26	T	त्रध	. अ	138	ा जाय	
मंड	7 6	7	8	3	W	and otherwise	-	4	100	HILL
1	99	3	5	Y	7	and the last of th		Ministral America Arabota		םיעים
1	33	7	5	(3	31	6 0	38	ri	<b>अव</b> र	7:
die	33				1	1	1	1		

भ• स•

	9	A VIA	4	73	-0.00	of special		1000				101		7		18 May 18
71	U	5	0	M	H	A	वा	r:	34	D	6	1	140	8	13	GIT
09	0	7	3	3	0.	00	(sfa	<b>क्राप्त</b>	4	a	9	7	न	1	5	84
09	00	X.	0	3	3	9	GA	ध्ये	9	34	Ŧ	त्र	30	A	5	45 E
Ŧ	5	2	9	3.	9	1	विव	विध	8	A	Ä	Ö	36	Ē	3	क्रमुय
03	09	0.	9	3	7	0	Già	天春中							1	
7	•	•	•	•	•	•	3िष	भवर	10	23		83	8			18

मु-मु-प्

Mohd. Ashraf Peerzada Collection, Srinagar

हिस्युक्त वष्ट्रहर्द्धिविष्गक्त अ नका इति विगमीनंग परनं दिवि छे इस्ति १० नव थान्त्र मा उत्रहरके च प्यारिक भिरभी रेव किउँउउँग्रालाभामा विषिधित हर्णे इर बम्ब्रयाः स्ट्राप्ट्रमान्द्रयः भद्गे ग्वरिक येथवा महिषाभभवाग्रामानामा वभर ३३ मजुर्याद्वभीषवः अरुभाष्ट्रप विरोध क्रमभीक्रमीभन्गा गण्डे धारिक त्रुग्भ ३∓ कडिभिन्छ एवँद्वीन मध्येग्र रेड क' ग्रेडिक'ए' परः भर्जे नयर्थक पर्ण भिउभ ३५ महाचयाभः मचयाभः प विड्डिकेमभुद्विपपुभः मधुद्रिभ्रम् ाष्ट्रश्चः इ. भंडे शविवाभगंडर ३० महजलि कक्षकलवेलायभभक्षकाएरप्टभ्रज्ञाः भनकर्मनगाउव यन्द्रभिष्ठः काणः ज लिक अरविवाग इभाउः क क्षक चणा र अर ग्रां अकलवलाएं छेत्र उग्भणद्वरः ट

भंग ७

범	20	5	ब	To	η	3	स	वागः	
F	7	9	4	3	5	3	7	भागवभ	ग
OF	09	00	3	9	) 3	E	9	<b>जलिक</b>	ग
5	Ŧ	9	OF	2 0	9 (	90	3	कलकः	T
3	3	F	9	01	E 0	9	0.	कल्लवल	İ
0.	3	9	I	9	0	F	09	वभभक्र	2.00
07	93	E +	3	0		E O	9	न अंकाल	1
4	Ü	ह	ग	र्ल	3	1	17	वाराः	1
0	F	9	Ŧ	00	4	0		कलक	100
0.	3	3	3	9	9	3	*	मचयाभ	J.
2	0	E	3	9	P	0	3	ज्ञानिकः	
3	03	5	9	3	Ŧ	3	1 2	गलवं लाः	T
OF	0.E	0.	00 10	03 10	09	00	3	न मुद्यालः	

नहत्त्र

\*E

किष्ट एकालिएउ ॥ खेषमुमभभ्भभ उभक्षक उकः मम्बिवश्रषित्र भनाप एक भौभितः र० हिमेन्द्रियाः धन्न्यमभक्तः क्षाला का विषय कि का कि कि का उः बालाः म् शाविक्षं प्रिष्ठिष्ठ भारे अ द्भिउं चुउँ छई, भक्त भ भ के कि गई भन्भ भिडाः म् अने मुक्तिमः अद्भ क्रडकः इङ्ग्यानुप्रमामावाधेरमामाः श **ल्०उम हरू यवग्रभण्य ज्ञानिकाएग्रे** मविम्भष्टा वे वित्रुदेश गर्भ है भगए यभण्डकः महस्मान्यम् भवत्रदा इभः मप कमीरजालक प्रष्ट्रभुच्याभ अभवडः मध्भष्ट्र उष्टक्तः मयन विष्वहर्ण्यचभ्रष्टेभरेकिनं मध्यक्रभल अचथन्त्र मनारिकः हे प्रविधिष यव। द्विमिषः विवीनं द्रयंवाराष्ट्रभाम

उधरमेर भवभेडिक ने हाँ ये कि कर भार 4. इणेंडर मा वागण्ड इववड विविद्या है। गुः 3. महम दिश्चा क्रिका विश्वास्त्र भ र्जायेष र अवभाग है है विन्तु र लयानि मर्म्झानुभाभः मज्ञानुभीनव श्रेमवेमापेष्ठाम सीडिखिः म्रावलिडिश् रीयेम र स्कृतें इसे भिड़े इक सम्युक्त म मीर्घमभाष्ट्रियभागक याउँडीया मिपोचेक्कराभाः धकावेद्वविः भः कति की भद्रभीत द्वाउमा मुक्ता य । अ भन्देवज्ञला भन्नी मुक्ती प्रकार कर में म। गीरा स्वाप्त स्व स्वाप्त स् एड्रिम उरमीत प्राप्त मेवम उरमी ५३ नम्राप्तप्रमभाभाषामुक्ताप्त रिउ: मयभाभमुहनका श्री मिर्दिनी जिनिमें इपिइ'श्रियभणवे स्विप्ष

नुरम् प्

उगचारिवादिक दिए समें प्रमुख ले म्वलिधारि अचा क क्रम्पा मिन रवारी माउ के हर्चे विक्रिक्मण ये भजिया वि मापा मधी बहु मु द्विनीकगः जल्लानिकली श्राम्भाष्यसम्बद्धाः भा मग्रनिभभ कुरिनिर्देशिकविद्यः ममभभुर गमयः उद्गिनिद्धम् विभवने मधक इक व्यक्तिक विष्णा विष्णिक विष्णा विष्णिक प्रमानिक ग्रेड्डिप्रस्पाद अविडः मुहामयः नविविक्रह्मान अविविधिक्त निर्मा निर्म हरीय भगभिष्के पद्म श्रीभवनेक द्य भ प्रश्निक्ष कर : हा जिक्क प्रश वष्टिभिषककर वसीभीनिष्यम् इंस्ट्रें लग्रभिमंहराई २० मममुहिष्टामीनं इसविमिष्टष्ट्यभाक नक्षर्विष्ट्रया निभम्भकुरुनियानिम भएमम्हल्यानि

रामिष उद्देशस्त्रकाला 4

मुह्मु-प्

तिनदेगंकदभिद्वेषुरुवदः ११ म्बयुर्व ठकदेशिश्वरयभलयेगे ठम्डिमेन्नी द्यावं रेग विधानिया हिंदा अप उप विभाविय ग्रेयभलगुगाधां के वेड उड्डिस्डिन व वहिंचाधिव हिंगुले विगलेश चरवाउद्दर्भमः जलभी १९ भषभूवण ज्ञान्द्राक्षित्राव चुनु हमुह्या । विष् निनीअलणनिभू में उर र्घभ भ मुभूष धुनी ग्रेंच भिन्नि चेंग उम्भेंद्र १ विम ाषाकरली अद्देशधार्टी प्राप्त गाँउ भाग भीत्रं समीरिज्ञं विगत्रं श्रम् । १० ग्रमुबलः अष्ट्रिनगणेरिक्तिश्राः क्रमभीनवशीय'विशिचिंगः चुरुवितः 19 अचाभार्के इराभार्क् शाउि मिर्विमा गिक' भगमक'म्मीधर्पीवत्तरीय इस्र मी १३ हरीयांमाञ्चलीधन्तिमकीदिरा

भं•

वणः ४उगभारकमञ्जूषिश्च इयं इस् चिडीय ममभी हमें बलानी या भूया इंड १म वर्षभ्रम्वारणभन्तिकादिलां कि रीयाभारभी केव ज्ञाक की का सुकार गय पनिश्चरुग्नी अलभित्रीग्वरीहेण ह रीय भूरि पद्मिविम ह्र नव भी भू इर १० गुरिश्चित्रण्याविमाणिष्ठिभनचश्च ह वरीक्रमभीमें व भित्रिभाषुक मंभ्रद्ध ११ र्णिचे भ मुभी ने भूम । इसी मड इर विके व विक्रिमिष्टं में अस्में प्रेराद स्ने १३ वृत्र अधाविनीमित्र रवेशीम अनवश्च व वलः भूरिभञ्जू भिन्न मेक्य मी उष् १९ ह नवरित लिंद्य भूष्टे ज्ञिष भूष प्र न्द्रिरीयाभभीश्वेवविषञ्चभचक्रभ उ मनेश्वारिः म्वः अचा द्वानी किलीश गः म। अनिवंभीवाभितिष्वः भित्रामण्ड

363.7

मी ३० अचाधार्विशाधारि प्रिप्ति भेष विक्री उद्गाद्धान्त्री भन्नी मने ३९ उतिसीमज्ञेवक्क मुरुष्ट्र दका ल अवर्ध्यक्रालभ विविनहार्व गल्लन्ध्वाग्रुग्भाग्भ हिरीपणि महगाविधियम्बन्भभूभार् ० राम्ह विभाभाग्निडिविड्वमंगिनभ भागम जेग्डें हिंग्रिविज्ञली डिंग्स्याक भे ९ ५६ उराष्ठित्रमापग्मग्दलकुकं धक भाविणभाषार्षपुर्भित्रक्षी ३ भ भनेकं। उदं में यू चेम मूम ह क्षरे इ रेप मुदल्यस्थितिनिग्दल्यः उर्भ म ग् अन्य प्रदेश में इत्र ग्रंथ प्रचयन भ लिग् मिकिक् हिंचाप क्य्मिन भाउउः भ गफनेदिविधनध्रीलस्प्यकारी प थर्फिरंगपर्गवारेषाभाग्रज्ञ लिकिफिकान व म-

मर्प पयुरं लग्न भं मवा के नवा मक भी ल मामिविलयाष्ट्रभद्वभंलयभेवया १ कि नमक उभाभा जैनक इ जिथा श्रिय भी पीमक निष्य न विमाप्रनािकं हाना भारतिक विमाप्रना कि हा मग्रदंशिभाश्चेम लग्नमंतिभुम्ह्रमभ्रि किराच्यारण इचिभद्धे मधलविंम विभि नभभकवीराभवान्य वास्त्र रामिम'अभनिक्यं अवकंश उग्रवंश विश र्म्याम्पर्मित्रविद्यानिभ्याम् उभक्रमं अवलग्रभ्कामं मध्यभ्षेष भिष्नेक्कः भिर्म्यक्रकः ।उल्विधिके पर्वीभकरः जभ्भीनके ० रामयभुद्रभा द्वरेशियकाभित्र क्रियमाधामिव त्रिश्चरंबः इ.भाइतः ९ धर्मेरया पन्यम भक्रवेद्यभक्रक्षे उच्चेद्रयव दीन भुउट

नगर्

भभक्षेत्रयः ६ मध्यभणनवगंकान्य नियानलाः क्रिबानलाभुउँ हैं है अभकालन ताणिकः = ववामिश्वाभिनः भिषव/वि क्येंह्रे भे वृत्तिभष्वनक ह्याः । उन्ने श्रीधक्यः म रःकडाप्राप्रमुभः ५ भिष्रशिपिः अदः मनिभक्र जुल्बः एन प्रीन हिंदीवः गडिंग मी श्रुर कर है । असरा मिन ॥ भधव ध भुषान इ क हा क द । ध भुला अद भीने ज्ञार उक्षि उः । भूर स्वर १ भर भेश्चामकः अद्यद्भिमाभागपत्रिनः व लमदः मगम्लम्। मः।पं विभितः इभ इर् उ च्रेष्ट्रीमें अद्भीनंशागःत्रीमंश्च र इम्भापार गर्ने अक्टक गर्भ वृत्रश्चित्रं के अध्यलिक्ष भिन्वध्वम्भाष्टकद्याति। जन्यष्टः रद्यारीनं इभादुलिईकिलेशमयः भाउः ०० भ• ग• अम यमम्पिलयग्रहिन जुक्रिण एक्ट्रील इभियानिष्यम्भ विशेषः भद्भेगेड उथलग्रेभुभिष्ठि ०० क्रीइक्रपादिकरा नंजभगीवरलं प्रवाभी गण्डधवमोऽस्र भिच्च उड्डिक्ट ७३ कल विच्छिति द्वार्य देव परिक्रिड भी उन्ने भिन्ने प्रेज देगमानुविम्बालः ०३ वर्गा उत्तर्भेब मधिक्माकाश्च वापीक्रभाउनकार क्रम्किषंउन्हें ०३ उपानेवस्रिः भृष्ट पावेगेविल्ज्ञषः भिजभिज्ञ उड्डेंबेभेष लंगिगिरंगयर ०५ इधलंमिल्वित्रनं प्रभवेपि सिकंडम भगे शिरं । विकित्ति इल्जिप्रिक्षि के विश्व कर्म वायार्'रा'म्यभ (उलालयभभ ाएउंभनि विश्व विकित्त का गरा में विषि चक्रमभाद्रभंग्रामं अर्ग्नादेशिक

न्नर्.

प्रकृषिउ अच्छारिहः ०९ सभी माउधिमञ्ज इन्नामग्रहान्यान भी उपाय रेस् यंश्रीकरिष्ण १० हीर्गि प्रभन्न किया द्यारिगाभाकिकभी उषाप्रवेमकम् जार जिदां इस्थणेः ९० ५ इप्तम्राहभक म विज्ञलक्षराक्षराक्षर भन्नकप्रभुकाद्म भीनलग्रेश्वीिउश्र ३३ मिधारिम्य प्रमु ध्यवज्ञकद्रभिक्षति परिताउपउच्चित्र 3 महभग **न्स्रलधनवामक** कःभग्रहरूःमुह विद्याउक्ष्य र भंमनवंभकः ९५ इपम्माइप मिश्चमरागकः लग्नरमिपिरिपि

भ•

र्रिग्रमः थीवकीरितः ३० मस्कानिभाषित्र विभगविमस्यः चुक्तां सम्ह्रभग्द्रभाष्ट्य इड्वरेश्वरः ९१ एनः भिन्न वस्य सम्बद्ध भुनवं मकः भक्रवे धकः कृ उपका कु भ्वीरिकः १३ ७ लाभिष्य काश्वारः भुलाष्ट्रः किषाउँ : कर्ष्य प्रेष्ठिय या भीनवाश्चि क्केरः १७ मुम्मंभायमभाविद्ध उद्यः भगमा दिस्म द्वार के किया में लमगेर्भार ७ हिभकी ए समुद्राला है मंगः भीकीरिङः भम्हेरुमराभेषेवे श्र गल्लमरोमकः ३० सहस्मिश्राह्मिर्भक्ष भाना उखवार भागे समधनुत्रमञ्जू अप भवमञ्ज्ञभ अत्व सम्बद्धाः महास PO

377

उः निप्नंग्रकद्रयद्यक्व अनेः इ	भाउ ।
३३ कर्थलढांमधिक्रभंत्रयम्	:भुन:
नवभेषानु भेषाने रिकेलकेल भिर्द्धि	3= 13
धनक इमेध में भूजे में धमय क्या भ	
इंअअभेड्वनेड्वनेश्वभक्त किए अ	न १३६
उन्न कं क्षार्थ मित्रेश हुरीयक भी । उन्न या श्रीया श्रम श्रीय स्थार के विष्	मदभः
प्रमिया मुभक्षेत्रम् अस्य मुभभ देशे ।	319.
निस्ति के विभिन्न प्रमान	0019
भि भ हे क भर रे उ अप उ	3-1. 091£.
39.09.39.39. 3 3 7 7 30 4	3
	18,4
भाडितासीप्रधार्मा नवमावस्य	पंग्ट
TESTSHERY OF MENO	304
प्रचाराय्यम्भ ॥ भवत्रवे १क.८	भार
विष्टिखं भूगः लग्रपपि भिर्म	2.4.4

भ गः

क्रमेरिक्णगाः १३ श्रीजाःक्रमेरिक्णला पापानुदिधम्बगः उभवनाकेगापिएः व मुप्तः मुरुक् इलि ३० हवः भ्रपाउन सिष्टे मधिएजेवलाणिकः अलंवलिरांण उहा भुगाप्रविकारः स्॰ लयभन्त्रभुन्त्रभु अअरिकार्य मुरुक्ति अवरिष्य प्रकृत्सा मुरुद्धिय म् १३इ१भट्टउः भेजेयुन्नयं वलकिकभ विमिध्रुययम्भ भुं छो छ । म्डाके म् अधिलयभकाल सम्बन्ध रण्यान्य भारता प्रकार विकास विकास विकास भगल्यालं । त्रभाम्याक्कप्रमुणन व्यावगंत्रय इउरमभनचभुरिक्षमञ् हिंडिये ० वणम्हर्याये प्रमुख्या भागा उलभ भिवलग्डरियाम् इभलनं एडिः वर ९ भ्रामुणि भ्रुवारमभूक हुर । । किकं रजवार्गचं विचादं हो महाश्चरियापि अ

**45.7** 

ग्रम्'इयाद्र'ढलभे रगीलभद्वविप्रमुद् ही भार मिक्वणियन भी यन हाने शिया वा भि क्र नविभित्न नं मिनः जुन उब भवेष्ठे पुज उ नाश्चाणाराम्य भी भवनका इंदलमें व श्रुष्टाधियष'त्रिहारुग्धराक्ष्याम् क्रि क्षिठयंज्ञर गुनिष्टं भचनभर मः व भग अधक्कीडिः श्रुम् यं निपनं ठवेड अन्चर् उद्याप्रधानाय भन्ने वा । मञ्जूषायां र वञ्चकभण्याभार प्रवर्भ गर्छ व्याप ज्याभाउरायापारामः उ कप्रभिद्धिः न्युद्धित्रश्चिभिष्ठभभ्यः भिष्ठिशन र भागीविमापानस्र विनी ७ भिर्भि रनरणयं द्यायां वास्तरिः रात्र डिम्च अल्ड्रे अचाभारिक विशेषा ०० भिष्ठ बस्य अपर्द्धां मुवलन्यन दिन्द्र एड गभेगिन प्रायं विभवीिः सङ्गि ००

भगभा

अक्षं अल्लाक्षिडिक दुर्ग्यं वन्त्राभः व उन्मिश्रावर्डवक्ष्रधण्यान्वर ०९ म ववभुक्तिणग्लभुलिवस्थः सुविद्यम णनेश्वाय वटका भाष्ट्रक भवत्वर इम्डा रिवभुल्णगां भियं ०३ यहक्यता मन्द्र मिर्मुउध्येषित्र एति प्रचित्र भग अइकिक्समं भी कहल कुन्य च डि: ० मधले हे युवर निषेणः गिष एं हे उरे पे छे पन चे श्री कर यन ने रहे हैं हगार्ड्रभावस्थारम्भाज्ञाणिया १५ मधन वश्विद्रडेठलभ वंभमनवणक्राण्डः कल्प्रस्वरः भष्टिम्भित्ररहेन्यभाज ममंभयः वर् मग्रुणिलन्ववभुविलिध करभाषिकिः ह्रयंग्रामक्त्रेषु मुठंकवन ममक ल भचभार् ध्रममुबम्यन भन थानक सम्भार उविनाधित इसि इपूर्य

नहत्

ज्लभी गड्ड भीरिंदि उंव भेविव दें में इति कि ष उद्यविश्राष्ट्रयाणरंनिकिष्टिभिवाभ र ०३ मध्यप्रविमधिविमधः मध्येऽभी उक्डाव भूणालभी मुक्तवभूज हणदे। निषु इत्याने विषु इक्दां भी उंभें के भेर ज्ञभश्रम्भ ०७ भनचभग्निम् एम्ड प अञ्चाऽभ्रच अच्डरं मने अदेनील हा भ्र रेमुढं ९० माध्या मुक्ता रणविक क्रिया द्वभूजित्वचावित्र किन्द्रभन्नदेवज्ञभू कुलश्रणगलभ्र १० मक्केमय मित्रीर वडीन्बुरिष्टं म्बलइय अचेडरंभनच श्री अप्रिम्म भाष्ट्र ०९ रबीमर्गिरि दंकिमयंवभनंएनः मध्यभएं नीलवध् किनिविद्वानिश्चियि मुद्देमनेश्चाक मण्यम्भरभां ९३ मधभउत्तकभूक णगल भ्रष्टेउगनगणने पनिष्ठः श्रमकस्य

भ· गः 93

विष्ण्यमस्त्रम् सम्बद्धाः स्वरं अर यवभव्र राग्डिभ स्ड हुभयव भूपरि एनं श्र वलंड उमें भिम्वाभेण देश की कारण राण डेड डि मक्तास्वयपाग्ण हमुह अभ महनभूनिक ल रिलीरवरीयिष्ट्रारणभ्याक्त्र सनि **दिस्किति ज्ञानं उत्तिक्षा अपन्या अपन्या** वज्रभरिवभ्राक्ष्त्र ॥ भनचश्रुक्वित्रभृद् फुक्मवल इच मिड्डिककवी एउवा भागा ग्रा नेष्ठं ११ मध्यमिक भगिमिर्नगणि भम्रहादिल्यकाः हार्यभन्नभागः अ मीकद्रित्सभंभरः १३ म्बब्ध्यालनं भन चभ्रवित्रिष्टं पनिश्चलभ्रभप्रके दिस्कि वणित्रं भंद्री मृद्धिनं उष्ट ९७ त्रं भव्य वश्रानद्वानयम्गकादिन म्हणनद्विण नेमद्रविष्टम भिर्अन्तरगणद्रस्य अस्तिभ भथाभग अ विमापादि विश्व विद्य

मुद्र प्

कुर्वारक अथान इतिक्रमा क्रमिक निश्च क यवविज्ञनाउ लिके थएन किनिद्र लेबिङन वज्ञनम ज्ञद्भञ्जभूमिडिण प्राडलिक भूभण नकश्रीविङ्गीयमत्त्रीय उन्नध्य अधिक ष ३९ यद्यवभूभयगद्गितिद्रां भ्वड् यित्री भू चेरा एं रिक्ति भेरा प्रश्रेष नहिंचु दु उरे भए वेस्तु भड़ि ३३ यवभगत्रहे गः म्वर्वित्रीभ्युगणं अच्यार्वः त अउयभार है । एगह मसुह दिन अर महता गुमक भूगी अध्यान गान मुहभ महम्सा निर्विगः मुवलमन्त्रणयं दु उर्गिल भग उप भावश्वविष्यित्रयंग्वरीञ्च व हैगःमप्टभनं भीनं प्रहेवपं प्रहेशियो ३० मम्बर्धालकार निभिन्न हिंग्य गङ्गावेशवय म्वर्यभगभ्यभन्य

भः

गण्यः अ ५ ४३ य वर्गित एं इथक्र स् हति॥ अवस्य युज्ज कुष्ण ध्यारने ॥ दिन्ति किर्वेष्ठभणकुक्रविश्व ३३ स्वर्वे भन्चर्यः भम्रहे में इर इच क्रिकें के विश्व धायएनं सुरुवाभार ३७ सहरोधमवभूत वण्यज्ञ इभलनिद्रालक्ष र इयु अल्ल है विमाणंकि उकं विन प्रस्कृषकी रेखेव एभज्ञभयेष्ठिभाई म् यम्भाइकेंगः निक लगुगलिपश्रिडयायडी इय म्बलइडय भूष्ट्रभावश्वाणयः म् इउग्रेग्यम् प्रविमाभ्य येगक भवत्र मिया इष्टर्ण निधिष्ठभूमभी म् असमाम् करा स्वल र्उविषय्रव्यविश्वविष्य हिम्रवंभगमी दमभनचर्रमुखँउष +३ काकामुणः भ जेट्यु है भेमनिंशिव भ सवर ए भक्त मव क्रिकंशिकंभीभाष्यं मम सम्बद्धारहाउँवा भरकलभे राजभाषेमितिः भर्जे हैभाष्ट्रीन

48.2.

मधिश्रायभी वचयेष्ठ एनः भक्त भागा भीनिया थाः इप अज्ञास्य क्रमं हो भे ही रेवं मध्ये ग्रम महाराकदरप्टिशिः मध्मीभी थर्मातिक थचालिभनुग्र में महरमी इभावश्वारिष्टा स्वार्थित स्वार्थित विनिक्त इंग्लेम इंदलभ प्रमुक्त ने भण के गिष्टिं भद्वचाक्भ मा उउग्दन्न लीम छम्। दः कि भग्राड भव्मभनेष यथक ह्रं न रागिवित मंड मध्यानिषेण भिउम्भवामः अक्षयाविभाक्षेत्राप्टण नेवर्भकाल भड़मेग्रेमप्रीक्षयंभद्रने भचरेष्वीय म् अवग्रुसम्कर कृष रुश्यवग्राः भाष्मभावभेषि माम्क मभगाएउं निधिचु उपकार मेड प्रमा

भ गः

नापम् उन्हें एक प्रकारक में के ये प्रयोध प्रभ नीधिकि: उप्रमुखकुरुष्ट्रानापादम्भाविक हिया ४० मधकीरनिभएः इजिंद्यजेत र्रीयार । एड्डिगीत राजिकः उद्घर करला र्मे इचित्रक्येरिय ५९ उठ द्वार विषयि क्रिक्यनक उचेडर अग्रधः अन्डकिंगएच गीर्नेगहिली थाँउः ५७ अङ्गीविध दुक्रेनैंउ भार्षः भक्तिषिरः मधि मष्टकी कर्रा लिय हवदंवकं के मवभानाउँ भाषािलि भ इभंगीभजी विष्ठंम मिडिभिक्ति विष्यभारं जीविण रव । कल्लानभ नविक्राभः भग्नामिभक्क्ष्यलप्रभामित्रिड्यम्ह स् वल्ण्ड्य अचा अविद्या ४ ४ भूम भूषे ४ भू रविस्त्र रूपरणिवयां लग्न रतन्य क श्रीकिष्ट्रकिष्ट्रीय थयुभी भूम प्रवि

नुष्-र्

ছবিট্ডিয়ন ঃ ব্ৰহ্ম বিত: পৰা স্পিন্নিত্ৰ: পৰ্ট্ট इंदर हिल्डिस के भारती भड़ से पर है भारत वगिलिङ्ग किः मडमुचनगणकंगिदिली रेंबडीकरें अष्ट्रिगीबेर एक दार्थ गिल उपिषु भउ नवद्यका छा भः विक क्ष्यक्रक्ष्य अस्त्रहेश्या हे त्रिहे प्रमुख इष्टिविश्वमस्पर्यव्यूषी: ५७॥ मबहायकि माभुवकः इउउँ दिली भच्च भनके मुचलका मित्र हो भड़िक भी इंचमंभूकिकंपंग्डी वे नवण्यमंभू भगणगकः दशक्रियक्कपृष्ट्राव डिडिंग म्बड्य म्ह राम् एक मानु भगलयः ५० अववैद्वविष्ट्रभाग भी विद्यान्धः दभुर्येत्राणयंभन्द्रम्व

म ग ३०

न्द्रव अच्चमञ्जितीभष्ट द्वासभाद्रह भग े 9 वेइविष्ट जरास के रेड इनिर गामकी महरूनमाभुग्रन्हः मुबद्बेशभा अचाराण्यवग्रह्य अन्ह्रभाष्ठि अद् म इलिनामभं भेग्डर २३ मधभानभी मक्स भूपभः इष्ट्राम्स्रभाभभाभचारविशेषर नी मुखे विमाण मुं एराभारत मडह थाथ वाभागे वेम ल्या श्रियभार्म् मधाभी भा रही भेठेडर महलिक्षण भुट मुहि विष्णु ठवरा रवडी गुगले उध' स्वल मान्य एखं उच्चाम् प्रिचिष जभामे इड्वेज द्वा पन्य भने भूणी : श्रषा भनिका अन्दिम उ पश्कम्बर्ध्वपरीकालं रङ्गभभूभी इंडिस्डिमेमने मुरभ ७१ मधिमल् वि हाकः नथुर्वेष्ठवण्याद्वारिती।

नक.र

off

भरगे रेवर भिन्निनी भूजे भनच भ्रागण थे : मञ्जिष्ठिष्ठिया मिल्दिव हं भभ अरेड भा व्यवस्थायन्त्र इउरम्बल इङ्गिर्गाभ भानुगणयः गिर्हण्यवशीग्रम्भिर्द्रभ उद्यान विलाहक्कारियाग्यमन भीविडभी अवग्रामिया पश्चियनगर्ण यां विशेषाल्या भूष्ट्रिणग्राम्यः उद्येश्विव भरे चिनः गिनः भयम इं अ भीभद्वेत्रणीविकिः १९ उत्रम्थमरेदिए यभयक्षिक्षण्यः वसाग्यस्य भिन्नभन किकार माभर अवस्ति ही भिभिष्मनाधिकं भङ्गिक्षिक्ष्मचंवि म्हान्द्रिवन्द्रिव १३ यवभन्काल इ उरवानगणयाम्वलिइ यडमा भन्यम ज्यनभित्रवर्गिया १र भगमीस्य निद्धान्य मिया स्थान हरीय यो इया

भः गः

म्मष्टं अतिका विषे १५ द्वानि म्रो भेग भन्कदे मुरु प्रमा निवास्य होते ५नभ रवडीगुगलप्रस्यक्लइयभग भनचश्चयक्रद्भानिहिभाच्चवाभाग ए स्वाम्भाएनं स्वाद्य सहित के मिविक्रिन्म उड्डाउँच उड्डाउँच अ गेरिहिंदि भारि हमुबार भाग श्रुवार प्रनगणितुउच्भग रेपनंमिविकथण्ड भल्लग्रेभएनं उष्टे नुषामासह मुबलार इचेन्य इववावडी हुए स्माय भूति गण यं रिष्टें इउरड्य भनचर्ने : मुह्चार गणक'दम्हिमिन यम'मुन्हभी मुह दिवाद्य प्रिविध्य विश्व भारत श्री भारत श्री प्रविभागे भगमीद मंग्रे किए वल्लिये दें जे रंगिडाभम्कदम्रस्वतभी सम्पर्दे न्त्रिक्षं स्वलमग्रह्मभूष्

43.5

भगेनुके भनवर्भःगरुईध्रभन्तान्त्रमंम कं अष्य विमधतरानि मेलेके पानर कि सिक्तु विक्रें जुलकिष्य धार्मगूर्भिक द्धियानिक इपवासियान भी अवरवन्द्रभ अष्ट्रियनचश्रष्टिश्चनगणग्वेग्रीइव म्बल मिदिहरप्रिड्ड वर्गिया भारतीय क्रिने क्रविवित्र प्रथम प्रथम प्रथम एनं दिशक्षित्रविमापायं हैभाइमनिवंश र उल्लाम्भार्यपालमधिक भी नवमभूगाल भनवश्वविभिन् यंगिषिली व्यापिक व विमापिक व व द इ गगवरीम्ब विजेविन विषेधदेश्र शी व्यक्तिरम् भत्र'न्द्वितिक'णकुःजाउमप् किएएला नव्यवः विद्यान् मन्त एभग्ने मुख्यमीद्रभुभीडिं एनवि इधिकंकदेश्वर्भ प्रमुख्य भागव

4. ग. 33

मभूष्टभः ५५५प्रय प्रश्चित्रं भूनह मुब्रिड खुर्थः मुहिरिविश्वापकु ज्ञानिस्भाग्रहभेड स्व ग्रिमभूभएन ग्रालंग विमापकि डिक अव भथा क्रिया शिक्ष का क्षेत्र का क्षेत्र भरानी वैक्राश्वाभागे भारलं एयलं भूके विक्रिम श्रुष्ट मेठनभी मधनालिक ए ग्रिम भूत हभी मञ्ज भक्षिक्रमल्ड्यू सुरु करलम्ब अचाष्य मण्यहा भाषा हिए विज्ञाया भाषा भारतालिक मध्विषिः मुठ' महम्बू क्रिय वपनंगरनं म स्प्रां मुहा सी अचा अला हा भाउषाक्रय क्रायएगुडलग्रक्राभन्धा भी मङ्ग्लेबणने ज्ञाद' क्रथा कि उन्ने उद्या न्यम् अन्तिः नवगणभ्याप्रचितिष हड़ि। क्रिक्र लिया मुश्राह्म म मंभितिविद्य महभएएकः अलाध्म अक्षा उहें मुंधवं स्रियं भणाश्य हर देशी

वर्गेय भएकद्वी १ अव्याप्त कर्ने अठत भ अव्याधिक मान्या मान्य अस्त अराहिए हार्थिनिवर्ते उन्नी सन्मान्भव म्बन्द्र नण्डगः भूसभण्डिगभः मञ्जनवस्य मुठपान गङ्गणन्जनबाइमञ्जूणभूकानिम अवगी उर्द्धान्यः विद्यानगण्यापिद्वानुव्य कैरे रिकिनीयुगलिपष्ट्र इरंगीउन उन यह नएनडकोल्डभी भगार्च गेरिन्मे प्रप्रमा म्बल्इय भिर्द्यदेशभनेत उभद्वार रा विनाभी सवज्ञ किरा क्षा किया है। प्रबंदिक एक स्व र्वेभगकि कि मुठ अञ्चाराया श्रम मुठ इडिहीर्पिक्ववा इभभीरिडभे यस वसञ्चापवाञ्चभ द्यप्तम् उत्माधला अचाक्रिभाभाश्यम उद्घाउद्योगभाभाक्र

भः

भागवाष्ट्रप्रभूष्ट्र भ्रष्टभगवा महीधाकालीय चण्डाप्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाषायां स्थापिक यायाप्रापेएकर्थः सम्यानयङ्गानिया भर्म्भ्रथमध्यस्मउभ्रष्ट्रभ्रवातिल लज् व्यक्त एवर एलयइ दिया मुठा नवका क्रु भडरक मीन भग भुः स्वरण भण्य भ्रविश्वीभ्रार्य जिल्लीग्रालिभ्रष्ट्रिणनिष्ट विउचेउष' अच'भग्रिकिए ममुहिभागेषु हिमिने व'भीक्रियउमक'न'भयभःकिषिउन्निः यम्बोक्तराकिर्गण्याभत्रभ प्रश्रीय इउरभ्रलेनरणारेवडीक्च विमापारिक नीपष्ट मुग्रं भिर्भगमं नमनेक्टभ द्यम्भभाविमापार् रिजिलीकरली व्रयभ यसिथायविद्याय नहाँ इत्र गरिष्ठी भल्ल ग्रभविधिनोक' भएनं उर्रालं प्रकश् त्रमभाभा

75.7.

उः भग्नवहरक्षा उद्भन्न भगे विदेशिय भुउग्ड्यभ भूवमित्रभूगाधिनश्रद्धित्य विनिक्त प्रविद्यापित पारिकार जिल्ला कि उच्छे अन्धि अन्य अरुविभिक धाला अन्द्रमा मुडरी मुनश्री मुबर्ध गारि वनमधिन्द्र स्प्राधित्रीभन्भन्द्रभ जिलको उड्डा अच्छा है भगिले वनम िल्लिश् अवनामहरू संस्कृतिनीत्र विमाणभष्टिमुह क्रान्द्र हाभुभाएन व हैनापग्रनीयभाभी सम्बद्धान है सर दिस् विडिद्यापे मे विभागि पेर्ड मारिक मक्षाएं नेपिकालें हर भारती प्रविधक्ते दियवि इय' विमापारवरीभृष्ट्र एनिधाम उठ मुठ पर्भनचभे हो प्रजा दि चिव इसे पद भचवश्रद्धिया मररागमुहिम्ब्र्गम्वलक्षा

भः अप

उठपम रवद्यमियाम् याचित्रियानक संग न न्यभचव अविद्धिया विमाणक उका स्रभारानी अचिक इयभ विदिखः भडिच वेषकारीनिर्यः ग्रहः भ्रम्बर्द्ध इभित्रियवित्रिये गीवमुद्रमनग्रथभान यं अलहे भगे अचा स्था भणा स्था विसाप निउपैउष' भनहेंभनि हिः भें जे जियविद्यि नंहवेडर यववालाङ्ग यूज्याचेड्र युव्य वर्गितिलीभग दशमिश् इत्तद द्वालिष्ट क्रिवमें मुंहे नामितिएम् हु क्रिया हिभार् भ्रष्टेभरगेनगणयं स्वलद्रयम्ह भन्द्रमु विमाणयं नि च छ हि पुनमु नः मममू ह निणीनंश्य अअने अपनभ् प्रतिभ्राद्धिम ापाएँ अचाभाग्ठी हिए हुई रिक्ण मनिए इ मिश्रापनेषठभीविडभ मवष्ट्रप्रयाः मु

नुक्र-य

विण्याप्रहिष्ण्य प्रस्तिवरी इव भनवश्रम ग्रेथ्युक्रिक्ट्रथ्येगकः भङ्ग्रेविहियंगम प्रशृहिति हिथयः नमग्राहरू लेखा उन्नेमान यग्रहें वर्ष प्रस्क्षित्र माज्ञ स्वयं वनवार्ष मधण्डविद्धियः उपिष्टविद्धियः धणनेश्च मग्रह द्वा माधा भागापा भा सुन्न उथा के कि ए इस सम्मान मार्थ गः विमापारिक्षिण्यु भनेके श्विमडर्य रू उरेश विश्व हैं उप स्वाप्त स लभूबंफः भनचश्चम्य छल ३३ गर्भिली व्य प्रश्चनगणयं विद्यम्बल्ड्य वि मचामुरिम्रिट् प्रलभ्वप्रतेमुरुभ प्रध् लगर् अद्ध्इजनकार्न्भाष्ट्रिकनवाष्ट्र केभी ममुरुममुरुद्धयं प्रलम्ह्रास्थल भ यवनीसिं अपलम्म भ प्रथ्य माथस्ट इ उररे दिली हुए व परिस्था व उर्ग

अंग्

ग्रिडम् अन्तर्गण्यः मुह्वगिडिम स्ट्रानीर्ग भिभुवग्रहार् मध्यी सुर्य में के र्वे रेवि उच्चभ नमप्तु हरू भ श्रुविक्र न किला हरू गर्भ मध्मश्राधलक्ष प्रश्रद्धाः अलगि भूगिदिली भूग भूमित्र नगण है। भूगों न हच'भा रक्किंगमनिष्ठिंभभध्यक्षु वेव प लभ नवभश्यकाक्षलउग्मीनं ग्रामल्ल मन्भ भर्थायिक्रिक्किलिक्ष्र क्ष्रिकेभथा कग्भ वोक्षभष्टल उ'मीनं भूमधुरालभग नभ नवण्डिक्तिर अचंडरभभाक्तिधा राप्रम्वलइय काली निरये अलेशनिश व्यक्त इच एडिक्किय निर्मा किन्द्र है अस मुरे यमकलभरले यत्राणम्बेधले रवहंग्भभाई है हाभूयं मैंवरिष्ट म र्शक्षाम्यालभ महण्यान्यन्यन्यन् भेड़ालंग संरोधिउनकाइवासरभक्तिर

४५०-२

हाषः सत्रश्चायनेप्रमुद्धलाष्ट्रग्नालयभागी नवअपनिवाधियाकिया अलिय इनगर भविमाणभगः उउगादिली द्वांव रीष्पणित्या इज्ञेंड्वण्यलयभक्ताव् विष मनि महनवाबिषिः नवाबभूमने दल्ध लामनेग दर्शियश्वगण्यात्रिक्तीच्वल इये भगित्रहुउगभक्ष मुह्यां विषयि नवात्रष्टियान्य भूमने कल धलयेः सम केंद्राचिणद्यितिः भन्हेभ्रामीस्ट्रिनग णम्बल्इब ५४इबिन्निम्प्रोदिएभउ गर्य ग्राम्बर्ग्य वर्षः भहेष्ट्रामण्डाक्ष भ अवगणभाषाः ५ अउविभनविभे फिएंम्बल्इये जिंग्लयेम्डवंबि मनुरीएभाषः नषड्लाग्एिकःणव गर्ना अजि अलिम पर्ये हैं हम् भाम स्व

भः भः

भग रिएं जमके प्राचः ए इभेर हाले मुह महण्यतिया ग्वरीक्षिउयम् अविश्वरीकि निव्य मुवद्य उग्भूष्ट्रभनच श्रुनगण्यः ग्रेणीवगुउणीवत लिल्लामुग्राभागगुर् स्वास विक्षिष्ठक्र भनचश्चर्यशं है इहस् वलर्घे रवरीतिउचैप्रजनगणगिकलीभ ग मानिकं पे धिकंक स्पष्ट कि की दि इन हैं। भवनभाष्टिए प्रिडिक्स रबीबुए ह गिभक्र मच्छिने अगवगे क्षेत्र मधह है स्यिप्टकेर्यस्भाउ दिभानिशापल नैधु मुरुम मुरुषिमारे महद्रभामिय किया भक्तं विविवारगुरंभकंम । इहिहास्य मध्यल्यम्भिविष्ठित्रमुहभूमः निष्ठाः भ्रम् क्रम् मिन्न में प्रिम्म प्राप्त प्राप्त विष्ठ 
चषभन्द्रकिकीका गिर्द्धा इउग्रेभी प्राप्त व्निक्रियाकिष् भद्रमीक्षां है मार्किग्र लथुणां विदेश सम्बन्ध समुद्र सुरि भासन्धि उद्धं प्रभुग हिनीक लं विमाण भग हपनि मुरुभद्विणस्थात्यत्र ग्राम्कभ्यम् हरवंभणन्भी भथार्द्धहरलभ्रम्भरग जभवणियार अञ्चल्लीहरी उद्गीरव उल्लेण वर्षे वृद्धियाक वलं उड्ड वनं म प्रवाराणया अल्थ वस्व रव भग हरवरीयुग्भुनच्मिवियाम् ह स्वर्भे राभदाणवाभागि षाचि पि विश्ववि महल्यम् इस्नम् । अस्य क्षयम् हम्भेज्ञेच गमायभाविम यिनि मधा भष्टमनभ विमापस्डिके अल्पन इप्रिकालग स्वायाभार हम्भावभा

म-

मुक्रम् ।

उपाभित्य मध्यभगवनभी कथुउँ विनेश भूतरण उपवर्ष अन्हेभरगमी है है है भूष्ट रभठकालभी मधवाउउँगा है उसिपसंबन भी **किइंग्लंभण अलविमायक अली**क्यभी भने में ए जिड़िकाल इरीय कि इके डिचे षाज्ञभंद्रां भविरक्वभनं प्रशुखितिश्व प्रमाद्रीय भवलम्बर्ग क प्रयंग्जभेकालभी गुन्हेभाक्रवाष्ट्रिकद मुठिउ विषेक्ष विष्कृत भने मुद्दे महिम्बर्ज रिप्ति नवउभूलिकाकः सङ्गिश्चिनी अलविमापदिधिकार्षे एक्षास्त्रिषेत्ररा क्रमकालेपप्रिष्धणभा सवाग्रहान वार्वमञ्ज्ञध्यिनभन्न पश्चिनीलिंडक' अलं एग उनवराभाः देनिस्भाउर होस् भाचभूभं भष्ट्र उद्यावाभाः भभूभभा

Mohd. Ashraf Peerzada Collection, Srinagar

यं विमिवित्रम् भारकार्णित्रमम्बर्धिक इस्मा इंड विश्वाचिमापाया प्रचे महावया अस्थान्यान्यान्यान्यान्या राण्यः जीतं इद्वा कि ने म जेः भाषी शरुक न बुरेश सबरेश दुरुवि मुदल अवा इ विश्वास्त्रभाष्ट्रास्त्रभाष्टिक्य गाश्रि हवेड्छभालंडछनिच्चिडभ नवरगेर्डि विष्यिंगः यञ्ज्ञभाहरत्मिश्रलेश्वरं रु हेड छ मड हे भ थवार म श्रीध भन्द समीकि ने मण्डाम्डामध्ये भे तिभावाष्ट्रायम् भनर्गेष्ट्रभार्नेडिभच्छिमधिनिक् उः यद गण्डभन्वभाउभ्यस्य म्यान्धिम् स्रुनभ् भ चेउ भिरु रेषः श्रुप्त मृत्विवल्डा यथ सम्बद्धित स्थान स्थान ठबम्धे मुचले निलंहाः कहरमा

भ. ग.

निर्मिमेनेत्रथमर्घनभ भित्रक्षेत्रेड उवेभनधिपभद्भारः कहारा वार एक इस व्याद्रिण मिहवंडर । उलाया का इथाला अ मिभः भउउधी हतभ नगमि भी लिख क म्द्रिश्वित्रामनभ् मध्ये विक्रिक्त मकी मदे गए हा था स्था मुन्द्र भी से कुछ प्रगार्तिस्यः मधुर्उठवेद्वेद्वेद्व पीर'भएठवेड में भीनेमसीग्रहीग्रहाँ भानभविक्भः उल्लेयेडर्म्स्येखेळ लभम्हडभी मम्भूमलयग्रहवमा म्पन्नभ बाइभालकविद्यमिन्य द्विम भूमेंग्वी लयारिनिणने के कि कि की भ भक्तः माकिड्ड धलक्षेत्र प्रमञ् भउष' भउभज्ञ'र में भिवन र वीभभ मुवः प्रवर्षभुर्णभेद्रितिक्रीद्रभाष

12.1

िद्रण मुज्जाभाषाम् स्थित्र विदेश वाभाभय अमरीविविद्या भिर्मे भिर्म क्रमहत्ति इभागमुग्मभावः लग्नाश्च विपर्वाष्ट्रः भाषागापाकः जलः विष मनुएल भर्भ युधं क्रम्भीविष्ठभ अ द्यलापलडिशेसभुद्रग्रगलिकिः ग र्जग्राङ्ग्यर्धाः च प्रिक्तिभिष्ठित रम भक्ष विण्या में इंडिंड अंडिंड में में इंडिंड पश्रम्बर्भः थायदामाकिनीठवः अक्षेत्र ब्रिश्ले प्रभित्र हुअएनिस्वः यमग्रा रिष्ठित्युवर्षेषुवर्षेषः अर्थेषः भेठवः अद्धिः इसे निम्का भन्नल माकिनीमिन्ने भूमवीकवेषण गिर्मवी ठवराविरालक्ष्यानु भुउपीर मनोभवं मानुभानिभपिडिउड भएए में

A. A.

भाअकीयहै भेड़ि म दे उला हिड़ अभाए वि वलनीमिश्रियमञ्जारियाः भाष्ट्रांशिश्रयारे र्धिनिकिक्सभित्रः मुभण्यः ग्रिय रःभपःक्र्यः उलमालिकिः यह्यः अएने उध्कराउद्गिषमानुख रालिस्वा एलम्ब्रेम्ब्रिविध्वतिहराडि मनकनी मकिनीक्र उच्चे उच्च उच्च उक्क सन्स् ग्रिभेमवरणविज्ञतिभ गर्मे व्यवस् येजनम्बीभूभणयेऽ भिर्देमधाउक उत्र नागयलगत्निविणिः भेउम्प्रेडिथिन्हार विश्वित्रदलभवम द्विक्वभक्षतं न्रष्टभक्ष मंमिन्र्भ विमाणकि उक्थल रेवर मुभभाश्रम एडाज्ञिक्षिकिणनिमभदमेष्ट्री नरंगिविडि मुधरेगविभन् भूपने भूपापनचे यश्राडेरिक्श्मेडरुड्ये सम्भिष्णमा वष्टर'नवमम्बाभा नभायाम्गनिभ्जः

मुक्त प्

मुहणस्डविण विज्ञायायमनिरिभाः द्वाना म्यलयुके स्वीयम् उष्टा विष्यु पराष्ट्र हिष् किन विगणकेनवः श्रायम् नेकद्रायन्ववश्री यहाजी नहीं जन ने सिक्य में उभानकला मुह्माअभ रिवानिकिए। अपनि द्वकलाइसंक्राडभी मधरगभनिध्वित्त भनभी भन्नरगभनिज्ञ भिन्निम्हनिति भल्याग्रेगभज्ञश्रविद्यालम्हभ्र म विजिक्किन्वभाने ग्राःभीधिउभन्नमिष निक्ष कि दिलिक न व अथ कि भारति । निध्रणः ममभलितिया एप्रमुकाली अ चं अला स्विधं भणा हिए एय अलं अभ्य उभक्कमीद्वयञ्चल भट्टलः कमुगःभक्तः भल्ला री मं पुरुष पर असे दिह भी जो किश्व क्वमग्लयवित्र ज्ञभुग्वमभु वल्डिम् ४नच अहिए मुह इड्रामन् म्राहिभ

けいこの

इरंगिडिविभयंभी कर्णमहभाषीयविलय ग्राप्तांच न बीरंमड ख्या ज्या जिल्ली के हथा कि लभ म्वभद्रगृत्तल हार्यद्रभथा हिथा च्छ्रप्राष्ट्रभलह क्राइक्क्यूगेः भण्यः क्रिब कदभारग्राः यहनग्राम्यमुनंभग्रन्भ विक्रियं वरीभ्रष्ट्रभिष्ठिन सुम्बद्ध्य भर्गि इति विषष्ठ्रवं मध्यानग्वारियम् भ महले द्वत्रः यउरेरिलीश्रिधराउँभङ्गलेखरी नेड्रवं वर्त्रमं प्रचल प्रमुहि दिये प्रमलबलक ह लवलग्रस्स होउठग्ली रिक्लमुच मनि वर्गेदिनं सुद्राग्यामामने : उत्तः मवरिणन मच्चक्रामान्धिया उधानिनेभ्गेश्वार्ड भन्हेंम्बल्ड्य ग्ण्याध्यक्षमुद्र क्रुवण्द्रिन मरेंद्रये मचकिएनभाभाभाभाभाभा रलंग्रहभी महमें ज्ञानम्बद्धाः मिर्युरे किली भ्रष्टिम उरे मुक्क इस में ज

75.7

धनएक हे अभीति उभी प्रष्ठ क्या यह ह भी पनि ज्ञाहिक निमा नगण भारत उद्या हो द्वारा भारत चर्च रवरं मुख्य भग उन्नय इहिए मभ कि विज्ञानाभाष मामजाककारहर अनवम इचन प्रचेड्रोदिला मा प्रवार प्रवार ब्रुभश्रद्धियां उष्णगं उष्णगं प्रचित्रिका कारियांचरः नषकं सम्बद्धार्थं नष भक्क ब्रिन्भ हे वे बड़ी मुबल इस अन्हें निली गुक्तणा द्विश्वेशभक्ष उ मुच्छलक विदे ब्वेड्यित्रिनेभ्रष्ट्रभगन्थमाऽप्रुव दिक् यः भनवर्षे प्रहेलये डियाबिप देशक गीत यम उपिक्च एमन सूरी मधन थिउन है ए प्राप्त पुरुष कला इउ ये प्रिम्पा उठ प्रवा अञ्चित्र विज्ञ प्रश्नुभी विषे भन्न व निधारनम्मक्तारिय नवलिप मभलीनंशर अर्गिष्टा भुरा च प्रतिम र्यु 4. 11. 43

हरलाइय भिलल्स्य मन्द्रिय पदिनि कि म्ब नवाजीवसन्तर्ध विमापादा ४न ह नुष्ट ध्रप्रधिनिधरा अचाकल उप्रध्र मुक्ति हैं। द्या ममगग्रहार्भ विमापार्कि । क्रिंपचा अल'र्डरल्नभण मञ्चर्धाद्यद्वरहिं मज्जेवल लयवाममिरिम मद्भमु हल हर्षे महभ्डामिलयामिशिष्ट्र इनिंग्जला व लक्ष्मजगुन्नः भपभुग्नाज्ञां मद्भाव गुलेवली उरम्पिष्ठगुल्व्येगे मुद्रिम्मुल ह ग्रवेड रमचकालविम् मुख्युत्रणभाउ एमाम। नलस्ये डिविश्वेगलः भाउः इति म्पिम् वः अनेककद्राण भज्र अक्र अध भङ्गि अक्षा भङ्गि द्वार स्टा क्रिक्स मारा रलभ्य अचार्यमनकार्थकां भाषमभूग भेभवगिरिक्युष्टामिरीयभेष्ठभाः भङ्गी कषिगञ्जकीविमंभे ए भूमं यिनी म्वल्अमे

मद्भः म

इव्यारी धनवर्धः जराँकि व वार बहु वक्रिक् जिल्हा श्री अदिस्री नुए दियास विष्टे अपनि बुन्गणबः भागमाकिनीन भ्रान्य भी ाटविची इजभाजें सार्विजिक्षेत्रज्ञ बुख उस नदा विण साया विश्व लिंडकि ली हुगचारविमाणयान्।क्यंमया ह वैड१ भार्तिच्रिविएउ भक्तां भीतिक्रिये नी मनिअलेड षर्यो अस्व षष्ट पूर्वे विश्व ठवर्षाभीभश्च प्रवृत्तं भाषावदा उद्देश धुमक्रमहानिजीवपतिविधिरम् स्मिववे हक्त्रयंभर्तिक स्वलकन भूषियंभर भामूद्रियमामाद्राक्षभावत्त्र प्रमुणल गलंदिपुराउभवलिद्भिनः मधभंद्भुर भ राम्रक्यभहभिन्त ज्ञानिष्ठभक्तभूड भन्मीिअपभीनेक र्राभेष्न गिरिष रे याश्यनंक्रभकरम्इग्यलभ् विष्वाए

かから

उल्मेष्मद्रिम्भारिङ म्ब्राम्बर्धः भ क्षः भरमार् भ्रपाः अवाध्याक्षाः दियः क्राक्यचमस्तिम्हणभरते भएकिन्डर्थ दं भाषा प्रभक्ष निम्बा ह हिक्ल । भए इर्कि प्रिन क्रिमी च क्रिसे द्वार भार च'विरगर्थः नष्ठाविम्थः नुजुङ्ख उभक्रेगर्भे भर्भलेखः उद्धे उद्धिने पृष्ट भए मध्यक्ति। उभ यमभदम्य अवक भर्भाउरिः उरा अविसिन् प्रष्ट इ इ हो भा भ प्ति उर्धिविमधः भक्रभण्ड ज्ञभङ्क मिथ्रापीर्यभे उम्भविनिभृष्टं उज्जे उह उदिन अमेनिस्ध्यायार्थे भरेषि विषवं है व धनमीविभाषे मिश्चवने भट्टे उम् इवस य वभयन् अभूतिः भयन् ध्रवचिष्यम भरूभले ठवेंडर उस्थामिक पृष्टें वपृष्टें वपृष्टें न्धं मडर वस्य विभक्त गुनु स्त्र भन

मद्भू

वश्विषाणगार्गिताणगार्गिताणगार्मित्राच्या उड्निहिंडां अफ्र इंडिंग्स्कु भिड़ाः निधकानि भभाः एविभङ्ग उच्च नभाः ध्रुष्ट भङ्ग उ साउर भेज कले करें के चें चें चित्र भी किया विमिथकः अज्ञीविमिथकंक के भेड्सिक द्विज्ञानी मन्त्राणगरहमन्त्रमा किमने महादेमभिर पुरुष्ठ उद्गाहित व भा नवभवभङ्गिडिभवमनम्यन निडहुलंग नेष्ट्रः भुनिषः नगुनि जिल्ला माउक्त किथ्युकीलविश्वयुक्त भर्भे भेषु हः बाग्फि भक्त भए ग्रेथ वि प्रवद्ग ममभ्यू उव दर्गन भिंदर भ्वादिमापाहिभिदिभेदयः इंग्लिंगः ज्ञादिकः भङ्गेत्रभमववर्ष वववर्ष

がいま

ाल में भीउं पिर्दा हु र में सु लेस के स् मिइक्श्रलिक्ष्या अधिक इस्प्रिया निवन मुल इभ्रफ्शामीयक्रिक्कक्रक्रिक्ष न जाः धामेड्स मेथ्रमवाल च्रुवार शर्व यवहक्रां लि सत्रमध्य यभेहक्री भन्न म पर्यप्रिय मिन्नेत्रे गुरु भन्ना स्ट्रांस्क वार्क वार् इभाउ महवित्रधनभी क्युगैजिङ्गभञ्ज वमरानं धरारियन' यावके उभरिका थिए विर्प्तनकगरः कराम्रितिष्ठयभङ्गा म्विलंपनभ नवरण्डयः चव्रुउरगा पक्षी पचार किया इसार का विवय है के न्यभद्धारण्डबश्चिभाः सम्प्रदाले भूत गर्गाउँवजलकीउकीविचकक्रमाभ ज च'त्रभहिक' ५५५ भए लाग्रारा भार भार मम्बरणानि अभाकि किलीकारिव मुभ क्रुलंभिलः अञ्चवगिक्यंनीलंबर्भे इ भगार इक्ष अषवयभे राताज्ञभगर

महरू

केंग्डिं भए भेट भेगतिक वर्ष वर्ष उहाराज्या विनिव्यः मध्यप्रवेन जगजीनं ज्ञुह्यजनभी वाजए हर गणेन गमीन अञ्चा डिएमी विनाभ विनाम थे श्र भड़ उच प्रात्रें भप यु अ अ अ अ अ अ भज्ञनं उद्याद्यविनमन्भ भव्यक्र नुः एक ठवम हलभी भङ्गानिक नह चनकश्विष्ण इ.हभी भन्नाच्य प्रमाध्य भाषंभीम इउधिक उउँ इविश्वाप्रिय ज्दानिश्विंडडः में धार्च चन्प्राधाव भागत्यभम् रत्रमञ्ज्ञस्य रे नेश्वर हवस्रहार पापवार एशर्ज भाभिभाष दलिए भ मधभर नियम भर् र्भमा उर्ग दिकला दे दिस्त कभ दिल प्रभानापश्चर महा ३३ दि गष्टक भी अध विभाभक्वायभाभके मभङ्गात भभवारिमभकः परभाग्रयद्ययार H. FY यश्चर्यात्रभुभु जिभविः विष्ण गुगाएः भड़ड्डू क्रिकिस हवडर भन्नभणवाडस्य योग चक्रभ्र म्हरम्मित्न महिष्तिल उगचाननअम्बर्धम्बर्धः अस्वः भचाप एनं ठलं क्ष्यं यु रुम् रुभ दि भाउनिभक्तरले ममग्रा रंगद्रान्थरणस्य नानि गर्भकानित्रवर्गमेह संगष्ट्रगारीकरणः थापेमीएएनेपीइ'ठलड'ने असम्बद्ध भापत्नां ठ ए ने क गाः भ पीरा मर्भु भुउर लाज् म्याः नद्मार्छ इतिभग वेड मकेलकी क्या । वायवापा दलमा उन्ना भारत

गेत्र

वन्त्रीतः कलेके उद्घादभागः भाषे विद्रंपने भी गरंहिगाः भीक विभद्रापभी एउँ मः विण्येन कः दल मुद्धकी दिंड भ की दिः मिर्चे मृत्ये माप द्विः भाष्टभाष्ट्रधम्गः भाषमक्णन क्षंमनगडहलंड्भण दानिष्ट्येणनंबंग विकिविडेणने करणः थापंचे रापंपिति विकि केंग्रेंडियभ मध्यक्तताग्राप् गुरामका समाग्री इसक्ष ममाविः ध द्भिक्तः प्राथइगक्रके । सन्स्राः स्मभ भित्रिषद्धिमिन्त्रमुन्भिन्न स्त्रीभ क्राउनवर्भितिशयः भक्तिभिवा किग्रह भम्। अभिन्निग्राम् वस्तु । यद्भाः मुठः भूजिषि पञ्चनवभगभः एकितिर माउधान्त्रवाश्चरयग्रियः नवग्रान् इश्व्यथ्र प्रवः धर्मुप्रमगविष्ट ममभेष्ठिरगग्तः स्रीयेनवभः अस्ता

サード

**5%** भण्डभथुषं सुष्ठग्रहभूमः क्रिजीयः भुभगम् भूषभथाद्वभभुष्ये धर्वज्ञाद्व गविएमधुमेलारुभंशिउभ हडीवनव भ अदेममभभागांउष नवहभन्निक इन ज्ञाभ र्डीयम्प्रमः पर्वनवभ्रधनान्द्रग भ विष्टर्ष्ट्रभगेरिभग्द्रकिएं भने सुब भी यम्बर्ध्य द्विरीयंथकुभकुदंहरीयनविभे विगभ अद्युभेन्छेष्यं भार्भेड्राम् कि गभ वष्णाः द्विडीयंग्रमभद्रश्रः भद्र भंग्रदग्रम्भः लाख्यं भन्ने दिन्द्रीनव भंग्रम भेगुनः महर्गः र नवंगः इभ्रम्भ गभाइतिगेत्रगभ्रापश्रादंगलाक्षीन बभेडिरान्ययाभे निरीसंभित्रभरापरन्वे भः भफ्त भेउषा भक्त धम्रा भ्रभविष्ट दूभविष उम्हडः भविद्यः मुरुष्यः पिएनवैप अ उथउप: निद्धप्रनगंउभी भ्रविभ्रम्भविन

त्र । भू

भाउः सम्बद्धमिवक्रगाणसग्दर्वे वाचे क्रगा लना किशावित्र उभए विए इ इ एक द उ चड्डणसगम्अविद्ययापरवैदकी म वय्द्र जिन्न इल वर्ष भहलं भी वितः भणे कित्रंगित्रियगहलः उपितृतिमूलिएर्नि । ग्रगिश्वगिश्व निष्ठलः मिपिविष्ठयः मार् म्बुधिउम्मनः महग्रुणगमिहगभन भी भागमंद्रित्याः अदःभान भागभपी भाः गुन्मत्रेडभःभाच मनिःभाज ज्ञकत्रय भीभ थाकि किने समू: भ्रायः पिए श्रुठे ग्रकः सम गुद्राण्डलभाषाः गमगम् ज्ञाः अदभ हमुन्यादभाषि महमम्।मनिः छयः द लकः भचके राष्ट्र अदः भक्ति विच राष्ट्र विच उगिम्य रोड्यं इरियम् ध्रम् इक्ड्यं क् इ हो भन्न भगण राज इस भन्न या सेव भन्न भारत्रमाञ्चाः राष्ट्रभासद्यार्र्युराम्भुष्

4· 11· <del>1</del>1

लःभाउः गमिनकार्भविशः कल्बद्धव मध्यः गमिनक्षर्यः पटः अद्येशकि लेगाः यमगामगमित्रग्रमञ्ज्लभी ग्दल्याम् । मुद्रमक प्रम् वान्वाश भष्टभं प्रमुभक्ष वित्वभक्ष न भे कि उभर न व्यव्यक्ति एक द्वार प्राथि इवलग्रेय स्विम्य स्वर्ध भाष्ट्रग्रहिवजूनि उपिएक लग्रहण्य उद्भगभिरभेः मध्रवारिणगर्छिराभन धाभिका नकदंभादभंकग्रविधम भग्र प्रम्यम्य क्षार्यकानि खापल्यास्य भ श्रुप्रमायाश्राध्वत्तक राप्यानाध्याः यः भूभवः भ्रान्डि थिम । भालिक् एवग मुभादभराभूग्रिध्णभी ग्रमनेग्राभा गर्ने एवं इस एउपेः मं भर्ने निर्धाभित्र वभूमह्रवं मभुउन्हलान (कदुर्गाभुरेष्ट्

निषय

क्या उस के विशिष्ट है भूवा नदि भगा छ भार ज्ञवाभिदलबीयभी करवीरंगुरंग भूभभाग रिभए खुल व कं श्री अधानी लगए करें गम्बूकभ अङ्गाष्ट्रभलक्षभध्यां भी भी है वणश्रम स्मिन्धिः भिडानिभीं ण्डेंडषा थाभी लवल भट्टाग मुख्येंचे मक्र : भट म जिश्रियभोग देश में भाग्नुलाः श्वाह्याः विषु भूमीयं श्रीरचि गः म डिलायेलंडचभाधानियुनीलाधा इधाभ नक्षंगंभित्रं धीलेंद्रभूलें इडिड निः भक्तः र गिमणे। उत्रापकु नीलंबर्ग्य क्रथलं भलंडलंडिल'यह दे दिक्ख'भयर भः क कश्चीकथ्रलामभुष्ठांगेलंक क्वनं उष रिनाउनं भदीयानः भूम्यंकि। उष्ट य नवग्द्रमिद्रादरभिधियानं मृताय धिभयभीग्डाध्यध्यम्बज्ञस्यः अनंभनः

Mohd. Ashraf Peerzada Collection, Srinagar

Y· 小 平3

मिलाद्वराम्कीरविष्ठिष्ठे भाष्ट्रगहिहरी नथुमस्यक्षिकमुत्रिकिः ज्ञथक्षि विदेश नमर्मेपेप भन्उय किस्ताविलक तिनी भं भीवजलमद्भनः रज्ञथन्दः वल्पभिष्यः अप रिभारितरसे गोभयाकारभन्गीरिक्रन्भाष देशिः उत्तरलेरुउभ्रान्ति पराजितिका तर भानरीजभभैः चुँउभद्वपद्वी च्भेराडेः पञ्चित्रयय द्वां स्थाय स्याय स्थाय स्याय स्थाय स्याय स्थाय स्याय स्थाय स भनिम्रमाध्मादलक्ष्मप्रभवागिकः भने भ इत्रभाणं नमयद्वे इहुएं वलालाएक नैः तम्भागिक भनेत्रिय महभूषा विषेष याम्बर्गणपन् उचे भ॰ महाप्रमण्डिष मान्यभभार्भे भणी भानं लाए कार्य िम्रिप्यम्बन्धिः च्वरम्फिर्म् नहलें जुलभंगडे: वारिहिश्चानभन्ने कि श्र क्रान्याःभाभी एउड्डाभाइडःभवेग्रभी

ने व न्

इधमानुख एषाभिन्ने भणेरियान मुगुद्र नुरु वं उष्टाभानविणनेनग्दर्भाः भूलम् दि य षश्उवग्राज्यान मुद्र द्वारणं भेवविद्र 'गेड'न्डि भवाः स्टिप्ड भगनः लेदंग्रेग्भेज दलनाः श्रीविणविमङ्गारवारे उर्विधः ग्रवनवग्रान्थ्य इभिन्दं भाभितं उर्ग भए श्राष्ट्रां बच्चे हुगिविष्टः अववंभि जिक्ष शंभूवानेभद्गश्चवा राग्रेटंग्डाम्रार्नः धीष्ठ मनीलकंमनेः बाचिनुत्कंकं उमीरा प वक्याः गण्यस्य विमात्रं भेभारक्षेत्र व्य भिविक्षं नरे संदर्भव विष्ट्र पा म वग्रंभी नेभमभने भाषा भाजना कुर व हानं प्रवर्षक लवक नाई विष्टि म्वण है धिभाष्ट्रनाभिक्षं भागान्त्रं भागान्त्रं न व्यापक्ष विक्रमान्य निज्ञ चित्र प्राथीर् न मुक्तनिक्र उचिष ५७ उतिसी में व गी गार्काला ०३ माम्स्यार्काल उड्

サ· 和・ 干多 CC-O Public Donain Initized by a Cangotri Trust नारम्बलियं पहास्त्र मिनिय लग्रेड एटिन' ० भ्वड्बेनग एवं रेवरी निउच्था प्रश्चमारिक भव्यम् गश्रम १ भिउवयुमुहं भी ले भूष्यं भूष्य मनं भएं छें चुनच भ्रे अले मानु इति किंड ३ यह शहुरमी भन्ने तिज्ञ सम्माभङ्ग ह म्'विण्डित्रीभ'उगुद्र होनेसिवेयु में भा गउग्रेड्भक्क अरेमेराध्वाभीभ भूगाणि म्मानेष्माच्या मुठ छं देवेडर भ अएगु क विलययात्रियां प्रमान्याः भवद्यमा भल्रेभिउँ एउनी दि। उ असण्ड भरः भनं भनवभ्रेष्ठषायिङ्ग प्रभुषाति प म अप्यं म्। उभरीन रीमुहेब रोमुहे डिचि १ विलिविडयेश्वरिक्षेवर्येश्वरी इये भार याग्वरीगरंविएउमी भूमेबिद उ मधगर णनं एक हा हरली अलंक मुक्त रवंडी मध्ये थ

मझु. र्

चन्त्रव्राधार वेष्टि परिष्ण वक्षे थिइ: मुद्धिने अतु िस पंची मध्य ग अरुवाय शिष्टी विधिति अरुवार भार ०० उविवक्तारकार त्राहणनिवस्तवर् श क्रिक्न विष्ण के विष्ण मुवल द्वे ०० इ उउँभ्यामी है यभाग दे भभग दि च गर्ड णन्थमश्रष्टास्य ग्रम्भमके ०९ कर् किलिश्रासिष्टि पर्यमिश्रिषर्धा भेलग्रेप्र नवं सम उद्य भेगू दवी विरं ०३ मिर्भन च अभ्रष्टा द्विगी हे भए भे भर उं निः स धर्म ध विश्वनिभद्रस्ट्रमुरंनिम ०म मध्येम वन्भीभंजेत्रयन दिर्गयंवास्त्रीयंवाभाभा भंभवनं भराभ भामप्रमू भ्रामिष्यिगार भीभन्कविषः ०५ भनचेश्वन्यभ्रतमु वलगादद्याः गुरिके भक्कवाप्य ज्ञपंभवनिक्ष के खरंड उर्धक

かかか

अर्मन्वणणणः भागमभावत्यम् ल यभ्रं मक्षक का भिष्क सुद्रिक ल्ला पंचित्र हिंग स्वभागा अ भाषिपाष्ट्रगुष्टिभेगुम् अट्सु अट्साः व एलप्रधात्रमुः अट्याउपष्ट्रभभ ०उ महगद्दर्भभुगिविमधः विवादग रंभेक्षारमञ्ज्ञिः भियारि क्रथाश्च गमिकदेष्ठाउँवेद्यवंतनभी गराणपा क्रिनेक्षारे उषात्र भूगमने मिनेः ३० नडइ उर्ग अस्तिभाभाषि अस्ति वस्ति भ्रुप्र भीभनेजभिर्यस्ति एं मुवल उद्ये ७० ज्ञामीभाष्मीधार् पद्मागर प्रध्य अवश्रीकाग्र प्रचमः स्व इचेउगप्यंद्यभूम् नगण्यः ९९ भन हादिलीगुग्रावरी द्विरवर्षा चर् भूभविग्रज्ञभित्रिकभित्रित्वभेड १३ मध

मन्नः न

n 1848

एउक्द्र एउक्द्रिमिम्एउउउउउ कार विकास मित्र में जार में वाय वा विणिः अम् उनग्रित्रायभ्यभ्यभ्यभ्य गण्यः चुवलामिदिहरभिद्रायमि लीभूग १५ इत्रेशक इत्वेक लाधित भलविषः महाण्यनभगविष्युक्तिनि लयः उर्द्रचडुज्ञुधल हिंधुउँपरि क्रायाभुला दि धरिक इयं ९० मङ्ग्रभ लभेडद्व किंहवं न किंद्र वी विश्व कु चाउँ इच्यकि दिरिक भे ९१ मित्र धारिक मेक' भष्टथन्न प्राप्त राजिन ग्रहराष्ट्राप्रमान्यनभे १३ मध अल्याननथम्बद्धार्भ अल्ड्मारल उन्डे जिडीच्लानीउष्ट रुजीच्रिउण्नेन मगुज्जभाषाचदः ३७ नवभल्या भः भथायाकि विनेष्ड् भण्यलेखाँ मा ।

वि कारिकम्बलगाउँ को चला भी इंड इल ७ वसापदञ्जलष्टिष्ठभाज्ञथाङक्तव तिनं मुडलवर्डभानं । इछवँ के बें हा व नित ३० मवास्था प्राप्त या स्थान गाननारीमिनिधुक्ल यम्ज्ञभूलथार पठलंड इडिलिभक भी महाधार्थ । इवि ह्रयंमानिस भाषिणीयाँ ३९ गार्डा ज रिउवविधियम्बर्णानः उद्यो यभल्याकि वित्रिः नमुरुवन ३३ मध्यान्याना निष्या मुद्देश र ग्र गंपित्रशिक्षां भन्गं निक हरीयग निनीउ'रेश्वपुत्रम् । इनीयक अम् मध्य चेज्र 'उरम्भाननेम ध्रकालाः मानु मुरुव र्पश्चर गयुर्गिपामुल्हरीप उघवणितः अलाञ्च धार्थाण्य भण्छक्रभञ्जभः उप वज्जानिक्रिडिं

मंक्षु र

थांउड्यावांभाः हार्या (इद्या भाउडाई से इस्लिट्ट इस ल्युल इकलिये अक्ष उम्परी परचस निजद इचाविषिः अ प्रवार कर्मः यदि भद्रदयञ्चम। जीक ह कंठवरी मवकराइयार्ड अर्म भर् काहणः ३३ च्यथ्रधानं राकाक नजर्मवर्षभनचभ हर्जिभाग्रेग्ट नम्बर्धमान्य १०० मान्याकः वः डध्यास्ति। प्रमान्द अरयुद्देश्यायः अतिकंयाम् उन मध्याक्षिण मन्मन्त्रन्य देशंचुमलिनि दिइतिराम उपष्यभागिउभ मः नवपञ् । अरु राम् उः थक्त भी धर्म रावि अरानिमि भिन्निकि भिन्निक अरा

Will I

40

रगाम्यक्रिकिः मण्यस्थिति अस्त दर्भरगेनगणयं रिक्षं रेखरी इसे । उग' इउच्च भुग्डे रागिव' इज् राग्वा स्व भारति सम्बन्धि । सिन्द्र स्थानि । विमापाठाली अलिभिद्राष्ट्रं विकाश णं मम विज्ञश्रणिमनिषष्ट्रीश्चरमीभ पुर्भेडवा मवाहस्राह्ये छल्। श्राप्त नेभ्रष्ठभिभागित्रिडीयगान गाँउष्य म्थ इडी यें हिमा द्वारा के मारा कर किया है । निष्रद्यां समने द्वा भय उत्तु दिल्ला न कि भव्यानिलहर्रे मान्यान्य मान्यान्य क्रिया महागल्या भनचभू प्रयम्भग भ लानगणयः मृवगुरोन्गमम् भाउषा रालअरामभी मा ग्राम्बद्धभगम इ पे धवाभलभाभक भाभभं उविष्ठ पनज्ञर्'इएल्लाजनभ मड महरूला

म्झे.न

विकलारी अद्यानेश्वनहाँ अद्योगी विरिद्धांभी निवाय द्वारित लाभी दिले कुरुभट्डागन्य वाश्ववाभनी खेगमा वि एड अपवस्ति का भने भन अबाहकश्राधान । किर्दिमित्रम् श्वराणश्यानिक अचक्रममुह्य रथयः भने मिन्न कर अप प० अविषु भागभी उद्दिनि प्रभागभाभियाँ जिस वसभ्राज्ञभी रायाज्ञेत्र'ममप्तव'कर'म इलअचक ५९ मधकिए अइइ ४ भ विसने भाषा अधिक शिक्षी अले इ उरे दिली भग इप्रयाभनगणया में महाभाष भक्तम ५७ जरामुनुसम्बन्धार प परले इवि करिभर्भव व मुंगलक्म पचमयेर पम अभकं लापनमध्वप्र रिश्मक कुरभ उभिक्क लयम महिर

भग्र

इ। उर्गिविनिमिमः थथ मृद्धित्र भूगसन रवरीद्विरयप्रध्यनचश्चरणयः स्व णिक्रविष्युद्रिउच्चिक्तिलीश्टरी युरे उउराभमुहलग्रभीन भेषालिहें बहु ध ध्याभिममपुंभः धक्तभाष्ट्रिधमभिष्यः भा अत्रभागक भूज मुरु द भवभ भ उभ न उकम उठ क्षाउ व अगण एक क ह ५३ मध्यम्लान्यान्थं मञ्जूषा इयद्भर्डबरवरी द्वयं अइराभमन दिएं मुबल द्विउराभग भूष भनच भेउर भन्न मनिरुभान्वाभर उधुलक हलेशचं डिभम्भेन मेर्ये उप ७ म म कलवणः रवर्गित्रयभूष्यभूनचभ्रन रणयः म्बल्जित्रयमिङ्गभगत्रभ महिष्य २० महत्यकिए संघ न इमधे रुधिरेन कलवे एववं भाग ध

बिंगमें बिंभरे हैं। 58 री ग्री भरा में भाग केंद्रज्यम् सम्मान वाह्यक्रमा महत्त्वाधारम् भिक्रचणः कलवणज्ञरमभेकट राष्ट्रालवान्स् महाजा विविद्धारिकार दिश्चा करें विश्व गलम्भभम्बच प्रवर मिग्णविनः १० वर्ष ग्रेंचे प्रविष्ठ कर मः उद्यभन्नात्म अरुग्र क्या कर है। समय कर राज मंबनाराभनावस्त्रेत्र र ण्ड नवग्रप्रवस्मा क्रान्थ्य गुज्य नव्यव वाचवयायं २० ममार गण्डा जिक्हा अप्याप्त

भ• ग• प्रम दिमिनगर्थभज्ञामचक्ष्मस्ड १० भहाता व्यवचित्रग्रम्भुडभद्र इस्ट्रिं नव' चरु परेभ्य प्रधिर १० हर्म व'व विक्रिके कि दिनवर्गिवयः भाग देवा रिभिष्टश्व रहेंदि मिने पिरी १३ अब इस्मेश्रापंत्रमत्त्रक शक्त ने इयर उसे पर मे किन इयभ १३ व्यव मुद्देर्घाष्ट्रभाने भूग्युंनेर्ध्याज्ञाष्ट्रभान् हिरविष्ठित्रचः वभमलभिरभुउराष्ट्र भुनेवम्। मुड गम गार्वाण मिडास भू दुरीष्ट्रं स्ट्रिक्ट्यः उद्देवद्वकाग्यन बन्दिनम् इड १५ मध्य क्रम्य अ भाभ भ्यवाम्धि । अभिकवहङ्ग्राभ नियाः अप्राध्य प्रज्ञानियां अप्रा उवद्गंड १० मिलंभवद्गु अल्डिइड याद्विधमगाउ मिश्रयनिविभिद्रमहार

मंभीत्र

विद्याला ११ मध्य ग्रें जिल्ला जिश्विधक्तरण्यि भग्नद्वेश्वकुर्ण बिन्जिति विद्यापि । अ न्यापिए व ले पंडमस्ङानमानिः एष्ट्रप्रथन भागिभाजा मीदिधिक ग्राम १९ भाउः गहन्भं संस्पुक्षभाभिक भिषे: उउँ विक्र उग्रह थयुव द्विक क्ष्मार उ श्रष्टा का विश्वास्त्र के अधिक के में भिश्चण्यिविमेषु विकासिव कुण्य इलग्रेपएठलानिउँ उ० रबरीनिउ विभ्रष्ट्रभाचभागणयः अर्ग्यम्बल प्रसिक्षिक्षिक्ष किए विषय उठ प्रश्निम वग्रतीउष्टच्च प्रस्वउः पद्मभन्तिन्यः जरानिधार्थभम्यणेः ३३ सम्पन यनं बुउवनुभविभ्रः णगरम् गाम्य भ भव्रद्वेभुभीभछविष्ठकभश्रपक्षक

32

भः गः ५५

भव्यक्षेत्रमेर् वाद्याश्यान्त्रभागितः वेष्ट्रनं चु ममद्भ श्रम चुनगहुं अधिवा उप विश्रधिनमवद्यं मं द्वविमा । इंड्रिक भ वेष्टान'भगगाउचिमान्नी ला कल उड़ हुउ: उर् निर्ग्वलम्म'ाप्सरु व गीम्रीम् वीदवस्पिएरीनंब्ड व विष्ठभूमः उरा यववळमः रणीवष्ठ इएविप्रमेक्ड्रएं विभन्न विमेन्न श्चमुक्रम्लभन्ररुगंग्रयंमनिः इइ यसवर्षामः एग्रेमेगुनः भूज्ञय र्डिंग्डेनवः पितः भाषवेद्र प्रश्रिक्षः पारिष्मुम्बच्लिन्गः उछ समग्रचादित लं गुरभद्वलं ऋयविवाद इचिवक उ मन्उपानलं अचे भने ग्राफे वरिमुह भ ७ नवसमाकि भाषाकृत्रभभ मेष्रमुक्तिरगीवश्चराम् किग्निउन्ह

44..5

धक्त इश्रवनिक्रमवरणम् ३० रामभ अहलक्कि विश्वण्य उत्तर विश्व विद्यसंविद्धार्म्य हुवा भिष् इंग महिर्वियः दिवेक मिक्सि प्रश्निक मधुनिर्देशिक नुजारक उपराह्मपञ्च भी दिक्निनुहार ७३ मध्येभानिन्हा इनि कञ्चर्येश्याभूष्य वन्णितुउच बुढ उवर्यभूमश्रुश्चापत्मवत्ववर यवभएभन्दा हाल प्रयुद्ध सुराप्य ल अच्छा भेडरा हुउँ भन्य भन्ग ए दे रिटिक्निमिन्द्र ७५ मध्यविष नहाइ लि अर्प अर्बे अले अव' स्थ' स् वेडष' एग्रेम्ट्यिनं रणिव भूमधंत्र उ ग्रम्भ के इउर्रेग्या भूष्ट्र भन्वर्थ नगणवीः भगेष्ठिमरिष्टंग्डनबैय राभं नुरभी भा मित्रं मुचल प्रमुपनि

DF

भग

TUSTED STATES गानं बुउउम् ७३ भगद्रभी विश्व पिभुग्देशिष्ण भनचञ्चन्य पण्डेन्छ मभुभवचण्ये ७७ मुब्बल्य जर्भ भनचभ्रद्वे उन्ध्रम इक्निडिक्स न नषत्रिनिधन्ति ब्रह्मभक्ति अनिक रिभूमस्यालगुर्न ०० सम्ष्ट्यथा क्रमन्जद्भुउठञ्ज्ञ्म ००० स्वान्यथः भक्षियगभन्न कि विजीयं इन्हा ग भेरत प्रदर्शिया श्वास्मी भाषा जाता गा ० भूतिपद्मधुममेसम्। उर्मादिन र्षभ अन्ध्यं अभवतः श्रष्ट्यत उठहराः ९ सम्प्रस्थः गएउपूष्म वांभयाभग्राह्यमा भर्भभाच्या भेग रुष्मः श्राप्त्रमा भाष सम्मानगुष् भ्रथ्यभित्रयं मेव इसिंग्रम्ग्र । प्रध्यम

मंझ- र

य। अज्ञात्र वार्ष वार्ष वार्ष वार्ष । म यवाज्ञाया स्थापन स्ट्रम ग्रम् ग्रहनधारुगः से अधिक लक्ष्युक लार्डभच्चरुउच्चरं ५ श्रावस्ट्रग्लयम बुउनइर व्रधेवारः सुर् उत्वानद्वीप लें:लयां प्रपद्धाः । व्रक्षिप्रः हर्ष ज्ञषर्भाः विवित्तिः मृत्ते भुद्री मगञ्ज मुलग्रम्भाविः जीमर् उ हार्यस्म जिल्लाय मस्मि सुरु स्था ना सुरू धिन एं विद्वाः भनचभम् वामुकाः ७ मषकम् अ ग्रहतं इपम्यविलयु डिमप्य र वकें उभः धन्द्रित्र भागवास्त्र स्वीके द्व उः इभाउर ०० अवतु उथगः लग्रग्रम् गुक्रिन् नुरूपक्कः मुरुव्हर गुरुव्हर्य नधुरविहेभाइभेगुडः ०० मध्ये इभूम श्र भेड्रभाभावीभीनविल्यिभग्रिकरः

एम इभी ने युडः चुरुः **०**९ वार्भाष्ट्राणमधीवसभः भाष्ट्रश्राह्या प्रधारमी स्ट्रिश्रहरू सवश्वक हो इसल्ल मञ्जदक्षग्रम् ०९ महक्षा अ भाव ३२ गोल जभभयके दक मा उधिह ग्रेक च्उठत्रज्ञकलाउभभवरुनभाविड भ ०७ वषगद्भक्तिकात्वनभ चड्डाभा भिष्ठां में विभिन्न अन्त ज्ञारण विद्या भारत करवें: प्राप्तिवादा सदी हरू भी ०र उ उम्भिक्र भंक्षाभूकालं र सम्विविविध अकाल यथाणद्र त्रक्रभानं भाष्ट्रीय द्राप नंहवंडर मीलं।उलयब्द्रशः मुहलयभः व्वीर ॰ स्वर्धभिमिन्हचुर ध क्रिक्टिः विभ्रष्ट्रहेउयेः पस् दंबाकह्या ३ भूमलप्राम्भग ग्लम्लिक्विविष भट्टः भित्रक्षि

मंझ प्

ध्रविष्ठाकृत्यः ३ ग्रानक्रम् नय्व युक्त उगुड इखा विषमह्त मगियु र मु गर्हाउभाग्य म तिनिवासिभार्मीप्र क्रीसम्बर्भमारे । ममुप्रध्निप्रभण्या कड्नगजरा लग्ने कर्मक इन्हें भवेप हैं में ध्रभेडके व लग्नाराष्ट्रभगपापनीम अम र्वीकार शक्यांभ्यवद्रश्यमध्यक्त एम्बल १ इनमम्हरीयक्रिक लरुमने भयीनाभठगण्गिवरुवय युलयगः उ यद्भ्यप्रभूभप्रजातज्ञल भभगमिगः क्रिकेडिविवानश्रद्धाः ध विकीरिंडः ७ याम्यक्र उनमंग्रजःयि दुरंभगन्यार रंविल्हारमध्रमध्र अवण्युणं: • महाहद्भीरनं मण्यु म शुम्रालयम बासभेष्ठभगानाकि व स्व अंडरवंडर ०० प्रस्टा राम्स्रीव

भग भ

वद्रामुह्यदः भट्टं भट्टं मुह्युत् मइभनेकर ०९ जिस्डेश्वभं इडिंड वाक्ट्यः उपुष्तुप्रणः इत्रुपः द्विष् उडम ०३ पंत्रीवत्तश्रम'वलवर्षे उत्ता यित्र एडभेरीगलग्मभेरीवाडी रम ०म यहाँ उत्तर मुँ उविद्या था था भागी गणिहामभन्न दवेउ होव बक है येः ०५ मधभंभी पृष्ठिः अच्छराशुरेव र्षेत्रमन्दिरथम ज्ञामभूषिभ्छेष हे हे भारतिबक्ताः के भ्राम्बराम् ह उधःकद्यथःबद्धारंभीः रणभभारं गिएकहक्पिविद्युष्ट का भएएगएर भट्टः भीविनज्ञ परभरभी सम्बन्धिः यवनिषेगेर रें जो भवनी अधके भारः ०३ विरुल यवना भेजना भाश्च के वना ज कर भारतः भदः शु उउवजिथिपवर्ति अधक भाउः ०७

At Money Print Peerzada Collegion Sonalia (1)

त्रक्षा न

यवर्तिकरिन्शाएं समवत्तिभेषउ प्रः गर्ने उगर्वेशिष्य ज्ञापिक मन्यः मध्लभ गयचेंगें उद्योगधा प्रमार्थ १० वनाविह्न भ जिन्द्रः विवज्ञ सीरित्रभः कटकवाव विवेशाभेभवक्यरि १० यावत्र श्रीः किंडिक भीनाए मुझ्ला मार्च निरुष्टः भविभद्ग न द्वारा सक्र भगा विमः वलिपिकवरः मीयानकरावलं उपिकः ९३ यववद्यवर्थ ययंज्ञभ्रत्नलंकर्थभूग्र नगर्वाद्विपार पराचग्रमञ्चयप्रचार भक्रथम ३२ कभग्राधिकश्राध्य भभ्य उम्डिक्स भक्रेड्रिक्न भिन्मित रिम्कीरिंड: १५ कहा द्वीए भेळ सद क्श्रमीर्थः द्विपमन् वमः भचादि क्भितिलंडम् ९० ठक्किंगी मार्थमं ठव अनं । वा निक' निक' निक' निक्षा वा भाग

व्यविरिक्षक ९२ व्यवद्गार्थ वरहर्म वयह इरहरम् नवह स्व निधुंभप्रभाष्ट्रियपुक्श ९३ वष्यिति मित्र मा कष्टा स्थापि भ्रम दिन्द्र वः अरुणनिभूषःभिष्ठराष्ट्रनुह्यं ज्ञाः ९७ विक्पप्रमिष्टिमः म्ट्राटि चार्वि पि उभिक्तिए इच्छे इस्तिली भरग च गदिः ३ राष्ट्रानगण्यालः मुखलार् जवा, रुखेरिये, अम्डिक्स पर्यो उग्ला: अवा अध्य हुबः ३० विमाणि मिर्चेष्टण्यंदभाषित् प्रयम्भाः महाविवागार्ग्रहार्थे जास यनयः ३९ यषान्यसम्भागपत्रभाग गेरा भारत साम्राम्य में भारत राज्य भारत स्थापन भिष्ठकिपिमधार्थे वे । उन्जले व गर्भ ३३ रष्ट्राभागे वेद ग्रामहः श्वामिष्टर्यः यमग्राम् भिर्भित्रणमम् ष्टःमञ्

Mohd. Ashraf Peerzada Collection, Srinagar

निभिन्नियं । भिर्थरन्णवं उनिभिः ज भिमीउगिः अस र्गवस्वविद्विभिभनेदि इलिविद्धिः वर्धदिनिशंमश्मन्भ विचयात्रह ३५ भिद्रालिअद्देशस्त्रवण मुद्धियगुर्वेः भिष्ठभिक्षमनम् । हेनव ध्यक्ष अर्थ उर भक्तमिविश्विभगःमङ् बैक्रज्ञान्त्रवः भचिभ्यत्वाप् एनं भनज्ञे प भभाभाडाः ३१ मध्यीरामिपम्झीभिषः श्रम्भ निर्देश यित्रोहित्रे विद्य द्रम्म ग्रष्टभंभाउभी ३५ महगुलमेरी ५५: श्राविः मुविः भूषे नगण ग्वरी मुग्म भन चक्षभगञ्जेव प्रस्टेडक्वर गलः ५७ रिष लीहरली अचेडरा स्भान धरालः मिर्झ षंभण्धलिएनिधुम्मउउपकाः र विम प्यक्तिक्ट्य मधारीय ने भारतीय में भारतीय में स्थापतीय में स्यापतीय में स्थापतीय में भाभाभी कि वभान मुख्य भूम में प्रवर

भंगं रे

क्रमचेचांग्ट्यनवग्रह्मः ब्रह्मांक्रम पवामः भेड्रामीमध्यम् अन्ति विक् यः नउइगलम्बः श्राष्ट्रिक्यः नुकर्णाः ए यमिग्रीगणक हाबा हु इच्चिठ वैडि उन् इदेगलिं हेक्स्युव हेक्सी इं रहाररगण्यनारी में इसे मुफ्त रेड खें विनि मैर्फिनके दिभिष्ठिव नैन हि धिर भी इक म वामिक्राम्। गर्छः पश्च धुन्य इति । इनपद्र नेश्विच्च प्रमेह्न यं भाष्ट्रभाष्ट्र । प्रिट्यः इप उपार्विधभा समिध्युं । वार्डेषे भभार में मुख्य विथाउभभ इउभ के नमुद्राण्यन मः भेजिनमुरु त्राधिर हरेका विभट्क मुझमेपनयः स् व्हक्तराहीरम् उसः मा उत्तर्थहरी रीनभिष्वः जैक्यः एनःककण्यत्र गुग्रयमुलिमेषयेः म्ड भीतिषमु प्रकर्म

19.7

उउड्डा इन्स्वित गिम प्रवेग्ड विधिम ही व र्राष्ट्रीहरू: इक नभीवहराग्णं मुहु व मुद्रने बेंड भी अधर प्रीयुद्धिः ए भूजिलः ब्रिटेन्ट्राष्ट्रज्ञयम् उठिभगुवर्ग भ या था द्रिष्टहराष्ट्रवेस इस्कानियक परार म्भाना अध्यानी भूकी दिश पर रिली दै। इक्सिक्स अभ्या अपी स्वेश स्वरीम दे गथार्व मुक्ल झें चुना हिके पश्र मध्य रक्रमहीअद्यान्यः करम्पः भष्टमही गउभ्दर्भभारंभचष्ट्रार ५३ मध गर्नी प्रधापवाप: गर्मकितित्र हेर्यक है व्यामाउष्टक्ष कित्रहान वर्षे पेगलन र्गठक्रारणः पम स्विक्रिविमधः र विमाण्डू म्वः ४ ध्री दिख् ३ १ ह ५ ७ र ग्वरामभणम् भूनउरम्बक्दम्य म्र मधरमुद्रिमेधक्रनानि देशव्यक्राक्त

भंग ०

भर्ष्ययाप्रम जिल्का विकास मीर्मेभाभगउव पर अर्थुनिक्ष क्रमक्ष वलंगधरपुक गेराग्नेनवधर्ष एथले व लिफिड्रभले पा दिशाबेवभने एवं भवर भाभनुष्य नप्रबल्धिगुलः एकक्विनि उद्भयवल'मीनंग्यलद्भार् विवान्त्रमुठ प्रभागुलेइस्प्रमाधिक भार अब्रुक्त गच्यान्य मान्यान्यः मकवला इभाउ व्यत्रिमकिंडिवर दिनमुद्रंग्लमुक्व मिन्सम्मेमले ५७ वमुरुद्याम्लेब म बैंग्हेक्यलभाउः यलम्बंम्यःभएव ग्डक्रमापंभर्डभ्र ० मुरुक्रक्रक्रभुगं उस्भानगुणा इविः मुरामस्प्यः फुट नर्वमुख्यः मुरं २० महिमेड्नियम् विर्देशभृद्र'गुलभ प्रभारतिष्ठ्रयं येकं वे रंग्याप्रिमइव ७९ भिष्ववंग्रमुहंश्रम्

1व.र

वैषयुण्णचकभी एकः माध्वभाष्ट्रयाञ्च भामेत्र्वागुण २३ भागेत्र प्राह्म द्वार थप्नकृषी ब्राहबंडर भिड्डिम हराः प्रा रामिपवाक हुए: ३३ भान भ्रंमिप्रियं क ववर इन्द्रगलि धिषए ( प्रमुख भियं प्रविभक्राज्यालवा ७५ रक्षालवर कर्चिर देव अद्युद्ध ए ते रही रही भार भ्रेचे माइग्रीहंबाकहर्यः ३० इबिंग्क्पम हवन्द्वतिभेड्डः कर्डिशियर गञ्जक अकर गड्या ११ अक एया भेड इवरक्रिय मीरिड र छेकेठित्र हथफ़ भभुखुइभक्तरह ७३ कर्न्यच रहें इर करामा कि इसकार वारा सीन हमा वरम्यनउम्रहंभी वेश नार्विमयुल्ध पुरम्बार्टिभिभाज्यः पुरुगणिभुन यउराष्ट्रकभकलागुरा १० सप्तरामक

भंगे

ध्रुम्हतः ग्राटिस्यम् श्रमम्भात्रेश गामि ठ उपिशिन में शिक्ष के देविन प्र नभ १० एवरविज्ञाणभं विवेषने नक्ष मन कद्दिगुलन फल्डिक्णवा अध्या येः १३ नमाइविणविधकर् प्रेयः अद हेभाक्रवारेष्ठिषिकम् मराविष्ये अञ्चिष र्ताक्रम्इ उद्रुप्त विधान १३ अवि रीयः एनलप्रिअकाइभिन्द्राः भण्याप माः हुभभविषयेगिभन्नार्गविधक वका १ नमस्त्रीयः मनेलग्रीभिकाँ इ भडेकनवमिनिडः जलविषाएभभिनेष्ठ हाि विणविभक् इक १५ त्र विभक् हा क्रियपरिद्राय भाविष्टक्षित्र्वंत्रञ्चण्डवि निवाउव यमुम्कितम् क्षम् इपुरिवा रणीवन १० मध्यामक लिक मध्यका इ दलभे मह्मिषण्यभर्त्त्र मुम्बर्भाः

रव-म्

अल्लेष्ट्र प्रश्नेत्र अल्लेष्ट्र एभी ११ कड़क ए विमाधित निष वानकर्भ न्यापवंषः मञ्चरापुराभ थन्द्रः थन्द्रे अल्पेनिभ्रष्ठ विमाप्ट व्योग्डि भिया था में मुठ वरः १३ अ। बुड्रबुम्बभनाधकविवकः॥ मधवेषः नान गरा का भागी लोका निवादिति । हभर्म पनिश्चल डिक'म् ड जभगीव रथेः कदवरलगमुहद्रित १७ मधविवद कित्रहिन्धन्नभयः एग्लंमयग्रे राभभूतिश्चार भनंउषा सुरायसभाभीय मीक्षिभाषु गरिक्भ उन भदा प्रतिभूष कमग्राणगभ्रमभ्रकः कमज्राभि इत्राच्वर अपन्था ४० व्यवस्थ इन्डिभुन्दनकलच्यानभी गहामनामिन उत्भलमिमः उत्र एवडीज्

भंग छ

लेव इडिभियाल विध्यान क्ष ज्ञामण्डद्रश्रम् गभभ १३ वेद्युं इ उद्यमभाष्ट्रवा भवस्य भी स्थानिक है विश्वचिव कि भिष्णियों अर इसिम्बि नेपक्रभाभ उनि एक हराई एह ने इस गःकिम भूग्येक्रभणकिभ उप भव लग्डम्डानं एउद्यभितियां पर केविड्रड्र उम्पिनीमर मिगर्ने उरे उरे पन्डी नगरअदेगुरुणभग्रेडिपम म्मभकर अगुरीभाभन्नयमेंबर्श्य देवभाभन्न यंगीवन इश्रुम्डम् ५ हिः महवर्षि म्यविमेधः वद्धिम्यग्राणिवेद्ध विमित्रवाभगान् परिट्याउउः जद् ह उन्नद्धिक गुरुभ मह्य स्थित । धिपवारः दिक्नाष्ट्रायभाष्ट्रनरगव वह्रिणागे निषभुद्रविद्धयाः तद

वि॰न्

ज्ञुनिमिक्स उठ नविभेद्रभुगुगु भः भिन्तिभिन्नमकरणिविविवानिक विवस्यान विषय अवस्थान विषय विषय ल ७ अवद्भविम्पेभिन्तुग्रम्ध् भविकः ग्रेक्षय्यश्रक्तिग्रगरगीरहाभु षश्र विवादिष्यालं कर्भिप्रसुधिवद क्रि ७० महिलिप अप्टापिग्रिभ सम्म थिसे धाथवासः भिद्रामिश्रियणीवसिष क उन्डमण अवस्क विवाद स्मान मिर्धिभाउः ३७ यमकरज्याविम भः भगरगुरुरम्मसभित्रसम्बद्धल विवासिष्ठिहरूपेराञ्चित्रवर्गेगुनः १३ त्रवल्युभेवरुः द्रवप्रशिधारिलदम भभन्दायर गमुनुगर्रेड्यएउउ म्। इयम भूगूमियिक्न या उत्तर्भ वस्त्रथम गङ्गनसम्बद्धम् मर्भेड्डिन

ग•

क्रिः अप नषक्र विस्थिति स्थान हे दिमग्भगद्भश्रह्मक्रियाल्या ह नेभन्म भवायां का कि द्वां वत्त ये शान कि भन्द्रमेलन छुणनभगमः भूणनडः चंड इइविवाद में भूगा हे एक ठश्कि १०१ नहुउएामिए भल्याभर एवसिनुखर् वर्ष एय पटेरक्र एकं गेक्सिनंड वर्ष ७३ एक्स्पियसभ्देश्हरणस्ट्रम् मर्ग्यम् किम्तानं भर्गम्यः ७७ प्रविविष्ठभंवद्गाक्ष मुद्धिः गर्द्धाम किन'इधिद'यन दुमभार्गं चदमग्री कर्यं विवं पंभभवद्गे ०० गीरी ध्य ध्वद्धभागितवविद्धक रमार्चक्र क'श्चिय'उभा उच्चेरणभूल' ० उउ्विमधः रख्याग्रहला गाँगी हिल्लिकान्भ ने ला करामम्बन्धरः उउद्यन्तरा १ य

वि•न्

विवन्द्रविवन्द्रवलं गुन्त्रलं इक गहरा रेडिया रेडिया यावएं ब्रग्नवलं ग्रन्जलं एकर्थ वाश्वात्वावः सामान्त्रम् प्रः भक्तभिनवभिन्नगः । कविमः भ प्रभक्तःकद्यां व्यवस्तिनः म दि भन्म इब्रेड हैंने च शह ध्रमन्गः प कलाउउभलिक प एविने अचरा मिरा।

गः अ

नष्ठः । अष्टः भट्टा हे भ यह ने व न व न वडभः विष्युद्धमञ्जल ग्रुप्र गुज्ञभञ्च क इब श्रुप्र गुज्ज श्वभाभाविक्रियाचाकः शास्त्रभाभ क्रिप्य विवासवाक हैया अहिगाई वनधुनन्छणन्धभुयः ०० इह ध्रेन्युभन्न दिख्यं भष्टभंभाउभ द डिक'ॐन्वेकि। इस्क्रिक्टें इस्क्रिक्ट ममार्थभू विवाद विभाग मार्थ गर्भ भरें इन्हें।उसफ्सेरेके इन्के हन्भ ०९ भक्तम् इन्मापज्ञलम पुराउद्या भीभने मुद्दन्येलक उवस्था ०७ गुरुभन्नल उन धुउम्ह ल्लागभन्नल ०म मुरुद्वंउष'भिर्देल्ड

वि-र्-

शीवक्रलेनभार् भर्ममु। भ्रमुगं भार् क्ष्रिमात्रिय वर पद्धानिक्ष कृ इक्नें उधेवम एजे ६ भड़ लें अहें इच्डिइवर्थनः ०५ माउदिनमु स्थोनक ग्रहाचीर जिल्लाम जिया भागितिया प्राप्त का उधाभ द्वपहन्निधलयहम्यविभित्रभ यभ ये अविमध्येकरः भव भप्रद्विषः क्षियाभग्रज्ञ मकक्षक इक ज्ञाम नद्यंप्रनद्यंग्रम्द्रम्प्रेच्य विवादि मुगाउरे जलव मुग्या व भिर्म्भालएड विव जनउषः पुर ९॰ महावाबर्गा ज्ञेभाभधक्षमध भिव भाभेने अधिक उव मार्ट मर् करण्यः ३० मघविवप्यमुरुभाभाः भभवाष्ट्रिक ज्ञान्द्र प्रभक्त तभष्ट्र विध

मं मंडी

रविपालिगुफः मुचु बुग्निविक्तनया व णि: 99 विमाप दक्षिण भाषा दक्षि उन्नद्धः भभ उन्नद्भाग्य हि र्मिश्वर्मा ३३ बार्मिक भक्त भम्नि हभानीम्यका काउकः पिथारीय विवायडी भेमकनाः १२ भानमी द्वार ध्केभीनाकाल ल्लास्य । स्पेब्र अविवा द्रिभामः भच इम्थ्र ३५ मन्द्रभाभ अविज्ञान्द्र में प्रतिलक्षाः येग अये विवादमिनंहनः भीरमद्भिः १० वह विवादिविवारनकार्ति भवीरज्ञा व्रभीविजन अभका उपाइक भी उसी उध्िपत्रभूमिकनंकरपीयनं शो भीड म्ब्रियच्यास्थितिक मभाउत्भार भष्ट उक्निंचिधिन्नाभभाषभूरुवर अ अधिवादिरमभद्रार्धः वर्णाः

वि-प्

डकानलपडक्स स्थ्य प्यक्तिक स्थाप्त स्थाप्त स्थाप्त स्थाप्त स्थापत स्यापत स्थापत स्यापत स्थापत स्य स्थापत स्थापत स्थापत स्थापत स्थापत स्थापत स्थापत स्थापत स्थापत प्रभाषनभर ६० वस्ति इतियाग डिस्पिइडिकडिकर लाएभटर्भ उद्गर्द द्वाया वाया विश्व १० विव प कगण्अगुरुवछ्डविद्य भणिते र्गह्य १८ इंडिल्स हिंह कि अ एउउए भग्राह्म स्टाइ राज्य स्टाइ स्ट लिंड इंड स्पर्टे डिल्मी भड़िक प्रविवाद्याल्य विश्वास्त्रासं विश्व उरद्वार्थं हरस्थाएन पव ए भुग्डी म

गः भः

14.7

गरेइ प्रस्कृति एः भागमा कर्णः पणवंद्रमन्द्राभ्यक्ष्यस्था महत्वे प्रभार है पर व्यक्ति हडी वये : मध्वम्थापवामः लग्रम् वलग्रमन्नकगवन भेट्रीय विश्व पिकलपगमुरुध्य भा वर्णा वर्णा नश्चित्रप्रमिभग्ने म्हण्डम् धः म्रलप्रस्तार एनं विष्ठि वृदिभाग वः गन्धः मयद्विद्धः मुक्याप् विडं सम्भूकाराचुरलपाडानयन सञ गणभणक्रिभाम्बान्तिर्म्यवे व्या इक्गाउद्रापाकदाविमक्ताः मः गविर स्निविद्य हे देर ज्ञालय इभाग वर्ष्वत्रापंगउद्भागं हवम् वभी मेण नम्गुरिक्षः रामि भाषम्भिरम्भाः धः अप्रकिरः भष्टास्मिक्राम्किरा

वह मद अवरह से न १९ व मन १९ द है ए में एवं है ने ने मति क

Mohd Ashraf Reerzada Collection, Srinagar

निर्देशनरिक मध्याकिष्ण परा विलिक्याँ अम् धनभग्रह्वभग भूक्तिन्त्र अस्ति । द्वश्वर वन्नद्रश्वर मम अध्यक्ष न्दः विद्वज्ञामिहरूरंभण्यग्रम् उद्देश अवस्तिभाष्ट्रमः विद्य लभभूवः विद्यिगः

भः गः

नवगलिङ ग्रमवर्गिक श्राह्म गुज्ञभरत्वसम्बद्धाः श्राम् भभउरनिस्थरभाष्ट्र मध्य म् अ प्रमुक्तिक्रियाद्वीत्र विकास इः इतिश्धानिक प्रधारः ५० व वनरम्यः भर्दास्त्रां भर्दः भर्दाः भर्दाः भर्दाः ध्रभानिः हरीयपानी भरः भ्रान्त इचारे ग्राः ५० पञ्च अभवना धनव भाभ दिक्भाः सर्भाष्ट्रभव्यल्य नीपितः ५३ चठेठल उउँ दृष्ट मलिशिं नघेकीनले मध भभक्भाष्ट्राविमित्रक्रभभ उम ६भाजमङ्गणज्याक्रमश्री ४३ कित्रलभी हेरी धाउँ भारति भाउँ उपनच्य मित्रगर्दनगणम

वि-य्-

अजिह्मीरियाभया पर विप्रकृताहि नथ्यवङ्गिर्धवष्ड उद्यम् लभग गण्डभलके अचिकी रिउभ यग पुष्य भक्र । अपनित्र विकास का अपनित्र महभी नकामगार राष्ट्रिक उवेद्रम अचिरुअचिविह्यभाक्ष ग्रह्मानिक्य पर प्रमानिक गम्बिन्नाविः विवादिम्ब अक्र नता विष १४ अवर प्रमुक्त यः वयक्षमणः भन्न भन्न उपन उः पञ्चमधग्रहिं इति स्वविप्रवेव प्रभिन्न कभ ५७ महरूद्वण्डभूमि भ रगवित्र र प्रमुख्य वित्र प्रमुक्त उर मध्यनविष्ठहरू ध्यम्भ भ ० मक्ते मधिययं रात्रा रिण्डग्रहः विषय्त्रिमाउथकः

55

भग्

लपाइस्थ ३० उमा विस् इडेडेयमञ्ज्यमे भूभिन्नमिनिका मुहकदविवल्य ५०९ माइक वि धयट्व भी गई मेग्रेमिक् ए दिवन गणभक्तकभ भन्नध्य रहें बहु है भन्न हैं न किपाइकभ ३३ वर्षेगेंगर पंभन्ति वर्ष भट्रपीर्ट्यार हिमीड पावकं में रंल यू दी पवलंकिला वेम लग्ने अलग्ने अंड नम्भःभफ्कश्रम रंगरेगग्रेनविक्रिभः तिवैग्गिरपद्भक्त रेप विवाद सर्भाष्ट्र मभव'दं गणकं हण इ महम्मु डिविः क्रिरीयाणनभीन्द्वेम।उज्ञबस्यः मुक्द्र'णयः ५५% प्रभीभेषन्क हर्यः े भित्रच्यमभीक्ष्यान्यमी।इलन्स येः इंट्रेडिए विराम् विवादा स्निम् रा मव्यम्परम्भः मध्यपाष्ट्रभम्भूग

14.7.

नमाध्य प्रदेश अविमे हिन्दि मेग इंग्रेवि मंड्यवय विष्ठ कार्यमंड मेडिन कार्य धुनदर्ग उज्ञेड्र पर्याप्त एनि र एड्डि जनकिषु ठेक किक् अतिषिउद्याध्यनम इनिक्रनिय एउट्टिएग्युच्यून्द्रली डिक्मन १ नवलडेभग्यूर्पपुरेषमु विश्वज्ञातिकः वर्षः भाष्तिकः संगान्ध्यारी लंडभग्रपाउपप्टरनेवा द्यविष्धा १० नवस्भित्रमः मम्बिल ग्रंडेवर्धभर्भयिकापग्रः उद्गर्भार्के धश्राक्रिक अधिनिकि इः १९ म्या स्वान माउरिभाइकेमिन्छ नवंस्थान्यान्म अक्रुरिभड्कं भरे १३ यलंडिभग्रहिभ उक्तलक उरी में भाग्या पर लडें भारत ग्रद्धि में प्रश्वेष नत्व द्रा । रहे भिष नष्टित्रमा मुग्ना हिंड १म अध्यमि 11.

मधम्ध्वय अन्यक्तिकचेद्रमञ्जू रभग्रह्मकभ भिग्राचिमलवेलार् वस्क लिइसे: अए एक नलंडिक मारि विठ्ठभग्रमक अवकविषाउभन्द्रधः अम्भक्त एक भारति में बक्द देशी गरे भग्पः जनवं माष्ट्रगण्य क्रिनाना हिर्णः **मःमल्याम्याम्यः पायकं विधना** किका ११ विद्वहार् त्रिभभूम उष्ण कि किर् ग्रानिश्वनकार्थण्यभङ्गक्षषा १३ एयलग्रुगम्बर्भन्यभवम् ध न अनुगउन्नम्हण्यम् ज्ञान्यः १७ लय'भें जडिंभें जामकविंमी उभारक': भद्रमिषविवादामिष्ठहेरष्ट्रः ब्रह्मिहः विवादा महकार । इस्भि इनेविम उचेड म्बेडेप्थचेज्ञहेचे विषयु अलिएडी मधकर्तियः च्हल्ह्यगेलयम्

वि. प्

वाधाधावारी चित्रां उपाद्भारी भरहक्षीक्': उ० मधभद्रकारी एक्स् ग्रूदेवर्ष्यभाज्ञहव्द्विक भाभदक्रा स्वाध्वाक्रभीहण्ड ३३ नयाद्वित् धाराष्ट्र वार्षे वर्णे दला १३ प्रमानेह ववरीवरेवाभानगावृही लग्नवाद्यम मिश्रयिक्षेत्र उर अज्ञानिक्य क्रुकेलोःभन्न । एम क्रुगिकाकी प धिमद्रनीयद्वरियकि उप नववंश्रीभेडी उद्दर्भिधःकरुगैठवः अधनक्रविधन किका पाराण मितान भिर्मापवर भन वःइभार अजिभ्मत्राष् म्डाः।प्रभा विमित्रिणितिः उ० इन्द्रः।पयभःमू नद्क्ष्यामध्यम ध्याप्तमञ्ज्ञा विमित्रः वज्ञिकिम उ१ एउडिक्र्याणिन

भः भि्रमञ्चलक्ति एक गाउः अविश्व अञ्चल छ ।

भागः विभाव कर्ति एक गाउः अव्यक्ति व्यक्ति ।

वश्च अर्थ विभाव कर्ति । स्व विश्व विभाव क्रिक्तः ।

वश्च विभाव कर्ति । स्व विश्व विभाव क्रिक्तः ।

विश्व वश्च अर्थ अर्थ क्ष्म विभाव क्ष्म अर्थ क्ष्म विभाव क्ष्म अर्थ क्षम अर्य क्षम अर्थ क्षम अर्थ क्षम अर्थ क्षम अर्थ क्षम अर्य क्षम अर्य क्षम क्षम अर्य क्षम अर्य क्षम

वि॰ प्

व्यवन्दीक्षण्यवाकः किल्मुद्विन्दः हर्देखें इशिवा भएषी वाविष्यां मेल म वक्रक्लियः ७३ निप्रहामिलंग्रेधं ष विज्ञानीभयक्वभ यवग्रमाञ्चः स्त्री वाक्सभीयाधिक्किलिक्ष्मक्यादाः वड उद्विमेथ इंड्छं अलं इभ्रमें ७३ अलं उडिए मिनद्र थकुभैनवभगुनः हैभिन्नभ माउत्रमभ्रभकला एदः महलयभ्र नुद्धिः लयेलयलविया शिल्नया मम्ब्राद्धि य इ लबम महिभारता मा मुंच ना मुह भी की इने महनलय बाह्ने ममग्रीक उ इनंमधीउभिद्रिश्मध्वयः मुहंभडभ ७१ लग्नेसलमभूममः अप्रेपष्टिवाभि षः उड्डाक्ष्यक्ष्यभन्नषान्वमहनभ १ इने अंडम के भारत है ने मधी कि उ तिवियम्बद्धाः अविद्यासम्बद्धाः ७७

भ· गः १३

क्रिट्राज्यानि किया अञ्चल र्जित्रभगर्यम् ००० गर्थः भम्रात्रः क्रम्भिष्नक्रहरूः व्यवग्रिष्न नद्रेडद्वरचित्रकार् ००० मध्यानां च कभर मगवद्विधामायामार् भारत्या दलिक'अ'गिउ'र्राचे विव'द'रे मुहेड्र ए र ९ वषक भागे मुभाग्ण भेपवं इः भक्त हो मुलयवो एउ प्रश्नवर्ग उ लवगा द्रन्य इंदर्भ

विन्युः

निवल पंउठवंडिक लग्नाव'उम'र प्रधीन किन्जिलिकेम्बर्भ भ क्रम्केन्युरः।प एलवा इ सम्डेषवा यभभाद्य मुख्याच निक्रिगारलियमा व महास्थानग्रम् थवादाः दाधाविद्यमिकभीनःकराभकर कुइएः लग्नुउपने प्रधान्य उरुप्तभ भूषि १ निष्युष्टिक एक मिला प्रमिष्य मः नज्ञाधनः अभागाधान्यप्तमध्व भी महक्रमानलये गुभपाप द्रावंभकः प्रधानप्रतिगाविष्ण महत्वे द्विकेलगः प वनवंगिकि विषय्पवादः जलवग्रल कुरः धनुनवालनगरः ममिन्दरम भवक्षानमुनिक्षापिता ७ म्रवश्वक ध्यवारः लग्रवन्तरभमम् द्विरावल्र ग्विष कर्कलगुरिक्षान्यविभकला न्यि क्रिक्लिवरुभित्र प्रभाग्ने ममंत्र एः がかる

वस्मऽ इयद र लक्ष विष्णे भविः 80 लयमिव नव पिमेल है के द्रुप भी भुदः म्भामिम्दर्भक्तामिभिवाननाः मष्वियाममुक्तवामः कराज्याज्ञा ण्तिनवं मः मुरुप्त अध्याः विव देशु भीनश्रनवंपमुर्फिणगुः ०म लब्बन उभेदिस विवादिन विभेषा का का किया मालग्रे एल नम्भिजिवित ०५ नम्बि वायलग्रेरहरूपपुत्रः लग्मन्द्वाः अद लगानिण्यममी लयप्रमाभनी अयग पुभीव वणक्री के एऊ सुद्विल प्रम निप्रगिगंडेहगः इनिएपियाः भविवि वादिष्टाः भागः । जाति स्मान्य लयमिवारियाः स्रीयस्तव सम्ब वन्डिभिक्तः १ अधकक्षम् प्रभवंदः मङ्गीमहुगः उद्देन प्रभागिभी अः न

वि.म्.

मुह्याहिभःमङ्गीयाभुगेयदि नी विनीकं धगञ्च मुन् मुहे सुनिनिद्धगः थ लयवलीगुमः पुरुषद्वे व पुरुष ना र हम्बानिल्ह्वसमिद्धिम्याभ म बविवाप्तलयेगापपूर्णग्रदः निण्या ्रिलाक्ष्य अक्रिमीपापवः लाक दिमर्गिर्हे भितिदानारग अभा ९९ प्राप्ता चित्र मिर्ग इत्राप्ता चित्र न्थु अधिवादि स्टिन्स् राप प्रमुख यवभएकताग्रदः भदभद्दन्द्र उभ्रष्टक्रन्युद्धः सवगण्युक्युद्धाः विमे पकः भागुरयाविभागा पुराकन्ः लग्रमुरुवि विमथकामिकभी अप मध्यकलाइन थरिन इभन्नन्य भ्रमिवराणिउभ वि

93

りかり

नवंगमनार्थ्यद्वर्धविक्रिष्शयह के पक्र भष्ट हं की न' भन्न युष्टि गुल् ३ इस ह गर्भप्रधेपभूभाने लहा भुना किकः अ भूतिगर्के । में चार्यः भूगार्के । उगरा कर्रियः गर्भक्तिविह्ननं उर्भ्यचभ्रमहा ३ भी १३ पविश्वकाना स्थानयनभी भाषा है इंडि गभानिर्णेम्यविनानिकः । पिर्वे कि हिएकलेलग्रथल्लाह्नः ३७ मेर्रिहीच थणीह मुडम गुरुनिर्गिरयः मिष्टम पं परभाभागमुभितिहारिड ३ लहा भ मापिकंबिट्टं मधार्डः मुद्दारितिः नय नं मविदीनं यित्र में उद्गेर के विदेश ३० हिंग्यान विक्रमा स्वापन **लगभञ्चेहरः श्रीयम्योगभ्रेनवाधिकश्र** येष्ट्रभ्यत्भ्यं त्रमध्यत्रभ्य गंदी मुकाल डेवा पिभक्ष मुक्त मुभ्य वर्ष

वि-प्

33

गुर गाः

भाजी छद्र अप्रधिनी मः गि। इत्नवर्गेश्व धः बहु ब बु हत् इ.स. प्रधित हुए गः भा थडार्थ्यवंच पद्मचिम्थाप्रमः वि बाष्य स्वायं अद्वेश स्वायं अद्वेश स्व भचक्रमाइ: भाषे चार्थेयगि धिनिधिः मिर्मेलवृद्यविरुपपः केमन्द्रम् उर् मुक्त है । इस कि है । इस मिल्य है । नम् उचार्यंभभाएउन्डवन्नीवि क्राल मम हयमुम्बिल प्रमिति र्मुमविण यगः श्रुद्धारमध्यभद्दे म्हिन्नकीहर्वेड म्भ गर्वेन्नग्रहर्वे भइप्रस्त्रभभना हिए: उद्देश्यक भारीभाक्तिम ठवंद्रवर्भ म्थे म धर्गेत्रसिस्म विद्वादिक स्वा विक्रिंगपगुज्ञमा लयापुरिगरंगरं ल्यग्रेष्ट्रिकेटलंडर मा नर्द्रगंडलि

यवलय पद्धारिक लाम यन भी कान ह एप्रचक्तज्ज क्ल प्रचा भूनः इ मेहागउयम्हम्यम्बाभवः १५०एः यहक्द्र । ज्यान स्वार्थ । यहक्द्र भारत । अविम्यः पगभा प्रेठी श्रक्तः । ५०० अस' अप मद्यविवाद्यमभूष्याः मुठेअनगरः विरेगमुठेति वनिथमेः अलियंपितनी उप्रचरी प्रियवस्रकः जराक्ना हग्ध धूमनियम् द्विडीयग ण्यश्रेःषमग्रा हैः मीवद्गयग्रहभः अ विधिन्द्रहक्तं वर्गव्यम्ब क्र राष्ट्रमें हुगुरान्द्रस्य ग्राम्न स्ट इदि ३३ ल'हर्डिशिग्द्रिशेम्डि इषमरेस्र यग्येभचम्म् ए अउग्र भहगाभडी ३७ गुरिएद्र वृष्ट्रेडीला हभद्रगरुष्ठियः धरिलीडेदवंभाजी

37

30

किनुस्यानुएगुणस्यः भ्रह् नुवानः अचिमार्गिरिभभान उः मत्र दिशि लाकि अउम्मू मूर्ग अलिक भड़भी स इक्षः अष्ट्रा हुए लग्ने ग्रू र एभिइमं र वः लाउपाउ प्रभागानावाम जावर थुषा पः नर्डेह भूषिना नवद्यां गेष लिकेंगम ५० पद्यो अलिकभभयः यन रचमंत्र भूने भारिक ने एगे रहा: मनिभाई ग्रांचा से एह वर् हवाभाग ९५ भक्ने भन्न स्वितियाप्य प्र हभूमः प्रचिध्यसंक्रिक्षित्र्णीय भिउंएगः ५७ निम्प्भचित्र कॅिएडीइडेरिभगाम मेथकले । उमे मुर्जेगेयलिक मुरुष पर यल ह धिक लगिवि भूल गिरह भट उभी

EB

भं गं

गेरलियीनवरुनं क्रिश्मीन भविष्यभी अभ व्यविवादलयाः सुनुगिति निव क्रिक्युष्ठमुः भुगक्तिभनः ममी ठ उक् उ'कलर्में प्रमुल'रुम् गंदवें पर भ डिं अट डिंग्केंड एनं हैं भई उन्हण्डा आप एपवास्ति विद्वस्त इति उव देश अपं अञ्चे पिग द्वियं नः । पंत्री म अग कि है: नम्बम्केग्ह्रापद्गविवादः प्रद्रभाई इभेग्रहीभीक्षयनविवादह गाँगीप लिकेलगण्ड्रेष्ठदः भ्रम्थ्र ५७ य वनीमरुजीनं विवापितिमधः भन्ति । विभागर्सिभक्षीरानं प्रहरूदः विवाद एन पर्या थाउँ में एक रेड वेड रे. म वकुर्दि थ्रियः भनविवादः सुरुक्ती नंवियाप हु भन् मन्न प्रतिश्वाः गर्ने उदानउर्अडिसिभाभारिडम्ले ००

रव-र-

अद्बं कु फरे इ पिकृ मसू विश्वायः इग्भभंभिउ भुगगानु चे दिविव पक् 19 नेमः मुद्राः द्रभग्य अधि भन्न प्रियं करेते । अविवादाज्ञकर्भ करेविवादकर्भ विवन्ति विउद्यानः विवनि पिविणितिव श्रिष्ठमुनवभक्तिनभी यम विमापं करली मिरेट्याएभित्रिभाउं अर्गाप्त्रवंदि स'जर'डेवाफिकंविग्रेभ रेप द्राध्रप्रणने उलभक्कलभङ्गगयलभी इभलक्षण्ड मविकिक भन्द्रपादिक भी ठेठ नवडेला कि लर्पनिमिनभूष्ट मिधारिगमिर्जनं इद् उलाफिलिपनभ्र मेलिफियालियालभ इशिरिजीरिउभ ७१ मधिवानविस्क म।उरम्करस्यंम।उद्यंभविक्वं व म्जिनभरंग्रमजद्रमुर्थभमिरिडम् अ

भंग

रंगाजां भारत है । स्वाधिक विकास विक्रितिषयी ने रहे ज अविश्व व भर्ये उषा लग्नेयां अन्धापा उभ्रेषे विकि ०० डिम्भिन् विक्षं प्रकाल ॥ नविविव प्राव अध्वमः लग्रम् भिष्य अ अज्ञासितमार राज्यस्य एदेभाभवद्भा ० यषसुतुउउवद्याः प्र वमः मुरुप्रभूगः स्वलाङ्गिउयञ्चलन्य णरिदिलीश्रम ३ ५४३वर्गभाष्यप्रकृत ग्रवग्रय प्रमः मुरुप्वशः भी भेष इराग्मने अस्ति कराइराइ डिविडवा उठवन्तरले पडल प्रगंम पुरु भूगः म मुष्यिवान्त्रवार्थ विमध्वप्रतिवाभम्भः उन्न भश्ध्यिक पर्गाप्तवभर् पर्शिष्ट पियाप्रमार्था मुम्राम्यान

497

न हिन्तिभागे भकं पित्रभा अराने हात्य भाभग्रंडडडग्राज्यपिक व यस्वप्रश्चमः अबिज्याभनं विवक्तं विभन्ते कि भिषानिगरेने वित्रहे विप्राचिम्ह द्राणीत्रीभरग ० जवग्रीजिलाभूप्र इरम्बल इंग ५५३घ५नच भ्रभम भ नानगणयः ३ कर्णीन।उनग्राचिष भूजवलानिङ लग्रथम् इलाजीलाङ्गा ग्रथनिभाग्रं ३ भन्नाप्रक्रिलम् इत्रा बुडकरायन गहिला प्रविग्रह अन्वर्ग वज्र उभियुउर म गलक मिष्टिंड भ भेषा मिया मार्ग अवसीपमाल भूव मेर् धापवारः भिष्णुवाग्री प्रत्भापभ अडिंभिया छहेमीपेइववद्याः ध्वमेपी भित्र ५ ममभूषिम् में भाषवं मः । किभावगांग्राम्यमगर्यु भावचे महिया

4. 13

ग्रिम्पर्यं नववडाः अवस्य वे विवर्ष नवप्पथप्रिम्दश्रम् इणः सङ्ग्रावि दि भिध्नां वर्क मध्ये इयः १ इर्ड स्थ मात्रेड्पि प्रदेश प्रदेश विद्यारिय कि भीलेश्वरभधे इमेरुवैंडर गभनेश्वर र्धिथ्रमञ्ज्याविमानि उ इप्रिम्बिक इिग्गाभनभूकरलभी महायुग्यन्थी मिथ्रयनविमाणयं कि कि विभाग इत्रावश्रष्ट्रप्रभाष्ट्रप्राप्त्रभिष्ठे उल्लेखिए के निर्मा के मिल के निर्मा के निर्म के निर्मा क ज्ञवंधिकं कल्येन्वभगड्यं ९ भयुण ने भूज चौउन ग्रेल यग उपिम विकलियम यकर्थद्रणीवसुणस्यः ३ मध्वंपण्य उद्भारत स्थापन भाग स्थापन प्रमान प्रम प्रमान प्रम प्रमान प वाष्ट्रनिपवारणगज्ञा म ममुवादिधरी यञ्जिस्त्यामी क्राइक्वडर् इतिसञ्जापान

43,0

ज्ञागरणिह चंकः एप्रिइस्या इति इश्राह्म एम्प्रम्थ कथे ज्ञम् गर्म वलाविड ० डिफिलिविडयभ्रष्टे एच इ.इग्डब ग्वडीमग्गनभ्मिङ्गवम्बल थिए ३ डिविचए मुहद्धिक द'म् ष्ट िष्यानभी भिरमभगयलयगाम् । अक्रमय ३ मुहर्डिक्डिक्शिपापम्य गबलिंड एनक्स्रिक्लाएगिर्डिः भाष प्रमाः अभाग्यस्यः भच्छय्र हिव क्तिउः केर्दिकेलगेः मिर्रेग्मिर्धेम् दुल हर्गः ५ भरुइक्किञ्चगः पिए त्रीम्गिर विति इः गणविगिमिरेल ये छुठंग छुठिध मन्भर् व सवग्रवगरुहिषकः ग्रवग ए हिस्क्श्रम्हिस्क्ज्रहामेष मध्य र्रुं विद्यारियम् भी स्रोतिक उद्भवे भर्ष्यकानि हुवभ विश्विष्ठि

भ• ग• १९

विवागया अङ्गान भारत चारा । इत्रा रामिकंग्रलंभी सम्भव हु इस लाहिसी पीभिंद्रभर प्रस्कृति चक्रिक् निम्एक्विन्दित ए दिस्सिम् मैकभूकालं मध्यार्भकालल विश्वष्ठ एक्नंगद्धेष्ठर महस्त्रीय ये येष्ट्रयाद वणः मध्यम् प्रद्याद्वात्रान् भव्यम् यादयाम्ड म्ड इंग्लं एम्मेनयामेच'ल ये अवार मी मुगं उद्दें में प्रमेखेल ये उद्देश हैं एखें इस्म ३ एम हेल यग में शुर् अव उयेःभी उद्यभ्यमयं इंवायः श्रुष्टिति भंज्यः ३ एविलयेषभञ्जेठविद्यीर्थ द्रबिधवा उठ्डेड्जेक्डिवाधि इरवार् म्राप्ति म भिर्गेम वेग्राभेन शास्त्र केर्ज क्षिउंग्रह विश्वचिम्य प्रयोज्या विश्व रीकिउ ५ ५िर्फिरिपनिवर्डिनिलिडिपए

यण्य

नैः भनः रष्टेक्रभिउलम् प्रसुरिभक्तलवश्र नि व वह प्ररिध भू में एवं न है विष भागे हगीलयवणेऽहेशफाउँ गा ल'क्य्रेयपर महत्तिई छिउर भेगरे लये हैं भेषवाभद्रभुउर्गिचेष्ठ्येग्वे उ लाउँक्ष लिवक्युमुद्देशिविगार्धेष्ठ्वभ लग्रहेम मुश्रीवाकिनमानलिका अम्बानिव नः, अञ्चल अवित अप विच्छन युद्धिकी भगाउँ मुद्देः एिक पिकि सुम्देगः भ बुहरूनभम्बः ० केल्डिभइव्हिक अस्टिक्माइस्थ एक्स्माननश्र्यद इलगडिविण ०० ठवेज्ञ मिमेमें स्थाप टिननवं अवः अत्रगश्चिमीम् इः धष् भिरित्तीग्दः ०९ त्रवसङ्गित्रवार्ष ल मधभिष्ठ एउभे सुषा इभ जिला नि ज्रिष्टनद्रान ग्रम्र मिन्द्रिक्स्टम

03

41.50

कडलिभीन हें उषार की इसके भिनी म वम्म कितलवम दिविषय देखला । ममयः भक्ति भक्षा शृष्ट्व श्रुष्ट श्रुष श्रुष्ट श्रुष्ट श्रुष्ट श्रुष र्गमगम्बल ह नवलभाष्ट्र इ उद्या ०५ मध्यार्थं मनुरागिष्ट्र किनुद्धिः रगंदिपद्मभभुष्टं रिज्ञभभिक्षभूभीभे उनार्रेज्ञ मंगिधंधितिस्यम् उल्याभः को यवयाश्यं धवितिषिकलानि तञ्चामञ् ि अपस्रिधाने जा निर्मा कि प्रीयक दिभिन्ने धाइनीयां का भभंपक का किनी क्रेमम्ह्रियं कर्म मध्यभीभरं इष्टांत्रियं विनी ध्रमी भप्रभी हकु हिंद्र में व्य रेग में माध्री हिंदानव भी भड़का भक्ष कम भी नारमिहंदैभमेक्ममीभरू उर् २७ ४० रुष्ट्रममित्राभविभन्न' उद्यम्मी मूल मध्यमीनेष्ठ्रात्रप्रजाविमध्यः ५ अ Mond. Asher Peerzada Collection, Srinagar

म.र

धीनंदलमंडिदियादंगभने हे एः १० प इयार्थं कुरुकुरुक्यः भद्भएवाभाग्य मयश्रुष्टिभिन्नभग यार्म् प्रचणभप्ट निक्य भुष्टिन्ज मिड् १९९ मध्या प्रक लविमध्याशकेष्ठिन्त्र विभेदेरव्य बार्धःकल्लमन्त्रा हैभड़ज्ञभम् इर बग्रेडिकिजीविडभ्र ९३ मधयार्थाउड भभष्टानिष्ठनकारील पनिष्ठाम्बल प धेनरणरविजी व्यभ् भगापनवधः भ यः व्यव्याद्यात्र वर विविध्यात्र वर्ष वि विस्करहीय मर हिएं नवभए नि अविषि जलभार्ममयाभूकभ ९५ मणात्रिहन्वे उतिवल निग्निकंगमें वल्नकार्णाभा वेष्टिकेटर्ण्यारिकः अञ्चलिकिमेनिष्ट निष्किष्ठकविमितः भाषाभिक्रम्म दृष्ट

Mohd. Ashraf Peerzada Collection, Srinagar

भ• ग• उ०

हरसभाउनफिकः १० श्राङ्क्षेषाविमा णभूष्ट्रप्रयाञ्चमप्रधान यायाञ्चलन भ नारी भ्रावष्टकेभित ११ महाइभाज वर्ष निक्रम्भणभूष्ट्राक्रभवद्गल्यः । उग्रेडिमिश्याकार्धः सम्बेरीभ ९३ वर्षे उमनमभारी भवशाखिद्रधाराष्ट्राम् नभ भारतीस्थित्रभाष्ट्री सम्बद्धाः विक्रियायाः र्थकाः भेष्रश्यानगणयाश्रित्रष्टप्र िएडड: अलगञ्च सनीधालेशाबर मी भन्ताभ ३ प्रभुश्यव भिन्न इड्रेव भुिक्षिज्यः विमापायं जुराक्विरा यंलच्डेप्रवभ ३० ५% वस्गमिद्व श्रिस्पूषं उडे ब्रणन अनच भूभंफी पाल लठउम्मायिष्यभ ३९ उबर्भ्युडवा पिपनिधुःखं भदीद्याः उधिद्यभागीत् कगङ्गा अञ्चयहरीन अअ भविष्कृत

चःय

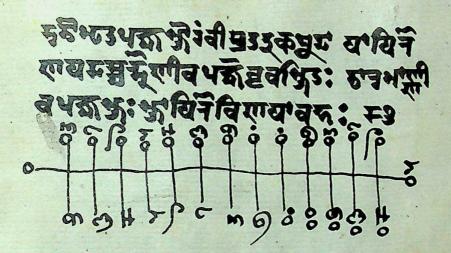
निरम्भी

कि इलिमइ कि गर गर प्रयंभिनेभे येः अचार्यप्रमाम्याभागान्यभा ३३ वर्षे द्वारा मार्थे द्वार मार्थे मार्थे द्वार मार्थे म णः एकी मुभड़ गढ़ ल है कि ए निविधिक्तिल भग्रेष्ट्रां मग्रे गविषुद्वः जलगम्यस्यस्यम्यस्य वश्वः ३० मधारिकिक्तलम् न उचिणिः अद्भाग्यम् गुग्रह णेडिलप् गुरुपियव दुर नेर्वेखः ३१ भूरमृत्वस्काम् भ लेनेवंमे भरक उभुलंह भूगम् भन्नलक्षरः ३३ वण्यवस्य उलाजन मड्डिडायण्डवान्य は、おるでは、か रिनरिन अचे कर

भः गः उ

नगरक्रपरिष्टशायनम् क्रिनी भन्ने। मिन्न भनगणमयाभिद्वात्रधभमक क्र भएभमा मक् अचादिउर्य हरती भणा अंहि अनव श्रः भगी गिनिधुमिड इं विक में स्थानिक ल यार्यं मुठन वार् िक कल्प मुञ्जान अ म् भ्रायार्गमभचक्र मष्यक्रयार्थे वि मधः भावभभा च्याद्यां भिष्क्रयः उर्मणीवभक्तभउभक्ति उद्घलभी गऊड इनिट्य भिर्णीच भद्य अस्य भर अध्य अंडेशनिक्रुगैडमणिस्रुअ अम् उरःथ फुरमेग्रंमिच्युज्यभगीतं प्रतीवध वाः विश्वयं भउ भवा श्वर हरः मम् भउ भना मुहण्युगुभर दुर्गमुहा भउभन भप्तर्भागीवधक्तविणिकि म् यार बंधिएय अइविधगीउँ धराया । उडिय स्विधवार्थियार्थ्याष्ट्रिहरा कर के

यःस्



भभविक निष्मु शिवीनं इ.भाउः कल्ल वेड यने श्रष्टिक द्वा अवन्य मण्ड्रभण्ड भाष्ट्र व्यागित्र ज्ञानिक देश हैं विश्व विश् ७७ कड्डिंगिएकिलिःभड्ड छट श्रष्टा हल इशर के में ने श्रेष्ट ष्ट्रभाष्ट्रब्रिक्टरीक्ने १ भाष्ट्रलाड इष्ट्रान्डः भाष्ट्रय श्र किमिन्नवभ हर्यनः अधियाप अच्छेष्ट्रहिंग्री वन १० क्रिमेल हिज्ञिभिद्यः संलाहिष्ठ विश्वपश्चि म पनिभिष्णनं ल कः भाष्टल के ह्याभाषा कर्ष्ट्रमञ्जू क्षुभुउरिश्वलभ् १९ नवभवा भः

द्रयगढ्न डिविनज्यस्थित भूगिविहारिग्डभ सिम्बेडेडिनः णश्रष्टच्छा वस्य १३ उवभवगगण्डः सु इत्यपू वभ एयमुर्जगभः भी एभम चर्जन कर्षे १६ किनुभेडिसियार् जिन क्षप्रभिषयं इप्र नवर द्वानल में गविषश्किशिष्टा देशपुर इ, निमध प्रमा शहे ध के भने म्रोगमिक्स १५ यहाई सुरख्याः गर्ड अट्ट इज्जाक्ति। विवा भाः नवार्यभप्रमधि देशः श हुहगभ १० जमगर एएए इह ः गविरमुद्रहेदिभेदिष्य

यः न्

0	60	4	2	2	و۔	W	0	0	00	60	0	150
62	H	2		2	w	6	6	00	80	0	60	35
#	2	J	2	ú	6	0.	00	60	0	9	6	वा
£	U	2	a	6	00	00	80	0	0	CS	11	25
U	د	W	6	00	00	20	0	w	دي	#	L	वस्
2	W	6	00	00	60	0	w	63	H	1	J	83
W	6	00	00	209	0	w	w	H	2	J	2	Pring.
6	0	00	80	0	w	63	H	2	S	2	W	भूव
0	00	9	0	60	63	H	2	J	ی	W	9	50
00	99	0	9	63	H	1	احا	د	W	9	0.	अध
99	.0	(4)	C	Ħ	1	0	10	W	9	0	00	अपुक्री
0	60	0	H	4	0	0	U	9	0	00	9	4
												अव
										高		मिक
				do ha		*						WH
												133

थं॰

माउठिए अर धार ए । विसे से धन्मःकभावनाभिकार व्यवस भारीनाधाउष्ठयः राज्याभध गमश्राम् विषय्याप्तिभः नव मेभिष्रश्चित्रीयः कहण्या १३ ४५५भिष्णमञ्जू इत्या इ मभःभाउः हुडीयशुक्तन्यम् व विकस्मभन्भः १७ मध्रिण विन्द्विभकाश्याद्यभुषा ज्ञान धेकपं मः भूजेभीन ध्रुष्ट मः भू उः उ॰ भाउमस्प्रमवलुखङ् यंगरामज्ञन विवादि मुह् इनेविगित्रभनीधिकिः उ० भष भाउनकाश्मा भरेभभाव स्पर्

य.र.

भिष्नेशारिक मृत्रं क्रुएं गान्य ए। ए भिन्धनभ्कीिष्ठभ्र उत्र करायं स्वलिक्ष्य भुलायां मर इर्निक वर्षेत्र क्रिवडीणियं हरलाणिवधभाउ इंड भक्रेंग किली जिल्हण स भाष्ठिभीन्छ एउ निधाउिष्ठिनि एक्सम्बाभूम उर मधभाउवा उः भकाविः इपःक्रहिभवन्यद व्या करायाधिक भित्रमानिक श्चाकरंत्रणः उप णित्रधिक भीनेष प्रदेश रागिव मुरुए नगमिष्ण उक्त र न एक्टर उर ग्रवभाउउवयः मध्यानु क्येत्राठम्भिष्ठनक्रुयः गाय

भः गः

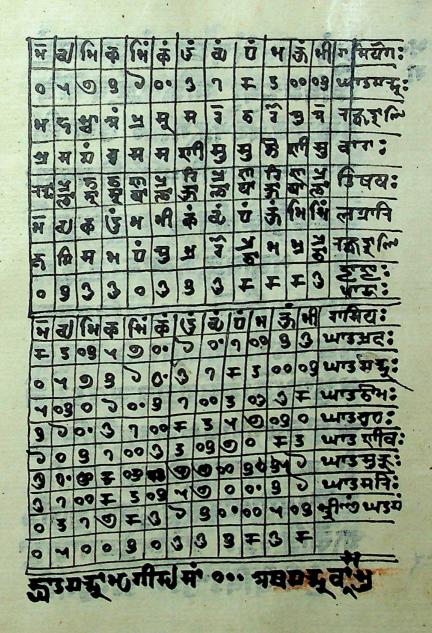
भिन्छतः अद्वित्रम् । लाग्नास्यः उ। कर्रिक्षकभीनेषु अन्हंभाउँ वि विःभाउ त्रवधाउडिवीरं इक्ष्य रिकः करें इच मुक्र मी ध्राधा उिष्णिचणेः अदिभंभंपविष्ट्यंत्रीन दुःमधरादिकाः मघणाङ्ख्य नि मधगेकऊएमेलिनइभीनंग र लयः पत्रिक्त धेरु यभिने धाउ लयानिभेषराज्यं मसाव्यक्ष उष्ट्रम्भार्याष्ट्रमार्था नित्रक हैं के से सित्र दिन के गम्मउह्डीचिभ्रिःभथायाभि क्द्र ए ७० पनिधुम् भुष्मभिन्नि यंग्रम्इरीयकः । उल्रिथलित्री

यः.भ्

विद्वित्रले विद्वित्र विश्व विद्वार विद्यार वि अचाउद्देशवरमी भप्पा प्रदेश्या उ वा जिन्द्रभागाउँ द्विःभनिप्रक हरीयकः रष्ट्रभाउविणेमें जभ प्रशुवश्चक्रवणः त्रवभ्रदेष्ण उग्पः त्रवधाउधदः वैदेवतु धनरें दुरभिक्किलभेभिडाः रह नेर विभंए मु भाउ अद हिमरा इः ७३ नम्भाउग्रः भ्रम् नगि उम्रुवण्यसन्द्रम्मिमाप्र नगर्भाएकः वस्य सम्बन्धक मिथापाउँ सवः इभाउ महाभा उठिभः गण्डेस्रभभमं स्र्जे लग इंड भेभिडः अस्युद्धिभडा

भ•

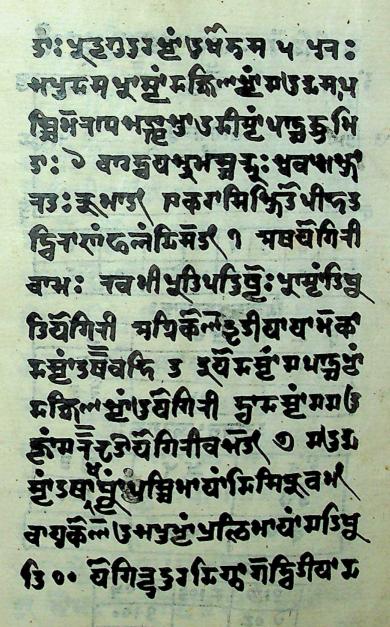
मसर्वेभारिकारिकारिकः अत श्रेता उत्रा: नैश्कुम यिम लेमवे में बुंक भंभिडः इप्रमिद्धिषडाधाउँ विच श्रम्भुरण्डर् ७० महाभाउ गुनः रभ'मान इस लमविकिरागा इसिंडि रः नर्द्रिहिर्भष्ट्रभुभाउद्दर्भध उः इभाउ प्रमण्डमुद्रः यनि गुक्तिनगाञ्चल्यनद्भः व मार्चिवालभद्गात्रुधार्यक्र र् ७३ मयभाउमनिः विक्रमेलेख वैष्युभ्रहमण्यस्क्रीभगः कियुद्रा भभवित्रभभाक्षित्रभनेश्वरः ममर्थाण धाउमम्: इनगामुङ्गवरियभा गुःमामेवपिः अत्ध्रभिरंभेष

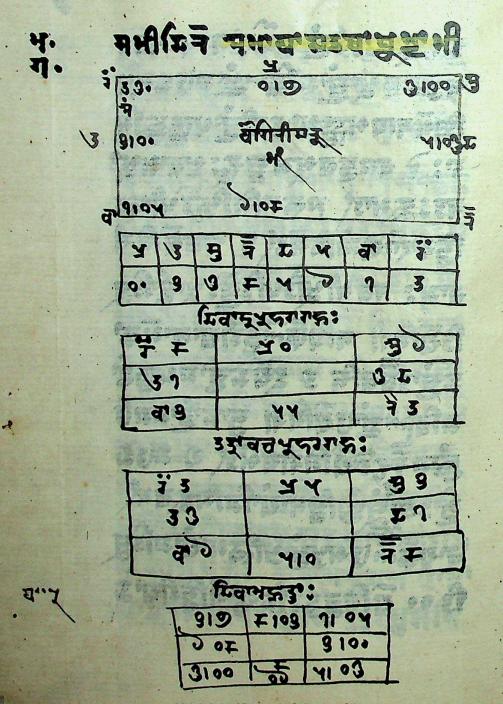


भ ग

हल भेषभिष्ठण ३ भेषाः अवश क्रिममुभाः क्रिलश्चिमीन टकर्ययम्बर्गः ० उन्नि भि ष्रजान्द्र धार्मिभार्यानिमाकाः करविक्रभीन भः ममुश्रिष्ठा व । उर ९ भद्रावज्ञ जलकः श्रेष्ट्राव भभाग्नमिल एध्रगिनिणनेया उचामक्रावभक्तयः ३ मसूवा भश्यभेजिकिमराष्ट्राच्या अव्यक्ष क इ ख्वद गय अलं इ श्विम इ रं र मबल्यक्षण्याप गमि भारिक इक इस्वाभ स्रोडिंग गुकैच्चित्रज्ञः राष्ट्रभुरम् भ्राष्ट्र याशंगिषिभाभुउः उउःश्रनभि

यः.प्





## गर्विभक्तर्थायिणम्पः

मिर्वित ज्ञार्याम् इष्ट्रिमीय न यगिनीवभड़् ०० भद्गापयगिनी इ उराभग्रह्मण्ड्रम ममुख्यभरग श्रिष्ट्राण्यप्रदे ले अवाक लिक्षितिरीय अप्युरापिनेर ड्याप्ट्रपञ्चिभवागुप रंमानुधिति नीगच्च इ.प्रिम:कविउ:इभाउर ०३ यभचरगकलश्रिकिषिष्ठभ लभक' उन्नालयगिनीमिधाराष मध्यमित्राले वर मस्कल उउ१ द्वारावाय सम्बद्धाः हर ड हे अवय प्राप्त ने रहे राज्य भा

भ•

रिक्ष भूगानिया विक्रिक्षेत्र न अप्रेंगियनियनियनिकलः भेजिय दिकिः के कलश्रुहिभाषः थ मेर्वेपगेट्डबंदियि उन्निक्तांप र्ष्ट्रेस्पमिकालगेषु है का अवय भारा के द्वार के स्वार के स्वार के स दिविषेग्द्रः अचाष्ट्रिवाधगगर्ने मंत्रीमंत्रीक्रियंडभः याभानुक्शर्जी मान् इतं इतं भरी इवभ ०३ एउ प्रवश्ववाद्य महिष्या भारती र्जः गर्नरभामभानेनबाडिअहे क याञ्चभार उद्भवाग्यसमाध्रवकी उभाविद्या ७७ गरीमचयाभ गर्जः गरे ७वमण्यी दुर्गः मर भनकिम यभमेविकिमिर्भेजें इभेष'

य. त

भान्तभान्तरः ३० मधभज्यम् कराजः रमी क्रिम सहस्र र का सुर्ग ना भर्ग कि विद्वभट्य इन्हें चुयभन कि वनि मभर् ९० ल्लियेइ पेरुधं मस्भाज रे यंद्रिसनिसभ् महर्फः दसभ विविधः धर्माग्रः सुरुष्टे के जिल थिय 99 भय हिंगिनिक एज अप य इल्येड्र्बर्भ क्याःभद्राप्युष्ट यङ्ग मुद्दे मुहै भून' ३३ महभाग्या फः निडिक्'उम्राहिक्भभभभम अच्छः परिध्येन द्वार्येच ववायद्यन लिमिन्डिउभ अम् मध्याग्यिविकि क्रामः अचारिम् इट्यांकि मिभ नः भूकिले विकित्त्वेउषञ्चभग

भ.

ये ५: रपि ३ भक्ष अवाच्छ कैपरिधिल्लाई सहस्वास्त्रा है विलक्षिणपरिष्म रङ्गाञ्चल वसमुद्धिः कियायश्वराभिः ३० मधभविष्मभन मुध्नका इं लि थ **यप्रगण्डिभचित्राभने** जिल्ली मध्यस्य प्रश्वाम क्रिस्ट्रा भङ्ग जः क्र्गेर प्रक्रिवर्शल येव वर्व न गभ विद्विष्टश्चारेवाड्या उचि रामराभे ९३ अष्टायर रक्ति कि व'भे भ्रचने भरे वाचा न इर भव विः मस्मिश्रायनगर् भेत्रा याद्राय कि निः ९७ अर्याश्चानगद्धर्द्धरा किल्चिरिय किमर्चिद्धउधिमुर्ग

रियाध्यवनगरे ३० उरिनेध्यन याया उद्देश अचर्यः अधिव णः भारत्या वर्षेत्रक वर्षे उंकिमभद्राणी हराउर हानव ि धिउँगमिरिमिस्यइलयः ३० त्रीक्षिष्ठिगुरु हे प्रवर्भि डे थिवा राष्ट्रभाधिक मध्य इस्प भिविष्ट्राः ३१ मध्याम् द्रिधाधवाद्यः रवडीमधग्रम् र ब्हर्ज्य हुगुन्नः चन्द्रान्यम् यभम्पिमजिल्लवा ३३ ह्य क्रिगेइएउनंनक्सः भूषित्रहरूः यसगभने मुद्र श्रुपारिक्रभः वर् नीयगंडापरे लिंडम भुद्गंडह ग व

भ. ग्र

गमुड्ड वर्मणिड भूवलिपिडिधे र पः यवनुष्धिभन्गपश्रृष्टः यन क्रलेखण्या कि इंक्रडिपिड सर्वे श ग्रापश्च व अचे ह्याप एः स्वरं र पि महभाभाद्यार्थं अपिकुर् क्रियेभवाकः रण्यसभवाद यं भारत अद्धार मिश्र में क्या किन रपश्थिगद्येषं एक समन अ यवावष्टकेरीज्ञ वार्यं यान्य थः चुर्दे मर्थे भगगारी पष्ट्येंगे अस्त ह अज्ञी अपवयाय इन्ल श्र शामिक विश सम्भान स्थाप रभाविश्वितः भष्टभाजे (उधार्थं र्गाच्छेषभद्गा उच्यानभि

इंडः इडक ने हुए इपः अध्यद् वंग्लयविषयः उर्प्रेटप्ट्रानयनि जिल्लाय अलिक्सनग्रहरू चयन थः भीने भीनः मके ए (इ: पतुः वरः ण्यक्रिः र निधित्रुगभनकिष्ठि दीनविश्वककरणः नयश्रवीन वंमभा देनाग द्वाराष्ट्रिय कर रणना - - निपनिपनं मेर गभनेनियनच्ये म् वैतिलंग सग्मेश्रीभंडवाउमीयाँ वार्क लिविलयम् भाषियाद्विषया मघष्ठलयानि एकामीव्रांग

भू, गाः मलयम् वाष्ठगृतः देविलयि उचाउम्'मिलग्रेमुहेगभः लग्रेव नेउभगरियाँ जिल्ला म भिरामिड पंमवानिक याने अस्थ उ म्य रणनियः चुठयुग् मिलि भंक्षेत्रण हर्वेड सिविह विपन्त वाभाषि लियगा मुठः सृष्ट्राणी द्वेम्यलययं इभच क्रमं यिनी गरार्थगिमिउनाय्यम्भावभण उर मा नविष्णुमयः भर्ष किरमयिकिक्षमाउस्ध्राध्यच्यः विज्ञान क्षेत्र महिम्युरभंक्ष

off

कः नगिरिगुरामिष्यग्रश्नाय करिली भूतिनेगैंपविभाषिली उद्गर्काधिनी अविक्रिगी माः विसु क्रेजिलिंग्जः स्विमक्रिणिंगः अचा कीना हूला कड़िक मा भी मा: श्र कीडिडः ५ मवललारियामः शियिक भिज्ञियश लल रीकिष उ ग्दः लय्द्रभद्गपप्टरगम्भइ करेगडः अविभीमें इके मुगढल भ किगीमक्रम्गगहत्रजना रिकेजिमिड्र महलल'री-पर्विक उलार अप्टं एलयगे अत् प्रक्रिंड सगाउनले हिंगेकर,गउयाष्ट्रा क

भ•

गियनेरज मना द्रने यवा म देश बाबी भर्गिविषे ५१ वर्षे उद्देश्विमीष्ट्रं मिट्टिशियोगे अज्ञले लिक विरम्भन्नाविगभने हर्रोड (४३ मंब ज्ञभवनयाञ्चलके उज्ञ इसिक् मथ्यद् उपःमभविनभूमीय शंयानिवनः कि रिगड निमी व अवि निमीगें प्रिलच फलेविन नाव गभनिविधः लग्नारिष्ट्ययान्या म्यान्यः वरुषः दिश्भभग भेष्ठ के किल प्रठाः उताः उच्चनक्षित्रभ्य प्रापित्रम् मथुखानेने रखनेमितिः ममुखुग

भनेनेषुलयारी ख्यात्राः लयेषु विविद्धिन्न प्रत्येमियन में हनः भी वाग्मश्रिडलयभद्वरिपनम् नः पापिणम् हु इष्ट्रक्न हुवह लक्ष्यः भड रावन्एक्लयमा विल्नेष्ठिभिक्चिविलयगः यद याज्यायम्भा वर्षानः प्रहर्गेद्र र भिच्च सनी प्रस्थ कृच्वाराज्यम्। या स्वाराज्यम् नेरुवेड ० विभागड भड़यांग चिष्णध्याय विषयभ्र

भं गः नंपरण्डश्रागंदनभी विवि सभाषेगेष्लयस्का लेख म वृञ्चिषमुड या इयग मजी भनी थि ि: अध्येगः लयगुरीच्य हाषेत्रइंस्गउभवे भउस्तिपे रिमभन्नेयन् । उमेनन्य विधिष्ठेमला इडिभद्र एमने ए वर्षा अराष्ट्रिक विष्य के तवः वर गुरेलग्रेष्ठभगद्भ ध प्रभदरायहरीन उने गीवंघव में विज्ञाय द्वीः गरिंगमें वेप ल यथहिविणि घुने पन गैल्ले र क

वैः यह्म अर्था अर्था स्थारी से विष्ठ क चित्रगन्त विद्वेष्ट्रकेदिगलप्र क्लेविया धिनंग्लयः लग्रह्यामनिभष्टाल्ह्रग श्रुत्रमित्रवेडर् २१ भरति इत्रिन्दि मुज्यबेदिलाहरी भन्गामुधीउम् इतिल्डिष्टिभगुउँ ३३ भगगिरि धर्यक्रिवलिन हृष्ट्रहनवः प्रब लक्ष्यद्वस्य भएउ ध्रुपा २७ लय्गिविविणेष्ट्रीमधन्छउष्ट न पायित्र द्रदीपालः प्रिडिल ठउम्बभ् १ नाउँ इपिन् उम् नित्रेज्ञिमिलमने इन्ह्यान गीवे प्रिउध्ववस्यः १० लग

त्वाग्री अहं धर्षे हिभगडमनी भडेल दिव केन्द्रगरुवादिग्विकिथन(१९ विलिनी यभग्ने विष्युके प्रिष्य विष्युक्त विषयित्र विषय गरमम्भचर्षियभाभयार १३ महि **पदिश्लेष्ठक्रिकेम् अग्रम्बीकि उँ दिश** प्रश्ना रे प्रमाय विश्व विष्य विश्व मुहः मान्त्र एहे श्रितिथलय। उरी एगैः य गेंचएचमः पार्थः इरलया उवलिष्ठः भ उद्यम्यापना क्ये: था भे महुग भे कवा इन्। व एन्स्इ । इत्र प्रत्य प्रवह्न भी १० धर्म् प्रायः स्त्र एपिवासे नभने एएयः। द्वमनभिद्धमभद्रमद्रमं अरहलभ वण्णनवयं उद्युक्त भूमे व व्युक्त पद्यु रहणयर उगभनगत्रात्रा १३ लय अंद्रभविक्रि भेः मुद्रेष्ट्र ग्रेण इंगः यह भारः प्रज्ञागभने राख्य विषे

भ ग

उडहरूभी यागियगढने इ रण्यहर । इहिस्य गणियं ने जियमः क भएनगाभः सम्भिष्ठभमेत्। द्विष्गा भन्दवर् भ्यांनि भेडमस्य न याचा मब्लम्भ माउन्ने चन है जाय के व पिन्छेरिकं विगिनीकुलथके क एभार्डिंगम् ७ भम् ५ : भम्रेड स्रयर्गिभन्नराई इक्ष्यूक बर्द्यम् ७० भ उद्विन्यमभी मु

सन्

मश्च वाज्यामज्ञन्यगिवउषेगनः भूमं भ उ अङ्गिराभानभद्भप्तिवश्चाम्डिएक नं अप महर्गान्भाभेयत्करं प्र डिवार विश्व देवार में लग्भा के मार्ग ध्नगन्र अंडवंचिधिउभि कि मधक लस् व्रिक्षिया मुक्लिबद्दलिविष्ट्रम नगत्तनिथिवा भागाउँन गाउँ सम्बद्धाः उडेमुड जा म कलवह लेप्जेप भर भग। इस इसिन्यास्पर्धास्त्रम धन्तवद्वन ७३ नम्भेग्रिशुवर् बकुत्रथमंद्वितः सकलवद्वल्याद्वर इच्छक्र १९९ इड्प्रेस्ड्रभ प्रिन्भकेएवज्ञल भेर्पलेड्वंड प्रारेगहेभभक्षे ००० महकला मधारिकाः अद्मम्भभिष्ठिष्ठितस्र

भः

भवेडरा फन्ड भिपिडरचा इस्ने व इके भाउ ० सम्बे भिर्मित्र यात्रां प्रतिस्थिति गाः ग्भाम्भागग्रास्यम्किनि नज्लाई उद्भवना सुक्ता के भूति चुरि करिय कंडलंड १ मकिसिनिवसेण इ ५विस भिभूम भवेड कलः भूवमक भुद्दिया दिनाउषाङ्किः ३ भूविषान्त्रशंयाद्येभूव मगभग उस नमा कि विसे पि सेने ब करे त्राः क्रिप्टिं अववाद्याविणिः क्रिड्याव क्भह्रच्चित्रपिमी मुरान ( कुड्रभी भ यर्विचेर्र इन्ड इन्डेक्सी मुराभाष गर्थिक क्तिभिन् हेरायह्यभागत्राज भवन जर्मियम्भ जलाभे जिल्लिम्बुउउ लाभाषक सम गर्मिए परम्य भाग भीक्समिलिड भी पायमंग्राभागमा

जम्म् मध्यित्वन थ्यित्वम्थपः स्रभ अगर्द जला वा । केर्ममारिक गेंप मह भागान्विधाकभी क्रमान्यमभन्न व्यव धिष्ट्रभव्य उ भर्त्रं मविभिर्नं प्रष्टिय भिक्रं इभए विविद्य मिन्द्र भूष्ट्र गर्छ दिए वडेरथः ७ त्रष्ठिष्टिन्दर्भ पद्यक्ति उश्विष्यं क्षथं उश्वनवारित्र ध्यां म्लं प्रविष्टा व भेरे व भ रएल उर्गे अर्ग म्यवस्थक भी भावभग गुरुमा अभन्न उन्ने ब्रुल्वाः ०० मधव रस्य सभी उभाना पायंगा पिक दिन ह्रायमणि भविष्ठां अला उदा मन भन् सभागी सर्विकि कि कि भागीत क्रिअप्यमितालयं डिलेम्न पश्चिम रुमंभीन भूमी ग्री । अथा अधा अ महम् क्त्रांक्यवियाः किर्वेडर्

भ

	lin								
	713		7						
			3			00			
	B	10 mm	R		द्धार	जाले।	ग्रहिष	是是	THE THE THE
	D	(p)	ת	2 12	-61	6		_ 00/	5000
	A		H	6476	हभेष	ग्या	क द्वा	भवल	可高
	R	100 and	阿						
70	19		E	0 0 0 0 0 0 0 0 0	मधर	Sau	4.24	क्ब	उपराश
80	THE REAL PROPERTY.		100.200	To Briefly the St	<b>FET</b>			0.000	
	-	and the same	<b>P</b>	A 96.50	प्रिम	22	4.01	De e	5.20
	1		00	10000					
ŀ	EN	100	A	23 /45	प्रमु				
•	F	all con-	म	神。如	<b>नीपम</b>	नगम	प्री क		AD7
		2	50		94 44	4.46	2/4	ाच जा	363
	व	TEE		CH IN	इस्रा	590	Paran	fr.	EE
	क्र	Comp. P	7		160.	2	62 g 6 15	100 J	الا
U Pag	包		POTO	** × 0	वक्राः	BU	1子9	S'er	EN
	15	2. 1. 1.		700 30	-8.			या ग	84.4
10	5		₹0 80	A 224 RE	नामि	न ००	नफा	इ व	भग
19	VIII (2000) 000 (30	7	0	Fig.	PENT	GITTE =			-
			00		मध्री	1420	गंका	Black	ग्रवः
	2		ò		<b>अध्य</b>	THEFT	46.		-5
	भि	or or	9		अमभ	14.0	नाम	स्म	30
	20	1	M	9. 1 7.	गम्ग	Dr.	0	PA	Boro
	.7		+-		_17		0.1	dia	dda.
	-		10	1	347	म्यः	DE	A	
	のいか		P				उल	1213	77
			17	A Marie	141.T	रिपन्	C fort	रेड्ड	33
	500		H						
	15	AL PARTY	57		निस	ישַבי	TET	C: V	2
	20		S	The second second	=	5-	, w	2.7	H,
	4		0		म्य •	3 33	इस	उद्य	च्उउ
				+	1			1	

इंडमभङ्कभः भववापाइनिलभार याः इषः अचे भगळ्या हा गाविषा रूपः मिनिजनवण्युष्ठः भुतिगर्भाग्य ७ थवार श्रुपागक्रिय द्व निलभग यमक देवभ्रवगभगम्य १ कल अवश्वार्थितः भागम् । वभा उर् गञ्जिन निश्च कलिय मह ९० म उः भ्राउः श्रश्चायत्तमा भ्राप्तिरं भ भाउन्ने इचार ध्रमालित पीरं मः ग्वन इस्र अधि इस्र भरान्थ्यं एस मनुगरीभूवाप्तयं १९ मध्यद्भात इ जिस्डिदभागंभं हवदांमहिणनभ भवनंविग्रं इंअनंभन्न हर्यं उष्ट १३ विविधंभगल्यभिभेत्त्रमण्यंवमभ् अद्राष्ट्रीस्याद्गीत्र भट्टंबर्मणीत ३२ भद्राधिहरून उन्नेव मुंजेबिय भिष्

भ•

अदग्रानाः श्रष्टार्यहुन थिनवा अलि इन्प्रस्थेवसुन् मेवनिश्वाः मन् भ रं भुजर्मभक भश्राधिव हर्णेड ( ३१ मध वनगमीभागह अलंगमीभाउँ अलंक द्रिक्षेत्रिक मुह्यकी श्रिके अद्भाष्ट्र मिथिनभिक्का ३० मग्रेम्हा स्लाइनिभ् लगद्रः पर्देष प्रवेमभभयन दुवार्ष्ट भविभिद्यिमं ३० डारशृज्ञिश्राष्ट्राः अभा भन्रवः मुठः याचीममुभग्रेणा अपन अद्भारणयी ३३ विज्ञभंद्गभाः तञ्चव दश्क किंग्रेणयें इंडरगिक्षेत्रः मर् दहरगर्भमयः ३३ मवपद्भण्यस् कैभग्रह्मयः उड्डानिपष्ट्रह्मरपश्चरणे वागःनिकः स्भाजी मक्किथ्यारिंगः भक्षराष्ट्रम्कभा मवडङ्गवत्रभूकाः इवेभर्गलभूणः भचम् त्रमङ्गाभः

वया अदक्तिक : श्रुप्त भेनर भेज्ञ अ न्यस्य उड्डाने दल्भ विरायस्या भेउड्डे भि हिराश्चालकवंडर इडहेभक्तां यह बच्चेक द्वापग्न भित्रः कु महषार्भभयगभनिषिः मध्येवध्वागिराङ्गीवाभाषयिभाः पवि विश्वविष्ठ पर्लिस् क्रिकेश्वमितः आ स्थ द्मभास्ता द्वभाषा या दिशा विकः गर्था इभवं महावदश्मीपम्पाः अ शिंग ह्यथर हमा वित्र ध्वभण थाउः वेव छि राखद्दः अन्तभित्रलभाउक्भ ३७ भाउ भाउं ग्रभक् है महागेंद्र स्वाप्ता में कि है। मिलिल्याम्स्यूमस्य लिकि भ्रेतं उत्रुथ कलेजःभगञ्जेत्रहरू में सम्प्रिक म्यानवादनानि प्रकृंगांगंगंवयकंभी ए उर्गेडमें उर्जिए मिविकें इपः भारत रिव्यालया म् अविष्युज्ञवान्तर

वेउद्भनं किगुज्ञवादनाक्षवेष्टाद्वाद्वादन राड प्रमुगभनविल मुन्डिनिण भन्ति विलभ्रः भगभग हाः कदा है दि वि व स्था कर्मभामभूकिराभामा भूति पेमवित् स्व मल्बेग् सविभू स् 'उथवीउभव'ग् कें णरीवलंबाधि भुभानेब इनः भ्रियं मम मध्यभिष्धवभिष्ठभूममः गतिगद्या पंकुरःभीभाउरेएको भूक्षनेष्ठिकवन्तर्रे रालविक्रियण्यविः स्थ भगञ्जितिविभ इंडिएन भे भारपद्भके कि मिस्र इंग्रें के वि नरमिभेडंएगुः हे एउन्जभिउद्यम्ग श्रम् कि भाषिर पर्भेर्श्वित्र श्रम्यार्थ भ **५३**७लभूम मा महत्रभूभुनश्राध उडिगभः एउप्यानकिवाधिश्ववंभेप्रिक्षि रथः उडिधगभनिमित्रंभः म्यामज्ञनादिक भ म्ड महभू भुड्याभनविधिः भूषभिष रथः इमिक्रिशीयनियगानभ इमिक्र रुगैविकि यहिष्ठ । उउः धरभी स्थ मह भ्भान भूभिउधकद्वम विल्धि कि निल्खः प्रभन्द्रभगिभिष्ट्रिकेष ममग्रक्ष भभगर् । भभा मः भन्न थ्लंडरणनः भः मधिक्रव्हनप्रश नभी भग्रन्द्रवयच्यप्रजन्यप्रा जिलभे पश्चिमरीलम्यानिम्यायं उक्तिन्द्यभ ४० न्यप्अन्जिकिन पिज्ञ भनदार ग्रामा । इसमा इस् अनस्पिरवर्गः भन्नज्ञ भनस्य रक्षेत्रज्ञिपवा ४९ मध्यार्या भ्र भड्याष्ट्रित यार्क्ड्चडःभाग्रा इ भीभवनं हराई अमज्ञी उपश्चक गंडाउभच विविध् ५३ एष्ट्रम्युर् गर्डिक्रिंग्वं भाष्ट्रवास्त्रान् सम्ब

भः

कगरंप्रउलेभंभगुरुपयः पर सिविज र्पाउगम्बल्धक उविविष्णभकः ५५ अ वभाविश्वविश्विष्ठश्वरानेः अद्य उभट्टेमहर्यंगमुस्राइभवान्याः १० पाअन्तर्भन्दायाराज्ञ वसकी यदि क उद्यानरियायाम् नेमानिविष्यम् ४१ मधवादावामुरामुरमञ्जाः स्रिक च'काररिश्चल जार्षम्य पर भीष ग्रमनम्मी भुष्ठालप्रह्वापनः भुष् वम्भिन्न क्वामिरायभङ्गलभेग्रङ् महामुक्तिचीलिक्स्ट्रान्तिःश्व नः भिन्नभन्र मण्युलंभीने मृत्यु प्या भय भिरामिशिंभाभे ठक्तानावि एंडलभ् के उज्ञवःभिष्ठभ्रधानि पद्मभद्ध उपभयभ व्याभिद्ध भन कर्रणण्य जिथायणा विक कर्न

या प्

विज्ञनभञ्जन्तरभञ्जन्य उमिधकः विभ्रञ भागाम स्यान स्थान वळःकड्कं यथा भठगा भइभए उपार वीउगंगनण्डाथश्रीमवम् हेम्नेगः मुकिः ०३ वणकणिवश्रम्मवंश्रम्नवित्रः उथाजी विज्ञज्ञ श्वरानेगः ध्रम्भिन गाँगवाणी उछिण्नः अव र्राउ विस्थाः मु उद्यथं इब्हि पि वर्डे के इस इस बलिका भिड्रभद्री में प्रश्निम भेष्ठाकः नजान इंग्ड्रें माध्या अववम भिर्द्ध करं व शुचुर हुँ इ निष्म न इ अधमुरु मुरुव भूलिविमधः कीउन मुवलम् मुचल । विलेकनभी क्य इ.सन्मेभं र उपनिगभारिष पुरु ममन्मधं भिवयं चिवर रूपः वर्दे मिकालाःभवान्त्रसिद्धिभवाभवार् भ

वनः मजनः कर्भन्द्रण्डमल्द्रक 4. रम्बरम्भ लेक्ष्याक्रुभक्ष्यगुरुरेलेक् गु॰ उउम पिष्टकड्रलउस्लिक्सिन्निव लियः श्रमल्य न्यातिकार्याः रिभणभी भडेवा उः । पलिषि भीनि उञ्च वर्षिः रारिल मुउषारंगी भवाभी भित्नितिभः १० गिष्ट्रिन यस्तिन यस लाह् जी वगहिली कं भायव भूए गीय भ जिस्मियामवान १९ वड्डामार्स नीग्राः भन्द्रयान् भन्तायन् भी ग्राम् किथाउँ उत्तर अवल उद्या १३ तम् भद्रिष्ठभाद्रकः भरएग्राभ अकाः तथलः पिउंडियः जम्बिनियिग्यः १३ अ न्वाभवविणवाञ्चलक्रीरणञ्चल । भानक्रमभाष्ट्रयः भरीधंग्रवभारता भर १५ उस्राग्धलपुरु इज्ञाभित्रभाक Mohd. Ashrat Peerzada Collection, Srinagal ग्याः भूगेष्ठप्रदेशम् भारतः भूकन्वितः १० गिकुउभ्रालनाभग्नामिरः मूर्भक भने भा स्वर्गभाजरण मुक्षलनं विज्ञ ज्ञ अक भर्गा याजनः मजन्यान्भवकदनिष्णकः स वभद्रधमज्ञाः किङ्कविद्रसभद्रद्रभ नरणभाउच्याः १३ भग्नरंभिष्येयुकुष नःकलभ्कथन्। माउप्रभित्रवितः विक्रमान्य । १९ विष्य अन्य । उथ्रष्टः एउनः मज्ञन्यं भंकद्वप्रस्त नुगर्भ मन्ध्राप्तरश्चयः मन्द्रार्कालम हः उ॰ यमक यं कि जी उने महभ महन उद्भन ममरुप्रशिक्षं ने भर् अक्रिकेर थि की उने मुकदेन थे ने ने उन म स्वनभी उ० एक्रवन्ययाम् प्रमन्यम् अस्त नभभक्षी उनेने संस्कृतिलयाया थनः उ मघवाभठागें गुरुः अकरी किला पह्नी

उनकथित्रलाग्ला धिउकीमिनवाभचे भाग एच भगः सुरुः इ० भए के नुस्क वर्गमन्भग वष्वाभक्षात्रकथ्नः प रिज्यक्राम्लानं संभिष्ट द्विष्ठ श्वनः स वस्तिलहराष्ट्रणः मुक्छबानर्रहभाक्ष काःपिथ्रकेनमः मुर्गाक्षवायभः वृश्ः श्रीभाष्ट्रमाधिकतिल वानमाभरगगः स अभन्नयं रिलिमापी उप मध्यूरि लगाउः युरः भ्रामिष्टगाउम्मभुण्यान्य भगभितानाः विभागम् प्रतिम् भ्राप्ति इपउद्याः ३० वाभद्रतिलगाम्या गठर्भभाष्ट्राभाष्ट्रकः भाष्ट्राभगाष्ट्रकः भाष्ट्र गालभागमध्यम्बर्कालञ्चाभाः युठाः मधिनभः अचिरम्भने अल्वमनः मक्रमधकः वाभगेमक्रिलककः मुहिट इगमहम उउ गभः अलन्ने हि थिविक

यःन

H.

उच्छिउरलभ महेव विराये अइक के ब्र बुरले बुर्वभी उर्ज वष्टुन सुप्र विमेधः शुम्बिलियप्यनकद्वगभनामिष् ७ लार्वेज्ञ भरायम् इस्तिला इतिमधः वाभयाद्रनभन्धनमभूजिन्नध्य १० विद्यपद्धिति अज्ञः म्वलभानन्त्र उ द्रां अनेनियुल्यं ज्ञान्या । अरः 99 निर्द्या हें इच हें इचित्र एहि लिप या न मनभंभा निराध्याप्रपात्रिय यथ्यः ७३ मध्देत्रमत्रनंत्रभय जिलहागवः भूवमारिष्ट्रयः भूवम निभग्राग्यम्भवीक्रल्ठच उत्रम्युः भ्वाप्रमङ्ग्रहे भक्तक्राल गर्हे ग्रहे याष्ट्रयाः भूएज्ञ'मज्ञराच्च वाभेवफ किल्चमभूजिमज्ञ वंभी हैरिव

प्रयाः भूते मेर् भारति । या इत्राः महाराय प्रदान वरपद्रचन ७० महबाधेमुह महस्य मुक्रमिकिल प्रचेट्टिमीउ विभाव देः भूरालु भद्राप्वामेरहारः भमरादिषु ११ मध्यक निष्म मुरुमुरिकियाः यत्या भावम प्राथ रहेर भ भूमालडः स्वासी स्थारि क्रमलंग्धाःभ्याभ्य क्रलाचीकान्य उपिक्षाम्य निक्षाम् गश्चभवनीय उ मी अधिभू यह कि मा अधि मा विषय उथिभुः भफ्क : यह संक्रियः भएगं कियु यभिन्विद्धयामज्ञामिष् ०० मःमज्ञ निरुरेभिक्रउद्दर्भन यानेमःमज्ञनभा एभलम्बन्ग्रापभ अह्यःमजनभू णनेक ममभिग्रहम ० श्रिद्धभद्वजन इयम्। अस्ति इत्राह्नः विशेषगभन्त्र विष्ट्रिंग सन्ति व्याज्य ३ भूगी कार्य निष्ट

यः स्

70

ग

निस्याम्बर्धिः ३ भिर्द्धानायन् प कुयः असुकान चूरण्ड अववाद्यं दृष्ट प्रेम न्छभन्नुदः विष्ट्रह्मान्यभद्रह्माः कुल मयप्रचि भन्नापर्भेष्ट्गः स्थि ह्रेगेवर्ति कंउष्टा प लानारीभाविष्णेरक्रियणः अउक् भक्तः भडभज्ञ धरिक्रिधवयः भाषवी भाः व ध्यूवाभगउच्च द्विकिष्ट्रभूषिप क्रिक्श एक्सरमिठ्डेरचेल्येमइठ्डेन्टि भ १ विभ्रममिकपेलयेलयं में ज्ञानित गे लग्धंमयंध्युक्तिक्रभंजभित्र वि उ इनवर् अषक देवरे वर्गवंभाः **P**इडिं भिविब दे अभिमें मुंदे भूषान्त्र क ७ नमर्ग्युयार्च मुडिश्नङ्ग इउभ नण्डे हैं वनका द्वा रेग प्रमण्य

क्लर्णिक्युलेबाधिश्वास्थित व्य गिनीकलिफिक्कालम् उपद्वाराज्य निक्र ०० म्मायाभव्वज्ञवाश्रीकालाक्याप्य युद्ध उरणयम्बर्गम्हनेम्द्रणश्चरं ०९ इउक्ट विनेम्यणनलक्यकुभिषः मष्ट्रिश कुरलभ् अचंदिः इत्रिकः नस्टिशिव यः इभार ०७ भष्टे प्रतान्त्रय पष्ट हका ग्रहः भाग्य डिविकिक्तिग्रहर्श्वेचंधारीयद्वपूर्भ ms: ०म अञ्चलकर्भम्बदिक्या विदिष्ठिः गलभ्रहुउचवश्रुभंष्ट्रयाद् भाइएः ०५ अलिएयः भरे प्रतिकल्पान एखेठवेंड इंधर्रां जभगी मवा के कहा भ उभागः के भ्रंबंभग्वलियेउकिमिभिव षम'उव'न कड्डाइकिमिइउंग्रुंक्च

0.7

स्वर्भः भ मवयद्विग्रग्नध्व

मः भ्वमक्रभउदाद्र निवादि निराभिक्र

म्यूचाराग्रीमुद्दे स्वयम् भनम् ०उ भिद्र उरागुर एए हैं दिनी रेवडी एग इक्किरी भगभटें हैं भेलयेगांलवं भूबद्धणीयु क्षेत्रहरू के स्वाप्त के सवध्वमन क नुन्नि सुविश्वभनच्यः अविभ्रष्ट ष्ठितंप्र भूवसमभनस्य मी भूरविषिष्ठ भड़: १० श्रुप्तामार्वम्थार्वाश्रकानी भणः अर्ज्ञिषां विश्वेष्ट्रप्रां नभ ९० नाउक्यगादमदिव भुवः यवस्यवस्थ (भु क उकला इला हगः ९९ पापे ह धडामः अञ्चा दर्याञ्चम भूव भिन्नविउन्हें चुनस् उः ३९४ याद्र भक्तरलभण र

यः

यवग्रभकाल अस्मिन्य में विश्व ग्भः अनाभगमित्रग्भगमित्रहाना क्रिवः भीभाम्बद्धाः अध्यक्षाः भवः भवः भः ० रेगेन्नज्ञमपुरवेरभाष्ट्रयभाष्ट्रयभाष्ट्रयभाष्ट्रय दिनिधंतर्रीयेमगुभगमिश्वन्यक्षर् ३ यमककिनीवियाः अवनेष्ठियुक्ति इ धरवन'त्रिरंगणः हलम्भभुक'कि हः कर मेवंपाभाग ३ मिक खर्डक किर्टेड्विग्रथशिद्धियः उर्गकिनि कारिहानिवर्मत्रगाँनाः म सवाग्राभनि वाभितियाः भष्टगुभर्थामुद्भन इभि दारमयः भीनालिक हक अचे प्रकिल करुष्ठिएः ५ एतिनः पश्चिमध्यधाउल जिक्ष अधि। नेवमगुद्राः भेगष्टपनल हर्म् पावना ग्रिस् अच्छाः स्थाउ अक्रिम् अ

वसर्

गाजबंधे असे हिम भड़रभी गर्म य उद्गक्तिष्वस्य ग्रहीन एउयः विश्वष्ट शुक्रिमाञ्चलभएवािभाषेभवः मध्य भिवियनः ब्रिडिश्राचिश्राण्ये रज्ञाम अयग्हु हैं विमां भी उपमुत्र एं सभाभ मुडाध्या ७ भवाःकर्का धर्मकथय श्वरभारं इभार प्रदूष्ट्रार्ट्यामानं ग ज्ञावलङ्गांभिमं ०० भूगां मिभ्वाण्ड भिविश्राण्धान्द्रप्रिष ०० मघर्मी मल्दानं गादभूम् कां अचेचिक सुन किंग्डर मिलंड फिमिएनीय इंब क मर्गवर्ग ०९ मर्गित्रवः म्ह म रधरीका गेंद्रभाषन्त्रं द्रभग्रंति माभाष रालभलंघर भूडः भराल मेसु ठउए पष्गप्रज्ञवः मणेन मुखीका लभ खरागदिभिरंक्रभिभाषालेनिए

Mohd. Ashraf Peerzada Collection, Srinagar

न्डणः अध्दूष्ट्रभाइता अध्यक्षित्रभावत् हिः मध्रिभापननमुद्धनं स्वादित्य भाने भूगा है उस्ति इडिक् : उस्ते ग्रंग गिं अ: अ द्वारा विष्य विष्य क्षाक्रमान्त्रणडेनियनएं हराने अवसभ मुभिक्तिणनं भण्यनवारणन्तराधिद्वहरू भिभभानु उ: उड़िक्कि एनै कहु गैं जिन्ही भागाँ इर २० किक्रियिशियाँ में भाभ विशंगानामयः ज्ञहाक्रिक्षित्रअप्रकारि किक्कावंगार विश्वायानियं अद्देशिय भंभाज्येमारं तद्याभर्गीयां दिनिक महिनिणभूणेर विभागचे।किलोंकी इभएग अर्डः भूज मङ्ग द्वर्थभन्मे दर् विकद्मकिएभ् क्रिम्भक्ष्यक्रिक् मिज्ञमञ्जित एथर्चेड । एकं वर्ड मध्या द्वारा रण येष्ठजाइ ठवडिड यद्याद्र प्रयाः प्रयाः

इभाइराजियः भिंदामुळ थठः।पाः गरी वासुद्रभेद्धवाः भाष्ट्रानेपारिकाश्च ३० विभाग्य गुलिंड हा इंशायां भेषां प्रितृहें म चेंच्च दर्शक क्षायः भूम ये विभि गिमानः ११ भूग्यीउ विनिद्याया अल्घः इभाजे अ अचिकिषा विक्वित्र भिष्ठे भूगो किलेड्रें १३ अस्य विश्व स्थाया अच्छा अक्षालय उराध्य प्रापंचा थिभिन्द जराम प्राप भी अस सिंजाणिक अर्थना गाँउ भागी भाषेत्रध इ'शिम्ह अकेयाच प्रकारमय वार्व १५ मिनुभाषाधिकं गवत्रिष्ठ भ णिकेउउः चलियः विष्णिलेव भविष्व म। प्राप ७० अवजार्जनानयनं विश्

भंग

िर्धिए प्रयाभिष्ण बचा इदल एउड विवे इमयन् इभात्रमञ्जाहा नगित्वपानः हाउँ इदल्ल व्यानक क' प्रक्रभक्षकेः ९३ डिविक्राण चिक्रिक मुउद्गमभिउउष' इभाम्यष्यवाव म म्विल्ह्यिण स्रक् ९७ डिवियग र् मग्रमग्रिष्टायागादासिष मधनग्र म्मिद्धनं मित्रहारि इसम्बाधारि भिउयेदर अलाइयंग्न भ्रवं मुद्देश धार्मिष् ३ महारिउभ क्रमग्रंभ भागद भूडीभेड्ह्यभिष्ठि एक नर्मी अपश्राक्ष किर्मा दिवस कि दगदमधिभे इवल' इ'अविव' पवर् उम्मलयहरूमभ्रहण्डा रुभ्य भ 39 ममह्यान्यनभ गहन्य इभक्किनगाउड्ड हर्ये व वर्ग व क्रयं इ

द.सेर

करं साल्य हुये वेसनमहा ३३ अवद्भा राख्या मन्यन प्राप्तिन भवत्वप्ता जैबाइकलंडिं वििश्रध्नमक'ः मध इरिक्ट भारतार अम् असूक्रिकेट जियभने चुगानिक महर्म चुणनक शिथकी नयने एक निरुष्ट्र पिष्ट्रानि भा नैडमरेग्रकः अपनेष्म्यनिष्यम्गोपा अष्यभनः अप नगमक् भिउदक्तराणिर चरपामितिः मध्यार्जन्यम् यभभन्तवभ उठ महतार्वल विश्वयद्भने वज्जाग्रदलश्रश्नव लगमीदेउ श्रेष्ट्रीयुउयण्डे ः भद्राणः नवगान्तम् भाषाः भेपक मक बेम गएए द्वर न भ र पुक्र उठवर इग्धारु श्रम्भी भ म्बलण्ड्य द्विःश्वामिरं र्पेष

M. S.

वर अतिराहबहुद्वाहित्र नभ ३७ लड्डीला है विद्यालया विद् षदम् न भण्डिय्रहर्यविष्ट्र इत्र नभमयः मः इड्याइसमीध्यामि जीभञ्चभीभभं रवभीमाविष्ठिभेगाड्य रमंतिणीयडे म० भूषेभगानगणीय पित्रुपगर्लेडर नभुड्यम्बे कि ग्वरंग्राप्तभवहँड( म् ९ अतिक्भितिंगं उद्धनहितिणाउम्च यवग्रीकार भ उधमहान गर्ग महार मंभः मीदिने इन्द्रांतिः सम्प्रामित्रचे इः सुद् श्चिमर्कि भिग्राध्यूपासभित्रे द्वाराध्य धुम्बिध्िकः लाउचिमेय्याज्ञाराभ पद्यपिति । जिन्न मिनि देशे भ विधीनिभिक्ति हो है स्थ सवड स उब भनभाष्ट्र मकर्ड इच्छः मन्द्रिकाः श

ब्रमेर

इन्डिन्ड महास्थासमाज्ञ प्रमिवार्श्वभाष्य
हुक्रिज्ञ क्रवालवेश्वभीराज्ञ निष्यंश्व
रजी राजामधिभगां शुंधपभीनितिलेभ
उः इव विलिभक्रमण्यस्त्रंगारं संप्रि
किनाउभ भद्धभाषः भन्ने भद्राणयंगी
निश्चित्रभ उद्देश ध्रम्रियश्चित्रभा चीक्राल
दिशिष स्वराद्धाया कि उन्न भाग निकार के नाम पर्व कार्य के स्वर्ण क
3 F F 3 F 3 F 175 496 95 496
हदः क्रिट्टेक सारा भागा भागा है। ज्यान स्थान सं
भिम्म भिक्रि केंडिंग एभजे हिवाह धिन में ले
भीमेर भिक्षि केंड्रिस ए गाँउ गाँउ मिल केंड्रिस क
MENT NOTH
नियं निरं प्राये प्रमाये हैं अपाप से भूमें से अपाप से अपाप से भूमें से अपाप
न्यापाननजादामग् र

उष्भूतं र मुक्म इयुग्वी कि हिडिसे येनेररंस भवर्ष भव्या सभाग्यान च्रियाजापार्यं अस्वा भेः मितः मेडिए इश मन्त्रभः इभाक्षा विष्य विष्या स्था मिगगि मुगंमीद्धिमिश्वा बे भें भीद पिमेळ्यभक्केभद्रापियाउँ महस्भेव भज्ञक्रीपाउधास्तुरियनं भः सङ्ग्रिविमित्रि क्मान्त्रभ्रप्ताः असम्बन्धाः सम्बन्धाः स पणियाभरागमभए ३: ५० गदा भन्ड उममुक्रक्षभागं महभक्षिण्डेन गापप्राप्तिस्यः अवज्ञानानाभाष् वलक्रभिष्यः पाचनद्रगण्डाराष्ट्रच पश्चिमिद्रापभ ५३ भन्। उत्तरिगर निवमापिक भक्षणायः प्रकालिक द्वाप्य म्भाष्ट्र प्रमान्कर

रमुप

इदारित्रियाधाताः भिष्माद्वप्र

नुभार्केक हैं एवं भिर्दे हु पर हैं लिङ्गिन्दिन्दिन् स्थ पेपेन ह्र उस्भ ध्यभकाकाकाश्यापिय भक्तर मिरंविज्ञ नहें कि कि जी विज्ञ भे कि न्य अब्बं क बिभाभा विस्व ष्टा इ अवि किः यसगैक्शापंजितियाः अलिभाक्ष्यं नवराष्ट्रिषयः अञ्चापग्र र तम्रभद्धानवश्चान्य उत्रम्बिभाषम धए पश्चिमित्रमणग्राज्यम्बार्थः थिषवंतव मुक्ति पद्मतवश्रष्ट्रभा श्चाकिलिय प्राप्त भारतिल्य धेनमग्रीदानि प्रवणहरूयनकाप रंक उभनेरमें भुभाष महाप्रियंति मविद्रमंडम् ५७ न मचनम्बिध लविद्धार्थ मिडि धेनम अमुवादि छनं किक् अच्छित्र असुस्तर्भ

भं-

गिरियः ३० गम् इड्डविसाला कुळ द्वविष्ठ अभिन्ति महिष्ठिः भव प्रयोगेष प्रवादिक भी ३० माप्य क्रिनेद्राभाक्ष्यभाष्ट्र अध्यक्षमाव मभिग्रं इका मिया मिया लि इक गामितः भ्रममा विश्वावम् १३ नि प्रवामगद्भागभुभाः मञ्चाप्रा वः श्रथलभग्रगगगः विद्रशः ग्यम्मेर्डाम्स्रिप्रायर एवर्ड यलभःभन्न दुग्यज्ञन्तिः भनः एव भवाभत्रद्वयव्यस्त्रभवेगिकाः

र्छ	गः		प्रय	000	चेगः खय ३००				काः इस्व		
		न	उ	#	7	7	8	7	3	0	म
0	5	7	F	3	0	3	0	4	0	0.	00
5	η:	उय	31.		चग	i	1नध	गः	670000	1	
त्त	11	á	ह	#3		र	可.	100	H	-	

वअय

भूकि किएनग्रिथभाषञ्चा लिसभा के लाभुमिश्रामेंबंहमः भ्रमुं अव हुआ न्वप्कारानुरालपुरात क्रिया प्राप्त विषय मिल्या मिल्या मिल्या वित्रीविष्ठमधास्त्रप्रक मध्वस्त्र अप्रज्ये प्रभुगः चेरुमं विषः सम्बद्ध अन्द्रलयवियाः चिश्वरचित्रालयेषु द्वाक्रावक्षंत्रणः सम्बद्धान्यस्य वगः लगगुराखाधां ध्रम् वि भद्रिश्चित्रं शिष्ट्रं द्विरं मार्छमा उनिमुद्र भर्ते ग्रेंब भट्टेंडिंभ थउंग्री भ भगतुग्दं उच्च इद्यंग्य मड इयभ अ ट्लाहगडमुद्र उन्निन्हिभमद्रण गर्द बद्दमार गृष्ट्रिति दे उत्तर विश्व मित्र क्रमापविचे समीडि Mohd. Ashraf Peerzada Collection, Srinagar

भं•

प्रयम्य प्रभगने भनित्र भाउभी मुद् अम्बर्गेचाधरणविधाउ लगाउष ल हगव मन श्रमभ्य इज्जा दि भिरम् लगुभुतगरमम्कर्णविष्णगः अम्भिरं मगत्र लक्ष युजि कि वे कवे डि मधानिध्याः नीमं मंभ्रे अधारणिन मुयंभित्रं अर्थ । यर मुकेष ए हुन्थ गमर्ग्य भएउः जर ज्ञेष्याय जन्म मेयकिनि इलः यधनका इविमध्यभ इदलं अचाभारत्राभष्टे स्रभादिम् वेभग गविष्ठग्रियोवार्गिदंगरूक्षभ्र मभ विमापान् । विद्यापिन दिन उद्देग हुगुबर्गक्रंगेंद्रं प्रनण इभाउपूर भ भभक्षप्रध्यनान्य अचा धारत गरे जारे जरणिकनि दिउंगे पठ म अभामित्राग्ठवंडरे ।

Ad Shaf Reerzada Collection, Srinagar

कंज अधिमां मिन् में कि ले पर युगे कर व लिकि भिन्न गर्भ श्राप भन्न मिन्न कर लिशह उगण द्यार प्राप्त मा निवग्रहान्यक्रिक्षक्र निवग्रहान्यक्ष उमाणार्थः पश्चिमीर्गाप्तभ्रष्ट्रा विभागमा निर्देश्यिक हिंग न्याप भूरभवर वष्ट्रायस्थ अद्राह्म है: मीर्भिक्रियचनभेषयः गप्यत्रभने इ भामप्रकिःकिलभेभित्रः माण्यप्रभित्र अभा इने भाएं हवे इन्हिं इन्हें प्रशिष्ठ विद्वसङ्ग्रद्भार्थे इंग्रिक्स गेथ भ इह्रान्ठः थापं ठवंड एउ मुद्दे विम ट्यें द्वां जर्दे अधिर नवद्वा अधिर लयः भीन'लिककामीनंगरंभ कृष भीरिउभ कष्टाभिष्ठनन इति मध्यक्ति लिक्कापभी उलांचधकक्रभानं भिष्न

Ashraf Peerzada Collection, Srinagar

भ

भारिभाषे भारति । उस्तारी प्रमुख भिंद गमिड्न उद्य नमगन् क्रिन्लयः अ चर्मे उपिम अभगव क्राफ क्राक्व वर्ष नवद्या अहिंद द्वन भूके मनिलयः अ यासन्वण ठज्ञ द्वासकी सभान ३३ भू म्'रिद्रशियवा मम्किल्डियाँ या शंभव्याप्रत्ये प्रगियम्भ एक म्मप्रीष्ट्रंच भद्यभा ने लागी भराभी बाब इंग्छेम्र गेन मुस्माउर मित्रिगल इंग् वेद्वयः युवगेर्देष्ठं विभूपर्धक्रमेरंगः मधरः कार्यः गर्देश्वर्राक्षेत्रकेन विकारभर्या त्रवहार वेमवः केलभाज इभिड्डां करभस्य इंज्या र्मन्यभूक्र भनं वर्षे द्वार वस्तु प यववर्षभवादः गरिमेन्निगणिक भक र्मिश्रिरमी नेवक्लाहिक्वे प्रिमा

4.77

ज्ञानुस्य विधितसग्दिति अ कुनुइभउभूत्रभक्स द्वाप्त हैए नशानिक क्षाया है। स्टा भी नक्ष्यीचाएविष्ट्रध्भम्यार्भार विष्ठिभण्यः भच एभउद्म प्रापा दः यल्यहवाड्वः मजः अन्यमी मार्ग त्रणः कड इवनभग्ने भूज्यीउयष् किः उन्नेष्त्याङ्गभुन्यस्क भय जालनेपिर्धार्यगानम् जिल उः मुक्त मध्यापनन भूममः भूषि रमुद्याति मा अप्रतमे भरी अधियः प उभिक्षियिकीिकः सिष्टभीसानिकः इभ र गिन्ध्नष्टहाग्रनमः क्रिप्तः हे वंडर अवडिं चिका भः भण ले भन्न ७३ गः। विम्नुराष्ट्रश्याप्तम् का भि रोभक्र इंडिकर भीत्र मरा उद्यो

म•

गेर् भणले ५ इक् ३ % इच्छ म मार्च प कालमूली गण्डहार भारत निर्मा अह म्म्रिली अञ्चाउउगाउउया मुक् किति प्रदानभद्वशारिभकरलेश्वन व्यक्ति इग्फः पथर्यनगणः उधगित्रिरं म उडिय अन्हेंग्रीनिन्मिभूम् अचाध्रक्षि ण्डाष ००० नद्भार्थभमुह्याव भूजाद म्रावस्ति भिर्नारविष्रभ्रमलंग भाक्षलेविन ० भवग्या दहने मुख्य वाः भेत्र'गञ्च एक मेंकः पि पाली ए डि भीमभी उजनिश्लके इक्षे भियम र भरिएपः ९ नारिकीलंडमः एडी पाएल गप--- भल्लिक भगवतुक भन्नमः भ रभीयदभी ३ एउँगादम्बर्धामप अभारतभूमा त्रवगद्भवमान्ति रमें अर्थियम् इर्पे विषय देश

बन्नेर

लेड्डिअवशाभ उषक्षाक्ष थ्याष्ट्रजाक्षामनभ मधगण्य नेमुहाराजाः भाउलाग्नामहाभूद विज्ञानिक्सः एउनः।प्रा इभाइरोधिराभीप ५ मषक्षांग ज्युभचिथिय। क्षान्य मुरः किम डमउम्माथ निग्ना भगा पराने क थिक हो च उः भल इसि धन महित्र न व माध्यामभूकरम्मीनियल अइभागन्य प्रकाश्वरम्यनिक्रि मुभारभागन्थ प्रमुधः इंहक ल गदा फेज र कि प्रमहत्व तयभ ण ज्या भीः गाद्य के जनका इंभे जे ट्युभाष्ठेः असम्बाल्यं उत्पुष नहमूबलाति इः इ सब्योगलय भूगम्गीनाभाषः असम्हान

भः

विश्वेदिएं मिर्जिक्व बुद्ध हैं न्यभूप प्रदेश उन्न इति सील वस्व अभक्र ग्ला महा ज्य से भ्रवमनवगषश्चिह इथियन्त्रः भूगम्बिरमास्थित र्या अपरानभ भाषद्वला म'ापराधामभाववग्रेत भूवसम्ब भनकारिकिभिभ्रमभू ३ अन मम्प्रचयप्रभाषा विमा मन्त्राणया वर्षे । दिली इय विश्वे श्रीत मझ पंडार ह म महाणे लगाउभव णनिश्चानुउधभुष ३,३११।फला च य गिर्भाष्ट्रगणनुभूविम् रेर ५ मध्यसम्बद्धानुद्धानुद्धानुद्धानु

ब्रुवल इउच् मित्रं भू भू उपकर प्रचित्रिश्वनदारागागामभभाषि अचाउचे ठउसंग्राविमापायां बिष्ठे हैं। इस्मियाएअला देव भागिमभाभ्यार् । तिक्यं मे उज्जिल्बिमनवभित्रे उष्टायारिन बजिग्रहधानं उत्तभीसी मभी उत्र धवगढाँन गुरमुत्र नणाष्ट्रप्रवाभ रधुभाषाज्ञकभी भूवम् एमनिभेदंकि किञ्चारवर्ष ७ मध्यम्य प्रकाषिद्धकारमभाग्य : ज उिविश्वम मुद्रमस्य महास्मवा प्रविमरे ०० मधनग्रदन्त ग रत्ने प्रारंभक्ष भूवमन करवरः अरमस गुउम्भ मय अरुगर मुरक्रम् इक्लिया है गर यश्चित्र

भः

भ भः अज्ञान । इति ए नहा वा भ क ०९ महरकारकार्विण वार् ग्रनः ग्लाभ्राप्याप्याप्या धगारं विमर् ०३ वहारू गाजिए वार्यक्रियां अत्र अवाषादिगाज मुधाः इभाषाभगउगविः ०म स्व ग्रावश्वावश्वाद्यः अवस्थाप अल्पेन इंशिष्ट्रमाप स्था है इंश्वर प्रमञ्ज्ञापगदर्वाणयः ०५ यद देशवंसमविमेधः वस्ट्र मर्भुवमरणने जित्र भडी ष'उद्य' म् में न ५उ'निम षग्ऽप्रवमकलमगर निक भिउवक्रविक्रियं पः भ्रवमन उज् अप्राथक्षा कार्या भाषा ०१ भिन्नेमित्रिभिडेलक्कीनमग्रम्भि

5.1

डैंकिलिः नामग्राभरदिएःकहिरि गेडिड ०३ योषेऽप्तम्प प्रयि अट ब श्रा मुंदिम से वह नि भए अक मह्तविश्वालाग्रहभूविमङंग्लं ७९ अवभूवेमविधिः यवज्ञभभवगरुवि इनिश्वल्लेड्डभ वमभूमनिद्धेषंभंभ विद्यराजेषु है । मिलिनंगि उद्गंगिव पि छं चे अरे एमं अराग्य में माम्बद्धाः असं क्षेत्रेः ३० यद्यदिवि प्रश्वेमः नप्र चनवगद्य भवमः भनि हिभ्दः भभव डिथवाभावे असं अस्टा अश्वास्त्र अश्वास्त्र अस्त्र अस हेइ धःक दे अच अव मकः अच अच त्रिनी अलम्बि पर्वे पर्वे के रिक्ष इः १० भ्र चभुउगिश्चनगणगैवडी किष्ठ भूग्रः भूच मिभुविष्ग पष्ठवानु अर्गिक विनाभूव मनक द

ए। अविम्योगनिन स्वन्तिन क भागादे ३३५५ सम्बन्धाल ३% क्रनभाःभाभा सबन्तः मंद्रे: प्राथवंमः विमाणक्रिकं प्रकेष्ठा भ ठिउँड मनीष्ट्रके लिउ अरे विराधीनग रंविमंडर ९३ उरिम्सिम्सं गाप्तभूवमभूक रलं प्रवृद्धियान्याम्या

w.7

भी भी अपने भएभः के क्रिमीरिडः मुक्त थहा विश्वात्त्र प्रविद्या । मुरिद्या गज्यस्य भृष्ट्रविष्णेष्ठः अवाग्वालानाः डिविचुन्द्रभनेश्वरभे ३ विद्यादिक्वभ भ एएनं विलय मुहले कि प्रमण्या विम विलग्धाइविमधः विद्धः अचिकित्रभुग गणिष्ठ विषठ दे जिले मुवल दे से अध्याकि रिण्डीरिड भे प विमिब भव वः अध्कात्रभूपनभाषकः हानः प्र नगणवं जब रक्षेत्रचेश्वर रे अने पत फिक्नंम मुवलक्षगड्सित विशंगद द्रमहिला अभवाक्षभाभी व वक्षकृत भगलम वर्गे हाः भागवंभाउभे हाभा गथ्यप्राक्ताक्ष्मप्रहेडम उ य इभाउद्ययानि पिन्डमं मडइित भविषा भवरिष्टं उउगहिँउ वडवा क प्रिष्ट

भः गः

यं िमीमनं अविश्वन्त्रभविश्वभ नावार वरविमधलनत्रविमधः भिन्धरः वि वेड्ड नयेश्वर्शश्यांद्रिकंदिः अभुविष माक्ष्य इस्ट हैं शिन विनाः वर न ववायलले भी भी भी या उवा ही भावित स वारम्भेरं अनग्रमधिनीकलाकिया द्वियभागे ०० पष्ट वडाविम बल्ला भविमिधः याक्षण्यनिभवाग्य भाउँ है उब वंभनंभ भिक्षभाष्ट्रीयरभिष्ठे पये इएः ०९ मूचल्यायिक्त भाष्त्र निएगामधिक भाजमीर्देदिक्रिवभविदे मिथिक्यन ०३ मम्प्रियुखं लय्यन् क्रिक्लिजिल्डिलंडिं अहें। पणे व्यक्ति उपिताः भाषे वद्भन्न यहाः प्रिश्व डः ०म उडिमीभद्रेव द्वालयां दिश्र कालभ मधिमू प्रकाल उर्फायर

द्रभ

क्रिक्त भी महाक्रिक लेव हैं प्रक्रिक इ भगन्वभी भन्धान्य उद्गावन भन्गर गिष्मामं ० प्टब्रील'रः मिरेशने अन्ता डिललाएक भ्रियापिः श्राप्त्वे बर्गे गुनापभद्ग ९ मुरच उ म् उक्त नम निश्चम्बन्भ स्किल्डगर्वत्रजीखः थक्षिशंबाद्यः ३ गर्फ्टमें प्रियमिगष्ट नभाषागाङ्गराभाषभ । उर्वेषे उवाग्य मुवलंबारियाः म प्रवेष रेखे खभाषभप्रविशानभ इप्राप्तःकन्हरूम अ भीवाया निभएं हयभी भ रायः भर रायः एड्रे क्रेडिभागाभः भ्यापि र्गफ्रम्याम्य महर्ग्जिस्याभः व म्वि न्थिःकाविद्वित्रायंवज्ञभित्र्वभ र्भरमा मान्य कि कि पानि के मान कि मान अन्यस्मलनंगिकमचाद्विगविक ली 4.

माधितहरे स्ट्रांगाध्यन थाउँ भङ्गाभः उ यूम्बन्दरिक्ष्या विद्वार्थिक भगाभः क धल्पर्लाटम्राष्ट्रम्बेविश्वमक् ७ ड रिभइ'भगंप्रप्रितिभवीत् अरुवि के किन्नित्रुराष्ट्रयं अनिश्व मार्थि मार्थि ०० भक्त स्थान भर्मा भक्त दिन्त निर्देश वर्भभंभं कलंग्ड पुण्लुयंविषद्यार् ०० गरीलंकिका मुक्त में में के किया है विष् यवाज्ञिताक्राकिन्द्रज्ञ भग्रे सम्बद्ध भ मज्ञण्डितिभग हाँचाना क्रुनेभमका छि नः अ कन्द्रविमित्तान्यं चिरान्था द्यम्भारः यहभं लाउम्भामः इल्गभन कितिली ०३ मापसीपर्नेभ ।उर्प्र मुरुषिवयनकार्ताः इनेर्धिमरभी मामाविद्यादिहमभंभिजः विषयः मुठ मंथल्लीभण्डे इंश्वर भागः ०म सिश्चवं

गः बुरु युजाः पपिश्वत्वत्रयः भवा विगेषिली इसु भने हैं दिका स्थाप ०५ णनिष्ट ज्ञानगणाष्ट्रमा केम के अरु भी उद्देश निषिष्ठं स्त्रु ली पर रण उद्ये क इक्षिलक्ष्मिनं भंभं व भक्ते प्रभामि ने गरिहनदर्ग्येवभथके दनवालेंग ०१ भन्नीभागः इंहे स्रविधं उद्दर्शने हनः यहले पड़ा प्रमाणिय के पड़ा अ भगस्थ्रभ्यं व्यक्षाः भगष्यवाभागे राम्रहेश्र इंगिरि प्रमुविद्वारि पश्चि का अप्रभागित में ब्रेसिव प्रमान उड्म'तिंग भंदिभेन द्र सङ्ख्या किक्र ९ । पद्मगद्यां अनं जर्ग्यायन नभी ३० मध्यक्रितिष्ठतभी वध्य दश्रामार्थितमादबर्द्धाः भट्टेश्दर्भा इन्हर्न्सभागमक ९९ एवंबभभाग

4.

मारं उच्चा निरुक्ति विश्व विश् दम्भः अद्धार्य ३३ नद्भार्य इत् पप्रभष्टगुरुषिः निष्कुरुष् यउँममिरियेः १३ एग्रह्यविवः सुभ मिपच देन एगिचाँउ निव इंड रूप ध्यान भग्गाभाइवभ ९५ हर्न् अड्डिय भग्रभंभनर्णविति भिल्ति वृत्तालार भा यि अंतरपष्टि ३० येन्त्र विचन द प्रिमिक्स'रिमी भिभान विक्राप्तः अल इतः ध्रुराक्त मनाविधिवा ९१ भूवज्ञाम बालवाधिभागमञ्जनगीवित इवविद्धः परेम्बिन हुडी भट्ट भक्त भी 33 हम लंगम्भं मिक्रभथम् वैवर्गीवित कर् भल्लानिबद्धाः भाष्ट्रचित्रं निरंपद्यभी ९९ अउस्र गाः उद्घेष्ट्रभातिः सम्म अ त्ति नभक्तिणितंत्रत्रेक्त्रत्येदः सम्ब

ब ७ विषद्भः अववश्रम्भः श्रुप्ति इयम् ७० वयभङ्गम्बद्धिकिति क्रिकेमें पञ्चकष्डि अञ्चल रागापीन इर बलः भग इ स्वश्राम्भाष्ट्राल्डवर ३९ मध्यात्र् युन्नज्ञले भक्ति उवपः भन्ने रेभाष्ट्री कि वस्य यह विद्या चित्र विद्या स्वीति । ब्बेड ३३ नवस्य पन्धम्बा प्राप हुलग भुद्रः ध्वाउअर अद्यस्य प्रदेश नाः डिच्चनार्डे रेमे पृष्ट्रमुखंतिरुंड डः ३६ हर्इन्यरम्बितिमध्य विवर्भ उडिग्गुअं पर्वे स्राय पन्यमे नः ३५ भं अल्डांचयगं इंग्रमापं इंडमा उ याचम्ब्रभाषेज्ञभविणयभ्याः । म अ मार्चि अभि विष्ति भाभ्यक भराविति विकळ्पयनंग्कंष्टभवभा अभनेकभ ३। भार्डे धर्वभन्रसम्

भः

भविष्यके विभाजेशीय गाउँ विस्ताल कि लिविडम ३३ किएम ज्ञ निर्देशकृति नभेमयः १९ मध्यक्षणं इति त्सर् भिड् रमिविपक्रमग्रुव्यमिविमीहरू .... श्राम्य इलक्षयः र महिक्र प्रमान देमेंकरुउवधानुत्व विश्वभाग्रभिष्ठक्रिक िवेडिवेचियाउनभी म् विगः थीउँमल दिः हम्भारतः भाषभाषा नभी अह्य मिनिस्थ अवद्वलक निष्ठ वैरास्य दिगीयभभभद्रनेदिकिस्सिध् भुगक् अराः भटः ए श्रेत्र त्र त्र त्र व्यक्त गेत्राः स्थागिमिन्नेम् वाह्या प्रिथमि वीकियः यष पठमः अभः अम्रम् ण्येवःभित्रगत्त्वकित्रगः गुनः वृत वगनगीउँधाभामी सम्बन्ध हम भूभा मगलमेलाने मुद्रमगरान्थित म

नेरेक्लेलाकःभिष्यारेक्लेखाः म्प व्या ग्रेश्चक्त्रार रेश्चणीनम स्वर्गेष भित्रितः क्लेमी भन्न कहकः में मी विन्द्रः व्य उट्ट विन्द्रम् द्राः अक्टि उट्ट भः ल उवाममनमे भं ल ठः भारं उवे ह नः मा हिल्में ग्रेम्ने बील बामने निर्देश जलभी ग्रेगश्राभनेविद्वनिपनेमच भीरिउभी इड अर्ड्स्स्यित्रियाडिभभ धं दलिन हुभभी मेश्वः मुगदिन महा क्रिक्षाइभन्नेपनः स्थ मिप्रभानभा नेमभरकेमेश्डिविक् नष्ट'नड्भन' नम्मालन्धिमाष्ट्रिम भग्रभ्वरा लिक्ष्यंभानेभंभठक्तनभी भ्रायाःप वभः भन्यसं भग्यभगमन भी भव कमलीकल्पचडाम्रीजगन्निकिशी र रिलं क्रियंतर एं अन्यम् भव अन्भ

पु वेदवाड किनिय वारा विः भने के उ 4. म मंमेर मिककीए रें इन् गहिन मन नभ ५३ भीउउडे कले भूष अवस्थित घराः लहुसिपिकिइ, लेथक रागिकि उषा पर एखेन्डरालक्ष्यप्रमङ्ख्या इल्म अइनेवत्रंमीहवर्षेगनत्र्यः भभ ४५ मिककरविभू च्वा छात्र णगलभ जम्डभिद्यार्थिक्षेत्रीय व्यानकर्भ भे भनारिक्षलक्षा शुप्रमें छभड्वथ्रष इवेड्रिभण्यश्रिक्ष लंडपलमुरु पा भलिमवल्हाञ्चल भाइबार्छि रिग्नीमल बित्राडिभावभेश्वभं भग्राभिगञ्जि पर गिलिनी इंडिल गरुपिउपिइंग्रच्वरः यह्यिक्षम् प्रश्ववश्लकः ५७ अणिशंभिवलि इंग्रह्वरव्यविष्यः अत्रम्भाद्यः भ

यस्तिनगण्जेविभन्गणनभर् ० रज्ञउद्य लिक्थंभे ब्राभचे बरुभारे भवत प्रमान विद्याग्रह्में व्यागाद्वियन ०० वस्त ठ अभः उलाह्य यदि मु भाभाद्वरेष विधापाभी उद्वेत प्रवच्च वेषाष्ट्रेग अत्रएपिविति १९ भक्षभ्रान्यन्गत्रभूष्यं र्रिअविकार्यक्रभी विकलारिक में भेभिविष्ण ब्रह्म ३३ रातः जड्डभभि द्राण्डवेश्वश्वभदिर पात्रीनीमण्डश गेंद्रम्द्रम्भाग्नीः वेम गर्हेख्युगार्ह्र प्रमानकर्भेड्नाः प्राप्तकित्न रहेउएनअप ठकालभी वेप कलम 'इराभक्षकरभेत्रभवनम अदनम वेलिपःकरमविनिम्ह्रानेभी ५० प डेड्यूनप्रभनं लिइच हुँ इनेडम् ए उनकप्रमः स्राप्तान्य विकासि रेग अभक्तनंगीउँदी हिंग्हिंग्ड विक्रंड दिन उंकु भिरं अर्डिय प्रशिविधिकारिक अर् इत्राराग्लंभगः श्रुक्षीयश्रम् वर्ष व्रद्धाः मिरिरगिकं श्राप्त अवस्था विकास गर्वेद्धागन्त्रीगर्डेम् बुर्भेड्सिग्ड्सिश् क स्वीरभमेकंगलर भामनत्वन्तर्भ १० ह प्रभगगण्येमालि इतंभ्रद्भाग्नभी अ रहभिष्य । अडिविभि उनिलंब ४: १० कुषयहरूले : अधे : मिपिश्र ले चित्र हाउँ एउरक्रिश्चर्याक्षेत्र्याक्षेत्र भाष्ट्रीय स्व अयभग्रगभ्रान्द्रान्य अयभनवीदार रुभ श्लेपनारं मभगल इति गृश्ये देख अक्रियाच्याम् वक्षक्राम्भः भ विक्य मिक्टमः एपः भूभूनम् ठनः र इष्ट ग्रेग्य सहस्प भाष्ठिय भिर्म

वभूकि भियवभून भणप्रविवन मकः वि

व निश्चयः मक्रम्य नापक्षयः कर श्वयवाना । इति व्यापना वर्षेत्र मुक्सनंग्नेइनक्त उने उष कुपग उम्मी स उविवरिधन महन्म कपडमुरग्रमुट्ट ए ब्रिकेमकबाबभाः भगातममक्रमनिम् ज्ञाध्वप्रनम्हनाः मधुनीत्मगमाण्य र्भाषादिक्द्याला गेभवंग्रिपनीय अञ्चीउनम्बन्ध रक्षेत्रगी पश्चित भूव ग्रहभवाश्यार ग्रहाम्रानियांना भिभाष निमविष्यः भिरुकदंश्ज्यमिन यडेमनभंमयः इडप्डिंपमार्थः मुभ्यः भदभन्नाः उहाँ राश्रायाभं अन्देशि व्यक्तिभः नश्रद्रियभगिईविमसुगर उपकर्भ विश्विक लरं पष्टि सुप्रेमिपिवि नष्टि भीमधिउलक्थाक्थार्थं भः वकंदर्शिषणिल्दीम् अर्चे उने मेर

7,

रभर कड़ इभी कृषि का न्यान्य विद्वा म्लह्यमान्य मान्य भ्रम्मयहन्यः यम्। स्थ्रेश्वयः अहे वदनमञ्ज दलंभुतिमङ्गश्रदलमाहि क्रियम् नि त्रवस्य स्थापनि स्थापनि । प्रमुचिलिकिउ अप्रितिच इन्न का खनभी ख मीिर्छिभडेवियः अतः अश्वास्त्राः इब् यान्नभनः अभंभंभाषा दृष्टवारिकिः भड्ड प्रयगर्पे देभः माडिश्रश्चयर्गिक मेवा मुज्यां भारत सत्यां क्रियां मुक्ले ह रडाप्रीनं अअप्रिक्ष सम्माउचे कद्रभ्दिः भूली उंग्रथनकार्ति सम्बद्धाः तक्षार्थ विण्ह्यं कि इहिंभ उरिकारः हे प्रकिष्ट अम्बन्धन्त म्यन्ति । इमिर्गिष् भार्ष्युभएभाल्दकलभूराः ग्रह्मराज्ञांभ इषः इभिक्षिक्षं एदिनि इडिडिलिब

इल उत्तर्भाग्रह महास नह भवा दिए स ने वहकाकिवाविहरुउष्ठिविभद यः विद्विष्ठभूभविषात्रुगवेरी ... ग्दल्था वार्षेत्र अक्टल्या व इक्लंबद्ग विद्वरवीचे : पीरभफ्लभ मक्भा अभाना जुलापग्भग्रण वभी वालभी द्वियावराणवयः पीर लनश्चम प्राभावश्चम्य वश्चमः भ उप्रताश्च ग्रावस्थिय प्राम्थः भच अयो र्गः।परारः भचे अक्तारापष्ट एक हमिर फारी अक्र पक्ष हगाउ मयी कि प्रमने भथलापगभित्र इप्रमानकानने प्रतापम्बिक भारामा अधिकं क्वार् अञ्चापना क्रिमलन् पउन्हिएन्डम् भूरिभखाः भ्कर्भच दभनंग्रेटनं उद्ये इद्वेविचर

भुः

इर्ड एर्ड स्पर्विय ग्राइडिड द्भियः दलभी भे स्वीष्ट्रष ००० मंबर उदलक्षरपम्प्रविष्ठभाइलाचि ॥ विक्रिक्त नी भूष्ट्रभण्य अविक्रिति क अचल ल्लानिके उनि भ अहा हो श एलं ० अला स्थापरा पृष्टि । इस हिंदू पर्भाषा अवधारितियेशनिभाष वामलभारतभा । अन्द्रक्षितीक अदिउद्भारतमी दक् वाग्रभाष्ट्रक्षे क्षितिश्व अध्यानिम असि दिए उरभारते वरण च्वला वयं हात्रा मॅरिलिंगिनभेषेचे मुस्भापल म कुक्प दिभित्र द्वारण्यं वयस्भात्त् अस्त वरां प्रहार में में में में प्रश्नित्य प उर्कः पुरुम् मई भामभाई लभ्भवः वंश्रियभारं लेकु उपनि भूरः परिकीं डि

इः े बह्मरानं जलाने प्रकारि इवःकन्द्रिवार उडुभाइतिः सबद्दल दह्य झान ने बोर्च एतुः भग्डनक्य गङ्गम अनुष्ठ दिविष्ठ राउभूमें धले उ मंडेविथरवैशिरिकंणप्रेश्रूष यः ग्राचि अका गाउँ विमाऽभ्र रभाः ७ वर्गाम् विषर्भणिक बाडविग्दः मुद्रे बद्रापगद्मण गंजियभद्ध उ म्राह्म मान्यभारत चमश्यम् अनुभ्रप्रन् भन्दलकर्डाउद्यनिया पन्द्रदलय

भृः

प्राःभीरिक्वेडर ०३ भूक्युलंबिर इड पीरिवेश्वर्मित्र अभिक्षा लेखिल विदेश स्तिणेइशिर्डिभेरे ०म सकल्लिक भृष्ट णभम्येणद्यामनभी एग्ना द्वा क्षित्रपर भिक्ति है अप अविविद् उनिकाविभ्रमलवर्णियः देवञ्च भ मडम्पराएं भः प्रायड के भवग्र मग्रम्बवभूतंग्रभक्तद्रा महिक् उच्डापघरेभाष्ट्रवर्जाभागः वर्ग मि मागाउ अचे श्रुह्में बगउ मिथ स्विष्ठ इंज्लानेकगमिश्रामनामिक': ०३ श्राप्त प्रस्का मान्य नवश्रम गगगर्इस धोराष्ट्रिः श्रावितंत्र स ०७ गोवक भद्य देंगेन हिंदा विग् प अष' भङ्गभञ्चारिन्दिन् एचउभर्त म्ब १० वषकउवः भथनार्वा अप्र

रुद्रीद्वश्रहितरम्ब उद्यं है उत्ताद्वरमापक्रा विश्रेडें निरुप्रव ९० उर्द्य : केंग्रवः अवे गथ्क द्वेक मध्य प्रथक । इसमा । इसम उध्विबी थडे: 99 मिष्ण भूडेनिर':क्रि ब्रह्म अधिकीं ३५ थिडिश्रे ब्रिस्टिकी मीड नीभूग्येव विष्ठभूमं ३३ विष्ठियोग इह तम्बलिकारियमः मम्बलभानेम् प्रभू वलियाडिएः १म नेज्ञीडियाउः फली इर्ड:कर्षिडेंबर्वे: रङ्गपिक्तिवेठ श्रत्वरूथ गर्भाष्ट्र ९५ रूपरमिश्रुष्टेमञ्जू ज्ञांगार भद्रात्र्वा नम्मक् द्विष्ठिभूग् भूभूष्यभग्न पूरुः १० कर्ड्सभम्। मयाश्रामः एक्ट्रिभ एरिल्ज बाचिक्वभाग्रमित्रभित्रिभितिरह अल ९१ उच्चर भें छल एउँ भभेच हिला भें वर्रेड वर्षेड्डलानि मुख्यपर्वेग्भे चित्रवितिल्युयः ज्ञान्त्रवस्य Mohd. Ashraf Peerzada Collection, Srinagar

किथिग्दं विमेर् वंस्त्रीक हिन्द्र लेव यह भ भन्तिएया इकिममुद्धवित्र इन्ति हो गः गलभिः अ ग्रहवंदलंगे बुंड किर्णिव उपदर्ग हालीविवाँ में मैर अन्ये मिरिपेड्ये ३० इब्रेमिक्निः भक्तिविक्षित्र इक्बिइक्र भूलन मेघन दियाँ उधा कु भिक्रल हा वा अश त्रविद्यान्ध्रपंउद्धलंगः भूगन्ध्याङ्गाङ्गाङ्ग निद्धा भारते इति भारति की प्रता में कुर भारते हस्रोध्ये ३३ नियुष्ट सम्बद्धमार्स्र भन मविकिमं प्राप्तितिक है है प्रश्निमं दूभ दिव' अस् अर्थेयवाञ्चलनज्ञस्योञ्चलवा उभाग याभिष्टं माञ्चेया भागा अवा भागा अवा न अप वित्वालकालंडरुलंग प्रामीभू लिभक्षां ग्रीयानवामनिद्राः उएउएम्बी इसलारीमीयवर्ष' ३० पत्तपञ्च प्रिष् दिक्षिप अधार्भभाषा विदान् होगडा

बिक्र अन्त्र की प्रकार के भारत प्रविविष् क्रान्त्र असुरिक्ष निष्कु किरायक क्रि किग्रंदः भीउवल मुक्त भिभन्ति नि भः नाग्रवळिनिएँ इमेवलन् उग्रःस् डर् ३३ प्रश्लेमधां जद्रश्लेषे विचन भुष्युं क्रिक्ष एवं दर्भ मरिविध मः इभाज ३७ वृष्टामिल् विम्ह्रीया रश्च भारत्रष्यं निमिश्रलनिरःभष्टवार्यो विविभलेषुठः रः यष्ट्रकथलदाले कुक भेया भडें बलंड सम्ब्रहा कि वा निमं वाग्रभादलार्डियमश्चम्भगांउष् म् गुःभात्रभगकंबिक्रभादनिर्देविद्वि उ रूभाइलिए इंगे अधागला दमकान मा म् भारता सीन क्रमा स्थाउन अलिह वः नमाराचि चिः रणम् सं प्रचर्भभूभाष र्थिय हवंडिम प्रमुद्धितिह

भु

बल्ह्यभी अलः अद्याद्यास्य भारति इदःभरं उसंस्थाः ४ इस्टाइन प्रमुख्य म्य निरंगिर्देश विशेष हैं विकिश्वितियम् पद्मित्रमस्य प्राप्ति । कलममेमिरं मे नमगानुबनगर्डहरू गत्रवनगरंपविचलं ब्रिडिंगित्वलाः कि द्रविहरिभाक्। निर्देश्यितिः व लियिवदल्यम् ५५४५ उद्देश्य वर्षः ग्राभा द्यक्रिक्रप्रभाष्ट्रभेष्ट्रभुविक्रम् भक्त ' निचनं जद्भाराणाया निस्यः स्वेड षाभद्दारमञ्जलभाक्षभाषाः धरिद्रःभा महुवः कम्प्यायकलभ्जवार अवव चिवित्राउपरत्नं नकनकः सारिज्ञभपुर हेर्ड्डिकिपिम वहल्यभ्याच्यान्य भन्मकिराजः हव भूका में चार्टा लाडिःश्वर्थमयः प्रमरामः स्कृति

कार वैः श्रायो मी प्रभद्भमी पश्राक ब जिजी डिनेहें ये उनुगरित विश्व भू मुनि भार्क मसी थिउँ मस्पिता भगा कि विस विश्ववृत्यं ग्भारप्तथ्यं नी भुतर गुनिसंभगः भूलिनिरिष्टबंदायः भ्रय इ य जुबबु भी ५३ भव्य कलवमी प्राय किमिभानि धडिलः इमिनिएभक मी न महाङ्ग्येम दिनाविष्ठि व्यक्तियान्यः उत्तरिष्ट्या जेदभन्नि । किला चेंभूदीनिप्रभाभ उट्टिविन्डि मई भीन ठविड्यभी नष्ट्रमुह मध्य । विकिपनिगरिश्वा चेर्रोरिंड वध्यक्तिमः शहरी हरेग्रस शिभद्यवयुग्मद्भारेभ द्किन्। इथनामश्रम प्राप्तिधीयान

भा उम्ब्रुपरयभाविश्वय ितः यमग्राग्यालकभागानुवा ० भट्ड प्रचार विकास है है मचना रहित ग्वरुजनाभाभादाः मात्रिज्ञ जलक उम्मीकिद्भिगुः प्रशिवस्त्र इत्रगरु म्निद्धं अल्क भाग म्बंभा विभिन्ने म प्रवडिभन्दराभम् ठयः प्रपी ठच ३ इविन भः एषिवी थउँ : उद्यं माजि विण्डसः प्रमग्भभगोपिलः माउपध विरष्टितिहा वारिष्ठान्तु । मधक कभ्य मठल भथकवायशभाच्याविष्या लेकलिः क्ष्यस्त्रभूष भाजक्षां विधिरंभभक्रहा धर प्रभयबर्लाख

भेष्य सङ्घि निःमद्भवाभम्यवाप्रभाष्टर भूमधकः महानगरम् अकवेण्डाद्रिति मंत्र नमीजीरंगवंगीच्रेकीरयाच्रेभारलये न रविष्यभभभ्यः च्विक्र वस्त्र निर्मः भभः थक्तिविजनित्रिंडिलभाषिमेंड यह क्रमीद्वक्षमिधिरे भारावः रहा ह बाधिम् अभाग्ना स्वाप्तियाः क्ष्मा नम्भायाःकश्राह्म भागाना ह्युरेश्ट्रःक्कभेष्ट्रस्म उर्दे धमाउर्वे क्कमानिज्ञरात्रिमज्ञाः कप्रविधभः पल्लीभारभाविकर्डिड भारभाष्ट्रकाड श्रमधिनेग शिश्रम उर्देश अलक्षण्ट लमञ्जिक नविक्रिक्तं क्रध्वंप नग्रेषिवं मस्तु मन् विद्ये कितीए वापन्रउभभभमिठनभ भड्चिकिठ यंपिशिव उद्यामेशांप जामेड्राम

भु. ग्र

नेप्नेदिश्विक्तिकार्णर् वाभव्यस्ति अग्रिकिस्त यम्भ वस्ति वर्षे प्रश्निका षा महत्त्रप्रमुष्ट दिश्विविद्वमः स्थाउर हुरीविषाध्यम्बद्धला अहा विस्कृति स्वा उक्षंद्रश्चित्रग्रमिविम्दः में दूर्वाश भिड्रेथक्किक्यभूडिथिडिये खेब भारति व एश्राध्मवद्गारा असम्बद्धार विवर्गभद्रीभर्त्र इं गण्यण इपिरत्वेष अर्म यंगलकिए। उभाषिपभुलायं शक्रुक भ्रपि अष्य भक्र श्ला अपि नी र भें में ने छैं। भाराः नवविमिधकानयनं मकिरियहर मललहे अधेष्य क्राग्रेड मधे विभेगा इजेबद्दश्चाउर: भनः लहुमक् भक्त वंकउयाध्नविद्या णहेरूलंडउःसीउभ ध्रभारउद्युषः रामघविग्रम् वेर्थः इभारिय सम्बानिधारियार भाग वर्ष

दिनवक्षप्रध्योगीममहर्डे एयर लहें निध्दि । इन् इन् भारा एर भमे हक निध्द जनवन कक्षाभगुलन्द्र हज्ञ लहेए इ उकित् निक्वित्रियलम्पर्काण्यः उः भुनः लहुमंक्भकृत्व्वक उद्ये भूजव ब्रिये हथानिम्डयानधभट्भःमानि उवम इण्डल्डिश्चिम्ड्स इवः धप्प एक नवभक्र गड्ड न्या में कवें इस्डिमेलेक्ज्ञलक्षे प्रचवर मध विग्राभित्र के क्या पर प्राप्त प्रमाणकों अ नर्भष्टभःमानिः द्वेत्त्रहेष्ट्यकः य देवभेषुनंग्रेत्रभविष्दु उत्त निष्दि उन्दर्भः पृष्टं प्रभेष वेष भन् निक्रितिहर्भक्ति च्राचिक्रम्भू यह गर्धन्यनं मन्मान्याः पर लग्रमअचवर नि अंमिधेरिहिर्क

भं.

इंग्रम्भित्वः दल्हिति अवस्ति विविधित मथ्येवय पुरावश्यक्त स्वीतितान्त्र उः धरं भिर्वे धमभने व के हिन्दिन भः इ भग्डर महमलक्ष्यन्यनं मार्काइश्रह उन्हें उद्येश रें उन्हें वर्ग कि भे से बेरि िद्दे मलर' अधक अध के विके थीड ग्रमभूमस्पामस्कल् मावभूकराज रलमलर्डानवनं मलधनबहुक् मधंति भंगुरंदििः मलिष्टे धकि देवेपी उर्भुभुम्द्रकं पामद्राभम्बद्धभद्भार्य मध्यवं मंबिक् संकिप्र्यं स्र कैठाले अगैरीमें गृहिति भेप्यक्ति वर्षे अब्जवमध्यिष्टिभ्रंथक्याउँ सम्बद्ध णः अप्रणामेवणारं ग्रः भूठविद्रणः भव गगरं प्रभाने इपिमहिधार श्रेष्ठ गर्जल गम्। प्रयं भ्रमलंकितवद्यां भूजे भव

इनिद्वितिः गुगानंत्रभाष्टानं क्राम्य एयं कल्यां कलियां मार्गितिश उथ्रमं राज्यं ०१९५ । उर्गनं ०९ क्रिक्न ज्ञान अवस्य अवस्य किमान **₹३९** ••• श्राउकतिभनं पगमेने द राभाद्रमके द्वार्थक लगाः उविदीन कलद्भनंद्वायम्भकलद्भिः नघण्य नयनं ।पाक्रापाकुक्षव प्रमुक्लिमधःभ भागुडः कलिभानेन भेठजिलग्रेमणक **विशः वयप्रकारात्राल सक्या**ग्र उगीवगमि ि अञ्च मक मही भर्दे में उ इ उ विमित्रः प्रथम् यु मा यहेयप्र कः । भागिषार्भेत्रम् त्रम् ष भनाकिमः इभक्षया हे मीनं दुव उम निएगिमाभागविद्ध निक रिभ्रगलगुउँठज्ञितिकिःमधनं

भः

उप्रतभ भनमलका ध उपराज्य कार्य कार्य स्थाप कंश्रहतिहार मका केंग्रिडिस ग्रह क्रममार्थ हिया चत्रभन्न

भिन्त्

हर्जेनगुराः मध्यालभाग्या पहिन दण्नेहवेडर वेद्रमद्भावेत्तवंद्रहितंत्व । इंगिरवं रभारतभिरंभष्टे भेर में इंदलं रेप: भवगरमी ने द्वारहलं रारण द्वारिक ने म विष्णिसङ्घ थडः दल गुरु इ. इ. वेणीम': भ निम्यानभगदमः भिर्मम्बन्धिय मक्षियुक्तचंड मनिरिक्षियुक्तचंडम्हिक विग्रंठयं चलमे एप्रमः मेथः अल्पनः प्यक्रियेशवः क्रमभेविश्रमेपं विश्वयं क्रिडामिष उषा भूरुवभाएनं देशनानं ए वस्यक र भारितिएउ मध्य प्रतिविध रवीडिउ: मद्यमीयमानिक चेंगेनिश्च क ल म्ब्रम्प्रमाउभाग्या प्रमानक तिक असेचे धुरुपीर्नगरमग्रह हुपड्वे मवर्षेत्रप्राधियाः र्ष्ट्रमुक्रितेवय इम्मूष्ट हुगुवाभी भिक्तं मेठना कि द्व

भंग

हित्रपथनभा महाभाग कि नियान हो। यगः वधारुत्रक्तभक्तमित्रियान्यभित न मम्हरूप्याथाम्बाद्या वण्भारंगवीरभः अर्लका ध्रावास्य अनि का प्रपीन महिकारावंडका अवस्ति स रदलभ गुलरेलिमनिधी है भूडे भेड़िक वर्ष भगर्लमयग्रहकडका दाविभ **५ल महत्रक्रमभिष्ठक व्यथाभाग्नव इ** ष इलामिरिउय्धं महिक्रांगन्धीहन भ करीर मधगत्रेश्वभीनेभवध्यक्राधः यमक्रम्य क्रियम् मनिर्देशः ४.४ किष्रक्रभाउर नामध्य भेरकमा हाउका कि । हिश्रिक्टिः निरुणिच्चिउँहर्ममन ग्णंभुउः भगगण्ड्यकलिङ्गणीनव पि असे उउ:कहुलय मीन प्रभान पलिस्मीनक्ष्य विजित्त

मानिभाद्रपान प्रभव्दक्षीकलाएकी ब्रह्मप किनेभेज्ञ म्बाभिष्ट्रियम्ब जिलकिक्षाइन्द्रे मध्मतिक्राध्भक्षक्षिम क्रे जनः श्रम्भाग्य विकार केलयः कुर्णे क जी उड़: धरि रहिम कुभले उड़: कुर्णे वासीविदीरेगे हुई माभिउः पियः दिकि हैप्रथकरण्यान इसेन्द्र च भाग कड़ वर्ष हक्रिस्डः मनियद्भावतं सम्प्रमा रवमभ्यस्यकि भवस्र अभियः श्रम इजाइगाउउए गर्नभद्रमम्हित्तम् पगपिति वण्डी र क्षाम्य विरण न्निक्रं उद्गक्तकामम्भवण्यभद्रद रं मर्गारीमनिकार्ग्यान्यान्याः विगण्डहराइमयाष्ट्रः श्रुवभीन्येः जल्कग्रमसङ्ग्रमित्रियमचेनगः भारते ह्यभ्रेलम्बः विद्युष्ठ क्रांम्

7

गुरःएएः सिध्यहितियोगः उत्तेष्ठभत घगुरुएगर्गहराहयादिक अवश्वीकार भग्रभद्र द्वारा सम्बद्ध स्व उविद्वयाग्रहरामित्रकेष्ट्रकाः विद्वहिंग प्रविद्धयारियामिभुके श्रुक्तः सन्द्र इद् उरमुम्परिकः भीकी दिनः भूक न्न अधिषद्वारम् । अधिष्ठ । अप भन्भागिकिप्रभागिक्रिक अधिः अपि कञ्च उद्देश महत्त्र चर्च प्रशिपिति नवसद श्रमाज्ञेत्रविश्वहल ममुष्धित्रवंभीनभर्ष विक्रिडेभडः अभग्रहस्य उद्मिष्ठ भुउरभाउः याध्यारम्मिति विसर्थ्या र्भविण भिक्तंभिभिक्तिग्राप्त्रा गलाक्षर कुलाकरविनिही । भूकि भन्गित्र व्यवन्भक्तिल्हाग्यम म्यल्यालं यमिन्नानिरीयायापाभम

उद्वेशकि अहंउरियलिभ भेरे बहुर कि विशेष के अने अवस्था कर मार्थिक स्थान देशक रागात्रहिभदाद्वमञ्जूष्टेमप्टभम भभं व्यवभूतिभागम्बदनं अहवागति उड्डा इंडिडा प्रमुपं पंपवंग हिंड नुः।पंडयः वाड्यभन्दरं भन्पप्रपुर विगण्यहिक भिन्द्ररुयं भिन्द्रभयभर्थ नं उग्भचभाषीरानः भवपुरिभाभभ द्भाविवासभय इन्हरं भृष्टिं सभूभम एसरिणिक भड़ाईक भई दें पंचर वे भक्रडेमक्षक्रभिंड अचभक्र्यक्रिडिभि उह्नभू भेगची भिक्षा श्राप्त भिर ह एभदादा प्रमुभद्गभव्व । उन्हिं निरवेडवेड नवग्रमगरमण्डनिष्डि ह्म उपभूभलक्ष्मः क्रमुश्रुगरः इ हेः मरमीण इति परितर्भ प्रविभाग

भः

पपाविकितः अन्तिक्षिति देश्वासिक भ प्रचण्नेनय न इलभ धिम युक् रुगडे पापिकि दिश्वास्तिक के बिडि डिजिस कभक्तनित्रयग्याण्डक वार् भयः मपिरिद्रिययस्भिष्ट्रहेश्चित्रहेश दे मार्च्छभभग्रेष्ट्रज्ञहाड्ड इस्लिबिडें भ भग्जे कि उपने भन्न देशव डिपिले वंभिषाकिग्रीष्रिणच्छियंविम्हलः मध्यक्ष विवस प्रचित्र भागवित देशक वश्राद्वां भीना अभद्ध राष्ट्र ने ग्रंब अर्थ र अने पडिक् हिंचे भड़ारी वे वर्षे १ भ िः उस्टिं ७ भण दक् ०० ०० अलाम् भाग्यंभप्यक्रवात्तार्म्यंद्रा रचेडपरगिउवहले रचिपश्चित्रहरूया उद्देउइभभद्धरा महाराष्ट्री पर्भाद्ध ल्डेन्डिन ध्रिग्रेशिक्ष्यं पीरवेमभूष

क्ष्या : क्ष्मुभाग्य द्वारा एवं इस् इक्ने अने स्थापता उप कार्य के किन्त च्या च्या व्याप्त व्यापत व् श्चिः वर्षेत्र वर्षः भष्ठकेत्र त्रीष कः थवा श्रेच कालाः इलेः भिक्षेतागा िवंशक्षालय जी अमानयः मन्द्राम विकंग्रहेभक्तरकविकंगलं ज्ञिभभ भू प्रभानामः केव्याम् भुउपिनाः मृहि बाषियंगाज्यानेः पीकीियः प्रष्टे वधीभवाधिः श्रञ्जिनिष्धितर्भ म न्धविधिभवां प्रयाभग्रहीि भदाय अ नवाधिरवृद्धत्रं भेरतियः स हिर्द्धारियवं ध्वर भना चा श्वित्र स्वर स्वर रामभद्य विश्व है विश्व सम्मान कराः भ्रमण्डश्चा विच्हं मभएभं वक्र ण्डं इस्यधिम् उर्धां भाषीएनः वस

4.

दाउरा इः भाषि इ वाषान्त्र एना इस्ति व निमिरनिपिर्वभये इलिये हे भिर् भारति विविध्यानियान्य स्थापिक मेमप्रसमदिश्वयम सवस्ति उवीदा देलिक भभयवार्य अच्छिपर ण्डेभाषं याध्वरिकियाग्वरिकिश्वर्थ लयनं भ्रामाभाग्याम्बेभिक्तं अध्य ापं अग्रहीतियां ग्रेबं वाबर्ट हर् लाः उष्टेबकारं यवक्षित्र गहरून भना जला कि रहते। भक्तः । इतिनापीरेह्या भार दल्लागुरात्त्व क्तिलाड भेड्डिपरिप्त प्रवास रापया अवकेषा विन्द्रान्ते

भाभवाष्यःग्रह्मलक्ष्णं गलगद्वना उषाज्ञहरू के इंडिया नवस्राहलहरू नि श्रेशिल प्रस्कृ विनम विगल एला नश्राह्म इस्था उरगीमन अचरः अ श्चित्रवानिरंगरं विद्वनुगर्गालाः र वगहण्यान्त्रिक्षं किष्णिक विकास भग्रहभक्तविम्नभित्रहेवडर् गरिगहितिव किश्वितागरितिमिभर इ इिस्टिकिष अदश्रह पर विद्वर्भ अर अनः अकर उर्रेन्थियगहद्भने अलह्निक्षरवारिक प्रश्रहमापकं विद्याप्रमार्थिक यद्भिनिदिने इभाग्नंद्रिनजाइ हिनेक हिः रूखा मम्स्राना भूलह है। लियाव हु प्रमिक प्रमिश्व पर्स भाभित्र नक्षिमारश्रद्धिन रुचेर उउचर्षिने अ

भः गः

वभाभा अध्या वा भारता प्रमान्य वास्त्र क्रमामक्रमा कराक्रा प्रमानक उसहवाउड्डियभी १३ भना ब्रिश्च वदल म्'वलंडस' पेषक्ष्रम विश्वितप्रद्रा भन्निभग हवस्ह्रीस्क्यम एध्रुअन्तन्यह प्रजान कर करानिय किकिनमाऽच्यवाराणाल ७ はからなる ग्वण्यस्त्रभं इ विः भन्ने भीगले: मध्यारकिस्याप्

दक्षिः हेर्बेग्राम्हिष्यम्भाग्रह्व कुल इशायनाउँच वित्र हव उद्भाष्ट्रम न अधारिक भिनुक्तां या कि रीया या अवदल र्डीयायां भीवा शृद्दें भवा अचित्रा इः म **इंश्लिक्ट भारति है न विक्रम ५३**३ थक्ष्यं अचिक्रिय श्रम् स्वलभभाः ब्रवंगिष्ट्र: वर्ष्ट्रयन्त्रभग्राप्त्रवे म । इस्पिकिने भूवं यक्ति सिश्चित्र उर्म श्चरा हेक्या सम्भातिक विकास प्रय्वण विद्यनिक भीति वर्ष क्रमम् अथक्रक्रविणेभन्ड इम्थ म्हिन भारतिकालक विकास विकास लाम्यात्र भारते प्रमः मुचलम् इद्विधिष्ट्रित्र वास्त्र रहेव वा रहि क्रियरेडर विश्वत्रावर्कित्रविद्धः

दल रवस्यद्वाउषर इंडिश्व हरष्टं उड्डिक चिंदि हैं कि कि कि कि कि रिष्टगतिरं**च भिक्तिया भाभाश्य है ।** मीसे उनश्राद्य द्विस्पेव क्रम्कः अवल रूतिमिनरिष्ठलं भङ्गतिमिनसि भानकारिकचिदम वस्त्रम् एभक्किंचे भम्भेष्ठमं भिक्तममुक्ति। इन् लक्षिमध्यूचे रेग्युप्परुभामिष्टम्बल विधिरंडम र इरेग अवाभी एम श्चित्व हल्डवंड वषक्तीरदल भड्डा क भक्तीनृष्टाद्र्रीष्ट्रंच)व्रिगिरभ उर्ह्य गठवर्णनैर इविश्मित्र मलकष्टि ग्रायं भद्रश्यक्तित्व भर्षभट्टम यस्यवक्रमास्त्रिमी विड इतिविद्यन धरानीर्भचित्रमेग्ड नीर्भक्रक्रनीर रभानं रुवरेषूवं भूग्रक्ति भार्ष्य

च्चमीतिङ चयक्तिरुप्दल्ल कांच्रःभनुष्यद्रभःभेग्रवनुष्धम्मकः अन्दर्शात्रः अरुग्रह राष्ट्र या इंक्स्यानित्व इंभिष क्रिः । यहित्रभमम् मुग्धःकलेष गचरः भभर्ग्चयायुर अष' भष्टञ्चे भर्व व अइ विभाग विवासिमान्य किष रिक्णभेषिउ यह स्वव डड: उएप्रिक्निक्नथिप्रज्व र मलचा धितार देमें पण्डव विभापना की गई कि कि कि इभाविशिक्त अन्यविकं मार्थिय किः भिभ्राचीरणलाभ्यः राष्ठीरं

भः

भारिक्स बार्डिशनियन्ति है है स्वार्कि है ह्रम्य हेन्द्र हेन : स्वर्ध स्थाप उ मफाएं हरली इंचे विमाय हिडें मनेः इप्रिमित्तिभागीवागुनाकी विभाग विश्वास्त्र अस्त्र विश्वास्त्र विश्वास्त विश्वास्त्र विश्वास्त विश्वास्त विश्वास्त्र विश्वास्त विश्वास्त्र विश्वास्त्र विश्वास्त विष्य विश्वास्त विश्वास्त्य उराध्य अचापासकर हम्बाधनारी रद्रभाः अचामामभनविष्ठभावित्रभा हुगः भरतं अचामताहि सिन्हे बर्ग नारा नीवण्यम स्वच्यभ्याञ्चर्याञ्चर उनिक मधेरभग्दभी भुउदल हुट वहकंत्रां भी श्रः भिष्टः भभा सुविष्ठाः उद्देशकी वलवे युभक्त भाष्ट्र विम्रह्म ले मद्राष्ट्रभद्रनीरंबाउनाष्ट्रं उद्यानिलं व किराने अउस दः मिश्रवानुभया क्रक नीत्र देवष्य दिल्लान देव मवद्रलं क चर्डभ्डन है मभद्र गित्र हो । किय

क्रिला की के प्रदेश इस्लेग्दाः इरासुम चन दीष्ठिउन दी भभद्वं अद्युक्त गर्ड अट्र इंड दलभगुर रेबिक कर भी आ धारा भारत है। इस स्वाय अपन क्रिनेळ भ्रिकडभ उद्यग्रंभगाभिम्थाव क् श्रिप्जाचड याचडियां मगा समु:केव लःशन्तवाधिकः अभिमः ग्रेमेः पपिविञ्चियममी पनीवेष्डमध्येष इफ्रीनं उरमनं यश्रापण्थनं भी किव विश्वग्राम्य राज्ञ है। विस्त्रियं विस क्वीलउरानिक मद्रः धीयधनानी शिभिष्रः क्ट्रिनंगुडेः दिम्। ध्यान्यान्य भि:प्राभाः राजरातीभुउमम्भिड लगाभगः विनानभूद्रपंचित्रः । प्राप्त रुष्रेयुर नीम ने गरेम में भिन्द पिरे मुभग्र पंचनित्रिकेन्। भित्रहाय हव

सुरं नीग्रहण्तथी ग्रधन की चुः विक्रमः इंभर एड्करमभड्डक ब्रंभग्रह खेश्चि ग, मः मिथ्रामीश्रियः सच महेळ द्विः ध्र एगः मस्वयुत्रिनकी अभवन दे देव पूरः चेगे मुरु कि है न दी निकाल भिए। लप्र धेगेक्रा पिक क्रिया भएन्न नित नचि: भेश्चर्डिं अउपपक्षानि काभाः मुरुपेयंभगात्रीरः अल्बय विःसम्भग्नः एकरामीभुज्ञे हेभार्गीव म्युभंयम वंधिलं हर्वेश्वीवहरा स्उपिल हुउभिष्टेवप्रकृत्रशंरण कविराग्रम व)विः भन्न नलक्ष्यम् वंगविमधः हुग्रम्भभभः पर्भः प्रम ग्हिमगुरे उम्भूलेम्क वाधित्तल चेगभद्रिय उतिभाजनामी मस्भ अध अर्भितिवमान्द्यगवमाम् च। विद्वा

भश्यात्र अद्भाव स्थानित स्थानि न के बिहरिष्ठिणमञ्चः श्वरं कि दिउचित्र उः वधरीह भेडधां इक्गः जर विवदल जिंद उन्निल्या विन्तु सम्बर्ध भ अनुमधलभूजअंचरभुगरेगवेः मुद्रा नेभग मेरे वासिए स्ति हे ने मारे हैं इनकलअञ्चर्धार्थित्रमं ग्रांण भमयोग भेरा हुन्या हुन भेर्या वे ध भक्त बे अवयो चित्र रुव है अकी मामस्ट्रिट्ट सम्भागि गुरु पुरु वावि अवस्लाउम् नम वा इप्रमंत्री प्रचार ने या विश्व ाप किर्यक्तीच भेभे हुनीउगलिय १९ विश्व अधिक लेम मुझ्य इमयामियानि विविधे उन्तरितं व

भः

सीपीपंपयदाश्चित्रता भी की विवेद के मिर् पर्कथापियः भेभः क्रीवयवानिक्ता उध्यातिलय्भविष्यग्रेथस्य । ग्राम्यावमः श्राप्ता विश्वमिह्य विन याभचगाँद्वास्वः एजा अवस्य विक्रिडे वा भवाधिः शास्त्र विश्व विष्य विश्व विष्य विश्व विश्य विष्य विष क्षण्याह्न अद्विधान् के अद्वेश द्रिमां प्रयोग अस्य अस्य अस्य अस्य लिम।उद्गम मध्यलिमाविद्वानिवद्वान निभनीधििकः असमग्रह्मात् प्रिचित्रम् दह्मभगा अल्पियक्रगम् अरमस्ह निधम उद्देगमुह्नाभाग्ने भूना किथ प्रच्या अववस्थित है। प्रचार्थित एयर अघवदकलभङ्गताकाने नर विकासकारकार विक वेष्ट्रनाश्वनिविक्यालभविष्ठः तालगा

तुभः कग्थलं इःभद्यां मिर गिरविद नभक्ष्याः भवाधा मिववड्रनं भक्नेइनि हंक्षिपंभविकःभनिलक्षाः भविरंभी विध्व इस्थः मी भ्रच द्वित दे वित्रि व्यक्तिकाल अवविष्टभः पिषः राज्ञ भीन भूचेर चेठक रंगीर भेएलं हे लोगे भवनंद्रधूं भेरेद्रभवश्रम् भक्तिक'र' उरंयािअराः स्पिपिपीलिकः उद्य ध्राञ्चर्यक्षत्रचन्छित्रिनभनेतिकः एपन तिकृत्तम्विभाज्याः धमवः।पाः ध विवस्त्रेजन सेंड्रेंग्रह वर्गेंद्र लंडिंग रूल च्या विकार राज्य अस्ति विकास भाजा लं प्रतिहि: अप मक्तिरिक्षाः मीडः भीमी ठवेभन्द्र भ टिगिस्पानः भद्वारागे प्रभावतानं भूग मक् मेविक उर्जा भेराभिनीउद्य भेट

A 1177

4.

निक्रुरथः अर्भनमन म्यूब्ट्रमं विद्धि लक्षलाहिभद्रविष्ठःभभगाभः उदियो धिकारं मधिम् उमज्ञेन गण्णीसंध् अएड्रेक्ट्रक्तिविद्यम् भार्त्राश्वास्त्र उग्रेड्यभारायभेत्रागड ४५ स्डिस्वा याष्माप्रान्तिका प्रतिकः निमिश्रा एनेउइ जिस् अस् किए कि पेडी उथान उभद्रम्विमण्डलग्द्रवाभिनि यह्य मित्रिउंक्रदंभष्टंबरभूरेम्विर रुव्हे विकि वं भक्करंविमेधः उद्ग्रस्थाः इ'लिइइ'व'हाइय' द्विडम्प लंडइभगगाच्चिद्रभानये उज्ञहाधानभा रेलक्लं क्लंबेयम् ५३: त्रम्बण विमेधः मान्धनकवन अद्मद्भाषि अधि । रण राभित्रहेभेडियनेबेष्ट्रभित्रित इफ्टिन किरणीवरनवेपष्टविधियः म्थानुशिम

रियाया हिंदे में पसुराक्षिकः मरोभे अध अहारियाराविक्रिकेवर उभरेज्य कर्ने विश्वयान्य विश्वयः मज् गश्चित्र जाना अपनित्रं मित्र मित्र मित्र अब इ अबगैडर भफ्तभः श्रीविए विति उःज्ञकः मजन्ममुरुवदः महभाभन् क्रिंगीक्क विमानवानवर्गिक्वक्रिक इक्रोदिकं भर्डे अस्केर बीगकी र निर्केन्द्र विद्यम्बद्धम्बर्भान्य भःप्रि राञ्चक्राहितः नेदं भागमानिके विमा नंत्रभुगकं महावारवर्णभाषियुगर्भ रिश्वनः भटन अलके पर्दिनीं नरत्य प ह्मकः नरभर्भाषेण्डेनपीधिरभाषी उषा गर्भा भूनापं धा लियाक गुग, उभं स हं म्हा वहद्रा श्रीद् भदं भग्यमः भ्रि यः भूभत्रवर्गनेवं मिरियम्हर्व

4.

क्र वीडिभंगुन्य क्रिक् पठीः उद्यक्तिगुलभक्षत्रेन्द्रहर्वा वान राणधारत्तनीभागिष्ठविद्या क्रिके उत्तरभाष्ट्रिक विकेश वर्ग क्रिक भनिवण्डम्झर्गाप्थलंग्नी या भागापाधिइवसाष्ट्र'इ क्रिज्ञानिकाष्ट म भर्ष्यगवरीमधापिह्वमविविचित्री अगःकनिध्येद्र एउगण्य नकल दिक क रच नगर राणभाष्मण जनवित्र अभि गर्यस्थान्यान्य । व्यवस्थान्यः वयस् अलगणिकिविद्धयोभन्गिन्छः अव्यक्तिः कहकः भर्भुला हिम्र वाचियाः निकिन हित्रराप'िः भन्निराउएगिविनी राप'या नर्भक्षेत्रलयमः पृष्टिविर्देश । एनगए उभंगारभित्र प्रभएभं श्राम्य दिराभलं अल्लापा । प्राया गर्भाः

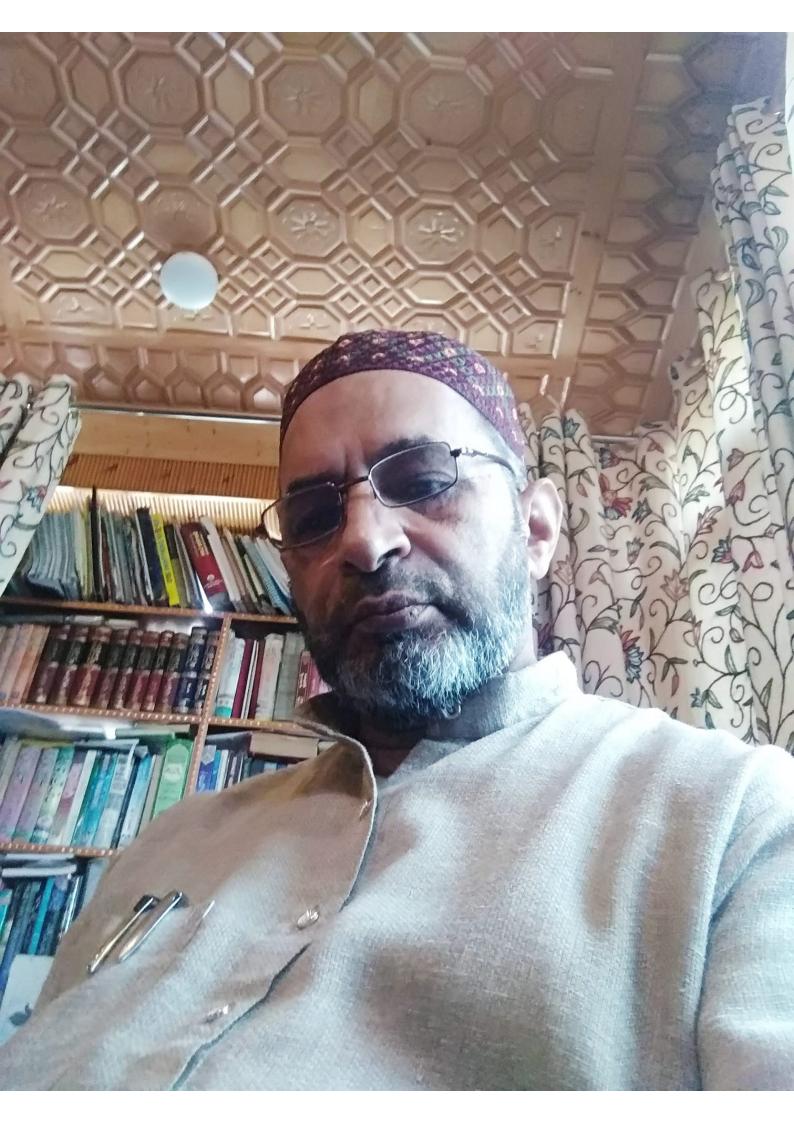
श्चारः भिद्याः प्रकारं भञ्चित्रानाः म श्चिल एक वंशं में वाभा भीने एवं भक् म इञ्चार्यस्थभठवर्षराः स्वर वाभगदन्त्र मार्थिक विभिन्न प्रस्क व्याजिष स्विज्ञ जिलम् अमे हन्स् लनंबीलयविभद्दिकंउस कापफउ निषधभरुवेद्वानभातिः पञ्चण्युप्ती विश्वमनुगःभेदिरम्लः पर्मुल्स् यः भेज मम्बेवियत्म मुलिः विनः भ मउल प्रचाभारा हिंदी प्राप्त हिंदि एनने व लिय र प्रश्नेय र ले नियक ग लयस्थार्क्ताक्रमा १५ नयः न्यः।भग्धियस्यम्भ्यस्य प्राननं मी कं यह कहा के ठेठ यथम्बर्माम् ध्यम् इलक् नवप्रि क्रीम् :काग्रयनकपुराधिमाश्रयः विश भः

ग्रम्भीन्विम् सः स्टानिस्निनिश्र भार्त्रितिभिष्ठिः उन्नेव्यिषिक्येइविष भःभ्रेष्ट्रिप्रभः वेड नव्हिनिहर् विमलंभ्रेड्रंडम भग्नेज्ञ लिइवेडाई गभनेन भट्येम्डवर्भ २७ वक्षा भाविएवा नगीवसपरिपउडिए मीदिन्धिया वि हर्गमीयुराम । प्रवेश १० महामी देमगनगी मुभांदिनि विश्वितं सल्दगर्भ उष्टिम् निरंबंपि धारिनी १० जलमी द्यालपतिः भारिक्ष न भिक् थड्ड नभारवेष्ठानुनः पिरकर्शिका १३ नभिउगर्गस्यमः मंत्रभभूकीरिऽः मिलकुरुगल'वर्डिमभ'ल'त्सभ'लिक १३ मी उमेरिके या इस्तर्भे भी विकर लिक' उद्देग्परिमिक्षेद्रज्ञांगीपगीट गाँडी सम्बर्गाणंसकिएकिन विमानले

भिम्प

मन् अञ्ची हा भाष प्रश्निक सहल श्रक मार्गि म





This PDF you are browsing is in a series of several scanned documents containing the collection of Peerzada Muhammad Ashraf Sahib. b 1958

CV:

Residence: Towheed Abad Bemina, Srinagar

https://www.facebook.com/peerzadamohd.ashraf.16

Former Deputy Director Archives, Archaeology and Museums Deptt. J&K Govt.

Former State Coordinator National Manuscripts Mission Gol.

Former Registering Officer Antiquities, Jammu and Kashmir Govt.

Former Registar National Records, Jammu and Kashmir Govt.

Worked as Lecturer Arabic in Higher Education Department.

Studied at Aligarh Muslim University.

Lives in Srinagar, Jammu and Kashmir.

From Anantnag.

Peerzada Muhammad Ashraf Sahib has an ancestral Collection of Rare Books and Manuscripts in Sharada, Sanskrit, Persian, Arabic, Urdu, Kashmiri in his Home Town Srinagar.

Besides manuscripts, he also has many rare paintings (60+).

Collectors and Art/Literature Lovers can contact him if they wish through his facebook page

Scanning and upload by eGangotri Trust.